ज्याष्ट्राश्चर्या



মহর্ষি ঐকৃফ্ছিপায়ন প্রণীতম।

ঞ্জীপ্রজ্যপাদ শ্রীধরস্বামিকৃত ভাবার্থদীপিকা টাকা

প্রীশ্রীপৃজ্যপাদ জীবগোস্বামিক্বত ক্রমদন্দর্ভ শ্রীশ্রীমৃক্ত বিশ্বনাথ চক্রবর্তিক্বত সারার্থদর্শিনী ট্রকা সমেতঃ

প্রীরামনারায়ণ বিদ্যারত্ব কৃতান্বাদসমেতঞ্চ ত্রিপুরাধীশ্বর শ্রীমন্মহারাজ বীরচন্দ্র বর্মমাণিক্যস্য

मण्यूर्व नार्यारम् म्लाः विका निकतिकवाः । 🍅



न व भ क काः।



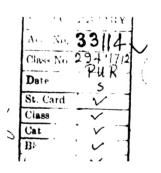
भूर्णिमावाम ;

वर्त्रण्यूत,--नाथात्रमणयट्य

জ্ঞীরামনারারণ বিদ্যারত্বেন প্রকাশিতং

মুদ্রিতঞ্চ।





নবমস্কদ্ধের সূচীপত্ত।

| প্রথমাধারে বৈৰক্ষত মনুর বংশে চপ্তবেশ্লর প্রসঙ্গে স্থায়ের ত্রীড প্রাস্থি। | প্রবেশ | কখন- |
|--|--------|------|
| > | 2 | • |
| > WHITE TARIFE ON THOUSE THE FEE | 74 . | |

২ অশ্যারে করব।দি পঞ্চ মনুপুত্তের বংশ বিষয়ণ।

৩ অধ্যারে সৌক্ষনাধাোন ও রৈৰভাধাান সমেত মহুভনর শ্যাাতির বংশ কীর্ত্তন ।

s অধাারে মহপুত নাভাগের এবং তং তনর অভারীষের কথা।

৫ অধ্যায়ে বিষ্ণৃচক্রকে প্রাপন্ন করিয়া অম্বরীষ কর্তৃক প্রাণ

সৃষ্ট হইতে ত্রাসার রকণ। ০৪

৬ অন্যারে অহরীয় বংশ, শশাদ অব্দি মান্ধাতৃ পর্যন্তের রুষান্ত এবং প্রসদ্ভঃ মান্ধাত্তনদাপতি সৌতরির উপাধ্যান।

ু প অধারে মাজাতার বংশ কুরাস্ত প্রাসকে প্রুকুৎস তথা ছরিকজের উপাধ্যার।

• 45

৮ অধানে রে।হিত্রংশ এবং কপিলদেবের আংকেপে গ্রহান্তানদিগের বিনাশ বৃত্তান্ত ।

04

৯ - অধাচিয় পটুলে অবধি জা: শুনানের বংশ এবং ভগীরণের গলা আনমন বুঝার। "

৬০
১০ অধায়ে বটুংক বংশে শীরামচন্দ্রের ফল্ম এবং লঙ্কাধিপতি
দশাননকে বিনই করিয়া অংশুধা গমন প্র্যান্ত ভদীয় চরিতা।

১১ অধ্যায়ে অফুজ্নিগের সৃহিত রামচজ্রের অবে। গ্যায় বাস এবং যজানির অফুটান।

১২ অধ্যাথে জীরামতনয় কুল এবং ইক্রুকু পুত্র ললাদের বংশ বিষয়ণ।

১০ অধ্যায়ে ইক্ষাকু পুত্র নিমির বংশ বিবরণ, বাছাতে এক্ষঞ জনকাদির উত্তব হয়। ১৪ অধানের বৃহম্পতির পদ্মী তারার গর্ত্তে সোম হইতে বৃধের জন্ম এবং বৃধ হইতে ঐশ ও ঐল হইতে উর্জ্বদীর গত্তে আয়ুম্ধ্য প্রভৃতি ছরজনের উৎপত্তি।

> अधारत खेल भूटका वः एम गाधित समा, ध्वरः खे गामित त्नोहिता मुखान ताम कर्ड्क कार्सवीट्यात वध ।

১৬ অধ্যারে কার্ত্তবীর্য্যার্জ্নের পুত্রগণ কর্ত্ত জমদগ্রি নিহত হইলে পরভারাম হইতে বারম্বার ক্ষজির্বধ এবং বিখামিত্র বংশের বিবরণ।

১০৬ ১৭ অধ্যাহের আহুর পঞ্চপুত্র মধ্যে ক্ষত্রহুছাদি চারি জানর বংশ বিবরণঃ

১৮ অধ্যায়ে নত্য পুত্র যথ।তির বিবরণ, মাহার পঞ্চ পুত্রের মধ্যে কনিষ্ঠতনয় পুফ ভদীয় জরা গ্রহণ ক্লরিয়।জিলেন।

১৯ অধানে ম্বাভির বৈরাগোদের তেতু ছাণ্গর নার সীয় আচরণ দেব্যানীকে শ্রবণ করাইয়া স্বয়ং মোক্ষ লাভ করেন। ১৩৫ ভ

২০ অধাারে পুরুর বংশবিবরণ এবং ভদ্বংশীর ভ্রারতন্ত্র ভদ্রতের যদঃ।

২০ অখ্যায়ে ছক্মন্ত পুত্র ভরভের বংশ বিধরণ এবং প্রসঙ্গতঃ রস্তিদেব ও অজ্মীয়াদির কীর্ত্তি বর্ণন।

১৮৯ । । ২২ অংশারে দিংবালাসের বংশ এবং ঋক্ষ বংশীয় জবাসক যুধিটিব ৩৪ তুর্যোধনাদির বিবরণ।

১৫৭ ২০ অধ্যায়ে অনু, জহু ভূথা ভূৰ্বস্থা বংশ এবং জামোদের

উरপতি পर्याः व वहवरत्मन्न विवन्नग । ১৬৫

२८ व्यक्षास्य तामकृतकत छेड्डन भर्यासः निमर्छ शृद्धज्ञस्य। १ भन्न निविध वः न ।

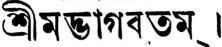
>9•

নবমকদ্বের শুদ্ধাশুদ্ধ।

| ्र्यका । | পঙ্কি। | অব্দু | 991 | 1 | त्रृ । | পঙ্কি। | অগুদা। | 34 1 | |
|----------------------------|-------------|--|--|-----|--------------------------------|--------------|---|---|--|
| . ′ ૨ ১ ૨৮ ৩২ | 9 9 5 | মৃগ। সপ্তরীপ্রভাং ভ্যাপভ্রতীং শ্রিয়ণ্ডাভ্রাক্তিকীং | मधबीमवजीर छ।माभङकीर जिन्नकाछ।छिकीर | | 12 62 68 | * ** * | স্থক:মস্তা বে ভ্ৰত্ৰিস্ক | সমক্ষমগত। যে ভরভর্ক | |
| ৫৭ ৫৮ উ | ¢ ዓ ያ | বং মুভান্ সন্মন্ত্র | য ং মুণ্ডান | , , | ৯২ ১৩২ ১৩৬ ১৪২ ১৪৩ | 8 5 8 | সগণ অভ্বেণ্ডিছন্য নির্কিন্নে। অভ্যো ভুজাতাং | হগণ শুভ্রোহশাদ্য নির্মিলে। শুভেরো ভূজাস্তাং | |

| शृक्षा। भष् | ुकि। | | 1 76 | | পঙ ্কি ৷ | শশুদ্ধ। ভাগদেবৰা | ওছা প্ৰসাদাদেৰ বা |
|-------------|------------|--------------------------|--|-----------|-----------------|----------------------------|--------------------------------|
| 286 | > | ভ্যক্তকাষাং | ভাজুকামাং | 208 | ર | कीर्यक के किया | नीः चंत्रक देखि व |
| | > | প্রতিবন্ধ্য | প্ৰতিৰিদ্ব্য | 206 | 8 | भाषभूष श्राचपर | नाःपन्न छ राज ५ चनु विश्रोद |
| | • | 11031 | প ত রো | >60 | 9 | পূল্ৰিয়ার | শে বুন্দ্র সোতুমক্ষ |
| 592 | > | मञ्जा(श्री | ন্মু গাণ্ডা | >68 | 8 | সোচ্যক্ষ: | न् ठकूर्य ९ |
| 398 | 8 | দেবপ্রস | (ছবশ্ৰবস | 340 | • | নুচক্ষৰ্থৎ | |
| 39¢ | 9 | रेकरकरम्रा रे | ककरता 🚏 | >99 | • | ভগৰদৰতাৰ : চক্ৰবৰ্ত্তী। | छ গ্ৰ দ্ৰ তাৰ |
| | | খামী | | , | 8 | च् र्वारवः म | স্থাৰংশ |
| 9 | 4 | eেতো | (হাডা | 42 | • | भनका हिनी | यन जामीनि |
| | 8 | न द व फू प्र | নবরত্বার | 42 | • | ভম্ভাজানাঞ্ | ७ इका नाक |
| >0 | Œ. | কামান্ | কামা | 22 | 5 | নিতাধায়াক | নিভাগিছণায়াৰ |
| ₹8 | • | विषयान् | विषया न | 24 | , | মদমোঘ | यमरमाच |
| હહ | > | পুরুষস্য | পুরুষস্য ঈশবস্য | 13 | 9 | বোভ ক্তি | ধাক্ত জি |
| | | অনেক | অনেকে | 12 | ર | শিহার্য: | মিহাযুবঃ |
| ৩ ৯ | ર | | क् १७ | 10 | 8 | W G | <i>ক</i> ট ্ |
| 82 6 | ર | * | चनाव : | 1 | 8 | ्राष्ट्र इतस्टेखन | অভুতৈন |
| ঐ | e , | | विभि: | 16 | | कारू. वानकः | य। न कर |
| 82 | ર | • • • • | • विषयागार | 92 | ર | ৰাণ্ড ৰা পাযু | প্রাপায় |
| ¢• | > | 4.4 | গৰব্যা ^{গাং} Pতিপ্ৰাসিদ্ধং | ₩ ₩ | • | क्षाणायू झं बटनाटन | ना गर् नावरमार्थ |
| 60 | , | | प्राटबण्डि | 1 | ર | | का परनार प कवनकारत क |
| હર | 8 | - 11. | | 44 | ર | ভন্নৰংরতি | अपः स्ट्र ं |
| (2) | Œ | कुभटेश्वर | কুপ্তৈয়ৰ | 66 | | यमः र देकवानाका | (र्मशनाका |
| ৬৪ | • | | উদ্ বত ত্ত ৰ্ | >•2 | 8 | | छक्र (ब्रह् |
| 96 | • | | ि च्या | >•4 | • | ७क्टब्र ्ड | পরা জি ত্য |
| B | D | ভ্ৰাত1 | ত্ৰ াৰ | ३३२ | ٠ | পর্যাজভঃ | |
| ខទ | > | ত্ত্ৰ | ৰত্ | 223 | 9 | ভ্ৰত্ ণাং | ভাতৃ গং |
| >•> | ર | পুৰে। | প্ৰা | 279 | 9 | বিবৃত | বিষ্ঠ ইংলাক |
| >>> | 8 | मृ ष्डिः | मृष्टिः | 200 | ર | ঙ্ ণীভূতা | গুণী ভূচা |
| 3 | ঠ | पन्। | वन् ७१ | 200 | 4 | स्थमात्राः , | स्थ्यम् |
| કર ર | 8 | वीशवद्यः | बीवव यः | >6> | 4 | अ रकाकी दन | करछ। की वन |
| 320 | , | कंड्रिक्ट | প্রকল্পিড: | 244 | 9 | মায়ারাং | মার্রো: |
| \$25 | ર | मृ डमःशीवनी | बृष्ठ नः खो यनीर | 292 | ¢ | পর্ষমনো | পরমন(ना) |
| 500 | ì | আগ্রামণমূ | অগ্নানমত্ | l | | ভ(বা। | |
| >88 | ર | <u>পিতুরে</u> ব | পিভূবেবভূ | . 8 | 4 | কাম:নাত্রপ | কামনাত্রপ |
| 384 | ì | ময়বন্তর | মামবক্তর | 4 | > | वावा। | ব্যাখ্যা |
| 28% | b | न्य | নর | ં ગર | • | ৰশীভূত কৰে | ৰ শীভূত করে |
| 262 | • | সমুপ | খৰুপ | 82 | 8 | জলচরর সলে পাকা | |
| 20b | > | | ্ৰু: অন্ট্ৰমৰি | 4. | • | পুরুব। ধ | अ् क्षार्थ |
| | ٦ • | | আডেনার প্রত্যেকং লক্ষক | 45 | >> | কোশশাস্থ | কোশগস্থ |
| ১৬৯ | ર | | | ₽8 | ¢ | গৃতমেধীয় | तृ क्टमधी व |
| 398 | 9 | क (भाषना बराबुर विव | চাম কর্ণোৎপত্তিপ্রকার ক্র | >•8 | 4 | ष्मारहा | चरहा |
| ১৭¢ জ | ٥ | | वर्षि । हरकार्यः | 223 | • | कामादवा | क्रमा र्थ। |
| | 9 | मूरवा छ | ত্ৰোক | 1 | 9 | মহৎ | यशन् |
| 242 | > | मारतम् | मारत्रयू • | 220 | ٥ | অ।মভা | অ(মাড্য |
| | | ক্রমণক্ষ | | 338 | a | একে ` | এক |
| • | > | श्रीको बरगा चामिक | | 13 | 23 | A | A |
| 6 2 | > | এতদস্থা রিভি | এসদ ত্ ারিভি | >>9 | , | মূণি | ब्रुबि |
| 60 | > | ७ ग दे स्व उ | क्शवटेक १७ | >29 | 3. | প্তীর | পুজীর |
| ঐ | ' ' | নাপমূত্তম: | নাগভামত্যভ্ৰমৰেড় | 203 | ¢ | व।त्र य ःद | वात्रवात |
| 15 | > (| (भाकाम मित्रविद्यावार्थः | | 280 | ٠ > | নিবৃত্তি | নির্ভ |
| * • | २इ | এ ধরত্বামী | ক্ষ্মসন্দৰ্ভ: | >88. | | कर्छ. | ७ र्ज् |
| ۶•٤ | 27 | औ ५ तथा मी | এ নসং র্ জ | ľ | | | শ্বৰ ণ |
| 3.8 | 8 | কুকাখাং | হকাপ্তাং | >64 | 4 | सस्य | |
| 2.P. | , | পুরুষরস্তবে | | >49 | ٩ | मण्योप | मन्भाम, |
| 274 | ર | कारक | कारम | ঠ | À | জ প দ্ | ক্রপদ |
| 4 • • | ٥ | त्रः इटिडरेक करवडी का | | 1299 | ٧ | जनसम्बद्धाः स | ভণা, নৰ্বাপস্থৰ |

बीबीबाधाककाष्ट्राः नमः।



ন ব ম ऋ ऋ ।।

क्षांशाह्मातः ।

মল্বন্তরাণি সর্বাণি ছয়োক্তানি শ্রুতানি যে। বীর্যাণ্যনন্তবীর্যাস্ত হরেন্তত্ত কুতানিচ। এ

टी धत्रवामी।

ওঁনম: কুফাছে n

গুণা যং গুণজাৰালৈ গুরুত্ত করুণানিধিং। তমহং শরণং যামি পরমানক্ষমাধবং। - ক্রিগুণাই তিরণালৈ কর্বেশত হতা-বয়:। নবমে ক্রঞ্পংকীরিপ্রসঙ্গায় বিভন্যতে। এবমুক্তোহ্টমন্তকে সন্ধ্যাং স্বশোধকঃ। কর্ত্পালক সংজ্ঞালি ম্বাণীনাং নিরূপণৈ:। স্ন্ত্র্যাভ্রত্ত স্বান্যস্তরক্ষেশ সংক্থা। ত্থ্য সোমাধ্যাথানে রধুনা সঙ্গভোচ্যতে। ত্তাচ ক্রেটাশন্তি: ত্থ্য বংশোহ্র্ব্যাতে। একাদশন্তির্ধাটিয়: সোমবংশস্ততঃ পরিঃ। তত্ত্ব্প্রথমেহধ্যায়ে বৈবন্ধত স্কাদ্যা। সোমবংশ প্রবেশোটক্য স্ক্যের ক্রীক্ষ্চ্যতে । ।

উক্তামুবাদ পূর্বকং বৈবস্থত মনোর্বংশং পুছ্তি মধ্বস্করাণীতি পঞ্চভি:॥১॥

ক্রেমসন্দর্ভঃ।

ওঁনম: শ্রীকুকণায় ॥

অব্যান্ত ব্যালিক বিষয়ে বিষয় ক্ষাৰ্থ বিষয়ে স্থানি বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বি

খ্ৰীবিশ্বনাগচক্ৰবভী ।

শ্ৰীগোকুলানন্দো জয়তি॥

প্রথম্য অভিকং ভূম: আক্রিয়ং করুণার্থং। লোকনাথং জগচ্চ কু: আভিকং তমুপাশ্রমে। গোপরামাজনপ্রাণপ্রেম্বিতি প্রভ্রমিব। তদীর প্রিয়দাভার মাং মদীরমহং দদে। উক্ া সদ্ধর্মীশাস্থ্রিনাং কণাতে কথা। নবমে ভক্তি বিজ্ঞান বৈরাগ্যভাভিধিৎসয়া। অম্বরীবাদিভিরিব ভাবাং ভকৈর্বিচক্ষণৈ:। বিষয়াভিনিবিটোপি বিরক্তঃ ভাদ্যবাতিবং। ইত্যেবসর্থ যুক্তাতে ত্র্যাসোমারয়াহিতাঃ। অনামৈর পুনস্থোপি স্থাচারৈলোকিশিক্ষকাঃ। অন অন্মোদশাধামাঃ ত্র্যাংবংশ নির্পকাঃ। একাদিকাদশ স্থাতে সোমবংশাভিধারিকাঃ। তদেবং নবমকদ্ধোরাজতে অভিগাইভিঃ। অধানিম্বিধাণ্চ্যাকথঃ কুফক্থারুথঃ, ভত্তত্ব প্রথমেহধারে স্ক্রেমামুগ্রাং গতঃ। জীভূছাণ বুধাৎ পুরুষ পুরব্বস্মাপ্রবান্তি ॥

মংশুদের প্রসাদাৎ সভাব্রভক্ত ভক্তশ্রেষ্ঠিত সমূহং শ্রা তহংখানামপি বৈশ্বরম্ভিপ্রেডা তৎকথাস ফাতশ্রম গৃত্ততি যোগাবিভি চতুর্জি:। অভীত করান্তে অভীত মহস্তরান্তে ০১॥

নবমক্ষদ্ধে চতুর্বিংশতি অধ্যায়, প্রথমাদি ত্রয়োদশ অধ্যায়ে সূর্য্যবংশ বর্ণন, শেষ একাদশ অধ্যায়ে চন্দ্রবংশের কীর্ত্তন, তন্মধ্যে প্রথমাধ্যায়ে বৈবস্থত মনুর বংশে চন্দ্রবংশের প্রবেশ কথন প্রদক্ষে হৃত্যুদ্ধের জীত্ব প্রাপ্তি॥ • ॥

শুকদেবকে সম্বোধন করিয়া রাজা পরীকিং পুনরায় জিজ্ঞানা করিলেন অক্ষান্! মন্বন্তর সকলের বিবরণ এবং তত্তৎ মন্বন্তরে অনস্তবীর্য্য ভগবান্ হরি যে সমস্ত বীর্য্য প্রকাশ করেন তৎসমূদায় অনুগ্রহ যোহদো সভাবতো নাম রাজর্বিদ্র বিড়েশর:। জ্ঞানং যোহতীতকল্পান্তে লেভে পুরুষদেবরা।

য বৈ বিবস্বতঃ প্রোন্মনুরাদীদিতি শ্রুতঃ। ছত্তস্ত স্থতাঃ প্রোক্তা ইফ্যাকু প্রমুখা নূপাঃ।
তেষাং বংশং পৃথগ্ এক্মন্ বংশানুচরিতানিচ। কীর্রিশ্ব মহাভাগ নিত্যং শুশ্রাষতাং হি ন:।
শে ভূতা যে ভবিষ্যাশ্চ ভবন্তাদ্যতনাশ্চ যে। তেষাং নঃ পুণ্যকীর্তীনাং দর্বেষাং বদ বিক্রমান্।
শ্রীসূত উবাচ।

এবং পরীক্ষিতা রাজ্ঞা সদ্দি ত্রহ্মবাদিনাং। পৃষ্টঃ প্রোবাচ ভগবান্ শুকঃ পর্ম ধর্মবিৎ। ভাতক উবাচ॥

জনগ্রতাং মানলোবংশং প্রাচুর্ব্যেণ পরস্তপ। ন শক্তে বিস্তরতো বক্তুং বর্ষশতৈর পি॥ ১॥
পুরাবরেষাং ভূতানামাক্সা যং পুরুষঃ পরঃ। স্এবাসীদিদং বিশ্বং কল্লান্তেহতাল্লিঞ্চন।
তক্ত্য, নাভেঃশন্মভবং পদাকোধোহিরথায়ঃ। তক্মিন্ যজ্ঞে মহারাজ স্বয়স্তুশ্চতুরাননঃ।
মরীচির্মন্সস্তক্ষ জজ্ঞে ত্যাপি কশ্যপঃ। দাক্ষায়ণ্যাং ততোহদিত্যাং বিবস্থানভবৎ স্তঃ।
ততো মতুঃ শাদ্ধদেবঃ সংজ্ঞামাস ভারত। প্রান্থায়াং জন্যামাস দশ পুরান্ স্ আ্রাবান্॥ ২॥

डी भवताभी।

জান্তক বশংবজুংপূর্কোক মেব ভাবদ শংকং প্রবর্তকংশীনারয়েণ মার দ্যাকু আবেয়তি পরাৰ্বেষামিতি পঞ্চিঃ ॥ ২ ॥

ক্রেগদ**র্ভ:**

त्यांमानिकि निकर॥ ५।२ ७।८। ४।४।५।५।०॥

শ্ৰীবিখনাণচক্ৰবন্তী'।

কণানে ভিনাপ তথা নানন ব'শ স্টিমানভাব গ্রহণা পূর্বম্প্রের কথনা সহ গুদ্ধাহ পরানরেবানিতি পঞ্চা । ২।০॥ করিয়া বলিলেন প্রাণ করিলাম। হে যোগিন্! দ্রনিড়াধিপতি সত্যন্তত নামা যে রাজর্ষি অতীত কল্পের অন্যানে ভগবানের সেবা করিয়া জ্ঞান লাভ করেন, তিনি বিবস্বতপ্তত মন্ত্র ইইয়াছিলেন তাহাও প্রাত ইইল। অপর শেই বৈবস্বত মনুর তনয় যে ইক্ষাকু প্রভৃতি রাজগণ তাহাও আপনি কহিয়াছেন। হে মহাভাগ! ঐ সকল রাজার পৃথক্ পৃথক্ বংশ ও বংশানু চরিত প্রবণ করিতে আমার নিত্যই অভিলাম হয়, অনুগ্রহ পূর্বকৈ কীর্ত্তন করুন। হে মহাভাগ! ঐ বংশে যে সকল ব্যক্তি হইয়া গিয়াছেন যাঁহারা পরে হইবেন, যাঁহারা সম্প্রতি বর্ত্তমান আছেন পুণ্যকীর্ত্তি সেই সকল মানবের বিক্রমও মণানৎ বলিতে আজ্ঞা হউক।

সূত কহিলেন প্রক্ষাণ বিজ্ঞাদিতের সভামধ্যে রাজা পরীক্ষিৎ কর্তৃক এই প্রকার জিজ্ঞাদিত হইয়া পরম ধর্মজ্ঞ শুকদেন বলিতে আরম্ভ করিলেন।

শুকদেৰ কহিলেন হে শক্তনাশন। প্রচুর রূপে মসুবংশের বিবরণ প্রাবণ কর, কিন্তু বহু শক্ত বংসরেও তাহার বিস্তারিত র্তান্ত বলিতে পারা যাইবে না॥ ১॥

হে রাজন! বে পরম পুরুষ পর ও অবর ভূত সকলের আ্যা, অথ্যে কেবল তিনিই ছিলেন, কল্পান্তে তদ্যতীত বিশ্ব অথবা অন্য কিছুই ছিল না। সেই পরম পুরুষের নাভি হইতে একটী হিরগ্র পদ্মকোষ উপাত হয়, হে মহারাজ! তাহাতে চতুর্থ এক্ষা উৎপন্ন হয়েন। ঐ এক্ষার মনঃ হইতে মরীচির জন্ম হয়। তাঁহার পুত্র কশ্যপ, ঐ কশ্যপের পত্নী দক্ষকন্যা অদিতি, তাঁহার গর্ভে কশ্যপের পর্বা বিবস্থান্ জন্ম গ্রহণ করেন। সেই বিবস্থান্ হইতে সংজ্ঞার গর্ভে শ্রাদ্ধিব মন্তু উৎপন্ন হয়েন। ঐ শ্রাদ্ধিবের ভাগ্যা শ্রহার গর্ভে শ্রাদ্ধিবের ভাগ্যা শ্রহার গর্ভে শ্রাদ্ধিবন ॥ ২ ॥

A

ইক্ষাক্ নৃগ শর্যাতি দিউ ধৃষ্ট করষকান। নরিষ্যন্তং পৃষ্ধক নভগঞ্চ কবিং বিভূ: ॥ ৩ ॥ অপ্রজন্ত মনোঃ পূর্বাং বশিষ্ঠো ভগবান্ কিল। মিত্রাবরুণয়োরিষ্ঠিং প্রজার্থমকরো ছিলু: ॥ ৪ ॥ তত্র প্রজা মনোঃ পদ্ধী হোতারং সম্যাচত। ছুহিত্রর্থমুগাগ্ম্য প্রণিপত্য প্রোক্রতা ॥ ৫ ॥ প্রেষিতোইধ্বয়ুর্গা হোতা ব্যাচর ও ও স্মাহিতঃ। গৃহীতে হবিষি বাচা বষ্ট্কারং গৃণন্ ছিলঃ। হোত্তভাভিচারেণ কন্তেলা নাম সাভবং। তাং বিলোক্য মৃত্যু প্রাহ নাতিত্ত ক্মনা গুরুং॥ ৬ ॥ ভগবন্ কিমিদং জাতং কর্ম বো ব্রহ্মবাদিনাং। বিপর্যয়মহোক্টং মৈবং আৰু ক্ম বিক্রিয়া।

शिषत्यामी।

নাভাগকেতি পাঠে নভগ এব নাভাগ:। ৩।

স্গাপৌত্রত স্ত্ররত স্ত্রিক দভি ব্ধাৎ প্ররবং প্রত্তি সোমবাশ সঞ্চারং বজুং সপ্রতাবমিলোপাধান্মাহ অপ্রক্ত শানোঃ
পূর্বমিতাদিনা বাৰদধ্যার সমাপ্তি। পূর্বমিকাকু প্রভূতীনামুংপত্তে প্রাক্ ॥ ৪ ॥

কুহিত্রর্থ: মম কলা যথা ভবেৎ তথা যজেতি হোলারং সমাক্ অযাচত পরএব এতমাহারো নিয়তো যক্ত ল: ॥ ৫ । অধ্বর্ধাণা হোলহাজেতি প্রেষিডো তেতো তেন গৃহীতে হবিধি সভি ভৎ তয়া প্রাথিতিং ধাারন্-বাচরৎ অবলং। পাঠা তবে তৎ অধ্যায়ৎ বাচা বহঠ কারং গৃণন্ ব্যজ্তি উচ্চারমন্ ॥ ৬ ॥

ব্ৰহ্মবিকিয়া মন্ত্ৰান্তপাৰং ॥ ৭ ॥

बी विश्वनाशठक वर्षी ।

পূর্ম: ইক্রাকুপ্রভৃতিপুরোৎপরে: প্রাক্ ॥ ৪ ॥ ছহিত্রথ: মম করা দগা ভবেত্রথা বজেতি ॥ ৫ ॥

অধ্বর্গা হে হোত বঁলেভি থেষিত:। হোতা হবিষি গৃহীকে সতি তৎরাফ্রী থার্থিতং ধাায়ন্ বাচরং। ব্রট্কারং গৃণন্ ব্রজ্িুচচাবয়ন্। অধ্যায়ত্তিবিভি বাচেভি পাঠে বাচা ব্যট্কারং গৃণন তৎ রাফ্রী থার্থিতং অধ্যায়ৎ ॥

ইলেতি রাজ্যৈ হর্ষেণ তৎক্ষণএর নাম কৃত্মিতাবসীয়তে। নাতীতাপ্রজ্বপেগমাৎ সামান্যতো হর্ষেৎপত্তে: ॥ ৬ ॥ অঙ্গবিক্রিয়া মন্ত্রান্যপাত্তঃ ॥ ९ ॥

তাহাদের নাম যথা ইক্ষাকু, নৃগ, শর্যান্তি, দিউ, ধৃষ্ট, করুষ, নরিষ্যস্ত,পৃষ্ধ, নভগ এবং কবি ॥ ৩॥ হে রাজন্! ইক্ষাকু প্রভৃতির উৎপত্তির পূর্ব্বে মন্তু অনপত্য ছিলেন, অতএব মহর্ষি বশিষ্ঠ তাঁহার সন্তানার্থ মিত্রাবরুণের যুজ্ঞ করেন ॥ ৪॥

মনুর পত্নী প্রদা, দেই যজ্ঞে পরোমাত্র পান পূর্বক নিয়ম পরা হইয়া হোতার নিকট গমন করিয়াছিলেন এবং প্রণাম করিয়া এই প্রার্থনা করেন, যে প্রকারে আমার কন্যা হয় তদ্রপ করিয়া আপনারা
হোম করান ॥ ৫ ॥

প্রার অভ্যর্থনায় "অহে যাগ কর" এই রূপে অধ্বর্ত্ত কর্ত্ত প্রেষিত হইরা হোতা হবি গৃহীত হইলে মনোমধ্যে ঐ রূপ ধ্যান এবং মুথে বষট্ এই শব্দ উচ্চারণ করত মনুপত্নীর প্রার্থিত সাধন করিলেন। হে রাজন্। হোতার এই প্রকার আচরণ হেতু মনুর ইলা নামে একটা কন্যা জন্মিল, মনুপ্রোর্থি ছিলেন পুত্রীলাভি ভাঁহার সন্তোষ জন্মিল না, অসন্তেউ মনে শুকুতে [বিশিষ্ঠকে] কহিলেন্ ॥৬॥

ভগবন্! আপনারা ত্রহ্মবাদী, আপনাদের এ কি বিপরীত কর্ম হইল ? আহো! কি কউ, এ প্রকারে মত্ত্রের অন্যথা হঙ্য়া উচিত হয় না। আপনারা ত্রহ্মপ্ত এবং যোগী, তপোহগ্রিভে আপনা- যুগং ব্রহ্মবিদাযুক্তা ন্তপ্যা দশ্ধকি নিষ্টা:। কৃতঃ সকলে বৈষম্যমন্তং বিবৃধে দিব ॥ १ ॥
নিশম্য তদ্বচন্ত্র ভগবান্ প্রপিতামহঃ। হোতুর্যতিক্রমং জ্ঞাত্বা বভাষে রবিনন্দনং।
এতং সংকলি বিষম্যং হোতুন্তে বাভিচানতঃ। তথাপি সাধ্যিষ্যেতে স্থাক্র স্থাক্রদা।
এবং ব্যবসিতো রাজন্ ভগবান্ স মহাযশাঃ। অন্তোষীদাদিপুরুষমিলায়াঃ পুংস্কাম্যা।
তিয়ে কামবরং তুটো ভগবান্ হরিরীখরঃ। দদাবিলা ভবতেন স্থান্তঃ পুরুষর্বভঃ।
স একদা মহারাজ বিচরন্ মুগ্যাং বনে। বৃতঃ কতিপ্যামাত্যেরখনারু ইন্দের্য বিষ্কারণ।

- * প্রগৃহ রুচিরং চাপং শরাংশ্চ পরমান্ত্রান্। দংশিতোহতুমুগান্ বীরো জগাম দিশমুক্তরাং।
 স্কুমারবনং মেরোরধন্তাৎ প্রবিশেষ। যত্তান্তে ভগবান্ শর্কো রমমাণঃ স্বোময়া।
- ় তিম্মিন্প্রবিষ্ট এবাদে সিহুলের পরবীরহা। অপশ্রত দ্রিয়মাত্মানমখণ্ড বড়বাং নৃপ। কণা তর্দুগাঃ দর্কে আত্মলিঙ্গ বিপর্যয়ং। দৃষ্ট্রা বিমনদোহস্থবন্ বীক্ষমাণাঃ পরস্পারং। শ্রীরাজোবাচ॥

কথ্যেবং গুণোদেশঃ কেন বা ভগবন্ কৃতঃ। প্রশ্নমেনং সমাচক্ষ্ পরং কৌভূহলং হি ন: ॥ ৮॥

थी पद्रश्रामी ।

প্রপিভামতো বশিষ্ঠ:॥৮।

শ্ৰীবিখনাপচক্ৰবৰী

প্রাপিত।মহো বলিষ্ঠ: ॥৮॥ বিগত জিনিরস্থাভাস: প্রজ্ঞারে।পি যাস্কু ভা: ॥৯।১০॥

দের অশেষ কলুষ দগ্ধ হইয়াছে, দেবগণে অনৃতের ন্যায় আপনাসকলে এরূপ সংকল্প বৈষ্যা কি রূপে হইল ?॥ ৭॥

হে রাজন্! সমুর ঐ সকল বাক্য শুনিয়া মহর্ষি বশিষ্ঠ হোতার ব্যুত্তিক মুঝিতে পারিলেন, পরে মমুকে কহিলেন বংশ! যদিও তোমার হোতারা অন্যথাচরণ করিয়াছেন তথাচ আমি তোমার সংপুত্রত্ব সাধন করিব। হে রাজন্। বশিষ্ঠ এই প্রকার বলিয়া মমুকন্যা ইলার পুংস্ক কামনায় ভগবান্ আদি পুরুষের স্তব্ব করিতে লাগিলেন। বশিষ্ঠের স্তবে অচিরেই ভগবানের সন্তোষ জন্মিল, তুই হইয়া ভগবান্ হরি, ওাঁহার কামানামুরূপ বর দিলেন, তাহাতে মমুক্তা ইলা স্ত্রাল্প নামে প্রেষ্ঠ পুরুষ হইলেন। হে মহারাজ! ঐ স্ত্রাল্প এক দিবদ সিন্ধুদেশোৎপদ অথ আরোহণ পৃথবিক কতিপয় অমাত্যে পরিরত হইয়া মৃগয়ার্থ বনে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। তাঁহার হস্তে মনোহর ধন্ম এবং বিচিত্রে শর সকল ছিল, আর তিনি গাত্রে দৃঢ়তর বর্ম্ম নিবদ্ধ করিয়াছিলেন, অতএব নির্ভার মৃগরণের পশচাৎ ২ গমন করত উন্তর দিকে উপনীত হইলেন। ঐ দিকে স্থানের পরিতে হেনিল ভাগে স্ক্রমার বন আছে, তথায় ভগবান্ শব্দী সর্বাল উমার দহিত ক্রীড়া কৌডুকে বাদ করিতেছেন। শক্রম্বণ সহ্যান্ধ অমুচরগণ সহিত সেই কাননৈ, প্রবেশ করিলেন। হে মহারাজ! সেই অরণ্য মধ্যে প্রবিষ্ট হইবা সাত্রে স্থান্থ আপনাকে স্ত্রী রূপি এবং শীয় ঘোটককে ঘোটকা মূর্ত্তি দেখিতে পাইলেন। আর তাঁহার সহচর পুরুষ সকলও অক্সাৎ স্থাব লিক্সের বিপর্যায় অবলোকন কুরিয়া পরস্পারকে নিরীক্ষণ করত্ব বিসায়াকুল হইল॥

রাজা পরীক্ষিং জিজ্ঞাসা করিলেন ভগবান্। ঐ স্থান ঐ রূপ গুণযুক্ত কেন হয় এবং কোন ব্যক্তিই বা ঐ স্থানকে তজ্ঞপ করিয়াছিলেন ? ঐ বিষয়ে শামার পরম কৌতুহল জন্মিল, আমার প্রদের

rea A

প্রীশুক উবাচ॥

একদা গিরিশং দ্রেন্ট্র্যয় স্তত্ত হুব্রতা:। দিশো বিভিমিরাভাসা: ক্র্বেন্ত: সম্পাগদন্। তান্ বিলোক্যাম্বিকা দেবী বিবাসা ব্রীড়িতা ভূশং। ভর্ত্রম্বাৎ সম্পায় নীবীমাশ্রপর্যাৎ ॥৯॥ খবরোহপি তরোবীক্য প্রসঙ্গং রম্মাণরো:। নির্ত্তা: প্রযয়ন্তব্যাৎ নরনারায়ণাঞ্জামং। তদিদং ভগবানাই প্রিয়ায়া: প্রিয়কাস্যয়া। স্থানং যঃ প্রবিশেদেতৎ দ বৈ যোষিদ্ধবেদিতি। তত উর্দ্ধং বনং তদৈ পুরুষা বর্জয়ন্তিহি॥ ১০॥

সাচাসুচর সংযুক্তা বিচচার বনাধনং। অথ তামাশ্রমান্তাদে চরন্তীং প্রমদোন্তমাং।
ন্ত্রীভিঃ পরির্ভাং বীক্ষ্য চকমে ভগবান্ বুধঃ। সাপি তং চকমে হুদ্রঃ সোমরাজ্বহুতং পতিং।
স তস্থাং জনরামাস পুরুরবসমাজ্বজং। এবং স্ত্রীত্মসু প্রাপ্তঃ হৃত্যুদ্বোমানবা নৃপ।
সম্মার স কুলাচার্য্যং বশিষ্ঠমিতি শুশ্রুম ॥ ১১॥

श्रीभद्रश्वामी ।

বিগতং তিমিরং আভাস: প্রকাশশ্চান্তন্ত ৰাজ্ তথা ভ্তা দিশ: কুর্বস্ত: ॥ ৯ ॥ প্রসঙ্গং রত।ভিনিত্রশং জীপ্রসঙ্গকল্মিত মনস: সন্তঃ তৎ প্রসঙ্গ শৃক্তং নরনারারণাশ্রমং প্রযুত্ত ॥ ১০ ॥ প্রসঙ্গিক মৃত্যু প্রতমন্ত্র্মিত সাচেতি অন্ত্রী সংযুক্তেতি বক্তব্যে ভূত পুর্বগত্যা পুংশ্নির্দেশ: ॥ ১১ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

ক্ষক্রাপীতি। তত্র লক্ষিত মনগোহনাত্রাপি তদাশক্য নিতরাং তৎপ্রেপক শৃক্তং নরনারায়ণাশ্রমং যবুং ॥ ১০ । ১১ । ১২ । ১০ ॥

🖺 বিখনাথচক্রবর্তী।

প্রাসঙ্গিকম্জা প্রস্তমাহ সা চেতি। অন্চরী সংযুক্তেতি বক্তবো ভূতপূর্বগতা। পুংস্নির্দেশ: ॥ ১১ ॥

বাখ্যা করিতে আজ্ঞা হউক ॥ ৮ ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্। একদা হাত্রত ঋষিগণ ভগবান্ গিরিশের দর্শন বাসনার স্ব প্রভাব ঘারা দিক্ সকলকে বিতিমির ও অভ্যপ্রভা শুন্য করত ঐ কাননে গমন করিয়াছিলেন। তৎকালে ভগবতী অষিকা দেবী বিবসনা ছিলেন, অভএব মুনিদিগকে অবলোকন করিয়া গাতিশয় লজ্জিতা হইলেন এবং ব্যস্ত সমস্ত পতির ফোড় হইতে উত্থান পূর্বকি সত্বর কটিবসন পরিধান করিলেন ॥ ৯॥

হরগোরীর জীড়াভিনিবেশ দর্শন করিয়া সেই সকল ঋষিরও মানস স্ত্রীপ্রসঙ্গে কলুষিত হইল, তাঁহারাও তৎক্ষণাৎ তথা হইতে নির্ত হইয়া নরনারায়ণাঞ্জনে গমন করিলেন। তাহার পর ভগবান্ শিব প্রেয়নীর প্রিয় কামনায় সাজ্বা করত বলিলেন অতঃপর যে পুরুষ এ হানে প্রবেশ করিবে সে তৎক্ষণাৎ যোষিৎ হইবে। হে রাজন্! তদবধি পুরুষ মাত্রে ঐ অরুণ্য পরিত্যাগ করিয়াছিল, কেহ সে দিকেও যাইত না ॥ ১০॥

সে যাহা হউক, রাজা স্ত্যুন্ন অনুচরগণ সহ এ বন প্রবেশানস্তর স্ত্রী রূপ প্রাপ্ত হইয়া বনে বনে অমণ আরম্ভ করিলেন। এক দিন ভগবান্ বুধ তাঁহাকে স্ত্রাগণে পরিবৃত হইয়া আশ্রম সমীপে অমণ করিতে দেখিতে পাইলেম। দর্শন করিবা মাত্র বৃণের কামোন্তব হইল এবং দেই স্ত্যুন্ন, যিনি মনোহর প্রমদা রূপিনী হইয়াছিলেন, তিনিও সোমরাজ তনয়কে নয়নগোচর করিয়া পতি করিতে অভিলাষিণী হইলেন অতএব বুধ পরিগ্রহ করিয়া তাঁহার গর্ভে পুরুরবা নামে একটী পুত্র উৎপন্ন

দ তক্ত তাং দশাং দৃষ্ট্রা রূপয়া ভ্শপীড়িত:। স্বত্যন্ন স্থাশান্ পুংস্তার্থাধাবত শক্ষরং।
তৃষ্টতিয়া দ ভগবান্ধয়ে প্রিয়মাবহন্। স্বাঞ্চ বাচয়ভাং কুর্মির্মির বিশাম্পতে।
মাদং পুমান্ দ ভবিতা মাদং স্ত্রান্তব গোত্রজঃ। ইত্থং ব্যবস্থা কামং স্বত্যন্নোহবতু মেদিনীং ॥১২
আচার্যাাসুগ্রহাৎ কামং লব্ধা পুংস্তং ব্যবস্থা। পালয়ামাদ জগতীং নাভ্যনন্দন্ স্ম তং প্রজাঃ।
তক্তোৎকলোগয়োরাজন্ বিমলশ্চ ত্রয়ঃ স্তাঃ। দক্ষিণাপধরাজানো বভূবুর্ধর্মবৎসলাঃ।
ততঃ পরিণতে কালে প্রতিষ্ঠানপতিঃ প্রভুঃ। পুররবদ উৎস্ক্র গাং পুক্রায় গতোবনং॥ ১০॥
॥ * ॥ ইতি প্রভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমস্কদ্ধে ইলো-

পাথ্যানং প্রথমোহধ্যায়: ॥ * ॥ > ॥ * ॥

बीधवन्त्रामी।

काभग्ने हेळ्न्॥ ১२॥

নাভ্যনন্দন্ স্ত্ৰীবে শজ্জ্যা মাসং মাসং নিশীয়াৰস্থানাৎ । ১৩ ॥

॥ 🕶 ॥ देखि नवत्म व्यवमः ॥ 🕶 ॥

क्रममर्खः

🛮 📲 । ইতি শীমন্তাগুৰত ক্রমসন্মর্ভে নবমন্তন্ধে শীকীবগোম্বামিক্ত প্রথমোহ্ধাার: স্মাপ্ত: ॥ 🕶 🛭

बीवियमाथहळ्वरही ।

আশরন্ ইছেন্। প্রিরমাবহন্ প্রীতিং দলান: । ১২ । নাজানন্দন্ ক্রীতে সতি মাসং নিলীয়াবস্থানাং । ততা স্থারতা । প্রতিষ্ঠানতা পতিরিতি তরৈব ততা রাজধানীং । গাং উংস্লা পৃথীং দলা । ১৩ ।

🛚 🛊 ॥ ইতি সারার্থদর্শিক্সাং হর্ষিণাাং ভক্তচেভসাং। নবমে প্রথমোহ্বারিঃ সঙ্গতঃ সঙ্গতে । 🛊 🗈

হে রাজন্। শ্রুত আছে মকুপুত্র স্থগ্ন ঐ প্রকারে স্ত্রীত্ব প্রাপ্ত হইয়া আপনাদের কুলাচার্য্য মহর্ষি বশিষ্ঠকে স্মরণ করিয়াছিলেন॥ ১১॥

তাহাতে দেই মহর্ষি তাঁহার সমীপে গমন করিয়া কুপায় অভিশয় পীজ়িত হয়েন এবং তাঁহার পুনরায় পুত্ত ইচ্ছা করিয়া শঙ্কর সমিধানে গমন পূর্বক তব স্তুতি করেন। হে নরনাথ! বশিষ্ঠের তবে ভগবান্ ভব পরিভূত হইয়া তাঁহার প্রিয় এবং আপনার বাক্য সত্য করিবার নিমিত্ত এই কহেন, তোমার গোজেজ অভ্যন্ত এক মাস পুরুষ ও এক মাস স্ত্রী হইবে। এই প্রকার ব্যবস্থায় এ রাজকুমার পৃথিবী পালন করিবে ৮১২॥

হে রাজন্। ঐ প্রকারে ক্লাচার্য্য ৰশিষ্ঠের অনুগ্রহে যদিও স্থ্যুন্ন পুনরায় পুংস্থ লাভ করিয়া ব্যবস্থাক্রমে পৃথিবী পালন করিয়াছিলেন তথাচ মাদ মাদ স্ত্রীত্ব হওয়াতে লব্দা প্রযুক্ত গোপনে লুকাইত থাকিতে বাধ্য হইতেন, স্তরাং প্রজাপুঞ্জ তাঁহার প্রতি দস্তুক্ত হয় নাই। দে যাহা হউক ঐ স্থ্যুন্দের তিন পুঞ্জ ছিল, উৎকল, গয় এবং বিমল। তাহারা তিন জনেই ধর্ম পরায়ণ এবং দক্ষিণা পথ দেশের রাজা হয়েন। প্রতিষ্ঠানাধিপতি স্থ্যুন্দ্র কিয়ৎ কালানস্তর জীবন কাল পরিণত দেখিরা আপনার আত্মজ্ঞ পুররবার হত্তে রাজ্য সমর্পণ পূর্বক বনপ্রস্থান করেন॥ ১০॥

॥ 🛊 ॥ ইতি নবদৈ প্রথম ॥ 🛊 ॥

শ্ৰীশুক উণাচ॥

এবং গতেহথ সূত্যন্ত্ৰ মনু বৈবিষতঃ স্থাতে। পুত্ৰকানস্তপস্তেপে যম্নায়াং শতং সমা: ॥ ১॥ ততো যজনু কুৰ্বে বনপত্যাৰ্থং হিনং প্ৰছুং। ইক্ষুকু পূৰ্বে জান্ পুত্ৰান্ লেভে স্ব সদৃশান্দশ ॥ ২॥ পৃষপ্ৰস্তু মনোঃ পুত্ৰা গোপালো গুৰুণা কৃতঃ। পালয় মাদ গা যতো রাজ্যাং বীরাসনত্রতঃ॥ ৩॥ একদা প্রাবিশদেগার্ছং শার্দ্ধলো নিশি বর্ষতি। শারানা গাব উপায় ভীতাস্তা বভ্যুত্র জে॥ একাং জ্ঞাহ বলবান্ দা চুক্রোশ ভয়াত্রা। তস্তাস্ত ক্রেশিতং প্রেছা পৃষ্ধোহন্ত্র সদারহ॥ ৪॥ থড়গমাদায় তর্সা প্রলীনোড়ুগণে নিশি। অজানম্ভিনোছভোঃ শিরঃ শার্দ্ধলশক্ষা। ৫॥

औपत्रशामो

ৰিভীবে মহপ্তাণাং ৰাৰপুক্ৰো বিৱাগতঃ। কর্ষকাদি পঞ্চানাং বংশানাহ লঘুক্ৰমাৎ ॥ ১ ॥ ইফাকু: পৃথ্যজো যেষাং তান্ ॥ ২ ॥

ওঅঁপ্ৰএফ বংশো নাভবদিতি সহেত্কমাহ প্ৰএখিত।।দিনা কবিং কনীয়ানিতাতঃ প্ৰাক্তনেন প্ৰছেক। থ্জাপাণেঃ সত-তিঠিতো জাগরণং বীরাসনং তদেব ব্ৰতং ৰফ যতঃ অবহিতঃ সন্পাঃ পালয়ামাস ॥ ০ ॥

শার্দ্রো ব্যাত্র: ॥ ৪ । প্রলীনা উড়ুগণা যত্মিন্ সমরে বভ্রো: কলিবারা গো: । ৫ ॥

এবিখনাগচক্রবর্ত্তী

প্যধো গুরুণা তাতে পাপণারং তমতাজন্। ব্দুক্মাঝনোর্বংশ বর্ণনঞ্দিতীয়ত: ॥ ১। २॥

ত্তা প্ৰথল বংশোন।ভূদিতি সহেতৃক্ষাহ প্ৰথ ইত্যাদিনা। থড়গপাণে: স্ত্তিষ্ঠতো জাগরণং বীরাসনং তদেব ব্রঙং যতা সংখ্র: সাবধান: ৪৩।৪॥

নিশি রাত্রৌ ভ্রাপে মেবারুভ্রাৎ প্রলীনে নক্ষত্রগণে স্তি অত্তব্যকানন্ ব্যাঘশক্ষা ব্রো: ক্পিলায়া গো: ॥ ৫ ॥

দ্বিতীয়াধ্যায়ে কর্মাদি পঞ্চ মনু পুজের বংশ বিবরণ॥ •॥

শুক্ত কামনা করিয়া শত বংশর যাবং যম্নায় তপস্থা করিয়াছিলেন ॥ ১ ॥

তাহার পর সন্তানার্থ ভগবান্ হরির যজ্ঞ করেন,তাহাতে তাঁহার আত্মগমান দশটা পুত্র লাভ হইয়া-ছিল। দেই দশ পুত্রের মধ্যে ইক্ষাকু জ্যেষ্ঠ ॥ ২ ॥

হে রাজন্! মনুর পৃষ্ধ নামে যে পুত্র হইয়াছিল, তাহাকে গুরু গোপালক করিয়াছিলেন অতএব দেই তনয় বীরাদন (খড়গ হস্ত হইয়া রঙ্জনী জাগরণ) রূপ ত্রত অবলম্বন পূর্বকে নিশাভাগে অবহিত হইয়া গো সকলের রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন ॥ ৩॥

এক দিন রাজিতে বারি বর্ষণ হইতেছিল সেই সময় একটা ব্যান্ত আগিয়া গোষ্ঠমধ্যে প্রবিষ্ট হইল। তাহুতে শরান গো সকল ভীত হইয়া গোষ্ঠ মধ্যে ইতস্ততঃ ধাবিত হইতে লাগিল। যে শার্দ্দুল গোষ্ঠে প্রবিষ্ট হইল,সে অতিশয় বলবান্, একটা গাভীকে বলে গ্রহণ করিয়া পলায়ন পর হওয়াতে সেই ধেমু ভয়াতুরা হইয়া কাতরে আর্তনাদ আরম্ভ করিল। ধেমুর চীংকার ধ্বনি প্রবণে প্রম্ম গেই শার্দ্দুলের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইলেন॥ ৪॥

একে অন্ধকারময় রজনী তাহাতে আবার মেঘারত হওয়াতে নক্ষত্রগণ বিলান হইয়াছিল, বিশেষ দর্শন না হওয়াতে পৃষ্ধ খড়গ গ্রহণ পূর্বকি সমাপে উপস্থিত হইয়া ব্যাত্র মনে করিয়া অজ্ঞানতঃ একটী গাভীর মস্তক ছেদন করিয়া ফেলিলেন। ৫॥

ব্যান্থেহিপি ব্রহ্মবণা নিজ্ঞিংশাথাহতস্ততঃ। নিশ্চক্রাম ভূশং ভীতো বক্তং পথি সমুৎস্তুলন্ ॥৬ মন্যমানে। হতং ব্যাত্রং পৃষধ্রং পরবীরহা। অদ্যাক্ষীৎ স্বহতাং বক্রং ব্যুটায়াং নিশি ছুঃথিতঃ ॥৭॥ তং শশাপ কুলাচার্য্যঃ কৃতাগদমকামতঃ। নক্ষত্রবন্ধুং শুদ্রস্থং কর্মণা ভবিতাহমুনা। এবং শপ্তস্ত গুরুণা প্রত্যাসূহাৎ কুঁতাঞ্জলিঃ। অধারয়ৎ ব্রতং বীর উপ্করেতা মুনিপ্রিয়ং॥ বাহদেবে ভগবতি সর্বাত্মনি পরেহমলে। একান্তিস্থং গতো ভক্ত্যা সর্বাস্ত্র স্থহংসমঃ॥ বিমুক্তদক্ষঃ শান্তাত্মা সংযতাক্ষোহপরিগ্রহঃ। যদুচহয়োপপন্মেন কল্পয়ন্ বৃত্তিমান্ধারঃ।

শীধরত্বাসী।

গাং কামতো ন জ্বানেতি থাপিয়িছুং বুকু শ্রণ ইতাাছাকং॥ ব্যুষ্টায়াং প্রভাতায়াং॥ ৭॥ ক্রব্রুষ্ণ তংল ভবিতা অপিতু শ্রো ভবিতেতি॥৮॥

53

ক্রমসনার্ভ:

তেনা গ্ৰে সংমিশ্র াদেব সহসা তবং নির্পেতৃং ন শক্ত ইত্যাহ ব্যাজোহপীতি ॥ ১।২।০।৪।৫।৬॥ তত্ম চাঞ্তাপো লাত ইত্যাহ মনামান ইতি ॥ ৭॥ তত্মচ তত্ম স্বল্ল প্রায়শিচ লাহ তিলি পাতিত্যে পোদ্যামাত্র শুরোঃ। শাপ্তব কারণ্মিত্যাহ ত্মিতি তিক্তিং॥

শ্ৰীবিশ্বনাণচক্ৰবন্তী ।

বুক্সবং ছিন্নকর্ণ যতোনিস্তিংশভার্যেণ আহতঃ ॥ ৬ ॥ বাষ্টায়াং প্রভাতায়াং নিশি॥ ৭ ॥

অকামতোহনিচ্ছাতোপি কুতাপ্ৰাধং তং শশাপ। নতু কুপন্না প্ৰায়-চিত্তমুপদিদেশ অতিকোপেন বিচারাপ্রমাদিতি ভাব:। যতঃ কুলাচার্যা: কুলপৌরোহিতাত তমোবহললাং। কণং বিগহু হ করোম্যীখরা: পৌরোধসং হ্যাতি যেন হুর্মতিরিতি বিশ্বরূপোকে: শাল্মাহ ক্তত্তবন্ধ্রপি ডংন ভবিতা অপি তুশুল্ল এব ॥ '

কুভাঞ্জিলিং সন্ শাপং মহাপ্রমাদ্যিব প্রভাগৃহ।দিভি। ওকভেজিলাকণং নতু ছমপরাম্ভা মহং কিমিভি বুণা শণসীতি প্রভাবা-চেতি ভাবং। তেন পরিতাজোশি ওবৌ ভিজিমান্ নিপ্রভা্হং নিজারভীতি প্রাক্ষণিকং সিদ্ধান্তোদ্যোভিতঃ। ম্নিপ্রিয়ং বহুং বিদ্ধান্থ

তাঁহার থড়াগ প্রহারে ব্যায়েরেও কর্ণ ছিন হেইল,দে দাতিশা ভীত হেইয়া পথে পথে শোণিত নিঃস্ত করত নিজ্ঞান্ত হেইয়া পলাইল ॥ ৬॥

শক্রনাশন পৃথপ্র মনে করিয়াছিলেন ব্যাস্ত্র নিহত হইয়াছে কিন্তু রজনী প্রভাতা হইলে দেখিলেন কপিলা নিহত হইয়াছে অতএব যৎপরোনান্তি তুঃখিত হইলেন ॥ ৭ ॥

হে রাজন্। যদিও রাধকুমার প্যথের ঐ অপরাধ অজ্ঞান কত, তথাচ কুলাচার্য্য ধেনুশোকে ব্যাকুল হইয়া তাঁহাকে এই বলিয়া শাপ দিলেন, অরে পাপিষ্ঠ। তুই ক্ষত্রবন্ধুও হইতে পারিবি না, এই কর্মা জন্ম শুদ্র হইবি। আচার্য্য এই প্রকারে অভিশাপ দিলে পৃষধ্র কৃতাঞ্জলি হইয়া তাহাই স্বীকার করি-লেন, পরে উদ্ধ্রেতা হইয়া মুনিদের প্রিয়ত্রত ধারণ করিলেন। তদনন্তর দর্বাত্মা নির্মাণ পরম পুরুষ ভগবান্ বাহ্যদেবে ভক্তি করত একান্তিত্ব প্রাপ্ত ও সর্ব্যক্তাকর হছদ্ এবং সর্ব্যক্তাকর দ্বাতা বাহার সঙ্গত্যাগ, আত্মা শান্ত এবং চক্ষুর্য সংযত হইল। পরিশ্রহ শৃত্য হইয়া যদ্ভ্যা লক্ষ দ্বের আপনার বৃত্তি করিতে লাগিলেন এবং পরমাত্মায় আত্ম সমাধান পূর্বক জ্ঞান তৃপ্ত হইয়া জড় অন্ধ অথবা বধিরের

7

2

আত্মতাত্মানমাধার জ্ঞানতৃপ্তঃ সমাহিতঃ। বিচচার মহীমেতাং জড়ান্ধ বধিরাকৃতিঃ ॥৮॥
এবং বৃদ্ধোবনং গরা দৃষ্ট্বা দাবামিম্থিতং। তেনোপযুক্তকরণো এক্ষা প্রাপ পরং মৃনিং॥৯॥
কবিঃ কনীয়ান্ বিষয়েয়ু নিম্পৃহো বিস্কা রাজ্যং সহ বৃদ্ধাতির্বনং।
নিবেশ্য চিতে পুরুষং স্বরোচিষং বিবেশ কৈশোরবয়াং পরং গতঃ॥
কর্ষাম্মানবাদাদন্ কার্যাঃ ক্ষত্রজাতয়ঃ। উত্তরাপথগোপ্তারো এক্ষণ্যা ধর্মাবংসলাঃ ॥ ১০॥
ধৃতীদ্ধাত্ত মিস্তুৎ ক্ষত্রং এক্ষপুরং গতং ক্ষিতে ॥ ১১॥
নৃগস্থ বংশঃ স্ক্মতিস্থ্ তিজ্যোতি স্ততো বস্থঃ॥ ১২॥

धीपत्रवामी।

উপযুক্তকরণ: দগ্ধদেহ: ॥ ৯ ॥

কবেরপি বংশে। না ভবদিত্যাহ কবিরিতি। বন্ধুভি: সহ রাজ্যং বিস্ফা ॥ ১০ ॥

ত্রকভূমং ত্রাকণবং ॥ ১১ ॥

নৃগক বংশ: পুত্ৰ: স্মতি: ভতো ভূতজোতিস্ততোবসু: ॥ ১২ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

ভপাপি ভক্ত শোশীল দেবাহুবৃত্তমিত্যাহ এবনিতি ॥ ৮॥ ৰাহ্মদেৰ ভক্তৰাচ্ছ্ৰদেৰপি মুক্তিমাহ এবং বৃত্ত ইতি ।৯০১০।১১।১২।১৩।১৪।১৫।১৬।১৮।১৯।২০।২১।২২।২৩।

ঐ বিখনাপচক্রবন্ধী।

আত্মনি মনসি আত্মানং ভগবন্তং। জ্ঞানে তৃপ্তঃ কিন্তু ভেকাবতৃপু ইতি ভাবঃ ৪৮॥
উপযুক্তকরণো দ্ধানেই প্রং প্রক্ষ শ্রীক্ষাং॥ ১॥
কবেরপি বংশোনাভবদিতাাই কবিরিতি। বন্ধিঃ সহিত্মেব রাজ্যং বিক্ষা বনং বিবেশ ॥ ১০॥
ব্যাক্সাং প্রাক্ষাণ্ডং বংশঃ পুদ্রঃ॥ ১১। ১২॥

আকারে পৃথিবী পরিভ্রমণ করিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৮ ॥

হে রাজন্! পৃষ্ধ ঐ প্রকার আচার ব্যবহার সমন্বিত হইয়া বন প্রমন পূর্বেক দেখিলেন অগ্রে দাবামি উথিত হইয়া রহিয়াছে অতএব দেই অমিতে প্রবেশ পুরঃসর কলেবর ভত্মদাৎ করিয়া পর অন্ধ প্রাপ্ত হইলেন॥ ৯॥

হে ভারত ! মমুর কনিষ্ঠ পুদ্র কবি বিষয়ে নিঃস্পৃহ ইইয়া বদ্ধু বাদ্ধব সহ রাজ্য বিসর্জন করেন, পরে অন্তঃকরণ মধ্যে পরম পুরুষকে ধারণ পূর্বক কৈশোর বয়দেই অরণ্য প্রবেশ করিয়াছিলেন, স্করাং তাঁহার বংশ হয় নাই। পরস্ত মমুর করম নামে যে পুত্র ছিল তাহা হইতে কারম এই আখ্যায় বিখ্যাত ক্ষত্রিয় জাতি উৎপন্ন হয়। তাহারা ত্রক্ষনিষ্ঠ, ধর্মরক্ষক এবং উত্তরাপথ দেশের গোপ্তা ॥ ১০ ॥

এই রূপ ধৃষ্ট নামক সমুতনয় হইতে ধাষ্ট বিলিয়া প্রসিদ্ধ ক্ষত্রিয় জাতি উৎপন্ন হয়,তাহারা অবনী-মণ্ডলে ব্যাহ্মণত্ব প্রাপ্ত হইলাছে ॥ ১১ ॥

হে রাজন্। নৃগ নামক যে মনুতনয় তাঁহার পুত্র হৃষতি, তাহার সন্তান ভূতজ্যোতিঃ, তাহার পুত্র বহু॥ ১২॥

1

বদোঃ প্রতাকস্তৎ পুত্র ওঘবানোঘবৎ পিতা। কন্তা চোঘবতীনাম হুদর্শন উবাহ তাং । ১০॥ চিত্রেদেনো নরিষান্তাদৃক্ষন্ত হুতে। ভবং । তত্য মীচাং হুতঃ পূর্ণ ইন্দ্রদেনস্ত তৎ হৃতঃ ॥ বীতিহাত্রেন্ত্রিন্দ্রদানতত্য সত্প্রবা অভূহ। উরুপ্রবাঃ হুতন্তত্ত দেবদত্ত হুতে। চহান্দিঃ ॥ ততোহিনিবেশ্যা ভগবানিমিঃ স্বয়সভূহ হৃতঃ। কানীন ইতি বিখ্যাতো জাতুকর্ণো মহান্দিঃ ॥ ততো অক্সকুলং জাতমানিবেশ্যায়নং নূপ। নরিষান্তাশ্বয়ঃ প্রোক্তো দিউবংশমতঃ শৃণু॥ ১৫॥ নাভাগো দিউপুলোহতাঃ কর্মণা বৈশ্যতাং গতঃ। ভলন্দনঃ হৃতন্তত্ত বংসপ্রীতির্ভলন্দনাং ॥ বংসপ্রীতেঃ হৃতঃ প্রাংশু ন্তং প্রমৃতিং বিহুঃ। খনিত্রঃ প্রমতেন্ত্রমান্তাক্ষ্রোহণ বিবিংশতিঃ॥ বিবংশতেঃ হৃত্রারন্তঃ খনীনেত্রেহিত্য ধার্মিকঃ। করন্ধনো মহারাজ তত্ত্বাদীদান্ত্রলা নূপঃ ॥১৬॥

শ্রীধরসামী।

ওব্ৰভঃ*পিতা তুহঁ পুলোপোগ্ৰবানেৰেতাৰ্থ: ॥ ১৩ ॥

তদেবং এতি: শোকৈ: করাৰ ধৃষ্ট নুগাণাং অয়াণাং বংশা উকা:। নিরিষ্যা**ত বংশনাহ চিত্তিনেন ইতি সাতিরিতি:**। তত ইত্যাদেগতাধিকাং হাওতানভুৰ্যো তত ইত্যাদি পদং ব্যাধারেং যাত্ত্ন্নহাং ততা পূর্বতি পরতা বা **অসুৰ্গা**দিভিবিয়াখোয়ং ॥১৪॥ অগ্রিশো এব কানীন ইতি জাতুক্ল ইতি চ ব্যাধ্যাত: ॥১৫॥

দিইভ পুলো নাভাগো ৰক।মাণার।ভাগাদভ ইতি ভ্রান্তি বুদোমার্থমত্বাদ মাতাং ॥ ১৬ ॥

জীবিশ্বনাপচক্রবরী।

ওৰ্বত: পিতেতি ভং পূ⁄্ল:পোষ্বানিভাৰ্থ: ॥ ১৪ ॥ অগ্নিংগেশু এব কানীন ইভি জাতৃকৰ্ণ ইভি চ খাতি: ॥ ১৫ ॥ অহা ইভি ভাঃতি বোরণাৰ্থ: বিজ্ঞাণালাভাগাং ভিল ইভাৰ্থ: ॥ ১৬ ॥

বহুর সন্তান প্রতীক, তাহার পুত্র ওঘবান্। ঐ ওঘবানেরও ওঘবান্নামে এক তনয় ও ওঘবতী নালী এক তনয়া জন্মে, হুদর্শন রাজা ঐ কন্মার পাণি গ্রহণ করেন॥ ১৩ ॥

হে রাজন্! নরিষ্যন্ত নামে যে মমুপুত্র তাঁহার পুত্র চিত্রেদেন, চিত্রেদেনের পুত্র ঋক, ঋক্ষের তনয় নীচুান্, তাহা হইতে পূর্ণ উৎপন্ন হয়েন। সেই পূর্ণের সন্তান ইন্দ্রদেন, তাহার পুত্র বীভিহোত্র, তাহা হইতে সত্যন্ত্রবা জামা গ্রহণ করেন। ঐ সত্যন্ত্রবার সন্তান উরুশ্রবা, তাহা হইতে দেবদত্তের উদ্ভব হয়॥ ১৪॥

দেবদত্তের তনর অগ্নিবেশ্য, ভগবান্ অগ্নি স্বয়ং তাঁহার পুত্র রূপে উৎপন্ন হয়েন। ঐ অগ্নিবেশ্যই কানীন ও জাতুকর্ণ নামে বিখ্যাত মহান্ ঋষি হইয়াছিলেন এবং তাঁহা হইতেই অগ্নিবেশ্যায়ন নামে প্রদির ত্রহাকুল উৎপন্ন ইইয়াছে। হে নৃপ! নরিষ্যন্তের বংশ বর্ণিত হইল, অতঃপর দিউ বংশ বলি প্রবণ কর। ১৫॥

দিফের পুত্র নাভাগ,পরে যে নাভাগের কথা বলিব সে নাভাগ নহেন,ইনি অন্য,কর্মনার বৈশ্যতা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ইহার তনয় ভলন্দন, ভলন্দন হইতে বৎসপ্রীতির উৎপত্তি হয় । বৎসপ্রীতির পুত্র প্রাংশু, তাহার পুত্র প্রমিতি। প্রমিতির তনয় খনিত্র, তাহা হইতে চাক্ষ্ম জন্ম গ্রহণ করেন। চাক্ষ্যের তনয় বিবিংশতি, তাহার পুত্র রস্ত । রস্তের নন্দন খনীনেত্র, যিনি পরম ধার্মিক ছিলেন। ঐ খনীনেত্রের আত্মজ করক্ষম রাজা॥ ১৬॥

তস্থাবিকিং স্ত্রো যাস্থা সক্তর্শতক্রণ বিজ্ব । সংবৃত্তি হিষাজয়দয়ং বৈ মহাযোগ্য পির: হতঃ ॥১৭ সক্তর্ম যথা যজে। ন তথা যোগি কশ্চন। দর্বাং হিরগ্রাং ত্বাদীদ্ যথ কিঞান্তাম্ম শোভনং ॥১৮ আনাদ্য দিলেঃ সোমেন দক্ষিণাভিত্তি জাতয়ঃ। মক্তঃ পরিবেইটারো বিশ্বেদেবাঃ সভাদদঃ। মক্তন্য দনঃ পুত্রস্ত্রস্যাসী দাজবর্দ্ধনঃ। স্থৃতিত্তথ স্থৃতে জাজে সৌধুতে রো নবঃ স্তৃতঃ। কথ্য কেরল ক্র্যাথ ধুনুমান্ বেগবাং স্তৃতঃ। বুধস্ত্রদা ভবদ্যদ্য তৃণবিন্দুর্মহীপতিঃ॥ ১৯॥ তং ভেজেইলমুমাদেবী ভজনীয় গুণালয়ং। বরাপ্সরা যতঃ পুত্রাঃ ক্রা চেলবিলাভবং। যাস্থামুৎপাদয়ামাদ বিশ্রবা ধনদং স্তৃতঃ। প্রাদায় বিদ্যাং প্রমাম্বি রোগেশরঃ পিতৃঃ॥ ২০॥ বিশালঃ শৃত্যবন্ধুন্দ ধ্রুকেতৃশ্চ তথ্য হাঃ। বিশালো বংশক্ষাজা বৈশালীং নির্মানে পুরীং॥২১॥

क्रियतचात्री ।

অক্রিস: সুতো সহাযোগী সমুর্তো যম্যাজ্যং স মরুতঃ ॥ ১৭ ॥

ব্দক্ষ বং কিঞ্ছি পাত্র।দিকসন্তি তত্ত্র্কং হির্ণারং শে।ভন্মাণীং । ১৮।

क्रमानार क्रमार ॥ ১৯ ॥

ৰতে। ষভাং তৃণবিদ্যোঃ পুত্ৰা অভবন্ ॥ ২০ ১

ভানেবাহ বিশাল ইতি। তভ তৃণবিলো: সুভা: ॥ ২১ ॥

बी विश्वनाष्ठक १ खीँ।

অক্ত বং কিঞ্চ কিঞ্চিৎ পাত্র।দিকমন্তি আসীং। তৎ সর্বাং হিরশ্বরং শোভমানমাসীং ॥ ১৭ । ১৮ ।

বিজাতযো বিপ্রা অপি অমাদান্ অহ্যান্॥ ১৯॥

वतः वकाः ज्यानित्माः भूखा विभागामाः ॥

लिक्रुक्त न नागार विनााः खालाग्न खाला ॥ २०। २०॥

করন্ধমের পুত্র অবিকিৎ, তাহার পুত্র মরুত, যিনি চক্রচতী হয়েন এবং অঙ্গরার পুত্র মহা-যোগী দম্বর্ত যাঁহাকে যজ্ঞ কর।ইয়াছিলেন ॥ ১৭॥

প্র মরুতের যজ যজ্প প্রাদিদ্ধ কছুই তজ্ঞাপ নহে। তাঁহার যজ্ঞপাত্রাদি যে কিছু সমুদায় হির্মায় ও স্লোভন ছিল ॥ ১৮॥

মরুতের যজে সোমরদ পান করিয়া ইন্দ্র হবিত হইতেন, প্রচুর দক্ষিণা লাভে বিপ্রবর্গের আহলাদ জন্মিত। অপর দেই যজে মরুদাণ পরিবেইটা ও বিশ্বদেশগণ সভাদদ হইয়াছিলেন। দে যাহা হউক, ঐ মরুতের তন্য় দম, তাহার পুজ্র রাজবর্ধন, তৎহত অধৃতি, অধৃতির তন্য নর, তাহার পুজ কেবল, তাহা হইতে ধুকুমান্ উৎপন্ন হয়েন। ধুকুমানের তন্য বেগবান্, তাহার পুজ বুধ, তাহার সন্তান তুণ বিন্দুরাজা । ১৯॥

ঐ রাজা ভজনীয় ভূরি ভূরি গুণে বিভূষিত ছিলেন, শ্রেষ্ঠা অপ্সরা অলমুষ্ট দেবী দেই গুণে নোহিত হইরা তাঁহার সহিত সঙ্গতা হন। অতএব অলমুষা অপ্সরায় তৃণবিন্দুক কতিপয় পুত্র ও ইলবিমা নামে এক কন্মা উৎপন্ন হয়। হে রাজন্! যোগীশ্বর বিশ্রবা ঋষি পিতৃ মকাশাৎ পরম বিদ্যা প্রাপ্ত হইয়া ঐ ইলবিলার গর্মে কুবেরকে উৎপন্ন করেনে॥ ২০॥

সে যাহা ২উক, অতঃপর তৃণবিন্দুর পুত্রনিগের বিবরণ বলি, শুন। বিশাল, শৃত্যবন্ধু এবং ধুমকেছু এই তিন জন তৃণবিন্দুর তন্ম। তন্মধ্যে বিশালই বংশকারী রাজা হয়েন এবং তাঁহা হইতে বৈশালী পুরী নিম্মিতা হয় ॥ ২১॥

বেষ্টব্র: হাতত্ত্ব ধূআকত্তত্ত চাজজ: । তৎপুত্রাৎ সংযদাদাসীৎ কৃশাখা: সহদেবজ: । কৃশাখাৎ সোমদতোহস্থাবেশির দিব কিশাখা হিন্দু ক্রাপ্তি । ইউবা পুরুষমাপাত্রাং গতিং রোগেখরাঞ্জিতাং। সৌমদত্তিত্ত হ্যতি তথ পুত্রোজনমেজয়: ॥ ২২ ॥ এতে বৈশালস্থালা তুণবিন্দোর্গোধরাঃ ॥ ২০ ॥

॥ ॥ ইতি জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহুংস্তাং সংহিতায়াং বৈয়ালিক্যাং নবসক্ষে দিতীয়োহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২ ॥ # ॥

শ্ৰীপ্তক উবাচ ম

্শর্যাতি মানবোরাজা ত্রন্মিঠঃ সংবভূবছ। যোৰা অঙ্গিরদাং সত্তে বিভীন্নদহরাচিবান্॥ ১॥

वीधवयामी।

সহদেৰজঃ দেবজন সহিতঃ। সহ দৈৰত ইতি পাঠে নামাস্তমাতঃ অৰ্প্সন্তৰ ॥ ২২ ॥ বৈশাশ ভূপালাঃ বিশালভাৰমে জাতাঃ ॥ ২৩ ॥

॥ ♦ ॥ ইতি নবমে শ্বিতীয়: ॥ ♦ ৪

তৃতীয়ে মনুপূত্ৰত শৰ্যাতে: কীৰ্ত্তাতে হ্ৰম:। যতে সৌক্তামাধ্যানং বৈৰত ক মহাজুতং । • ॥ ব্ৰিষ্ঠি: বেদাৰ্থ তথ্যজ্ঞ: তদেবাহ যো বা ইতি। বিতীয়মহ: বিতীয়েহ হি কিয়মাণ: কৰ্ম উচিবান্ উৰাচ্॥ > ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

॥ 🕶 ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্ষে শ্রীকীবগোস্থামিকত ক্রমসন্তর্ন্য বিজীবোহণ্যার: সমাধা: ॥ ಈ ॥
সক্রমূত্তিত্ব নিরোধোহভূলতৃপ্রবাস্তরমিত্যক কারণং প্রাঙ্নিজাশ্রম মালিন্যহানেছে। যা ফাতা তামকু ক্তৈতাব ক্রমুক্ষায়।
মুনিক্ত: ক্রোণ্ডব বিশেষ ইতি ফেরং ॥ ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । ১১ । ১২ । ১৩ । ১৪ । ১৫ ॥

🖲 বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

তক্ত তৃণবিন্দো: হুডা: ॥ ২২ । ২০ ॥

দ * ॥ ইতি সার্থিদর্শিস্তাং ছবিণাাং ভক্তচেতসাং। বিভীয়োনবমস্থাভ্ৎ সক্তঃ সকতঃ স্তাং ॥ * ॥ শর্যাতের্ম্পূত্রস স্কলা চাবনং পতিং। লেভে তৃতীয়ে শর্যাতি বংশা শ্রীরেবেতী বলং ॥ • ॥ ব্যক্ষিত বেদার্থ তদ্বজঃ তদেবাহ যে। বা ইতি বিস্তীয়মহঃ বিতীয়েহেছুি ক্রিয়মাণং কর্ম উচিবান্ ভক্ত বাবস্থাম্বাচ ॥ ১। ২॥

ঐ বিশালের স্থত হেমচন্দ্র,তাহার তনয় ধ্আক, তৎ পুত্র সংযম। ঐ সংযম হইতে দেবল ও রুশাখ এই সূই পুত্র উৎপন্ন হয়। তমধ্যে রুশাখের স্থত সোমদত, যিনি বহু বহু অখনেধ যজ্ঞ ছারা যজ্ঞপতি পর্ম পুরুষের অর্চনা করিয়া যোগেশরদিগের আঞ্জিত অ্ঞাগ গতি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। সোমদত্তের স্থত স্থমতি, তাহার পুত্র জনমেজয়॥ ২২॥

হে রাজন্! বিশালবংশে এই সকল নূপতি জন্ম গ্রহণ করেন, ইহাঁরা তৃণবিন্দু রাজার যখোধর ছিলেন॥ ২৩॥

। *। ইতি নবমে দ্বিতীয় ॥ *।

তৃতীয়াধ্যায়ে সৌকভাথ্যান ও রৈবতাথ্যান সমেত মনুতনয় শর্যাতির বংশ কীর্ত্তন ॥ ০ ॥
শুকদেব কহিলেন হে রাজন্ ! মনুপুত্র শর্যাতি অতিশয় ত্রন্মিষ্ঠ অর্থাৎ রেদার্থ তত্ত্বজ্ঞ রাজা হয়েন।
তিনি অঙ্গিরাদিগের সত্রে দিওীয় দিবসের কর্ত্তব্য কর্ম্ম উপদেশ করেন॥ ১ ॥

হকন্যা নাম তস্থানীৎ কল্পা কমললোচনা। তয়া সার্দ্ধং বনগতোহ্ণসচ্চ্যবনাপ্রমং।
সা সধীভি: পরিবৃত্তা বিচিম্বস্তাজিনুপান্ বনে। বল্লীকরদ্ধে দদৃশে খলোতে ইব জ্যোতিষী।
তে দৈবচোদিতা বালা জ্যোতিষী কণ্টকেন বৈ। অবিধান্মন্ধভাবেন হস্পাবাস্ক্ তভোবহি:।
শক্ষুত্র নিরোধাইছ্ৎ সৈনিকানাঞ্চ তৎক্ষণাং। রাজ বিষ্মুপালক্ষ্য পুরুষান্ বিশ্মিতোই ববিং।
অপাভন্তং নমুন্নাভির্তাগ্রস্থ বিচেষ্টিতং। ব্রেং কেনাপি ন স্বস্থ কৃত্যাজাম দৃষণং।
অকন্যা প্রাহ পিতরং ভীতা কিঞ্চিৎ কৃতং ময়া। বে জ্যোতিষী অজানন্ত্যা নির্ভিদ্ধে কণ্টকেন বৈ।
ছহিত্ত বচঃ শ্রেষা শ্রাতি জাত সাধ্বসং। মুনিং প্রসাদয়ামাস বল্মীকান্তর্হিতং শনৈঃ। ৩ স্ব্রু তদভিপ্রায়মাজ্যা প্রাণাং ছহিতরং মুনেঃ। কৃত্যানুক্ত সমামন্ত্র্য পুরং প্রায়াৎ সমাহিতঃ।

निधत्यामी।

তস্য ৰংশমুত্তানবছি রানর্ক ইড্যাদিনা বক্ষাতি। আদৌ তাবৎ কল্পা বৃত্তাস্থমাহ স্কল্পা নামেত্যাদিনা_{্ট} ২ ॥ ভার্গবন্ধ চ্যবনক্ত অভন্তং অপরাধ: ॥ ৩ ॥

মুধেরং মম কলা কত্তব্যং প্রেকু।চামানে কভিবর্বাণ।ভা বিবাহ: ক্তো ন বেত্যাদি বাকৈ।ভদভিপ্রারং আল্বা ভবৈ ভাং

এবিখনাণচক্রবর্তী

বিচেষ্টিতং ক্বতং মোহত্মাকং মধ্যে কেনাপি বা ন ক্বতং ॥ ৩ ॥

মুয়েরং নন কল। ক্ষনাতানিত্যচানানে কীদৃশী তে কল। তভা বিবাহোহত্র বেতি বক্তভাতিপ্রারং জ্ঞাভা তবৈ মৃনয়ে ছহিভরং প্রাদাং ॥ ৪ ॥

ঐ রাজার হৃক্তা নামে একটা কমললোচনা কন্তা হইয়াছিল। একদা তাহাকে সমভিব্যাহারে লইয়া অরণ্য প্রবেশানন্তর চ্যবন মূনির আশ্রমে গমন করিয়াছিলেন, সেই বনে তাঁহার তন্য়। স্থান্তিশে পরিবৃতা হইয়া ভ্রমণ্ড করত বৃক্ষ হইতে ফল পত্রাদি চয়ন করিতে করিতে এক স্থানে বল্মীক মৃত্তিকার ছিদ্রে মধ্যে ধদ্যোতের ন্তায় ছুইটা জ্যোতিঃ দেখিতে পান। তদবলোকনে রাজকন্তা হৃক্তার সাজিশর কোতৃহল জন্মে। দৈব প্রেরিতের ন্যায় হইয়া তৎক্ষণাৎ একটা কণ্টক গ্রহণ পূর্বক মূম্মতা প্রযুক্ত ভদ্ধারা উহা বিদ্ধা করেন। হে রাজন্! বিদ্ধা হইবাসাত্র সেই বল্মীক ছিদ্রে হইতে অবিপ্রান্ত্র ক্ষাধ্র নির্গত হইতে লাগিল এবং তৎক্ষণাৎ শর্যাতির সম্ভিন্যাহারি সৈন্যামত্তের মল মৃত্র নিরুদ্ধা হইল। রাজ্যি শর্যাতি ভদ্দেশনে বিশ্বিত হইয়া আপনার পুরুষদিগকে জিন্তাদা করিলেন। ২ ॥

তোমরা কি কেই মহর্ষি চাবনের কোন প্রকার অপরাধ করিয়াছ? স্পাই বাধ ইইতেছে আমা-দের মধ্যে কোন ব্যক্তি মহর্ষির আশ্রম দূষিত করিয়া থাকিবে। হংকন্যা এতংশ্রবণে ভীতা ইইয়া নিবেদন করিলেন পিতঃ। আমি কিছু করিয়াছি, না জানিয়া একটা কণ্টক দিয়া ছুইটা জ্যোতিঃ পদার্থ বিজ্ব করিয়াছি। তন্যার এই কথায় শ্রাতির সাভিশয় সাধ্বস জ্মিল, ব্লীক মধ্যে মুনি অন্তর্গ হিত ইইয়াছিলেদ, ভ্রিকটে গ্রম করিয়া বিবিধ শুতি নতি ধারা ক্রমে প্রসম করিলেন। ৩।

অনন্তর মুনির অভিপ্রায় অবগত হইরা আপনার ঐ ছুহিডাটী তাঁহাকে সম্প্রদান করিলেন। হে রাজন্ ! শর্মান্ত এই প্রকারে বিপদ্ হইতে মুক্ত হইরা মুনিবর চ্যাবন সহ সম্ভাষণ করণানন্তর সমাহিত চিত্তে খীয় ভবনে প্রত্যাগমন করিলেন। এ দিকে পরম কোপন চ্যাবন পতি হওয়াতে চিত্তা হুকনা চ্যবনং প্রাপ্য পতিং পরম কোপনং। প্রীণয়ামাস চিত্তজ্ঞা অপ্রমন্তানু রুত্তিভিঃ॥ ৪॥
কস্তচিত্ত্বধ কালস্থ নাদত্যাবাশ্রমাগতোঁ। তৌ পূজ্মিত্বা প্রোবাচ ব্রোমে দত্তনীশ্বরো॥ ৫॥
গ্রহং গ্রহীয্যে সোমস্থ যজ্ঞে বামপ্যসোমপোঃ। ক্রিয়তাং মে ব্রো রূপং প্রমদানাং ঘদীপিলতং॥ ৬
বাঢ়মিত্ত্চ হুর্বিপ্রমভিনন্দ্য ভিষক্তমোঁ। নিমজ্জতাং ভবানিমান্ হুদে সিদ্ধ বিনির্দিতে ॥ ৭॥
ইত্যক্তো জরয়া গ্রস্তদেহো ধমনি সন্তঃ। হুদং প্রবেশিতোহ্শিভ্যাং বলীপলিত্বিগ্রহঃ।
পুরুষাস্তায় উত্তন্ত্রপীয়া বনিতাঃ প্রিয়াঃ। পদ্যক্রজঃ কুণ্ডলিন স্তুল্য রূপা হ্রবাদসঃ॥ ৮॥

ত্রীগরস্বামী

ছহিতরং প্রাদাৎ। ৪।

(क् क्रेचर्द्र) चर्दिन्।। यूनाः मञ्चः नवस्थाक्रगाः मञ्चः मन्त्रामग्राचः । с ।

অসোমপো: সোমপান র হিভয়োরশি বাং যুবরো: সোমজ জাহং সোমপূর্ণ পাজং গ্রাহীবো লাজানি যুবাং সোমেন ৰজ্যে ইত্যর্থ:। গ্রন্থবায়বং গ্রহাতীভ্যাদিয়ু জব্য দেবতা সম্বন্ধামূণপত্যা গ্রহাতেগাঁগপ্যব্দায়ি ছাব ॥ ৬॥

বাঢ়মিভাভিনন্দা ভবানমিরিমজ্জভাগিতাচভুঃ ॥ ৭॥

হ্রনং প্রবেশিতঃ ভাবপি তমপি বৃদ্ধং গৃহীয়া প্রবিষ্টাবিতার্থঃ ॥ ৮ ॥

क्षीविषना १ ठक्त वर्गे।

কল্পচিং ক্সিংশিচং প্রোবাচ চাবন:। হে ঈশ্বেরী যৌবন দানে সম্পোঁ। ৫॥
দোমল গ্রহণ সোম পূর্ণাত্তং গ্রহীধ্যে যুবাং সোমেন ৰক্ষো ইতার্থ:॥ ৬।৭॥
ক্ষান্তিয়াং প্রবেশিত ইতি ভম্ভি বৃদ্ধং গৃহীত্বা ভাবপি প্রবিষ্টাবিত্যর্থ:॥
ক্ষাপ্রাণা ক্ষতি ক্রন্ধবাং ৮৮॥

হুক্তা অপ্রমন্তা হইয়া দদ। চিতামুর্তি ছারা তাঁহার প্রীতি উৎপাদনে প্রর্ভা হইলেন ॥ ৪ ॥

কিয়ৎকালানন্তর এক দিন অখিনাকুমার দ্ব ঐ আশ্রেমে আসিয়া উপস্থিত হইলেন, মুনিবর চাবন যথাবিধি তাঁহাদের অর্চনা করিয়া কহিলেন তোমরা ছুই জন স্ববৈদ্য আমার ভারণ্য সম্পাদন করিয়া দাও দেখি ॥ ৫ ॥

প্রমদাগণের অভিল্পিত যে বয়স ও রূপ তাহা আমার করিশা দাও, তোমরা গোমপান রহিত, কখন গোম রূস পান কর নাই, আমি সোম্যাগ করিয়া ভোমাদিপকে সোমপূর্ণ পাত্র প্রদান করিব॥৬

বিপ্রবর চ্যবনের ঐ্বচনে স্থবিদ্য অখিনীকুমার দ্বয় "তাহাই করিতেছি" বলিয়া আনন্দ প্রকাশ
পূর্বক বলিলেন তবে সিদ্ধ বিনির্ণিত এই হ্রদে অবগাহন করিবেন চলুন ॥ ৭ ॥
•

হে রাজন্। এই প্রকার উক্ত হ্ইয়া জরাজীর্ণ ও শিরা ব্যাপ্ত কলেবর এবং বলী পলিত গাতে ঐ সহর্ষি সেই ছুই সুবৈদ্যের সমভিব্যাফারে ছুদে প্রবেশিত হইলেন অর্থাৎ অখিনীকুমারেরা তাঁহাকে লইয়া ছুদে প্রিই হইলেন। কিয়ংকণ পরে সেই ছুদ হইতে অস্থুল রুমণীপ্রিয় ভিন্টী পুরুষ উপিত হইলেন। তিন জনেরই গলায় পত্ম মালা, কর্বে কণক কুণ্ডল এবং ভিন জনেই হুরূপ ও শোভন ব্যন প্রিয়াছিলেন। ৮॥

36

তামিরীক্ষ্য বরারোহা সরপান্ সূর্য্বর্চস:। অজ্ঞানতা পতিং সাধবী অশ্বিনো শরণং যথো।
দর্শয়িত্বা পতিং তবৈ পাতিজ্ঞত্যেন তোবিতো। ঋষিমামন্ত্র্য যয়ত্বিমানেন ত্রিপিউপং।
যক্ষ্যমাণেছথ শর্যাতি শচ্যবনস্থাশ্রমং গতং। দদর্শ ছহিছেং পার্শ্বে পুরুষং সূর্য্যবর্তমং।
রিলা ছহিতরং প্রাহ কৃতপাদাভিবন্দনাং। আশিষক্ষাপ্রযুগ্ধানো নাতিপ্রীতিমনা ইব ॥ ৯॥
চিকীর্ষিতং তে ক্রিন্দেং পতিস্থ্যা প্রলম্ভিতো লোকনমন্ধতো মুনিং।
যত্তং জরাত্রত্যস্থাতা স্থাং বিহায় জারং ভজ্মেহমুমধ্বগং॥ ১০॥
কথং মতিভেহবগতান্যথা সতাং কুলপ্রসূতে কুলদুষ্ণিস্থিদং।

शिववयामी।

অখিনৌ শরণ যথে। যুবাং পৃথক্ স্থিতা মংপতিং দর্শরতমিতি প্রার্থরামাস । ৯ । প্রালম্ভিতে। ব্রিড: হে অসতি অসমতমনতীটং । ১ • ।

হে সভা॰ কুল প্ৰস্তে তে মভিবন্যণা ভৰিপৰ্যাৰেণ কৰ্মৰণতা অৰ্পন্ন। অধ্যৰসিভেতি বা তদেবাহ কুলদ্ৰণমিত্যাদি ॥ ১১ ॥

শ্ৰীবিশনাপচক্রবন্তী'।

অস্মান্ত্ মধ্যে স্বপত্তিং পরিচিত্য গৃহাণেতি তৈক্ষকে যুদ্ধান্ত্ মধ্যে ধাবখিনো তৌমাং ক্রপয়তাং মংণতিং জ্ঞাপয়তানিতাখিনো শ্বণং যথে। ॥ ৯ ।

প্রলম্ভিতো ব্ঞিত: যকঃ জ্বাগ্রন্থং পতিং বিহার অস্তাসংমতং অমুং জারং ডজনে। ১০॥ হেনুস্তাং কুলপ্রস্তে কণং তব মতিবল্লথা ভূতা স্তী অবগতা অধঃপতিতা। অপ্রণা অতি নিল জ্জা তমো নরকং।

তিন জনকেই সূর্য্য তুলা তেজস্বী ও সমান রূপ অবলোকন করিয়া পতিব্রতা হুকন্যার বিস্ময় জিমিল, তম্পেধ্য কে আপনার পতি, জানিতে পারিলেন না, অতএব অশ্বিনীকুমার ধয়ের শরণাপনা হইলেন অর্থাৎ আপনারা পৃথক্ করিয়া আমার পতিকে দেখাইয়া দিউন, এই প্রার্থনা করিলেন। বরারোহা হুকন্যার পাতিব্রত্যে অখিনীকুমারদিগের পরিতোষ জিমিল, আপনারা পৃথক্ হইয়া তাঁহার পতিকে দেখাইয়া দিলেন। তদনস্তর ঋষির সহিত সম্ভাষণ পূর্বক বিমানযোগে স্বর্গপুরে গমন করিলেন। হে রাজন্! কিয়ৎকাল পরে শর্যাতি রাজা যক্ত করিবার নিমিত্ত চাবনের আশ্রমে গিয়া দেখিলেন কন্যার পার্ষে সূর্য্য তুল্য তেজস্বী এক পুরুষ বিদয়া রহিয়াছেন। হুকন্যা পিতাকে দেখিয়া ব্যস্ত সমস্ত হইয়া গাত্রোত্থান পূর্বক পাদ বন্দনা করিলে শর্যাতি আশীর্ব্যাদ করিলেন না, কিস্ত জরাজীর্ণ চাবন হত্তে কন্যা সম্প্রদান করিয়া যান, তিনি আশ্রমে নাই তৎপরিবর্ত্তে হুরূপ অন্য এক জন যুবা পুরুষ কন্যার নিক্ট বিদয়া রহিয়াছেন, ইয়া দেখিয়া আশক্ষা উপস্থিত হওয়াতে ভাঁয়ুর মন: অতিশয় প্রীত হইল না, অসস্তুষ্ট চিত্তে তুহিতাকে বিলিলেন ॥ ৯ ॥

এ কি করিতে বাদনা করিয়াছ ? আ: অসতি ! তোমার পতি লোকনমস্কৃত, তাঁহাকে বঞ্চনা করিয়াছ ? তিনি জরাএন্ত বলিয়া বুঝি তাঁহাতে প্রীতা হও নাই, তাহাতেই এই পথিককে উপপতি বলিয়া ভজিতেছ ? অবে কুলকলিক্ষনি ! তুই অতি অসৎকুলোৎপন্না ঈদৃশী বুদ্ধি করিতে কি রূপে সাহদ করিলি, হা ! আমার কুল দ্যিত করিলি । নির্দ্ধা হইয়া হার পুষিতে ছিদ্, পিতার ও পৃতির কুলকে একবারে অধাপাতে দিয়াছিদ্ ? ॥ > ॥

পিতার ঐ দকল কথা শুনিয়া শুচিস্মিতা অ্কনারে বিস্ময় জন্মিল, পরে দবিনয় বচনে নিবেদন

বিভর্ষি জারং বদপত্রপা কুলং পিতৃশ্চ ভর্জুশ্চ নয়সাধন্তমঃ।

এবং কেবাণং পিতরং স্ময়মানা শুচিস্মিতা। উবাচ তাত জামাতা তবৈষ ভ্রুনন্দনঃ।

শশংস পিত্রে তৎ সর্বং বয়োরপাভিলস্কনং। বিশ্বিতঃ পরমপ্রীত স্তনয়ং পরিষম্বজে।

সোমেন যাজয়ন্ বীরং গ্রহং সোমস্য চাগ্রহীৎ। অসোরপোরপ্যাধিনোশ্চাবনঃ স্বেন তেজয়ার্থ্ ১১

হস্তং তমাদদে বজ্ঞং সদ্যোমসুরেমর্ষিতঃ। সবজ্রং স্তম্বয়ামাস ভ্রুমির্ম্বার্টি হাং পূর্বং সোমান্তত্যা বহিচ্চুত্রে।

অবজানংস্ততঃ সর্বের্ট গ্রহেণ ইতি ত্রয়ঃ। শর্যাতেরভ্রম্ব পূলা আনর্ত্তাদেবতোহভবৎ ॥ ১২ ॥

সোহস্তঃ সমৃদ্রে নগরীং বিনির্মায় কুলস্থলীং। আন্থিতোহভূত্ব বিষয়ানানর্তাদীনরিন্দ্রম ॥১৩॥

তম্য পুত্রশতং যজ্ঞে ককৃমি জ্যেতিমৃত্রং। পুত্রা বরং পরিপ্রকৃং ব্রহ্মালোকমপার্তং॥ ১৫॥

ককুমী বৈবতীং কন্যাং স্থামাদায় বিভূপতঃ। পুত্রা বরং পরিপ্রকৃং ব্রহ্মালোকমপার্তং॥ ১৫॥

क्षेत्रयामी।

সদ। তেংকণ্মেৰ মহাৰ্যক্ত স ইন্ধঃ ॥ ১২ ৪ বিৰয়ান্দেশান্ অভ্জ্ কে অপালয়ং ॥ ১৩ ॥ ককুলী জোটো যদিন্ ভং ॥ ১৪ ॥ বিভূ' ব্ৰহ্মাণং ॥ ১৫ ॥

की विषवायहरू वहीं।

অংরন সাধ্বীদ্ধ গর্মেণ মানন্চিত্তসমূরতি র্যভা: সা।
সোমেন সোমসংজ্ঞকবজেন বীরং শর্যাতিং ॥ ১১ ॥
সাদ্যোমস্থারবিচারাত্তংক্ষণ জাতকোপ: ॥ ১২ । ১৩ । ১৪ ॥
বিজ্ঞা ব্রহাণং অপাবৃতং রজন্তমান্তণাবরণ শৃত্যং ॥ ১৫ ॥

করিলেন পিত: ! ইনি তোমার জামতা সেই ভ্রুনন্দন চাবন। পরে তাঁহার যে রূপে রূপ যৌবন লাভ হয় তৎসমূদায় পিতার নিকট বর্ণন করিলেন, তৎপ্রেবণে শর্যাতি বিশ্মিত ও প্রীত হইয়া তন্যাকে আলিঙ্গন করিলেন। হে রাজন্! তদনস্তর মহর্ষি চাবন শর্যাতিকে সোম যাগ করাইয়া, যদিও অখিনীকুমারেরা নোমপ নহেন, তথাচ আপনার তেজে তাঁহাদিগকে সোম পাত্র প্রদান করিলেন ॥ ১১॥

ইল্লের সদ্য় ক্রোধ হইত। তিনি তদবলোকনে ক্রুদ্ধ হইয়া চাবনের বিনাশার্থ বক্ত গ্রেহণ করি-য়াছিলেন, কিন্তু ভ্গুনন্দন স্থায় ব্রহ্ম তেজে দেবরাজের বক্ত সহিত হস্ত স্তব্ধিত করিয়া দেন। অত-এব যদিও পূর্বে ভিষক্ বলিয়া অধিনীকুমারম্ম দোম যাগে বহিছ্ত ছিলেন তথাচ তদবিধ সকল দেবতা তাঁহাদিগকে যজ্ঞে সোম দিতে সম্মত হইয়াছেন। সে যাহা হউক, ঐ শার্থাতির তিন পু্ত্র উত্তানবর্হি, আনর্ত্র এবং ভ্রিসেন। তম্মধ্যে আন্ত্রের রেবত নামে এক পুত্র হয় ॥ ১২ ॥

হে অনিক্ষম ! ঐ রেবত সাগরাভ্যস্তরে কুশন্থলী নামে এক নগনী নির্মাণ করিয়। তাহাতে অব-ন্থিতি পূর্বক আনর্ত্তাদি দেশ পালন করিয়াছিলেন ॥ ১০॥

ভাঁহার এক শত পুত্র জন্মে, তাহাদের মধ্যে করুমী জোষ্ঠ ও সর্বোর্ডম । ১৪ । ঐ করুদ্মী রেবতী নাম্মী সীয় তনয়াকে সমভিব্যাহারে লইয়া বর (পাত্র) অংশ্বরণার্থ ব্রহ্মানেক ব্রহ্মার নিকট গিয়াছিলেন ॥ ১৫ ॥ আবর্তমানে গাছকে স্থিতোলককণ: কণং। তদতে আদ্যমানম্য স্বাভিপ্রারং ন্যবেদয়ৎ ॥ ১৬ ॥ তৎ শ্রুছা ভগবান্ একা। প্রহা ভম্বাচহ। অহো রাজন্ নিরুদ্ধান্তে কালেন হাদি যে কৃতা:। তৎ পুক্র পৌক্র নপ্ত গাং গোত্রাণিচ ন শৃথাহে ॥ ১৭ ॥

কালোহভিয়াভন্তি নব চতুর্গ বিকল্পিড: 🕯 ১৮ ॥

তলগচ্ছ দেবদেবাংশো বলদেবো মহাবল:। কন্যারত্বনিদং রাজন্নররত্বায় দেহি ভো: ॥ ১৯॥
ভূবো ভারাবতারায় ভগবান্ ভূতভাবন:। অবতীর্ণো নিজাংশেন পুণ্য এবণকীর্ত্ন:॥ ২০॥
ইত্যাদিকৌংভিবল্যাজং নৃপ: অপুরমাগত:। ত্যক্তং পুণ্য জনজাদাৎ জাতৃতি দিক্ বৃদ্ধিন:।
হতাং দক্ষান্বদ্যালীং বলায় বল্যালিনে॥ ২১॥

द्यीपत्रवामी ।

দশকা কণোহবসবো যেন। আদিং এজাণং ৪ ১৬ ॥
তে ত্বা হি দি কুডা: সংব্ কালেন নিক্ষা: সংজ্ঞা: ॥ ১৭ ॥
আনব সপ্তবিংশতি চতুর্গানি কৈবিকলিতো বিজ্ঞ: ॥ ১৮ ॥
বো দেবদেবজাংশোহতি তেখে নারবজ য় দেছি ॥ ১৯ ॥ তদেবাছ তুব ইতি ॥ ২০ ॥
পুণাক্ষনআসাং বক্ষত্যাৎ পূর্কমেৰ চিন্নং ভক্কাতৃভিস্তাক্ষং ॥ ২১ ॥

क्रमनमर्भः।

আংপুর্ব ভাতা ক্ষণমিতি তক্ত পশ্চাদেৰ তক্ত তত্ত্ব গ্রমনাথ ॥ ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১॥

अविश्वनाथहक्तर्जी ।

দ লক্ষ: কণোহ্ৰস্থো বেন স:। তদত্তে পাশ্বৰ্ক সমাপ্তৌ আন্যং একাণং । ১৬ । ফদি বে কৃতা আমাঅৰ্থ মন্সনি বিচারিতা:। নিক্লা: সাস্ত্তা: । ১৭ ॥ অনবস্থাৰিংশতি চতুৰ্গানি তৈৰ্কিশেৰত: ক্রিতোগণিত: ॥ ১৮ । ১৯ । ২০ ॥ ভাকেনিত্যাদি প্রাক্তন ব্রাক্ত: ॥ ২১ ॥

সে সময় গদ্ধবিণণ তথায় সঙ্গীত আলাপ করিতেছিল, অতএব অবসর না পাওয়াতে ককুন্মী কণ-কাল অপেকা করিলেন, পরে অবকাশ পাইয়া প্রণাম পূর্বক আপনার অভিপ্রায় নিবেদন করিলেন॥১৬

তৎশ্রেবণে একা হাস্থ বদনে বলিতে লাগিলেন্ হে য়াদ্ধন্ ! তুমি যে যে ব্যক্তিকে মনস্থ করিয়াছ এথন তাহাদের পুত্র পোত্র ও মস্তৃদিগের গোত্র নামণ্ড শুনিতে পাইবা না ॥ ১৭॥

ফলতঃ সপ্ত বিংশতি চতুমুহো বিভক্ত কাল অতীত হইয়া গেল ॥ ১৮ ॥

'অতএব গমন কর, দেবদৈবের অংশ মহাবল যে বলদেব আছেন, সেই নররস্থকে আপনার কন্যারত্ব প্রদান কর ॥ ১৯ ॥

রাজন্! বাঁহার আংবণ কীর্ত্তনে পুণ্য হয় সেই ভ্তভাবন ভগবান্ ভূমির ভারাবভরণার্থ নিজাংশে অবভীণ হইয়াছেন ॥ ২০ ॥

ঐ প্রকার আদেশ প্রাপ্ত হইয়। ককুমী বলশালি বলদেবকে আপনার কন্যা সম্প্রদান করিলেন, পরে অক্ষাকে অভিবাদন করিয়া আপনার পুরে প্রত্যাগত হইলেন। তাঁহায় ভাতৃগণ যক ভরে ঐ পুরী পরিত্যাগ করিয়া দিক্ সকলে পলায়ন পরায়ণু হইয়াছিল ॥ ২১ ॥ ॥ # ॥ ইতি জীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষকে তৃতীয়ো-২ধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ৩ ॥ # ॥

ঞ্জিক উবাচ॥

নাভাগো নভগাপত্যং যং ততং ভাতর: ক্রিং। ধ্রিষ্ঠং বা**ভজন্ দারং একা**চারিণমাগতং ॥ ১ ॥ ভাতরোহভাঙ্ক্ত কিং মহং ভজাম পিতরং তব । কিং ম আর্থান্তভাভাজকু মাপুত্রক তদাদ্ধা: ॥ ২

टी पत्र पायी

॥ 🛊 ॥ ইতি নবমে তৃতীয়ঃ ॥ 🛊 ॥

চতুর্থে মনুপুত্রতা নভগতা কথোচাতে। তৎ স্নোশ্চামরীবতা ক্তা। প্রতিহতা বতঃ। • ॥

ভূডগত বংশমাহ নভগতাপতাং নাভাগ: নাভাগাদম্বীয়ে মহাভাগবতোহভূদিতি বক্ষান্ ভদ্ধেত্বেন বংশ প্রবর্তকত নভগত নিজপটং চুরিতং ভেন চ কলে প্রাণাদমাহ যং তভমিত্যাদিনা। ব্লক্ষারিণং বহুকালং গুরুকুলে বসস্তং নৈষ্ঠিকোহ্মমিতি মন্থা বিভাগ সময়ে তবৈ ভাগমপ্রকল্যাব ভাতরং সর্বাং দায়ং বিভন্ম গৃহীয়া পশ্চাদগুরুকুলাদাগতং যং ভাগাথিনং কবিং বিঘাংসং যবিঠং প্রতি ততং তাতং পিতরং দায়ং ব্যক্তলার্ভার্থঃ ॥ ১ ॥

এতদেব প্রশোতরাভাাং দর্শয়তি তল নতগং পৃষ্ঠতি তে। ভাতরং মহুং কিং অভাঙ্ক বাভলত কং ভাগং মদর্থ যুদ্ধ প্রকলি-তব্যঃ ভাতর আহু: তদা বিশ্বভ্যশাতিঃ ইদানীস্ত তব পিতরং ভলাম বিভলাম স্থং পিতরং গৃহাণেতার্থ: সচ পিতরং আহ তত

क्ष्ममण्डः।

🛚 🔸 ঃ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তমে শ্রীজীবগোন্ধামি কত ক্রমসন্দর্ভে ভৃতীয়োহধাার: সমাপ্ত: 🖪 🖝 🖈

शिविधनां वहत्वती ।

। *। ইতি সারার্থদর্শিন্তাং হর্ষিণাং ভক্ততেতসাং। তৃতীয়োনবমভায়ং সকতঃ রক্তঃ সভাং । *।
চতুর্থে নভগাধাননম্বরীৰ ক্থা ভ্রথা। হ্র্যোস্থান জ্টোংক্রেপ ভাপশ্চক্রেণ চোচাডে। । ।

মন্পুত্ত নভগভাগতাং নাভাগঃ। বং শুক্রকাদ্ধীতা আগজং কবিং বিষাংসং ব্রিষ্ঠমন্ত্রং ভাগার্থিনং প্রতি ততং তাতমেব দায়ং বাভজন্ দত্র: নতু পৈতৃকং কিমপি ধনং তদা গমনাৎ পূর্বেমেব ষ নৈষ্ঠিকোই স্বাগমিব্যতীতি মহা সর্বি ধনত বৈকি ভজা গৃহীত্রাদিতার্থঃ॥ ১ ।

তং কণামেৰ প্ৰশোৱরাভ্যামাই তলে নাভাগ: পৃহুতি হে আতর: মহং কিং অভাঙ্ক ৰাভজত কং ভাগং মদর্থ: যুবং প্রক-লিভবতঃ। আতর আতঃ তদানীং তৰ বৈৰাগ্যং শ্রুবা ভাগো ন প্রক্রিতঃ ইদানীং তুত্ব পিতর্মেৰ ভলাম:। মতাগন্ধে পিতরং প্রক্রমাম: মং স্ক্রিবাপার্জ্ককং পিতরং পৃহাপেতার্থ:। তত্ত স পিতর্মাগত্যাই হে তত্ত ভাত আঘা। জোটা মম ভাগং

। #। ইতি নবমে তৃতীয় ॥ #॥

চতুর্থ অধ্যায়ে মনুপুজ্র নাভাগের এবং তৎ তনয় অস্বরীষের কথা॥ • ॥

শুকদেব কহিলেন নভগের শুন্তান নাভাগ, তিনি বহুকাল গুরুক্লে বাদ করাতে নৈষ্ঠিক ব্রহ্মটারি অনুমান করিয়া প্রাতারা বিভাগ দম্যে তাঁহার নিমিত্ত পিতৃধনের অংশ স্থাপন করে নাই, পরে ব্রহ্ম চর্যা দমাপন করিয়া গুরুক্ল হইতে প্রত্যাগত ছইলে প্রাত্গণ পিতাকেই দায় বলিয়া তাহার অংশ নির্দিন্ট করিয়া দেয় ॥ ১ ॥

অর্থাৎ নাভাগ আসিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন হে আত্গণ! তোমরা আমারী নিমিত্ত কি ভাগ নির্দিষ্ট করিয়া রাথিয়াছ ? আতারা উত্তর দের আমরা তোমার নিমিত পিতাকেই অংশ স্বরূপ করিয়া রাথিয়াছ, অতএব তুমি পিতাকে গ্রহণ কর। তৎ অব্দেশ নাভাগ পিতৃ সন্ধিনে গমন করিয়া কহিলেন

ইমে অঙ্গিরদঃ সত্তনাসতেহদ্য স্থানধদঃ। ষঠং ষষ্ঠমুপেত্যাহঃ কৰে মুছস্তি কর্মণি ॥ ৩॥ তাং স্থং শংসয় সূত্তে দে বৈশ্বদেবে মহাস্তনঃ। তে পর্যন্তো ধনং সত্তপরিশেষিত্মাতানঃ। দাস্তস্তি তেহথ তানচ্ছ তথা সক্তবান্যথা। তামে দিয়া যয়ঃ মুর্গং তে সত্তপরিশেষণং ॥ ৪॥

श्रीभतत्राभी।

হে তাত আখাঃ জোষ্ঠাঃ মম স্বাম ভাজকুঃ ভাগং চক্রু: মদীয়ে। ভাগস্থমিভার্থ:। কিংম ইতি পাঠে তে তাত কিমিদং ম্মাছ/জকুঃ ভলাম পিতরং তবেতৃ।ক্তবস্তঃ। আখাস্থাং মহুং কিমর্থং দত্রিতার্থ: পিতা আহ হে পুত্রক তত্তকুকুং মাদৃণাঃ প্রজ্ঞারণমাত্ তৈঃ কুতং ত্যিলাদরং মাকাষী নহুহং দায় ইব ভোগসাধন ইতার্থ:।। ২।।

তথাপি তৈর্জাগন্তেন দত্তোহহং তব জীবনোপায়ং উপদেক্ষ্যামীত্যাহ ইম ইতি সপাদাত্যাং বাতাাং অভিপ্লবঃ বড়হো ভবতি পৃষ্ঠাঃ বড়হো ভবতীতি বিহিতের বড়হেব আবর্জমানের বৃষ্ঠং বঠমহঃ কর্মোপেত্য প্রাণ্য কর্মণি তদমুঠানে সুমেধ্সোহপি তে স্ফ্র বিশেষজ্ঞানেন মুক্তিঃ। করে হে বিহন্ ॥ ৩ ॥

তান্মহাত্মনোপি ইদমিশ্বং রৌজমিতিচ যে যজে দেকিণায়েতিচ স্বং বৈশ্বদেবে দে স্কে সংশয় পাঠয় ততঃ কর্মণি সমাপ্তে স্তি তে স্ব্যস্তঃ স্বর্গং গছেকঃ স্ব সত্তে পরিশেষিত্মবশিষ্টমায়ানো ধনং তে তৃভাং দাস্থাকি অপ ওকারানক্ষ্ গছেতি তথেতা।দি শুক্রাকাং যথাবং কুত্রান্সত্রপরিশেষণং স্তাবশিষ্টং ধনং।। ৪।।

এ বিখন। পচক্র বর্তী।

খামভাজকু:। মদীয়ো ভাগৰমভূরিভার্থ:। কিং মমার্যান্তভাভাজকুরিতি পাঠে হে তাত কিমিদং মমাভাজকু: ভজাম শিভরং তবেকু ভিন্তভঃ। আর্যাঝাণ মহং কিমর্থং দহ্রিভার্থ:। পিতা আহে। হে পুত্রক মদ্ধকম্পা স্নো ভৈক্তং তৎ মা আদৃণা: নহহং দায় ইব ভোগ সাধনমিভার্থ:॥ ২ ॥

সরল বৃদ্ধিনা ময়া ন পুন ভেষাং পার্যং গস্তবামিতি চেং তহি লেহেন তব জীবনোপায় মহমেবোপদেক্যামীতাহ ইমে ইতি স্পদাভাগং ঘাভাগে। অভিপ্লবঃ বড়বো তবজীতি বিহিছের বড়বোর্তামানের বঠং বঠমহং কর্মোপেতা প্রাপ্য কর্মণি তদহ্ষ্টানে সুমেধ্রোপি স্কবিশেষাজ্ঞানেন মুহস্তি ৷ হে কবে বিহন ॥ ০ ॥

তান্মহাস্থানোপি ইদমিখং রৌক্রমিভিচ যে যজেন দকিণ্যেতি চ বং বৈখাদেশে বে ক্তেক শংসয় পাঠয়। ততশত তে স্থাতঃ স্থানি সক্তেঃ তথেতি শুক্ৰাক্যং ॥ ৪ ॥

পিতঃ! আমার জ্যেষ্ঠগণ আপনাকে কি নিমিত্ত আমার ভাগ ন্থির করিয়া দিলেন ? পিতা কহিলেন বৎস! তাহাদের কথায় প্রত্যয় করিও না, তাহারা তোমাকে প্রতারণা করিয়াছে, আমি দায় তুল্য ভোগ্য বস্তু নহি॥ ২॥

পরস্ত তোমার ভাতারা আমাকে তোমার অংশ রূপে নিরূপণ করিয়াছে, অতএব আমি তোমার জীবনোশার বলিয়া দি, হে বিঘন্! অঙ্গরস মুনিগণ সত্র কার্য্যে ব্যাপৃত হইয়াছেন, তাঁহারা যদিও স্বৃদ্ধি, তথাচ বিহিত ষড়হ যাগ উপস্থিত হওয়াতে প্রত্যেক দঠ দিবদেঁ কর্ম প্রাপ্ত হইয়া সূক্ত বিশেষে জ্ঞানাভাব প্রযুক্ত তদসুঠানে মুগ্ধ হইতেছেন ॥ ৩॥

, '

ভূমি গিয়া সেই মহাত্মাদিগকে বৈশ্যদেব সম্ধীয় ছুইটা সূক্ত পাঠ করাও। কর্ম স্মাপ্ত হইলে যথন তাঁহারা স্থাপে গমন ক্রিবেন তথন সজের অবশিষ্ট ধন অবশ্য তোমাকে দিয়া ঘাইবেন, বিলম্ব করিও না এখনি তাহাদিগের নিকট গমন কর। হে রাজন্। এই প্রকার উক্ত হইয়া নাভাগ তক্রপই করিলেন এবং সেই সকল অঙ্গিরস্থ আপনাদের স্কোবশিষ্ট ধন তাঁহাকে প্রদান করিয়া স্থাপে গমন করিলেন এ ৪ ॥

তং কশ্চিৎ স্বীকরিষ্যন্তং পুরুষ: কৃষ্ণদর্শন:। উবাচোভরতোহভ্যেত্য মমেদং বাস্তুকং বহু ॥ ৫॥
মমেদমুষিভিদ্তমিতি তহি স্ম মানব:। স্থানো তে পিতরে প্রশ্ন: পৃষ্টবান্ পিতরং যথা ॥ ৬॥
মজবাস্ত্রগতং সর্বামৃচ্ছিউম্বয়: কচিৎ। চক্র হি ভাগং রুদ্রায় স দেব: সর্বমহ তি।
নাভাগত্তং প্রণম্যাহ তবেশ কিল বাস্তুকং । ইত্যাহ মে পিতা ব্রহ্মন্ শির্মা হং প্রসাদয়ে॥ ৭॥
যতে পিতাবদদ্ধর্মং ত্রঞ্ সত্যং প্রভাষ্যে। দ্রদামি তে মন্ত্রদুশো জ্ঞানং ব্রহ্ম স্নাতনং।

धियत्रवामी।

পুরুব: প্রীরুদ্র: দৃশ্যত ইতি দর্শনং শরীরং রুফাং দর্শনং যস্য স:। বাস্কাহ বঞ্জভূমিগতং বস্থধনং মমেত্যুবাচ !। ৫ ।।
ভূহি আন তদৈব মমেদ্মিতি মানবো নাভাগ উবাচ। পুনশ্চ শ্রীরুদ্র উবাচ নৌ আবারোর্মিন্ বিবাদে তব পিত্রি প্রশ্ন:
ভোদিতি পৃঠ্বান্ ইতি শুকোকি: ॥ ৬ ॥

পৃষ্টিক মনোর্কাকাং যজ্ঞবাস্তগতমিতি উত্তিষ্টং উর্ক্রিডং কচিদিতি দক্ষাধ্বরে উচ্ছেষণভাগো বৈ কলে ইতি শ্রুতে: কিঞ্চ স দেব ঈশ্রং স্ক্রেবাহ তি কিং পুনর্গজাবশিষ্টমিতার্থ: ॥ ৭॥

শ্ৰীক্ত আহ যত ইতি ইদং চাথ্যানং শ্ৰুতিপ্ৰসিদ্ধং তথাচ বহুবৃচ আহ্মণং নাভাগেন দিইং শংস্তি নাভাগেন দিউং বৈ মানবং

बी विश्वनाथहक वर्छी ।

পুক্ষ: শ্রীক্ত: ক্ষণদর্শন: শ্রামবর্ণ:। যথা ক্রি প্রাপ্ত: ক্ষণ্ড: সদা পশ্রতী স: বাস্তক: যজ্ঞবাদ্ধগতং ॥ ৫॥
তহি তিবৈ মনেদমিতি মানবো নাভাগ উবাচ। নৌ আবংয়ারশ্বিন বিবাদে তে পিতরি প্রশ্ন: ভাৎ পৃষ্টবানিতি শুকো্কি: ॥৬॥
পিতা উবাচ। যজ্ঞেতি কচিদিতি দক্ষাধ্বরে উচ্ছেষণভাগো বৈ ক্রেইতি শ্রুতেশ্চ। কিঞা সদেব ঈশ্ব: স্ক্মপ্তি কিং
পুন্যজ্ঞাবশিষ্টমিত্যর্থ:॥

শিরদা তাণমা । ৭ ।

ক্স উৰাচ। যতে ইতি। ইদং ব্যাখানং শতিপ্ৰসিদ্ধং। তথাচ বহুব্চআহ্মণং। নালাগৈ দিইং শংবভীত্যাদি ॥ ৮॥

কিন্তু নাভাগ যখন সেই ধন স্থীকার করিতে উদ্যত হন, তৎকালীন কৃষ্ণবর্ণ কলেবর কোন পুরুষ উত্তর দিক্ হইতে আসিয়া কহিলেন যজা ভূমিগত এ সকল ধন আমার । ৫॥

ইহাতে নাভাগ কহিলেন সে কি ? আমার যে এ ধন, এইমাত্র ঋষিরা আমাকে দিয়া পেলেন। ভাঁহার এই কথায় সেই পুরুষ বলিলেন বিবাদ কর কেন ? তোমার পিতার নিকট গিয়া জিজ্ঞানা কর। সেই পুরুষের এই কথায় নাভাগ জনক সন্ধিধানে গমন পূর্বক যথাবৎ জিজ্ঞানা করিলেন॥ ৬॥

তাহাতে তাঁহার পিতা (মনু) কহিলেন বংদ! দক্ষযজে যে সমস্ত বস্তু উর্বারিত ইইয়াছিল, ঋবিরা যজ্জভূমিগত তংশমুদার ভগবান ক্রেরে ভাগ বলিয়া নির্দিষ্ট করিয়াছিলেন, অধিকস্তু সেই ঈশ্বর সকলই পাইবার যোগা, ইহাতে যজ্ঞাবশিষ্টের কথা কি ? এতং শ্রেবণে নাভাগ সেই পুরুষের (রুদ্রের) নিকট প্রত্যাগমন করিয়া প্রণতি পূর্বক বলিলেন হে ঈশ! যজ্জভূমিগত এসমস্ত ধন আপনকার সন্ত্যাস্পদী ভূত, এ কথা আমার গিতা বলিলেন। অতএব প্রদার ইয়া আমার অপরাধ ক্ষমা কর্মন, আমি মস্তক দারা প্রণাম করিতেছি ॥ १ ॥

নাভাগের বিনয়ে তুইট হইয়া রুদ্র কহিলেন যে হেতু তোমার পিতা ধর্ম বাক্য বলিয়াছেন এবং তুমিও ধর্ম বাক্য বলিতেছ, সেই হেতু তুমি মন্ত্রদর্শী, তোমাকে জ্ঞানরূপ সনাতন ত্রক্ষ প্রদান করি।

গৃহাণ দ্রবিণং দক্ত: মৎসত্ত পরিশেষিতং। ইত্যুক্তান্তহিঁতো রুদ্রো ভগবান্ ধর্মবৎসল: ॥ ৮॥
য এতৎ সংস্মরেৎ প্রাত: সায়ঞ্চ অসমাহিত:। কবির্ভবতি মন্ত্রজ্যো গতিকৈব তথাত্মন:॥ ৯॥
নাভাগাদম্বরীযোহভূমহাভাগবত: কৃতী। নাস্পৃশনু কাশাপোহপি যং ন প্রতিহত: কচিৎ॥ ১০॥
শীরাজোবাচ॥

ভগবন্ শ্রোত্মিচ্ছামি রাজর্বে স্তস্থীমত:। ন প্রাস্থ্যক্ত নিমুক্তো ব্লাদণ্ডো চ্রত্য়ে: ॥ ১১॥ শ্রীশুক উবাচ এ

অম্বরীষো মহাভাগঃ সপ্তদ্বীপ্রতাং মহীং। অব্যয়াঞ্চ প্রিয়ং লব্ধা বিভবঞাতুলং ভূবি ॥ ১২ ॥ মেনেতি ছল্লু ভং পুংসাং সর্বাং তৎ স্বপ্রসংস্তৃতং। বিদান্ বিভবনির্বাণং তমো বিশতি যৎ পুমান্ ॥১০॥

शिश्वत्रामी ।

ব্ৰশ্বচৰ্য্যং বসস্থং ভ্ৰাতবো নিরভজন সোহববীদিত্যাদি॥৮॥

অভাবাান্ত সরণে ফলমাহ ৰ এতদিতি। আল্লোগতিঞ প্রাপ্রোতীতি শেষঃ। ১।

কচিদপি ন প্রতিহতে। ব্রহ্মণাপোহপি ব্রাহ্মণেন নির্দ্মিত: ক্বজ্ঞানলোপি বং নাম্পূণৎ অভোহসে মহাভাগবতঃ ক্বতী পুণাবান ॥ ১০ ॥ •

ত ছ খোত্মি ছ।মি চরতিমিতি শেষ: এক্ষণ খঃ ক্রডানল: ন প্রাভূৎ ন সমর্থো বভূব: ॥ ১১ ॥

শ্রিরং সম্পদং বিভবনৈখর্যাং অতুলং নিরুপমং ॥ ১২ ॥

পুংসামতিহল্ল ভমপি তৎ সর্কাং স্বপ্লবং সংস্কৃতং নিরূপিতং অনুপাদেয়ং মেনে ততা হেতু: বিভবত নির্কাণং নাশং বিশান্ যং

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবৰী

গতিক প্রাপ্নোতীতি শেষ:॥ ১॥

যো এক্ষশাপঃ ক্চিদ্পি ন প্রতিহতঃ আমোবতাৎ সোহত্র তামসৌ দহত্তিতি বাগজ সহিত কুত্যানলপ্রক্ষেপ কুপোজেয়ঃ । ১০ ॥ শ্রোতং চরিত্যিতি শেষঃ ॥ ১১ । ১২ ॥

পুংসামতিহর্লভং বিভবক লক্। তৎ সর্কা ফলে সংস্কৃতমিব মেনে। যতে। বিভবক নির্কাণং নাশং বিশান্। যৎ যতে।

আর সত্রাবশিক্ত এই যে ধন, ইহাও তোমাকে দিলাম, তুমি গ্রহণ কর। হে রাজন্! ধর্মবৎসল ভগবান্ রুদ্র এই প্রকার কহিয়া অন্তর্জান হইলেন ॥৮॥

যে ব্যক্তি হৃদ্দর রূপ সমাহিত হইয়া সায়ং ও প্রাতঃকালে এই উপাথ্যান স্মরণ করিবেন তিনি এতৎ প্রভাবে বিদ্বান্ ও মন্ত্রজ্ঞ হইয়া অভিল্যিত অর্থ প্রাপ্ত হইবেন ॥ ৯॥

সে যাহা হউক নাভাগ হইতে অম্বরীষের উৎপত্তি হয়। যে ব্রহ্মশাপ ক্রাপি প্রতিহত হয় না তাহাও, অর্থাৎ ব্রহ্ম কর্ত্ক নির্মিত ক্ত্যারূপ অনলও তাঁহাকে স্পর্শ করিতে পারে নাই, অতএব তিনি মহাভাগবত ও অতিশয় পুণ্যবান্ । ১০ ॥

রাজা পরীক্ষিৎ কহিলেন ভগবন্! ধীমান্ রাক্ষরি অম্বরীষের চরিত্র শ্রেণ করিতে ইচ্ছা করি। কি আশ্চর্যা! ব্রহ্ম নির্মিত কৃত্যানল অভিশর তুরত্যয়, তাহাও তাঁহাকে পরাভব করিতে সমর্থ হয় নাই!॥১১॥

শুকদেব কহিলেন মহাভাগ অফরীয় রাজা সপ্তমীপ পৃথিবী, অক্ষয় সম্পদ এবং ভূতলের স্তেত্ন প্ৰথিগ লোভ করিয়া॥ ১২ ॥

যদিও ঐ সমস্ত পদার্থ পুরুষদিগের অতিশয় ছার্ন্ন ভ, তথাচ স্বপ্নবৎ অনুপাদেয় বোধ করিতে লাগি-

ৰাহ্মদেবে ভগৰতি তন্তকেয়্চ দাধুষু। প্রাপ্তোভাবং পরং বিশ্বং যেনেদং লোফ্ট্রবং শ্বৃতং॥ ১৪॥ দ বৈ মনঃ কৃষ্ণপদারবিন্দয়োর্ন্বচাংদি বৈকৃষ্ঠগুণানুবর্ণনে।
করে। হরেশ্মন্দির মার্চ্জনাদিরু ক্রুতিঞ্কারাচ্যুতসংক্থোদয়ে॥ ১৫॥
দ্বুক্দলিঙ্গালয় দর্শনে দৃশো তদ্ভাগাত্রস্পাশ্হেশ সঙ্গমং।

শীধরত্বামী

যেন বিভঃবন ভরাশেন বা পুমান্ ভমোবিশতি মোহে নিমজ্জতি ॥ ১৩ ॥

নাষ্যেং জানস্থোহপি বিভবৈষিণো দৃহাত্তে তথাহ বাস্থাদেব ইতি। ভাবং ভক্তিং প্রাপ্তঃ যেন ভাবেনেদং বিশং লোপ্তবিদ্তি তুদ্ধং স্মৃতং॥১৪॥

ভক্তিমেব সর্কেল্যোগাং ভগবৎ পরওকথনেন প্রাপঞ্যতি স বা ইতি আভি:। শ্রুতিং শ্রোত্তং সচ্তের সৎ কথানামূদরে শ্রুবে চকার্ত্রেতার স্ক্রীয়ম: ॥ ১৫ ॥

মুকুলভ লিজানা নালয়ানি স্থানানি তেষাং দর্শনে দৃশৌ নেত্রে গ্রীমতা স্থানতা অংপাদসরোকেন যং সৌরভং ভিম্বিত্ত

ক্রমদন্দর্ভ:।

গ বৈ ইতি ত্রিকং। দাতে নিনিভে দাক্ষাভলাস ভাব আংগিগৈবে কামম্ভিলাষং চকার। নতু তথ্যতিরেকেণ তেনৈৰ বা কাম কামায়া বিষয়ভোগেছেয়া চকারে হার্থ:। কণং তত্তাহ যেনৈব আংক'বেণ উত্তম:শ্লেজনা যে আংহলাদাদয় তদাশ্র্যা। তদাধারায়া ভগবিধিষয়া রতি: সাভবে২ ॥ ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । ১২ । ১২ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ ॥

এ বিশ্বনাথচজবতী।

বিভবাসজে: ॥ ১০ ॥

त्यन भन्नम ভार्तिन ८ श्रमा हेनः विश्वः ८नाहुत्वः भन्नामृष्ठेः ভरतः ॥ ১८ ॥

তভ্ত প্রেয়: সাধনং ভক্তিযোগমাই স বা ইতি ত্রিভি:। মন আদীনাং চকারেতানেনাযয়ঃ রাজ্যে স্পুরুষানিব মন আদিনী যাতাপি স যয় অযুক্ষা তত্র ভবৈর ভানি ভদালাং শিরসা নিবারৈবাস্ত্রিতি অসাধারণং ভভ্ত রাজঃ সাল্রাজামিতি ভাবঃ।
ক্রতিং শ্রোত্রং অচ্।তভ্ত বিষ্ণোঃ সভাং ভদ্তাকানাঞ্চ কথােদ্য়ে কথােৎকর্ষে নতু জান কর্মাছাংকর্ষে ইতার্থঃ। মুক্লভ লিঙ্গানাং
প্রতিমানাঞ্চ আল্যানাং মাল্রাণাঞ্চ মধুরাদি নিতা ধায়াঞ্চ বৈক্রানাঞ্চ দর্শনে। প্রীমত্যা ভলভা তথােদ স্রোক্ষ সম্পর্কে বং
সৌরভং তত্রিন্ ভগ্রতক্রণার্পিত তুল্পী গল্পে ইতার্থঃ। তদ্পিতি মহাপ্রসাদারে রসনাং ক্রিহ্রাং হরেঃ ক্রেত্রং মধুরাদি পদমভাত্রাপি ভ্রান্দিরাদি। তদত্রপর্বি ভত্ত তত্র পুনঃ পুনর্গমনে। হ্রীকেশভ পদ্যোল্ডরণ্যোাং পদানাং ভক্তানাঞ্ছাপি বন্ধন।
কামমভিলায়ং লাভে হরেরহং দানো ভূয়াস্মত্রেবং নতু কথং কামায়া বিষয় ভোগেজ্যােং সপ্তমাত্র ত্রীয়া কণঞ্চকার। উত্তমঃশোকজনাঃ প্রস্থান্দির আভ্রোদালয় আভ্রান্থ যভাত্রথাভূতা নিছানৈর রতির্যথা যেন প্রকারেণ ভালভবন্ধা তথা চকারেভ্যেতৎ স্বৈ মন
ইত্যাদিয়ু স্কাত্রেবাহিতং জ্ঞেয়ঃ । ১৫। ১৬। ১৭॥

লেন, কারণ বিভবের বিনাশজ্ঞ পুরুষও বিভব অথবা তন্ধাশে মোহসম হইয়া থাকেন ॥ ১০॥

অপর ঐ রাজা ভগবান্ বাহুদেবে এবং তদ্তক্ত দাধু দকলে দেই পরম ভাব (ভক্তি) প্রাপ্ত ইইয়া-ছিলেন, যাহাতে এই বিশ্ব লোট্রবৎ ভূচ্ছ বোধ হয় ॥ ১৪॥

অধিকস্ত তিনি ঐক্ষপদারবিন্দে মনঃ সমর্পণ করিয়াছিলেন, বৈকৃষ্ঠগুণামুবর্ণনে বাক্য সকলকে নিয়োগ করিয়াছিলেন, হরিমন্দির মার্জনাদিতে করদ্বয়কে ব্যাপৃত রাথিয়াছিলেন এবং অচ্যতের সৎক্ষা প্রবণে প্রবণেক্রিয়কে নিযুক্ত করিয়াছিলেন॥ ১৫॥

অপর নয়ন্ত্যকে মুকুন্দ লিঙ্গ সকলের আলয় অবলোকনে, অঙ্গসঙ্গকে ভগৰস্ভ তাজনের গাত্ত

ত্রাণঞ্চ তৎপাদসরোজসোরতে শ্রীমন কুলকা রসনাং তদর্পিতে ॥ ১৬ ॥ পাদে হরে: ক্ষেত্রপদাসুসর্পণে শিরোজ্বীকেশ পদাভিবন্দনে। কামঞ্চ দাক্ষে নতু কামকাম্যা যথোজ্ঞমংশ্লোকজনাজ্ঞায় রতি: ॥ ১৭ ॥ এবং সদাকর্ম কলাপমাত্মনঃ পরেহধিযক্তে ভগ্বভ্যথোক্ষতে। স্ব্রাত্ম ভাবং বিদ্ধন্মহীমিমাং ভ্রিষ্ঠ বিপ্রাত্তিহিতঃ শশাস হ ॥ ১৮ ॥ উত্তেহখমেধ্রধিয়জ্ঞমীশ্বরং মহাবিভূত্যোপচিতাক্ব দক্ষিণৈ: ।

क्षित्रवामी।

পিতে ভরিবেদিতারাদৌ । ১৬ ।

কামং প্ৰক্ চলনাদি সেৰাং দাতে নিমিত্তে তৎ প্ৰসাদ খীকারায় নতু কাম কামায়া বিবয়েছয়া কথককার উত্তমংশ্লোক জনা-প্ৰয়া রতির্বধা ভবেত্তণা অনেনচ ভয়কেরু পরং ভাবং প্রাপ্ত ইত্যেতৎ ক্টীকৃতং ৪ ১৭ ৪

সর্ব্বভালে ভি ভাষো ভাষনা বলিন্তং আত্মনঃ অঞ্চ কর্মণাং ক্লাপং সমূহং ভগষতি বিষধৎ সমর্পয়ন্তি ক্লিটেই ভাগষ্টত-ব্রিটপ্রেরভিছিতঃ শিক্ষিতঃ সন্মহীং শশাস পালয়ামাস অনেনাধিকত ধর্মোণি ব্যাব্দশিতঃ । ১৮ ।

কিঞ্ যক্তাধিষ্ঠাভারমীশ্বরং অপ্নেথেরীজে আরাধ্যামান মহাবিভূভ্যা উপচিভানি অলানি দক্ষিণাল বেরু তৈর্জনিষ্ঠানিতি

क्रमनमर्छः।

এবং পূর্ব্বোক্ত প্রকারেণাত্ম কর্তৃকং কর্মকলাপং পরে ভগবতি বিষধং। কীমুশং তং সর্ববাত্মনা ভাবো ভক্তির্যত্র ভার্দং ১১৮॥

श्रीविश्वनाथडळ वर्षी ।

তক্ল তাদৃশ সাম্রাজ্য সম্পত্তাবপি তক্তাবালকঃ প্রতিনিধ্যপিঞ্চ নাতৃদিত্যাই এবমিতি সদা প্রতিদিন্দের আন্ধান: বক্ল এবং কর্মকলাপিং দ্বরণ কীর্ত্তন মন্দির মার্জ্জনাদিকং বিদধৎ স্বয়মেব কুর্মন্ মহীং শশাস কর্ম কলাপং কীদৃশং অধোক্ষত্বে কৃষ্ণে সর্মেণ শ্রেরণি ক্রিয়মুত্তি সহিতেনৈর্ব্যানা মনসা ভাবোরতি র্যতক্তং অধিবজ্ঞে তপো জ্ঞানাদিতোহপাধিকার্যক্র প্রাণ্ডাবিকার বিদ্যান্ত বিশ্বতিকানি ব্রাহ্মণেন অভিহিতঃ স্বমন্তাবের বামান্ নির্মিক্ষেপ্যের সর্মান্থানা হরিং ভল্প রাজ্যকর্মণি স্থানিমুক্তির্বোগ্যপুরুবৈরের মহীং শাধি চেতি শিক্ষিতঃ সন্ধিতার্থঃ ১ ১৮ ॥

তবৈব রাজ্যাধিকারোচিতাশ্বমেধানি ব্যাকরণ্ঠ আদিকরঙবল্লিরভিমানত তত্ত প্রতিনিধি বাবৈবেজাহ। ঈলে ইতি মহাসম্পত্তিয়েব হেতুনা উপচিতানি সমাণেৰ নির্গৃঢ়ানি অঙ্গানি দক্ষিণান্চ বেরু জৈঃ বশিষ্ঠানি স্বপ্রতিনিধিভিত্ততৈর্বিত্তিঃ। ধ্বনি ধ্যদেশে সরস্বতীং সরস্বত্যাং অভিলোভং সোতোহভিমুখ্যভিস্কাতে ন স্বয়ন্ত ততোবিদ্বে স্বরাজধালাং নির্বিক্ষেণং

স্পর্শে, ত্রাণেক্রিয়াকে ভগবৎ পাদপদ্ম সংযোগে তুলসীর যে দোরভ তদ্যুত্থে এবং রসনাকে ভগবানের প্রতি নিবেদিত অমাদি আহাদনে তৎপর করিয়াছিলেন ॥ ১৬ ॥

আর তাঁহার চরণনয় ভগবৎক্ষেত্রপদাসুদর্পণে এবং তাঁহার মন্তক হৃষীকেশ পাদাভিবন্দনে নিযুক্ত হৃষ্যাছিল। অপিচ তিনি কাম অর্থাৎ অক্ চন্দনাদি বিষয় দেবাকে ভগবন্দনালয়া রতি যে রূপে হৃষ্ণ দেই রূপ করিয়া ভগবন্দাদ্যে তৎপর ক্রিয়াছিলেন, তাহাও ভগবৎ প্রদাদ স্বীকারার্থ মাত্র হৃষ্যাছিল, বিষয়েচহায় হয় নাই ॥ ১৭ ॥

এই প্রকারে আপনার যাবতীয় ক্রিয়া কলাপ, যাহাতে সর্বব্রেই আত্মা এই রূপ ভাবনা ছিল, সমুদায় ষজ্ঞপতি ভগবান্ অধাক্ষকে সমর্পা পূর্ব্বক ভগবদ্ধি বিপ্রগণের উপদেশামুসারে রাজ্যপালন করিতেন ॥ ১৮ ॥

অপর বহু ২ অখ্যেধ যজ্ঞ বারা যজ্ঞাধিপতির আরাধনায় সভত রত থাকিতেন। সেই সঁকল যজ্ঞের অঙ্গ ও দক্ষিণা মহৎ ঐশুর্ষ্যে উপচিত এবং তৃৎ সমন্ত যজ্ঞ বশিষ্ঠ, অসিত, গোতম প্রস্তৃতি ততৈ বশিষ্ঠানিত গোতমাদিভিধ্ব শ্বন্তভিশ্রোভমদৌ সরস্বতীং । ১৯॥
যক্ত ক্রত্বু গীর্কাণে: সদস্যা ঋত্তিজা জনা:। তুলা রূপাশ্চানিমিষা ব্যদৃশ্যন্ত হ্রবাসস: ॥ ২০॥
স্বর্গোন প্রাথিতো যদ্য মন্ত্রিরমরপ্রিয়:। শৃণুদ্তিরমপ্রণায়ন্তিরমন্তন:শ্লোকচেন্টিতং ॥ ২১॥
সম্বর্ধান্তি যৎ কামা: স্বারাজ্যে পরিভাবিকা:। তুল্ল ভানাপি সিদ্ধানা: যুকুন্দং হাদি পশ্যত: ॥২২

अधवयामी।

হে তুত্তৈ বিষ্ঠে । ধৰনি ধৰদেশে নিরুদকে সরবতী সভিলোজং ভঞাঃ প্রতিলোমং ॥ ১৯ ॥

কিঞ্ যত ক্তৃৰু সদতাদৰো গীৰ্কালৈ সহ ভ্ৰণাদিভিজ্ঞণা হবা বাদৃশাত স ইথমিতি চতুৰ্বেনাৰয়: । নচ দেবানাং নিমেষা ভাবাবৈদকণাং বভোহনিমিষাণ্চ বাদৃশাত ন নিমিষ্টীতি তথা আশ্চর্যাদর্শনৌংস্কোন তেবাং নিমেৰোপ্রমাদিতি ভাব: ॥২০॥
যত ৰণীবৈশ্বিংকৈরণি অর্গোহণি ন প্রাথিত: তত তুকা বার্ষা ॥২১॥

আন্তাং ভাবং অর্থ প্রার্থনশন্ধাণি বন্ধতে। মুকুলং জ্লি পশাত ভান্ কামান্ বিষয়ান্ সম্বন্ধি হর্ষয় তি কণং ভূতাং আরা-জোন অর্থ অংখন পরিভাবিতাং অভিশায়িতাং অতএব সিদ্ধানামণি ছ্র্ল ভাং বান্ ইতি পাঠে বান্ মুলান্ স্বারালা পরিভাবিতানিতাপি পাঠে মহলানাং বিশেষণং ॥ ২২ ॥

क्रमनवर्षः।

নমূকধং স বৈ মন ইত্যাদী সভি যজ্ঞ কিয়াভাদেকাত্মতাদিত্যাশক্সাহ বশিষ্ঠাদিভি তাতৈরিতি। বৃশিষ্ঠাদি তারা কুতি রিভার্থ:। সরস্বতীমিভি কর্মনার্গে তভামাদরোদর্শিক:। অভিশোতমিভি ক্রমান্তত্ত্বীর্থ ক্রমেণেভি ভাব:। ধ্রনীতি ধ্রদেশান্তর্গতেত্বশি তত্তীর্থেজিতার্থ:। এতেন ত্রাপি পুণ্যবং জ্ঞাপিতং ॥ ১৯ । ২০ ॥

সমৰ্দ্ধরস্তীতাত সারাল্যমিক্রপদতুল্যতা ॥ ২১ / ২২ /

শ্ৰীবিশনাপচক্ৰবন্তী'।

পরিচর্যাং কুর্বরেবাতিউদিতি বাঞ্জিতং ॥ ১৯ ॥ গীর্বালে: বহু তুল্য রূপা: নচানিমিষত্বেন দেবানাং বৈলক্ষণাং বাচ্যং। বতো মহুষ্যা অপি অন্তঃ বজা বর্ণনাদনিমিষা বাদৃশ্যন্ত দৃষ্টা: ॥ ২০ ॥

বস্ত মন্ত্ৰ বংশালামান লোকৈঃ অৰ্ণো ন প্ৰাধিতঃ কিং অংগাঁর ভোগাদধিকভোগ প্ৰাপ্তানেত্যাৰ শৃণু ভিরিভ্যাদি ॥ ২১ ॥
কিঞ্জ অংগাঁর ভোগাদধিকে ভোগে অভঃ সিদ্দেশি বদীয়া মহলা ভ্ৰু নাসজ্বভোৰ সমৰ্দ্ধ ভি ইভি যান্ মহলান্ কামা ভোগান্
সমৰ্দ্ধ ভি ন হংশণ বৰ্দ্ধ ভি ঋধু বৃদ্ধো কীদৃশাঃ আরাজ্ঞানিক পদতুলাং স্থং তেন পরিস্কৃতি ভাবেন বাসিভাঃ। বহা স্বারাজ্ঞান
অন্ধণ স্কোননন্দন বাসিভা যুকা অভএব সিদ্ধানামপি ছল্লাঃ। ভ্ৰু হেতু গত্ত মহলান্ বিশিন্তি মুকুল্মিভ্যাদিনা।
অন্ধীব প্রস্কাদিভি ভাবঃ। ব্লিভি পাঠে বদ্ধান্ত্ৰদং হুদি পশ্তভঃ পরিভাবিভানিতি পাঠে সহল বিশেষণং। য্মিভি পাঠে বং
অন্ধীবং ॥ ২২ ॥

মহর্ষির কারণে বিস্তৃত হইত। হে রাজন্! ধরণেশে যে খানে সরস্বতীর প্রতিলোম প্রোতঃ তথার অস্বরীষ রাজা ঐ সকল্যজ্ঞ করিয়াছিলেন॥ ১৯॥

তাঁহার যজ্ঞে সদস্য ও ঋত্বিক্ প্রস্তৃতি বসন এবং সুষণাদি দ্বারা দেবতাদের সহিত তুল্য রূপ দৃষ্ট হইতেন। আশ্চর্য্য দর্শনৌৎ স্থক্য প্রযুক্ত সেই সকল সদস্যাদির নিমেষ পর্য্যন্ত উপরত হইয়া যাইত স্থুত্রাং ভাঁহারা সর্বতোভাবে দেবগণের সমান হইতেন। ২০॥

আর রাজর্ষি অম্বরীবের লোকেরাও হরপ্রিয় স্বর্গ প্রার্থনা করিত না, কেবল ভগবচ্চরিত্র প্রাবণ ও কীর্তনে রত থাকিত, ইহাতে তাঁহার কথা বক্তব্য কি ?॥২১॥

ফলতঃ যে ব্যক্তি খীয় হাদয় মধ্যে ভগবান্ মৃকুন্দকে দর্শন করেন স্থরপ হাথ খারা আতিশ্যা অতএব দিছ্পাণের চুল্লতি যে সমস্ত বিষয়, সে স্কল্প তাঁহার হর্ষ জ্লাইতে সমর্থ হয় না ॥ ২২ ॥ স ইশ্বং ভক্তিযোগেন তপো মুক্তেন পার্থিং। অধন্ধে হরিং প্রীণন্ সর্বান্ কামান্ শনৈর্ছিং। গৃহেরু দারেরু অতেরু বন্ধুর বিপোত্তমক্ষদনবাজিবস্তমু।
অক্ষয়র্ত্বাভরণাম্বরাদিধনন্তকোষেদকরোদসম্বতিং॥ ২০ ॥
তন্মা অদান্ধরিশ্চক্রং প্রত্যনীক ভয়াবহং। একান্তভক্তিভাবেন প্রীতো ভক্তাভিরক্ষণং॥ ২৪ ॥
আরিরাধ্যিয়ুং কৃষ্ণং মহিষ্যা তুলাশীলয়া। যুক্তঃ সন্থংসরং বীরো দধার বাদশীত্রতং॥ ২৫ ॥
ব্রতান্তে কার্তিকে মাদি ত্রিরাত্রং সমুপোষ্তিঃ। স্নাতঃ কদাচিৎ কালিন্দ্যাং হরিং মধুবনেহর্ক্যুর।
মহাভিষেক্বিধিনা সর্বোপক্ষর সম্পাদা। অভিষিচ্যাম্বরাক্রৈগ্লিমাল্যার্হণাদিভিঃ॥ ২৬ ৮

. खीपतचामी।

এবং ঐতগবদারাধন পরত ভত কামাছাপেকা নৈব চিত্তমিত্।পদংহরতি স ইথমিতি হাভ্যাং ॥ ২৩ ॥ নধেবং ভূতোহসৌ কথং প্রতিপক্ষান্ ক্ষেত্তনাই ভ্যা ইতি ॥ ২৪ ॥

ভদেৰং তঞ্চ বৈরাগ্যাদিকং জ্ঞীৎরিভজিকেঞাজনু। বহ্মদঞ্চো যতা ন আংভি্দিতি ষহ্জাং ভদেৰ হাদশী বভনিষ্ঠাং কণ্যদাহ স্মারিরাধবিষ্বিভাগিন। বাৰদধাক সমাপ্তি ॥ ২৫ ॥ অর্চরিৎ অভাগ্যাভাব আংক্রিং ॥ ২৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

ভণে!হত্ৰ দাদুশীপ্ৰকালি ॥ গৃহাদিৰু ভগৰৎ গেৰাফুপযোগিদিভি জ্ঞেন্নং ॥ ২৩ । ২৪ ॥ দাদুশীপ্ৰতং । অভীষ্ট বিশেষ সিদ্ধাৰ্থং ভৰিশেবং ॥২৫।২৬।২৭।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।৩২।৩৫।৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪০॥

টাবিখনাপচক্রবত্তী

মন্দির মাজ্জন জল কলস বহন বৈষ্ণৰ শুন্তাৰণাদিনা শরীরকটাং জোগত্যাগশ্চ তপ জাল জেন স্বধর্মেণেতি ভজিবোগেনে-ভাক্ত বিশেষণং চকারাভাবাদ্ধরীয়ক শুদ্ধ ভক্তবাচে। একান্ত ভক্তিভাবেনেতাগ্রিমোকেশ্চ ॥ ২০॥

নবেবস্তোহনৌ কথং প্রতিপক্ষান্ ক্ষমেজ্ঞাহ তথা ইতি । প্রীত ইতি ওতিতকান্তিক ভক্তৌ বিক্ষেপাভাবার্থমিতার্থ: ॥ ২৪ ॥ ভক্তৈকাদশীব্রত নিষ্ঠ্যা দশ্ভিরেব সর্কভিন্তি নিষ্ঠাং জ্ঞাপমনাহ আনিরাধন্নিমূরিত্যাদি ॥ ২৫ ॥

তক্ত স্বায়ঃ পর্যান্তনেক।দশীত্রতনিষ্ঠাছেপি সংবৎসরমাত্রং তুমগুরায়ামেন্দ্রকাদশীত্রতং কর্ত্তব্যমিতাভিলাষ আসীদত তং পুত্রেশিত্যাং প্রতান্ত ইতি দশমীবাদকোবিহিতেতর ভোজনাভাবেন একাদখাং নিরাহারত্বেন ত্রিরাত্রসুপোবিতঃ । ২৬। ২৭॥

সে যাহা হউক, অশ্বরীষ রাজা উক্ত প্রকার ভক্তিযোগ ও তপস্থা যুক্ত স্থার্ম হারা ভগবান্ হরির প্রতি উৎপাদন করত ক্রমে ২ সমস্ত অভিলাষ পরিত্যাগ করেন। আর উাহার কলত্র, পুত্র, মিত্র, গৃহ, গঙ্গ, বাজি ও স্থানাদিতে তথা অক্ষয় রত্ন, বদন, ভূষণাদি অনন্ত কোষে উপেক্ষা জন্মিয়া-ছিল ॥ ২০ ॥

হে রাজন্! যদিও আম্বরীষ রাজর্ষি ঐ প্রকার হইয়াছিলেন তথাচ প্রতিপক্ষ জয়ে অসমর্থ হয়েন নাই, ভগবান্ হরি তদীয় ভক্তিভাবে প্রীত হইয়া যাহা হইতে বিপক্ষ সেনার ভয় এবং ভক্তজনের স্বতিভাবে রক্ষা হয় সেই চক্র তাঁহাকে প্রদান করিয়াছিলেন ॥ ২৪ ॥

হে রাজন্! উলিখিত অম্বরীষ রাজা ভগবান্ শ্রীক্ষের আরোধনা বাসনায় স্বীয় মহিষী, যাঁহার শীলতা আপনার সমান ছিল, তাঁহার দহিত মিলিত হইয়া সমংসর যাবং ভাদশী ত্রত ধারণ করিয়া-ছিলেন ॥ ২৫॥

একদা প্রতাবদানে কার্কিক সাগে জিরাত্র উপবাসানস্তর স্নান করিয়। কালিন্দী-তটে মধুবনে ভগ-বান্ হরির অর্চনা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। মহাভিষেকের বিধান ক্রমে সর্ব্ব প্রকার উপচার দিয়া অভিষেক করিয়া পরে বসন ভূষণ গদ্ধনাল্যাদি দারা॥ ২৬॥ ভদগতান্তর ভাবেন পূজরামান কেশবং। আক্ষাণাংশ্চ মহাভাগান সিদ্ধার্থানিশি ভক্তিতঃ ৫ ২৭ ॥ গবাং ক্ষরবিষাণীনাং রূপ্যাজ্পীণাং স্থবাদনাং। পরং শীলবরো রূপ বৎদোশক্ষর সম্পদাং। প্রাহিণোৎ সাধ্বিপ্রেভ্যো গৃহেমু ক্যর্বিদানি ষ্ট্। ভোজয়িছা দ্বিলানতা স্বাদ্ধং গুণবন্তমং। লক্ষ কামৈরকুজাতঃ পারণায়োপচক্রমে ॥ ২৮ ॥

তক্ত তহু তিথিঃ সাক্ষাদ ব্রাসা ভূগবানস্থুৎ ॥ ২৯ ॥

তমানর্চাতিথিং ভূপঃ প্রত্যুখানাসনার্হণিঃ। য্যাচেহ্ভ্যবহারার পাদমূলমূপাগতঃ । ৩০ ॥
'প্রতিনন্দ্য সতাং যাচ্ঞাং কর্ত্তুমাবশ্যকং গভঃ। নিমমজ্জ বৃহদ্ধ্যায়ন্কালিনীসলিলে শুচৌ।
মুহূর্ত্তাদ্ধাবশিকীয়াং দাদশ্যাং পারণং প্রতি। চিন্তামান ধর্মজ্ঞে। দিকৈন্তদ্বশ্সকটে ॥ ৩১ ॥

विषद्रश्रामी।

ব্ৰাহ্মনাংশ পূৰ্ণবামান নিছাৰ্থান্ আপ্ৰকামান্ পূৰ্ণানশেকাৰণি । ২৭ ।
কণ্যাব্দ্বীণাং ক্ষণ্ড্রাণাং পরঃ শীলাদি সম্পদো বাসাং ভাসাং মাৰ্ক্ষুদানি বট্ বৃষ্টিকোটাঃ । ২৮ ।
ভাহি তিনৈব হ্ব্মাসা অভিথিঃ সাক্ষাং প্রভাক্ষেইভূৎ ॥ ২৯ ॥
আনর্চ অচিত্রবান্ অভাবহারায় ভোজনায় । ৩০ ।
আবশ্যকং নৈয়মিকং মাধ্যাভ্কিং ক্ষক্ৰ্ং গতঃ বৃহষ্কা ॥ ৩১ ॥

धीविधनाथ ठळावळी।

সর্কেবাম্পকরাণাং সর্কেবিধ্যাদীনাং সম্পদ্তে তেন। আকেরৈ বিভূব গৈঃ। তদগতান্তর ভাবেন তদেক মনত্ত্বন । ষট্ ক্রক্লানি ষ্টিকোটাঃ ৪২৮।২৯।৩০ । বৃহৎ ব্রহ্ম ৪৩১ ।

একাগ্র মনে ভগবান্ কেশবের পূজা করিলেন, তদনন্তর যে সকল বিপ্র আপ্ত কাম, অতএব পূজানপেক্ষ, ভক্তিভাবে তাঁহাদিগেরও অর্চনা করিলেন ॥ ২৭॥

পরে যে দকল গাভীর শৃঙ্গ স্থা মণ্ডিত ও খুর রোপ্যময়, গাত্রে শোভন বসন এবং ছ্যাবন্তা, স্শীলতা, বয়স, রূপ, তথা বংশাদি সম্পদ্ উৎকৃষ্ট, তাদৃশ ষট্ ষ্ট্রিকোটি গাভী সাধু বিপ্রদিগকে দক্ষিণা দিলেন। সর্বশেষে ব্রাক্ষণদিগকে বিবিধ ব্যপ্তনোপেত স্থাছ অম ভোজন করাইয়া ভাহাদের নিকট অমুমতি গ্রহণ পূর্বক স্বয়ং পারণের উপক্রম করিলেন ॥ ২৮॥

হে রাজন্! রাজা অত্যরীষ পারণ করিতে যান্ এমন সময়ে তুর্বাসা ঋষি অতিথি রূপে তদীয় আদয়ে আসিয়া উপস্থিত হইলেন॥ ২৯॥

ভাঁহাকে দেখিয়া রাজা পারণোদ্যম পরিত্যাগ পূর্বক তৎক্ষণাৎ প্রত্যুত্থান অভিবাদন ও অর্চনা
ঘারা যথোচিত দংকার করিলেন। পরে বিনীক ভাবে চরণ সমিধানে দণ্ডায়মান হইয়া ভোজনার্থ
অভ্যর্থনা করিতে লাগিলেন। ১০০॥

রাজার প্রার্থনায় ছর্বাসা উল্লাস প্রকাশ করিয়া সম্মত হইলেন, কিন্তু এখনও নিয়মিত মাধ্যাহ্নিক ক্রিয়া কলাপ সমাপন হয় নাই বলিয়া অত্যে তাহা সম্পন্ন করিতে নদীতটে গেলেন, তদনন্তর ব্রহ্ম চিন্তা করিতে ২ কালিন্দীর পাবন জলে নিমগ্ন হইলেন। হে রাজন্! ছর্বাসা মূনি মধ্যাহ্নিকী ক্রিয়া ক্রিতে গেলে পর অনেক কণ অতীত হইল, তথাচ তাঁহার প্রত্যাগমন হইল না। এ দিকে ঘাদশী অর্চ্চ মাত্র অবশিষ্ট, তথাধ্যে পারণ না করিলে ব্রতবৈশুণ্য হয় ধর্মক্ত অন্থরীয় ধর্ম সঙ্কটে পতিত হইয়া ব্রহাণদিগের সহিত বিবেচনা করিতে লাখিলেন॥ ৩১॥

ব্রাহ্মাণাতিক্রনে দোষো দাশ্যাং যদপারণে। যৎকৃত্বা সাধুমে ভ্রাদধর্মো বা ন মাং স্পৃশেৎ ॥৩২ অন্তলা কেবলেনাথ করিষ্যে ব্রতপারণং। আক্রব্রহ্মণং বিপ্রা হাশিতং নাশিতঞ্চ তথ ॥ ৩০ ॥ ইত্যপং প্রাশ্য রাজর্ষিশ্চিন্তরন্ মনসাচ্যতং। প্রত্যচষ্ট কুরুপ্রেষ্ঠ দ্বিদ্ধাগমনমেব সং। ছুর্বাসা যমুনাকৃলাৎ কৃতাবশ্যক আগতং। রাজ্যাভিনন্দিতত্বস্য বুর্ধে চেষ্টিতং ধিয়া ॥ ৩৪ ॥ মনুনা প্রচলদগাত্রো ভ্রুটী কৃটিলাননং। বুভূক্ষিত্রশ্চ হতরাং কৃতাঞ্জলিমভাষত। অহো অস্ত নুশংসত্ত প্রিয়োশত্তি পদ্যতং। ধর্মব্যতিকরং বিষ্ণোরভক্তস্যোশমানিনং।

श्रीबद्रशामी ।

ধর্মসক্টমেবাহ বন্দক আহ্মণাভিক্রমে দোষ অধর্ম: বাদশ্যামপারণেহপি দোষ এতবৈ গুণাং বং ক্রমা যদিন্ ক্লডে ॥ ৩২ ॥
এবং বিজৈঃ সহ বিচার্যা নিশ্চিনোভি অন্তেসেভি এছত পারণং সমান্তিং ভদশিতং আহে: অশিতং নেভি চাহ্ ফ্রাভিচ্চ
আপোহসাতি ষত্তবিবাশিতং ভবতি নৈবানশিত্মিতি ॥ ৩০ ॥
• •

প্রভাচন্ট প্রাইভাক্ষত । ৩৪ ।

প্রচলং কম্পমানং গাত্রং যস্য ভৃকুটাভ্যাং কুটিলমাননং হস্য ॥ ৩৫ ॥

এ বিশ্বনাপচক্র বন্তী ।

বৰ্ষমাৎ প্ৰাক্ষণাতিক্ৰমে বাদশান্সপায়ণেচ লোৱা তথাদক ধৰ্ম সৃষ্টে বং ক্ৰছেত্যাদি ভূষাৎ ভবেং ॥ ৩২ ॥
তওক বিপ্ৰাংক্কীং স্থিতান্ সমাধাত্মশকুৰতোহভিলকা অৱমেব বিচাৰ্য্য সনিশ্চয়মাই অভ্যাতি হৈ বিপ্ৰাভং কশিত
নিতি বাদশ্য অন্তিক্ৰমান নাশিত্নিতি প্ৰাক্ষণসাপ্যন্তিক্ৰম ইতি। অন প্ৰতিশ্চ। অপোহশ্লাতি ভৱৈবাশিতং নৈবানশিত
নিতি ॥ ৩৩ ॥

था बाहरे थारे बाक्क **ग**ंध ग

বন্ধণিচন্তিঃ সর্কালোকৈঃ শংসা অতির্যা । শ্রিরাণি উল্লেক্ত যান্তং মদক্ষাহ্তীর্ণা নবিদ্যতে ভক্তো যালাক্ত ঈশে মেই-দেবে মানিনঃ ছাদতানতিক্রমালাধ্রবভঃ। ঈশৈরিজ্ঞালৈয়রশি মাননীয়তেতি বা ধর্মতা বাতিক্রমং বির্ন্তর্থে অনভিক্রমং পশ্যত ॥

রাজা কহিলেন আক্ষণাতিক্রমে যদ্রপ অধর্ম, দাদশীতে পারণ না করিলেও তদ্রপ ব্রতবৈশুণ্য দোষ সম্ভাবনা, আমি এখন কি করি, কি করিলে আমার পক্ষে শ্রেয়ঃ হয় এবং অধর্ম আমাকে স্পর্শ করিতে না পারে॥ ৩২॥

ব্রাহ্মণদিগের সহিত এই প্রকার বিচার করিয়া শেষে এই নিশ্চয় করিলেন জল মাত্র পান করিয়া ব্রত সমাপন করি, যে হেতু জলমাত্র ভক্ষণকে বিপ্রগণ ভোজন ও অভোজন ছই বলিয়াছেন॥ ৩০ ॥

হে কুরুশ্রেষ্ঠ ! রাজর্ষি অন্ধরীয় এই প্রকার বিবেচনানস্তর মনোমধ্যে ভুগবান্ অচ্যুতকে স্মরণ করিরা জলপান করিবামাত্র বিজ্ঞাগমন দেখিতে পাইলেন, অর্থাৎ তাহার পরেই হুর্বাসা ঋষি আবশ্যক কর্ম সমাপন পূর্বক যমুনার কূল হইতে আসিয়া উপন্থিত হইলেন,যদিও রাজা তাঁহাকে দেখিয়া আনন্দ প্রকাশ করিলেন এবং কৃতাঞ্জলি হইয়া সম্মুখে দণ্ডায়মান হইলেন, তথাচ তদীয় আচরণ হুর্বাসার জ্ঞান বোগে বোধগম্য হইল ॥ ৩৪ ॥

অতএব কোপে কম্পিত কলেবর এবং জ্রক্টী কুটিলানন হইয়া কহিতে লাগিলেন অহা। এ ব্যক্তি কি নৃশংস, ধন সম্পত্তির মদে অতিশয় মন্ত হইয়াছে, এ আর এখন বিষ্ণুভক্ত নহে, আপনাকে ঈশ্বর বলিয়া মানে, ইহার ধর্ম ব্যক্তিক্রম দেখ। আমি ইহার আশ্রমে অতিথি আসিয়াছি, এ আপনি যোমামতিথিমায়াতমাতিথান নিমন্তাচ। অদত্তা ভুক্তবাংস্তদ্য দদান্তে দর্শয়ে কলং।
এবং ব্রুবাণ উৎকৃত্য জটাং রোষ প্রদীপিতঃ। তদা দ নির্দামে তক্ত্রৈ কৃত্যাং কালানলোপমাং।
তমাপতন্তীং জলতীমদিহন্তাং পদা ভুবং। বেপয়ন্তীং দম্বীক্ষ্য নিচ্চাল পদার্ল পঃ॥ ৩৫॥
প্রদিষ্টং ভূত্যরক্ষায়াং পুরুষেণ মহাজ্বনা। দদাহ কৃত্যাং তাং চক্রং ক্রুদ্ধাহিমিব পাবকঃ॥৩৬॥
তদভিদ্রবন্ত্রীক্ষ্য স্থায়াদ্ধ নিক্ষলং। ভূক্বাদা চ্কুবে ভাতো দিক্ষু প্রাণণরীপ্রয়া॥ ৩৭॥
তমর্ধাবন্তগ্রব্রাক্ষা দাবাগ্রিক্ষত্বত শিখোষ্থাহিং।

श्रीभद्रश्वामी ।

ক্রুদ্ধমন্থিং পাৰকো দাবাগ্রিরিব ॥ ৩৬॥

निक्नपूरीका । ७१।

অহ্বক্তে পৃষ্ঠ ছঃ সংগক্তং মেরোও হাং বিবিক্রধাবং ॥ ৩৮ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰব ৰী

অতীতি অদঃ পচাদ্যত্ অদথেন ভ্তৰেবাপে ন ভ্তৰান্ তক্ত দাদশীবান্ধণয়োরনতিক্রমক ফলং মদনোঘলটানলক বৈর্থাং। মহাতেজীয়সোপি সম চক্রানলণক্ষানত্তং ত্বেলগানিতারং ব্রহ্মণ্যানিতারং ব্রহ্মণ্যানিতার ব্যবহানিতার বিষয়ানিতার ব্যবহানিতার বিশ্ববহানিতার ব্যবহানিতার ব্যবহানিতার ব্যবহানিতার বিশ্ববহানিতার ব্যবহানিতার ব্য

कटेच उः इदः ॥

প্ৰালচচাৰেতি একতেজ্স: প্ৰতিক্ত্ৰ্যনৰ্ছণ স্ক্ৰা সহনাৰ্ছক বিভাবেতি ভাব: । ৩৫ ॥

চক্রং কর্ত্ত রুডাং দদাহ নমু কিং রাজ্ঞা স্বরকার্থং নিবেদিতং সন্ধদাহ নহি নহি প্রাক্ অধ্যীবস্থ ভজন প্রারম্ভ দশামারতি। কাশি স্থাপক।রিলোকেগ্যনপকরণ স্থভাবং তন্তালক্ষা পুরুষেণ ভক্তবংগলেনৈব ভগবভাদিষ্টং হে চক্র যদাস্থ প্রাণ্যস্কটমাপত্তি তদা স্বমেব স্থায়মেবাস্থাভিহন্তারং ক্ষহীভাদিষ্টং পাবকোদাবায়িঃ ॥ ৩৬ ।

ভক্তকং ক্লত্যাং দধ্যপি অভি অভিমুখং স্থমণি দধ্যং দ্ৰবং ধাবং বীকা। ৩৭॥

অনুষক্তং পৃষ্ঠতঃ সংলগ্নমিবেভার্থঃ ঃ ৩৮ ।

আতিথ্য করণার্থ আমাকে নিমন্ত্রণ করিয়াছে, কিন্তু আমার ভোজন না হইতে হইতে স্বেছাক্রমে স্বয়ং ভোজন করিয়া বদিয়া রহিয়াছে। যাহা হউক, সদ্যই ইহার ফল দেখাইতে হইল, এই প্রকার বলিতে বলিতে রোষ প্রদীপিত হইয়া মন্তক হইতে একগাছ জটা উৎপাটন পূর্বক ভাহাতে রাজার নিমিত কালানল তুল্য একটা কৃত্যা নির্মাণ করিলেন। হে রাজন্! সেই কৃত্যা খড়গ হন্তা পদ দারা পৃথিবী কম্পিত করত জ্লিতে জ্লিতে আসিতে লাগিল। অস্থাই সমক্ষে নিরীক্ষণ করিয়াও স্বান হইতে চলিত হইলেন না॥ ৩৫॥

হে রাজন্। অম্বর্গীয় রাজা, বিষ্ণুপরায়ণ ছিলেম, পরম পুরুষ ভগবান্ বিষ্ণু ভ্তারক্ষার্থ স্থীয় চজের প্রতি আদেশ করাতে সেই চক্র নিজ তেজে, যেমন দাবানল অরণ্যন্থ সর্বোধ সর্পক্ষে করে তাহার ন্যায় ঐ কুত্যাকে দগ্ধ করিয়া ফেলিল ॥ ৩৬ ॥

অনন্তর তুর্বাসা দেখিলেন আপনার প্রয়াস নিক্ষল হইল এবং ঐ চক্র শেষে তাঁহারই অভিমুখে ধাবনোমুখ হইল, অতএব ভীত হইয়া প্রাণ পরিরক্ষণ বাসনায় কান্দিলীক হওত সকল দিকে দেগিড়তে লাগিলেন॥ ৩৭॥

তে বাজন। শিখাযুক্ত উদ্ধৃত দাবানল যজ্জপ বনন্দ সর্পের অনুসরণ করে তাছার ন্যার ভগবানের

তথাসুষক্তং মুনিরীক মাণোগুহাং বিবিক্ষু: প্রস্নারমেরো: ॥

দিশোনভ: ক্ষাং বিবরান্ সমুদ্রান্ লোকান্ সপালাং দ্রি দিবং গতঃ স: ।

যতো যৃতো ধাবতি তত্ত্ব ভ্রন্থ ভূপেনং তুপ্রসহং দদর্শ ॥ ৩৮ ॥

ভালকনাথ: স যদা কৃতাশ্চং সন্তন্তিভাহরণমেষমাণ: ।

দেবং বিরিক্ষং সমণাদ্বিধাত স্ত্রাক্সান্তানেইজিততেজ্বদো মাং ॥ ৩৯ ॥

শ্রীব্রক্ষোবাচ ॥

শ্বানং মদীয়ং সহ বিশ্বমেত্থ ক্রীড়াবদানে দ্বিপরার্দ্ধশংক্ষে ।

ক্রভঙ্গমাত্রেণ হি সংদিধক্ষোঃ কালাত্মনো যদ্য তিরোহ্ভবিষ্যুৎ ॥ ৪০ ॥

দ্বানং স্বাধারং সহ বিশ্বনেত্র জোড়াবদানে বিশ্বনাধ্বনংজ্ঞ।
ভ্রেভঙ্গনাত্রেণ হি সংদিধক্ষোঃ কালাত্মনো যদ্য তিরোহভবিষ্য ॥ ৪০ ॥
আহং ভবোদক ভ্রু প্রধানাঃ প্রজেশ ভূতেশ হরেশ মুখ্যাঃ।
দক্ষে বয়ং যদিয়মং প্রপদ্মা মুর্দ্ধাপতিং লোকহিতং বহামঃ।
প্রত্যাখ্যাতো বিরিজেন বিফুচ্জোপতাপিতঃ। হুক্র্বাদাঃ শরণং যাতঃ শক্র্বং কৈলাদ্বাদিনং ॥৪১

शिवतत्रामी

অরণমেষমাণ: শরণুনিচ্ছন্ অজিততেজস: হরে চক্রাৎ ॥ ০৯ ॥
এতং সর্ক্ষা যস্ত্রী ভলমাত্রেণ ভিরোহিতো ভবিষাতি কদা ক্রীড়ারা অবসানে তদপি কদা বিপরার্দ্ধ সংজ্ঞে কালে ॥ ১০ ॥
অতো বয়ং সর্ক্রে বস্য নিরমমাজ্ঞাং প্রপরাঃ প্রাপ্তাঃ সম্ভো সোকহিতং যথা ভবভোবং তং নিরমং মৃদ্ধ্রাপিতিং বহামঃ অতভয়ত্ত ভোহিণং স্বাং রক্ষিতৃং ন সমর্থোহ্ছমিতি শেষঃ যন্তদোনি ভা সম্বন্ধাৎ ॥ ৪১ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

সর্বের বয়মিতি অস্য গুণাবভারত্বেপ্যাবেশাবভারত্বমের মন্যতে ॥ ৪১ ॥

🖺 विधनाथठक वर्जी ।

অরণং শরণং এষমাণঃ অবিধান্॥ ৩৯ ॥ বিপরার্জ সংজ্ঞোকালে মতা কালাত্মনঃ কালরণং বং অরপং ভরাৎ॥ ৪ • ॥ প্রাপরা বরং লোকহিতং ধ্থাতাত্থা য্রিয়মং য্লাজ্ঞাং বহামঃ। অতত্তত্তেত্তে।হিশং যাং রক্ষিত্ংন স্মর্থোহ্ছমিতি শেবঃ। বত্তদোনি তাস্থ্যাং ॥ ৪১ ॥

র্থাক্স (চক্র) প্রায়মান ঐ ঋষির পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাব্যান হইল। মুনি আপ্নার পৃষ্ঠ দিকে তাহাকে তজ্ঞাপে ধাব্যান দেখিয়া হ্মেরু গহুরে প্রবেশ বাদ্নায় মহাবেগে দেড়িতে লাগিলেন। দেড়িতে ২ দিক্, আকাশ, ভূমি, বিবর, সাগর এবং লোকপাল সহ লোক সকলে তথা স্বর্গে গমন করিলেন কিন্ত বেখানে যান্ সেই ২ স্থানেই ছুপ্রধর্ষ হৃদর্শন দর্শন গোচর হয় ॥ ৩৮ ॥

এই প্রকারে শরণ অস্বেষণ করিতে করিতে সর্বতি ভ্রমণ করিয়াও যথন কুত্রাপি আপনার পরি-ত্রায়ক প্রাপ্ত হইলেন না তথন সন্তস্ত চিত হইয়া ত্রন্মার নিকট গমন ক্রিলেন এবং কাতরতা প্রকাশ পুরঃসর কহিতে লাগিলেন ভগবন্ আত্মযোনে ! তুঃসহ হরিচক্র হুইতে আমাকে রক্ষা করণন ॥ ৩৯॥

ব্ৰহ্মা কহিলেন পরার্দ্ধিয় সংজ্ঞককালে ক্রীড়ার অবসানে কাল শ্বরূপ যে তিফু সমুদায় দক্ষ করিতে বাসনা করিলে ভ্রমভঙ্গি মাত্রে ব্রহ্মাণ্ড সমেত আমার এই স্থান তিরোহিত হইবে ॥ ৪০ ॥

অপর আমি (একা) ভব, দক্ষ, ভ্রু প্রভৃতি এবং প্রজেশ, ভূতেশ হরেশ ইত্যাদি অমর নিকরে বাঁহার আজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া যে রূপে লোকহিত হয় তজ্ঞাপে স্ব স্ব মন্তক দ্বারা নিয়ম সকল বহন করি-তেছি, ভূমি তাঁহার ভক্তানোহী, তোমাকে রক্ষা ক্রিতে আমার সামর্থ্য নাই ॥ ৪১ ॥ শ্রীশঙ্কর উবাচ n

বরং ন তাত প্রভবাম ভূমি যশ্মিন্ পরেছন্যে প্যজ্জীবকোশা:।
ভবস্তি কালে নভবস্তি হাদৃশা: সহস্রশো যত্ত্র বয়ং জ্রমাম:॥ ৪২ ॥
আহং সনৎকুমারশ্চ নারদো ভগবানজ:। কৃপিলোপাস্তরতমো দেবলো ধর্ম আহ্নরি:॥ ৪৩॥
মরীচি প্রমুধাশ্চান্যে সিদ্ধেশা: পারদর্শনা:। বিদাম ন বয়ং সক্রে যশায়াং মায়য়া র্তা:।
তক্ত বিশ্বেশ্বয়েসেদং শস্ত্রং ত্কিব্হং হি ন:। তমেব শ্রণং যাহি হ্রিস্তে শং বিধাস্তাতি।
'ততো নিরাশো ত্র্বাগা: পদং ভগবতো যযৌ। বৈকুষ্ঠাধ্যং যদধ্যান্তে শ্রীনিবাদ: শ্রিয়া সহ ॥৪৪

क्षीपत्रचामी।

ক্রীকলোশি প্রভাচিটে বয়নিতি চত্তি:। তুয়ি মহতি মহত্বমেবার বন্মিন্ পরে পরনেখরে জন্ধা এক্ষাণ: তে এব জীবা তেবাং কোশা উপ্যাধিত্তা, এক্ষাও বিগ্রহা ঈর্শা দৃশ্যমান ব্রহ্মাও প্রমাণা: জন্যেশ্যি ভবত্তি জারত্তে নশান্তিচ বত্ত বেষু ব্রহ্মাতেরু লোকে-শান্তিমানিনো বয়ং ভ্রমাম: ॥ ৪২ ॥

নসুসর্পজেশ্য তৰ ভ্রমংকৃতভাৱাহ অহনিতি। ৪০ । পারদর্শনাং সর্পজ্ঞা অপি যুস্য মায়াংন বিলঃ॥ ৪৪ ॥

ক্রমণনর্ভ:।

वयः निष्ठि हर्षे जात्राजामि शृक्वि । १२ । १० । १३ । १८ ।

এীবিখনাথচক্রবতী।

বিদ্নি পরমেখনে আলা একাণএব জীবাজেষাং কোবা উপাধিভূতা: একাণ্ডানি অন্যোপি ভবস্তি জারতে। নিষ্কাতিচ কর বেরু রক্ষাণ্ডেরু লোকেশাভিমানিনোবরং ভ্রমাসঃ ॥ ৪২,॥

নতু স্ব্জিত তব কুতোল্ম ত্তাহ অহমিতি পার্দর্শিন: স্ব্জা অপি বল মায়াং ন বিল: 🛭 ৪০ 🖟

নিরাশ ইতি শিবশিব মধুকা তেলবিদ্বাভিমানো রসাতলং গতঃ অনোনাপি ব্রক্ষাদিনা কেনাপ্যহং নতাতঃ। মদিইদেবঃ শস্তুর্কাং রক্ষিয়াতীত্যাশা আগীৎ সাপি রাথ্য বভূব। সংপ্রতি বস্ত ভক্তেন এতাং ত্রবস্থামহং প্রাপিত স্তক্তৈব বিষ্ণোঃ সৃদ্ধির্থিম স্বপ্রাথ রক্ষার্থং গস্তবোবভূব ধিক্ষে ক্ষাং প্রাণাংশ্তিত নির্ক্ষেদা ধ্বনিতঃ । ৪৪ ॥ 33)। ব

হে রাজন্। দ্বর্ঝাসা এইরূপে ত্রক্ষার নিকট প্রত্যাখ্যাত হইয়া কৈলাস শিখরে গমন করিলেন এবং বিফুচক্রে অত্যর্থ তাপিত হওয়াতে কাতরতা প্রকাশ করত তত্ত্বস্থ ভগবান্ শঙ্করের শরণাপন্ন হইলেন।

শিষ্কর কহিলেন হে তাত ! সেই মহান্ পরমেশবের সমীপে আমাদের প্রভুত্ব চলিবে না, তাঁহাতে ব্যাদি রূপ জীব সকলের উপাধি ভূত ব্যাণ্ড বিগ্রহ এবং ঐ প্রকার দৃশ্যমান ব্যাণ্ড প্রমাণ অভাভ পদার্থ সকল কল্লিত হইয়াছে, যাহাতে লোকপালাভিমানী আমরা সহস্র ২ বার ভ্রান্ত হইয়া থাকি ॥৪২

বংশ! আমি (শঙ্কর) সনংকুমার, নারদ, ভগবান্ ব্রহ্মা, কপিল, (বাঁহার আন্তরিক ওম: অপগত হইয়াছে) এমত ব্যাসদেব, দেবল, ধর্ম, আহেরি॥ ৪৩॥

এবং মরীচি প্রভৃতি অন্যান্য সিদ্ধেশগণ আমরা সর্বজ্ঞ হইয়াও বাঁহার মায়া জানিতে পারি নাই, প্রত্ত ক্ষং তদীয় মায়ায় আরত হইয়া রহিয়াছি সেই বিশেখরের এই শক্ত (চক্র) হতরাং আমাদিণ্রে সর্বতোভাবে ছ্বিসিহ, অভএব ভূমি ভাঁহারই নিকট গিয়া শরণাপর হও, তিনিই ভোমার কল্যাণ বিধান করিবেন। হে রাজন্! ছ্বাসা এই প্রকারে শক্তরের নিকটেও নিরাশ হইয়া ভগবদাম বৈক্তে গমন করিলেন, যেথানে ভগবান্ শ্রীনিবাস. শ্রির সহিত বিরাজ করিতেছিলেন ॥ ৪৪ ॥

সংদক্ষানোহজিত শস্ত্রবহ্দিনা তৎ পাদমূলে পতিতঃ স্বেপ্থু:।
আহাচ্যতানন্ত সদীপ্তিত প্রভো কৃতাগসং মাহ্ব হি বিশ্বভাবন । ৪৫ ॥
অজানতা তে পরমাসুভাবং কৃতং ময়াশং ভবতঃ-প্রিয়াশাং।
বিধেহি তত্যাপচিতিং বিধাত মুচ্যেত ঘ্লাল্যাদিতে নারকোহিপি।
শ্রীভগবাসুবাচ॥

অহং ভক্তপরাণীনো হৃষভদ্র ইব ৰিজ। সাধুভিগ্র'ক্তর্দয়োভক্তৈ উক্তজনপ্রিয়: ॥ ৪৬ 🛭

द्येषत्रयामी।

হে সভামী পিত মা মাং অব পাছি ॥ ৪৫ ॥

অপরাধং নিবেদরন্ প্রার্থরতে জালানতে ভি। জাষং হু:খং জাপচিতিং নিছু ভিং মন্তকে জোহে নিছু ভিং ন প্শাসী তিঁচেন্ত-আহি যাস তব নামি কী বিঁতে নরক হোপি মুচোত ভাজাতৰ কিমশকামিতি ভাবঃ ॥ ৪৬ ॥

क्रमनमर्थः।

নারকো নরকংখাপু। ° কিং প্রভাবাগ্রভএব শরণাগত ইক্যর্থ:। বথোক্তং নারসিংহে। যথা যথা হরের্মান কীর্তয়বিক নারকা:। তথা তথা হরৌ ভক্তিমুব্হয়োদিব যযুরিতি ॥

আল্লান: সর্বাণা ভক্তবশবং স্থাণরতি বড্ভিং তত্ত তৎ প্রতিমানীতে অহমিতি। সাধুতিং প্রোজ্বিত কৈতবং মোক পর্যান্ত কামনার্হিতৈরিতার্থা। ভক্তানাং বে জনাতেপি প্রিরা ব্যাতমিভি কৈমৃত্যং দুর্শিতং । ৪৬ ॥

अविभगाभहक्यक्ती।

মা মাং অব পাহি ॥ ৪৫ ॥

অব্যপরাধ: অপচিতিং নিকৃতিং"৷

যথা মনধীনতে নাখাত আহি আৰু কভাল বৰ্ণ আতৃং নাশকু ৰস্ত ধৈবাৰ মণি পরাধীন খাতৃং নাশকোমীতাতি অহমিতি নয় খং বামমের ভকাণরাধিনী ভবসি নতু ভকৈছং পরাধিনী কর্জুমিটেছে ভজং অত্ত এবাসি। সতাং বাত ভোগাছং বাছেইয়ের ভজ্ঞ গরতত্তী ভবামীতি অবভাবত প্রারোহ আলফাদির শব্দ। এতালুশ মন্দুং দর্শনেশি তর করণানোলরতে ইতি চেৎ সভাং করণা থলু বজ্ঞ ধর্ম জনানএর মম নাজীতাত। সাধুভিশ্বোক্ষ পর্যান্ত কামনা শ্রুভাত্ত মৈউ কৈপ্রতিক্রপ্রতিষ্ঠাত বামান্ত হল কাম যা প্রতান্ত কর্মান্ত ক্রমান্ত বলাদিকং তেরামরোচক বাদবোগ্যমলকা মরা অভ্নরমের বলাদিকং তৈর পি ভলাত হাল বিজ্ঞান ক্রমান্ত সালরং স্থাপিত মিতি ধ্বনি:। অত এব তেরামহক পোএর মমানুক পেতি ভক্তর পাতৃগামিনী ভাগবৎ ক্পেভি সর্কালাক প্রারিদ্ধানী ভাবি ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত এবি বিজ্ঞান ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত এবি বিজ্ঞান ক্রমান্ত বিল্লান ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত বিজ্ঞান ক্রমান্ত ক্র

ঐ ঋষি ভগবৎ পাদমূলে পতিত হইয়া কম্পিত কলেবনে বলিলেন হে অচ্যুত । হে অনন্ত । হে সাধুজনের অভীতিপ্রদ । প্রভা । আমি মহৎ অপরাধ করিয়াছি, হে বিশ্বভাবন । আমাকে রক্ষা করুন ॥ ৪৫॥

প্রতো! আপনকার পরম অমুভাব না জানিয়া আপনকার প্রিয় ব্যক্তিদের অনিষ্ট করিয়াছি। হে বিধাত: ! আমার এই অপরাধের নিক্তি বিধান করিতে আজ্ঞা হউক। হে ভগবন্! আপনকার ভক্তানোহির নিক্তি নাই এমত বলিতে পারিবেন না, যাঁহার নাম মাত্র কীর্ত্তনে নরকন্থ ব্যক্তিও মুক্তি পায় তাঁহার অসাধ্য কি ?।

এই সমস্ত শ্রেবাৰ ভগবান্ কহিলেন অহে বিজ্ঞানীন ভুক্তপরাধীন, স্তরাং অবভাবের তুল্য, ভক্তবন আমার প্রিয় এ প্রযুক্ত সাধু ভক্তেরা আমার স্থায় তাস করিয়াছে ॥ ৪৬ ॥

নাহ্মাত্মানমাশাদে মন্তব্যৈ: নাধৃভির্বিনা। জিয়ণচাত্যন্তিকীং এক্সন্ যেযাং গতিরহং পরা ॥৪৭ যে দারাগার পুত্রাপ্ত প্রাণান্,বিত্তমিষং পরং। হিত্বা মাং শরণং যাতাঃ কথং তাংল্যক্তমুহ্সহে। মির নির্বিদ্ধ হুদ্যাঃ নাধবঃ সমদর্শনাঃ। বুশে কুর্বন্তি মাং ভক্তা সংক্রিয়ঃ সংপতিং যথা ॥৪৮॥ মংসেবয়া প্রতীতং তে সালোক্যাদি চতুকীয়ং। নেছেন্তি সেবয়া পূর্ণাঃ কুতোহন্তৎ কালবিপ্লতং।

विश्ववामी।

নি আশাসে ন স্বয়সি । ৪৭ । ইমং পর্ক লোকং হিয়া । ৪৮ । প্রতীতং প্রাপ্তমণি । ৪৯ ।

ক্রমণন্দর্ভঃ ।

ভাৰেৰ স্থাপয়তি পঞ্চিঃ। তত্ৰ সাম্ভব্যেৰ প্ৰমাণ্যন্ স্ত্ৰপানন্দাম্ভৰত ভক্ত ভাৰনানন্দাম্ভবাদেগীণতং দৰ্শয়তি। তেন চ ভক্তভাৰতাহ্বোদিনী সার স্ব্যভিত্তৈতি। নাহ্মিডি। ৪৭।

তেযু কারণোপি কারণং দর্শরন্। অন্যথা বাহ্মন্ কৃতস্থাপাতং বোজয়তি। যে দারেতি পরং সালোক্যাদি প্রাথি পর্যাতং ভত্তরং দৃটাতেন চ স্থাপয়তি। মরীতি বতো মরি নির্মন্ধ ক্ররাং। অতঃ স্থেবঃ প্রোক্ষিতকৈতবা; অতএব সমদর্শনাঃ। অন্যক্ষ বাগবেষ রহিভাশ্চ । ৪৮ ।

তদেবাতিশরেন দর্শরতি মংদেবরেতি কুতোহন্দানিতি সালোক্যাদীনাং কালেনাবিপ্লুতত্বং দর্শিতং ।

🗷 বিশ্বনাপচক্রবর্জী।

ভজাতে কিন্নং প্রীতি বিবরা ইতিচেৎ শুণুত অমিত্যাহ নাহমিতি বঅ আরমণাদহমাত্মারাম ইতি প্রসিদ্ধ স্তমাত্মানমণি ভতৈক্রিনা নাশানে ন কাজেক ইতি মং অরপ ভূতানন্দাদণি মন্তক অরপানন্দোহতি শৃণুত্বীর ইতি বরোরণি চিত্রণবেণি ভতা-বর্ত্তিয়া ভজেরত্বাহাণা চিষ্ তি বিপাক রপারাঃ সর্ক্ষিৎ সারভূতভার্মনানন্দ অরপতাণাানুন্দকভাদাকর্বকভাচে। প্রিরং বইড়মর্য্য সম্পত্তিং আত্যক্তিকীং নিত্যামণি বৈর্কিনা বন্ধামিব বেল্মীতি ভাবঃ। বেবাং ভক্তান্মহমেব গভিরেক উপাদের ইত্যর্থঃ ৪৭ ।

ভো বৃদ্ধানেৰ আদ্ধাং মাং নোপেক্ষতে চেৎ সন্তাং ভহি কিং ভক্তান্থেকে ভক্তাপকারকল তব রক্ষণেন স্বভ্এব ভক্তাভ্রেল ভবেষু অন্ধ্রাপদাত এবেভাছি ৰে ইতি ভক্তাং পদু তে মদর্থং পরম প্রেমাম্পদ ত্তাল দারাদ্যাস্তি মত। কন্ আদ্ধান্ধ ক্ষাল দ্বাদ্যাস্তি মত। কন্ আদ্ধান্ধ ক্ষাল ক্ষাল আদ্ধান্ধ ক্ষাল দারাদ্যাস্তি মত। কন্ আদ্ধান্ধ ক্ষাল ক্যাল ক্ষাল ক্ষাল

বুমাভিত্র ক্ষবাদিভিরপাছং ভূর্মাশপ্রব তৈন্ত বৃশীক্ষত এবাছ মন্ত্রীভ্যাহ মন্ত্রীতি মধ্যের জ্বরত নির্মন্ধাৎ সাধবং নিজামাং সমন্পনি। শ্বস্তু পরেষাঞ্চ ভূংথাদিকং সমং পশাস্তঃ । ৪৮ ॥

ভেষাং নিকামৰত পর্ম কাঠামাত্ মংগেৰত্বতি প্রতীতঃ অতঃ প্রাপ্তমপি কুভোহনাদিতি সালোকাাদীনাং কালেনাবিপ্লুভ

হে মুনিবর। যে সকল মানবদের আমিই পরা গতি,সেই সমস্ত সাধু ভক্তজন ব্যতীত আমি আপ-নার আস্থাকে এবং আত্যন্তিকী শ্রীকেও ভাল বাসি না ॥ ৪৭॥

কলত: যে সকল ব্যক্তি পুত্র, কলত্র, গৃহ, অজন, ধন, প্রাণ এবং ইহলোক ও পরলোক সম্দার প্রিত্যাগ করিরা আমার শরণাপর, আমি তাহাদিগকে পরিত্যাগ করিতে কি প্রকারে উৎদাহী হইতে পারি ? আহে ! সর্বত্তি সমদশী সাধু পুরুষেরা আমার প্রতি স্ব স্থ সদয় বন্ধন করিয়া, বেমন সাধ্বী স্ত্রী সংপতিকে বশীস্থত করে ভাহার ক্যায় আমাকে স্ব স্থ ব্শতাপর করিয়াছে এ ৪৮॥

অপর তাহারা আমার দেবা হারা দালোকানি পদার্থ চতুইর উপস্থিত হইলেও তাহা গ্রহণ

সাধবো হাদয়ং সহং সাধ্নাং হাদয়স্বহং। মদক্ততে ন জানন্তি নাহং তেড়ো ননাগপি। ৪৯ এ লয়ং হাজাভিচারতে বততং যাহি নাচিরং। সাধ্র প্রহিতং তেজঃ প্রহর্তঃ কুরুতেইশিবং॥৫০॥ তপো বিদ্যাচ বিপ্রাণাং নিঃপ্রেয়স করে উভে। তে এব ছ্র্মিনীতক্ত করেতে কর্তুরন্যথা। ক্রেয়ংড্রালাড ভারেং তে নাভাগতনয়ং নৃপং। ক্রমাপর মহাভাগং ততঃ শান্তি ভবিষ্যতি॥ ৫১॥

विषद्यामी।

আত্মন তাৰৈবাভিচারো হিংসা বডোংভূৎ তমেৰ বাহি। তাশিবং তামৰ্থঃ ৫০ ঃ তলোবিদ্যা সম্পন্নত সৰু কথ্যমৰ্থ: সমজনীতি বিভাগ মাকাৰী বিভাগে তণ ইতি ॥ ৫১ ॥

ক্ৰম্পৰ্ড:।

जरमवर शत्रम्भव खब्बक जानाचामाह नाथव हैकि । 8à। co । cò ।

क्षेवियमाथहळ वश्वी ।

षः मर्भविक कानविश्व छवः भावत्मश्रापि ॥

কিঞ্চ নাং সন্তাপন্তিত তুড়াং সমুচিতং ফলং লিংসল্লপি বল্প দলামি এতামেৰ মে পরাং ব্রহ্মণাডামবেহীতাহে সাধ্য ইতি মহুং মম আবরীবং আললিত্ব মিছেং খং মছু লরমের আললিত্ব প্রেডাইত্রিভার্থ:। তহি খনপরাধ এবাছং চেষ্করেণে পতামি প্রসীদেত তাত আহ সাধ্নাং ব্রহ্মণ্ডং সাধু হালর প্রসাদে সতাের মংপ্রসাদ ইতাতাে বাহি তমন্বরীবমের প্রসাদয়েতি ভাব:। নহম্বরীবাে মাং নিমন্তাাভোলন্তি এব ভ্রুক্তবালত ভাদোবং কিং নপশাসীতি তআহ। মদনাতে ল আনভীতি মিছিকীর্বিত মেবাহ্বরীবেণ ক্তমিতি ভাব:। তহি ভামেবাহং পূজামি ক্রহি। ব্রাহ্মণহাদখাোর্ঘ্যে ক্তাদরাে ধর্ম ইতি চেৎ হাহি তমন্বরীবামের পূজ্ব সএব হাং ধর্মলাত্ত ভ্রান্তিকং বােধবিহাতি মাল লক্ষাং কামপি কারী তালুশোনাহ মণি বিজ্ঞ ইতাহে নাহং ভেডাঃ সকাশাং সনাগপি অধিকং আনামীভার্থ:। তেন প্রতৌগানীরভাশিতহানশিতহানশিতহার তুলা দর্শনাং বাদশী ব্রহ্মণরাে হলা এবাদরঃ ক্তাে মন্তক্তনাহ্বরীবেণ হছনভিজ্ঞ ভ্রাজানী রিভি ধ্বমিঃ। তুর্কালাভ্র কণ দর্শনেন হাদশ্যাএব ভক্তিহাহ সর্ক্ধর্যাধিক্যং নির্কানরয়েহবাহিং কিমপি না পূইবানিতা চুক্সনিঃ। ৪৯ চ

কিঞ্চ তদপি তব নিভারোপারং স্পষ্টমেব ব্রবীসি শৃণি্ডাাহ অয়মিতি বস্ত বধার্থং ত্বয়া অভিচার: কুড: ভ্রম্বরীষ্ঠেব বাহি স্ঞ্ব কুপালুবাং আক্সন্তে নান্য ইতি ভাবং। নচাষ্ট্রীষ্ধ তং অনুংখদং মনোধা ইত্যাহ। সাধুছিতি ॥ ৫০॥

তপোৰিদ্যা সম্পারত মম কৃতভারামধরীবাৎ ক্ষত্তিরাৎ পরিত্রাণং যুলাতে ইতি চেদপাত্রত তব তপোবিদ্যে নৈব তঃ প্রত্যুতি বিপরীতে এবেতাহে তপ ইতি। তুর্বিনীতত কর্তু ভাষাপ্রত অন্যথা করেতে বিপরীত ফলে ভবতঃ ॥ ৫১ ॥

করিতে ইচ্ছা করে না, দেবাতেই পরিতৃপ্ত হইয়া থাকে, ইহাতে কালনাশ্য অন্য বস্তুতে ভাহাদের অভিলাষ হইবে সম্ভাবনা কি ! অপর যে সকল পুরুষ আমাতে স্ব স্থ হৃদয় অপণ করিয়া থাকে, আমি তাহাদিগের হৃদয় অবগত আছি, ভাহারা আমা বাতীত অন্য কাহাকেও জানে না আমিও ভাহাদের ব্যতীত কিছু জানি না ॥ ৪৯ ॥

অতএব হে বিপ্র! তোমার আপনার এই হিংসা যাঁহা হইতে জামারাছে, তাঁহারই নিকট যাও, বিলম্ব করিও না। মুনে! তোমার কি জ্ঞাত নাই, সাধুজনের প্রতি যে তেজঃ প্রহিত হয় তাহাতে প্রহর্তারই অনিক্ট ঘটিয়া থাকে ॥ ৫০ ॥

বানাণদিগের তপস্থা ও বিদ্যা এই উভয় নিশ্রেয়:কর সত্য, কিন্তু চুর্বিনীত কর্তার পক্ষে তদ্মই বিপরীত কল জন্মাইরা দেয়। পরস্ত একণে আপনকার তপো বিদ্যা মনে করিয়া এই অনর্থ ঘটনায় বিদ্যা প্রকাশ করা অকর্তা। এখন মহাভাগ নাভাগতনয় অন্ধনীয় সমীপে গমন কর, তোমার মঙ্গল হউক, সেই কোশীপতিকে ক্ষা করাইতে যুদ্ধ পাও, ভাহা হইলে উপন্থিত উৎপাতের শান্তি হইবে ॥ ৫১ ॥

॥ #॥ ইতি জীভাগণতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষকেই অরীষ চরিতে চতুর্বোহ্ধ্যায়ঃ ॥ #॥ ৪ ॥ #॥

প্রীশুক উবাচ।

এবং ভগবতাদিকৌ তুর্বাদাশ্চক্র তাপি**তঃ। অম্বরীমমুপার্ত্ত তৎপাদৌ ছুঃথিতো**ংগ্রহীৎ ॥১ তফ্ম সোন্যমনানীক্ষ্য পাদস্পর্শ বিল**জ্ঞিতঃ। অস্তানীতদ্ধ**রেরস্ত্রং কুপয়া পীড়িতো ভূশং ॥ ২ ॥ ভুমমি র্ভগবান্ সূর্য্য স্ত্রুং সোমোজ্যোতিষাং পতিঃ। ত্বনাপস্ত্যং ক্ষিতির্ব্যোম বায়ুর্মাত্তেব্রিয়োনিচ ॥০ স্থদর্শন নমস্তভাং সইস্রারাচ্যুতিথিয়ে। সর্বাস্ত্রবাতিন্ বিপ্রায় সস্তি ভূগা ইড়ুস্পতে ॥ ৪ ॥

वीभद्रवामी।

॥ * ॥ ইভি নব্সে চতুর্ব: ॥ * ॥

পঞ্জে বিফুচ কর প্রসাদ্য প্রাণসঙ্টাৎ। ছ্র্রাসা রক্ষিতভেন বর্থা তব্ত্তনীর্থাতে । ১।
স উদামনিতি চেদ: স্বোপ: পাদপ্রণার্থ: । ২।
জ্যোতিবাং নক্ষ্রাণাং পতি: সোম: ত্বাত্রানি ইন্সিরাণিচ। ত্ত্তিক্যবাগ্যাদর: ত্ব ত্বার্থ: । ৩।
সহস্রং আরা যক্ত হে সহস্রার ত্বি শ্রণ: ভূষা ইড্ম্পতে পৃথিবীগতে । ৪।

ক্রমসন্দর্ড:

৪ * । ইতি শ্রীমন্তাপবন্ত নবমস্বল্ধে শ্রীলীবগোম্বানি কৃত ক্রমসলর্সে চতুর্বোহ্যায়: সমাপ্ত: ॥ * ।
ভল্লেতি তৈ:। তক্র ফ্লোপ: পাদপুরণ ইতাক্ত ভাব:। সাচিলোণে চেৎ পাদপুরণনিতি বঠাধাায় প্রথম পাদগভং ফ্রেণেতার্ব:।
অন্যপালোপ: সাকল্যস্যেতি তৎ স্থানীয়ত বভা লোপে ত্রিপাদী গতভাৎ পূর্ব্জাসিদ্ধিভি ন্যারেন সন্ধি নিসাং ॥১।২।০।৪।৫।৬॥

शिविधनानहळ्तकी ।

। # ॥ ইতি সারাথদিশিতাং হর্ষিণাং ভক্তেতসাং। ন্বমভ চতুর্থেছিরং সঙ্গতং সভাত সভাং ॥ # ॥
পাদে শুণন্ মুনিশ্চকেং প্রসাদৈশবিতঃ অবন্। ভোকিভশ্চবিরীবেশ পঞ্চেচ্চ বনং গতং ॥ ১ ॥
তত্ত ক্রাসমং সোহস্বীবঃ উদামং অবাদার্থ মুদামং সাচিলোপেচেৎ পাদপুরণ নিতি সলোপে সন্ধিঃ ॥ ২ । ৩ ॥
তে সহস্রধার হে ইড্পপতে পৃথীণতে ॥ ৪ ॥

॥ 🛊 ॥ ইতি নবদে চতুর্থ ॥ 🕸 ॥

পঞ্চ অধ্যায়ে বিফুচক্রকে প্রদন্ধ করিয়া অম্বরীষ কর্ত্বে প্রাণ দক্ষট হইতে তুর্বাদার রক্ষণ ॥ • ॥ শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্! চক্রায়ি ভাপিত তুর্বাদা ভগবানের প্রপ্রথার আদেশে তৎক্ষণাৎ অম্বরীষ দনিধানে আগমন করিলেন এবং তুঃখিত হইয়া তদীয় চনণ গ্রহণ করিতে উদ্যত হইলেন ॥১॥ ব্রাহ্মণে পাদস্পর্শ করাতে নাজর্ধি অম্বরীষ দাতিশয় লচ্ছিত হইলেন এবং তাঁহার কাতরতা দর্শনে মতীব পীড়িত হইয়া ভগবচ্চকের স্তব আগস্ত করিলেন ॥২॥

যথা হে হাদর্শন ! তুমি অগ্নি, তুমিই ভগবান্ সূর্য্য, তুমিই নক্ষত্র সকলের পতি চন্দ্র, তুমিই জল, তুমিই ভূমি, তুমিই আকাশ, তুমিই বায়, তুমিই তন্মাত্র সকল, তুমিই ইন্দ্রিম চয় অর্থাৎ তোমার শক্তি দার্গ অগ্নি প্রভৃতি স্বাস্থ করিতেছে ॥ ৩ ॥

সতএব তোমাকে নমস্কার করি। হে অচ্তেপ্রিয়ে। তোমার সহস্র স্থারা (সাল) হে স্কান্ত-ঘাতিন্! হে পৃথীপতে! এই বিপ্রবর্তে রকা কর ॥ 8॥ ছং ধর্মস্বয়তং সত্যং ছং যজ্ঞোহধিলযজ্ঞভূক্। ছং লোকপাল: সর্বাজা তং তেজ: পৌরুষং পরং ॥৫॥
নম: স্থনাভাধিলধর্মসেতবে হুধর্মশীলাহ্মরধ্যকেতবে।

दिखलाकारणाथाय विश्वक वर्कटन मदनाकवायासू ककर्यरण गृर्ग ॥ ७ ॥ .

ঘতেজনা ধর্মময়েন সংহতং তমঃ প্রকাশশ্চ দৃশো মহাত্মনাং। ছুরত্যয়তে মহিমা গিরাংপতে ছুক্রপনেতৎ দদদৎ পরাবরং॥ ৭॥

शिवत्रशामी।

বাহ্মণরক্ষণং তব বৃক্দেৰেভাছে স্থং ধর্ম ইতি। ন চ তবেয়ম ভিস্কৃতিরিভাছে পৌক্ষঃ প্কৃষ্ণা পরং ভেজঃ সাম্পাং স্থং। অয়স্কাৰঃ স ঐক্তেভালি শ্রুতি প্রসিদ্ধং ভগৰতঃ শোভনং দর্শনং ত্মণশনং তত এবচ সর্মং আভং সভএৰ স্থং স্কাজ্মেতি 📽 ॥

হে স্নাভ অস্ত্ৰকৰ্মাণং খাং কং দ্বোতৃং সমৰ্থ: অভস্কভাং কেবলং নগো গণে ইভাৰয়:। অস্ত্ৰক্ষীবদেবাই অণিলানাং ধৰ্মাণাং সেত্ৰে মৰ্যাদা রূপায় অভএব অধ্যাদীলানামস্বাণাং ধ্নকেতবে দাহকায় ত্রৈলোকাং গোণায়তীতি ভথা ভবৈ বিভদ্ধ অত্যক্ষকাং বৰ্চ জেলো বগা ভবৈ । ৬ ।

ভাৰের প্রেপঞ্চাতি প্রেজনেতি ৰাভ্যাং। স্থানের প্রাশশত ছব্যের ক্লপাতে প্রকাশাত ইতি ওজনেং। १॥

क्रमम्बर्धः।

ধর্মান্দেন তত্তেজসা দৃশত্তম: সংহতং। মহাত্মনাং স্থানীনাং প্রকাশত তত্তেজনৈব ভব্তি। অভএব তৰ সহিমা চ্রত্যা:। যত এতং সদসদ্পি ছফ্রাণং ত্বং প্রকাশ্যমের ॥ ৭ । ৮ ॥

জীবিখনাথচক্র বর্তী

খাতঞ্জুনুতাবাণী সভাঞ্সমদর্শনং। পৌরুষং বৈফাবং ভেল: ॥ ৫ ॥

ভহি ভিক্তি ধর্ম সেতৃপালার, তুভা জন্ত মেও সধার্মিকং বিপ্রমবশামহং তাপরামীত।ত আহ। অধর্ম শীলা বে অস্রা জেবাং ধ্যকেতবে ইতি ধর্মশীলা অসুরা অধর্মশীলা বিপ্রান্ধ বাাহুতা:। কে স্নান্ধ তুডাং নমো গৃণে জোতুং সাম্প্রাভাবাদিতি ভাব: ॥ ৬ ॥

নত্ম তেজবিমানিনোছত বিপ্রাপ্ত চিকিৎসা অবশা কর্ত্তব্যতাত আছ। স্বভেক্ষা স্বভেক্ষা ব্রেজোবিতৃতি রূপেণ স্থানিনা দৃশঃ সর্ক্ চকুব তথা মহাস্থনাং দৃশো জানভচ প্রকাশ স্বভেজ্বৈর ভর্তি। স্ব্রূপ মেত্রতীবর প্রমেশ্রবারহীখ্রঃ স্বভেজ্বাহনাথিন্ তেজবিনি দুশ্বেদিতি ভাবঃ । ৭ ॥

হে হৃদর্শন ! আহ্মণ রক্ষণ তোমারই উপযুক্ত কর্মা, যে ছেতু ত্নি সাক্ষাৎ ধর্ম । অপর হে অমৃত ! ত্নি সভা, ত্নি যজমূর্ত্তি এবং অধিল যজ্জভোক্তা। অধিকস্ত ত্নি লোকপাল ও ঈশরের পরম সামর্থা। হে চক্রং! তোমার নাম হৃদর্শন, তাহার অর্থ ভগবানের শোভন দর্শন, ভগবদর্শন হইতে সমৃদায় উৎপন্ন হইয়াছে অভএব তুমি সর্বাল্ধা। ৫॥

শপর হে জনাভ! ত্মি অমুতকর্মা, যে হেতৃ অধিল ধর্মের সেতৃ স্বরূপ, অতএব তৃমিই অধর্ম রত অজ্বদিগের ধ্মকেতৃ অর্থাৎ দাহক। অপিচ তুমি ত্রৈলাক্যের রক্ষক, তোমার তেজঃ পুঞ্চ অত্যক্ষণ তুমি মনের তুল্য বেগবান্,তোমার তাব করিতে কে সমর্থ হইবে ? অতএব আমি ভোমার প্রতি কেবল নমঃ শব্দ প্রোগ করিতেছি । ৬।

হে ম্দর্শন। ভোমার ধর্ময় তেজঃ ছারা অন্ধকার সংহত এবং সহাত্মাদিগের দৃষ্টি প্রকাশিত হইয়াছে। হে গীস্পতে। ভোমার মহিনা ছরত্যয়, সং অসং, পর অপর ইত্যাদি সমস্ত পদার্থ ভোমান রই স্বরূপ, কারণ স্থাাদির প্রকাশও ভোমা হইতেই হইয়া থাকে ॥ ৭,৫ যদা বিস্কৃত্ত্বনঞ্জনেন গৈ বলং প্রবিষ্টোইজিত দৈত্য শানবং।
বাহুদরোক্রিজ্য শিরোধরাণি বৃশ্চনজন্তং প্রধনে বিরাজনে ॥ ৮ ॥
স বং জগজ্ঞাণ থল প্রহাণয়ে নিরূপিভ: সর্কাসহা গদাভ্তা।
বিপ্রস্কাস্থিকল দৈবহেতবে বিধেহি ভদ্রং তদক্রাহোহি ন:॥ ৯ ॥
যদ্যন্তি দত্ত্নিক্তং বা স্বধর্মোবা স্কুষ্ঠিত:। কুলং নো বিপ্রদৈবক্ষেৎ দিজো ভবতু বিজ্বং॥
বিদি নো ভগবান্ প্রীত এক: সর্ক্তিগাপ্রায়:। সর্ক্তৃতাত্ম ভাবেন দিজো ভবতু বিজ্বঃ॥ ১০॥

शिभवत्यामी।

হে অলিত অন্ত্রনেন হরিণা যদা বিস্ট তং তদা দৈ তাদানবানাং ৰদং প্রাৰিষ্ট: সন্তেষাং বাহ্বাদীন্ তিন্দান্ বিবাজনে। প্রিষ্টোর্জিত দৈতাদানবামতিপাঠে উর্জিতা দৈতাদানবা যদিন্ তৰ্লং পূর্বপদে স্কিরার্থ: । ৮॥

কিঞ ভ্যা ভগবলিণ্জেন থলানামেব দণ্ড: কার্যা: সাধবভ রক্ষণীয়া অভো বিপ্রক্ষণেনামান্ অস্প্রণেভার সংমিতি। হে লগলাণ স্থাবং ভূতভং থলানামেব প্রহরণার্থং নির্শিষ্ট সেডোইমং কুলল দৈবহেতবে ভাগালাভার বিপ্রাস্ট জেং বিধেহি তদেব নোহত্গ্রহ: । ১॥

সূৰ্ব্ব স্কুকুভাৰ্পণেন বিপ্ৰব্ৰক্ষাং প্ৰাৰ্থন্নতে যদান্তীতি স্বাভ্যাং। বিপ্ৰোদৈৰং দেবতা যদিন্তং ॥ ১০ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

खाइगिट्य खाक्केडेशभार्थः ॥ २॥

তত্ত ভগৰং প্ৰীতিমাত্ৰাণ যদয়ং ক্লতং ভলু বৃদ্ধিং প্রীক্ষাতে। দ্বিজ ইতি। দ্বিজ্ঞ বিজ্ঞীভাবং কুক্রীণা ইত্যথং। জন্য-ণায়ং মহানত্যয়: সাাদিতি ভাবং ॥ ১০ । ১১ । ১২ । ১৩ ॥

শ্রীবিশ্বনাপচক্রবন্তী ।

নম্ তদপানেন সহ বিষ্ঠু কামোত্মীতি চেলৈবং ভবাহ্র সংগ্রাম এব বিহাররস্কৃমিরিভাছ। যদেতি অনজনেন শীহরিণা হে অজিভ প্রবিটাজির্ভিদেভা দানব মিতি পাঠে উর্জিভা দৈভাদানবা মত্ত ভবলং সন্ধিরার্য:। বুশ্চন্ ছিন্দন্ প্রধনে সংগ্রামে ।৮ নম্বহং অবিষেধি সংহারার ভগবভা নিযুক্ত ভতা ন কেবলমেবমেবেভাছ। হে অগজ্ঞাণ পলানাং প্রহাণয়ে সংহারাম সংশ্বহঃ সর্প্র বল অপ্রণ:। যথা বাৎসল্যাৎ সংশ্বস্থাপরাধ্যত্মাকং সহসে ইতি সংশ্বহঃ। অভ বিপ্রভাগরাধঃ ক্ষাভামিতি ভাবঃ। নচাভা মহিছে মিতাছে। অত্য ক্রেভা বিবহেভবে ভাগালাভাম বিপ্রভা ভদ্রং বিধে ছি ॥ ৯॥

তদ্ধি বিপ্র মভাজচক্রমালকা শৃণথং কুর্মরাহ। যদান্তীতি বিপ্রদৈবং বিপ্রদেবতাকং॥

তং প্রথমনান মচ্চক্রমালোক। সাধারণং শ্পথমাহ ঘণীতি সর্কেষু ভৃতেষু আত্মন ইব বোভাব ত্তেন বলি প্রীতঃ ॥ ১০ ঃ

হে অজিত। অনপ্রদ ভগবান্ কর্ত্ক যথন তুমি বিমুক্ত হও তথন দৈত্য দানব মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া তাহাদিগের বাহু, উদর, উরু, 'চরণ এবং কন্দর নির্ভিন্ন করত সমরাঙ্গনে বিরাজ করিয়া থাক ॥ ৮ ॥

হে জগলাণ। তুমি এবস্তুত গুণ্দপান, ভগবান্ গণাণর খল ব্যক্তিদিণের প্রহরণার্থ তোমাকে নিযুক্ত করিয়াছেন, অতএব আমাদিগের কুলের সোভাগ্য নিমিত্ত এই বিপন্ন আক্ষণের মঙ্গল বিধান কর। ইহা করিলেই আমাদের প্রতি মহান্ অনুগ্রহ বিস্তার হইবে ॥ ৯॥

• হে স্বদর্শন। যদি আমার কোন দান অথবা যজ্ঞ জন্ম স্কৃত থাকে, যদি আমি স্বধর্মের স্থানর রূপর রূপ অসুষ্ঠান করিয়া থাকি, আর আমাদের কুলদেবতা যদি বিপ্র হন, প্রার্থনা করি তৎ প্রভাবে এই বিজ আশু বিজ্বর হউন। অপিচ অভিতীয় এবং ভূতের প্রতি আশ্বভাব হেতু দর্বন গুণাঞ্জয় ভগবান্ আমাদের প্রতি যদি প্রতি থাকেন তবে তাঁহার প্রদাদে এই বিজ্ব হউন॥ ১০ ॥

শ্রীশুক উবাচ॥

ইতি সংস্তৃবতো রাজ্যে বিষ্ণুচক্রং হৃদর্শনং। অশাসাৎ স্কৃতো বিপ্রং প্রদেহজাজ্যাচ ঞ্রা। সমুক্তোহস্তাগ্নি তাপেন তুর্বাসাং স্বস্তিসাং স্তৃত্যা, প্রশাসাল তম্কা শং যুপ্পানঃ প্রমাশিষঃ॥ তুর্বাসা উবাচ॥

অহো অনন্তদাসানাং সহত্তং দৃত্যদ্য মে। কৃতাগনোহপি যদ্যাজন্ মঙ্গলানি স্মীহসে।

তুক্রঃ কোনু সাধুনাং তুন্তাজো বা মহাজ্মাং। মৈঃ সংগৃহীতো ভগৰান্ সাত্তাম্মভো হরিঃ।

যনামঞ্জিমাত্তেশ পুমান্ ভবতি নির্মালঃ। তম্ম তীর্থপদঃ কিম্বা দাসানামবিশিষ্যতে ।

রাজন্মুগৃহীতোহহং ত্যাতি করুণাজানা। মদ্যং পৃষ্ঠতঃ কৃত্বা প্রাণা যামেহভিরক্ষিতাঃ। ১১॥

রাজা তমক্তাহারঃ প্রত্যাগমন কাজ্ম্যা। চরণাব্পসংগৃহ্থ প্রসাদ্য সমভোজন্তং।

সোহশিত্বাদ্তমানীত্মাতিথাং সার্বকামিকং। তৃপ্তালা নৃপ্তিং প্রাহ ভূজ্যতামিতি সাদরং। ১২॥

औरत्यागी।

রাজ ত'স্যৈব যাজুলা। ১১ ॥ বাজেতাদি স্নোক্ষয়ং শুকোজিং। ১২ ॥

बीविश्वनाशहक्तवडी

विश्वः नर्स डः श्राप्त्रमणाभागाए ॥

কভাগনোণি ভদমকল মীহমানভাপীভার্থ: ॥

হুকবোহনুগ্রহ: ত্রস্তাজোহণরাধ:। সংগৃহীত ইতি য্থান্তিধনানি সংগৃহত্তে তথেতার্থ:। হরি: সংগৃহীতোপি তদীম্বেক তথেচারয়তীতার্থ:॥১১॥

সত্র্বাসা আদৃতং যণাভাতথা আনীত মাতিণ্যর্থমরাদিকং ॥ ১২ ॥

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্। রাজর্ধি অম্বরীয উক্ত প্রকারে শুব করিতে থাকিলে ভগবানের অদর্শন চক্র যাহা বিপ্রবর সুর্বাসাকে দক্ষ করিতেছিল, ঐ রাজার যাচ্ঞাতেই প্রশান্ত হইল। অত্তর্বাসা অস্ত্রামি তাপ হইতে পরিত্রাণ পাইয়া কল্যাণবান্ হইলেন। তদনন্তর ঐ মুনি সুর্বাসার প্রতি আশীর্কাদ প্রয়োগ করিয়া ভূরি ভূরি প্রশংসা করিতে লাগিলেন। স্থ্বাসা কহিলেন, অহা! অনস্ত দাসদিগের অস্তুত মহত্ত অদ্য আমার দৃষ্টিগোচর হইল। হে রাজন্! আমি কৃতাপরাধ, তথাপি ভূমি আমার কল্যাণ চেন্টা করিলে। অথবা যে সকল ব্যক্তি গান্তপতি, ভগবান্ হরিকে সংগ্রহ করিয়াছেন সেই দকল মহাল্যা সাধু পুরুষের স্কর অথবা স্থ্যক্র কি আছে? যাহার নাম প্রবণ মাত্রে পুরুষ নির্মাল হয় তীর্থপাদ সেই ভগবানের দাসদিগের কোন্ কার্যাই বা অবশিক্ত থাকে?। যাহা হউক, হে রাজন্! ভূমি অতি করুণাত্মা আমার প্রতি স্থমহৎ 'অমুগ্রহ প্রকাশ হইল, যে হেতু আমার অপরাধের প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া প্রাণ রক্ষা করিলে॥ ১১॥

অনন্তর রাজা অম্বরীয় আহার না করিয়া প্রত্যাগ্যন আকাজনায় চুর্বাসার চরণ ধারণ করিলেন এবং বারম্বার নমজ্জিয়া দ্বারা তাঁহাকে প্রসন্ধ করিয়া ভোজন করাইলেন,সাদরে সমানীত সর্বাভিলাঘ সম্পা-সক আতিথ্য স্বীকারে মহর্ষি চুর্বাসার সাতিশয় প্রিভোষ হইল, আহারানন্তর আদর পূর্বক আহ্বান করিয়া রাজাকে বলিকোন মহারাজ। তুনিও আহার কর । ১২ । **∞**⊦

প্রীতোহস্মাসুগৃহীতোহস্মি তব ভাগবতস্ত বৈ। দর্শনস্পর্শনালাপৈ রাতিখ্যেনাক্সমেধ্যা ॥ ১০॥ কর্মাবদাতমেততে গায়স্তি স্বস্থিয়োমুহ:। কীর্তিং পরম পুণ্যাঞ্চ কীর্ত্তয়িষ্যতি ভূরিয়ং॥ প্রিশুক উবাচ॥

এবং সংকীর্ত্তা রাজানং তুর্বাসাঃ পরিভোষিতঃ। যথো বিহায়সামস্ত্রা প্রকালোকমহৈতুকং ॥ ১৪ ॥ সংবংসরোহত্যগান্তাবদ্যাবতা নাগতো গতঃ। মুনি ন্তদ্রশনাকাজ্যী রাজান্তকো বস্তুব হ ॥ ১৫ ॥

श्रीयदन्त्रायो ।

ক্রীভোহন্দীতি শ্লোকৰন্নং পুনশ্চ বিপ্রোক্তিঃ। আত্মনি বেধা বেনাতিখোন। ১০। ন্ত্রিরং তত্ততো জনঃ কীর্ত্তিমাতি । ১৪॥ ওসা বৈধা। তিশ্বমাহ গভো মুনির্যাব্চা নাগ ঃ তাবং সংবংসরোহতিক্রান্ত ইতি । ১৫॥

ক্রমসন্ধর্ম:।

অহৈতৃক্ষিতি। স বিদায়ে হৈতৃকা: শুক্তক্নিষ্ঠবেদব হিন্দুৰ্থা: বত্ৰ ভনিকাৰ্থ: ॥ ১৪ ॥ অন্তক্ষ: পূৰ্ব্বমণ্মাত্ৰ ভক্ষিতবান্ রাজা ভদ্দন।কাজ্মএৰ বজুৰ নজু ভাৰস্মাত্ৰমণি ভক্ষিতৰানিভাৰ্থ:। বিজোপৰোগাদিতি পৰিত্ৰমিতি বিজানাং ভগৰৎ প্ৰধানানামুপ্ৰোগেন শ্ৰিভগৰত: প্ৰীভাতিশ্বাৎ ॥ ১৫ ॥

अविश्वनाथहळावर्शि ।

তব দর্শনাদিভি: কর্জ্ জিরমুগৃহীত: অতএব প্রীত:। অগীতি বর্তমাননির্দেশাৎ পূর্পজনশনাদিভিনৈ বামুগৃহীতোহম প্রীত এবাজ্বং যতজাং নিরাগসম্পি অস্থিত্: মহাজোধান্ধ কুত্যামস্কাং। তেন ভক্তকর্ম্কাণ্যের ভবিবরকভক্ত্যাধান্যের দর্শনাদীনি বৃদ্ধি স্থা তথেৰ ভানি ভপবি জ্ঞানি বিপ্রান্ত গৃহত্তি নান্যথেতাজাহমের দৃষ্ঠান্ত ইতি সিদ্ধান্তো ধ্বনিত:। তথা আত্মেশগা আত্মনো মম মেশগা সৃদ্ধা। বৃদ্ধা বদান্তীৰ বচন প্রহণ প্রতিপাদনীরং মে বৃদ্ধিন ভিনিষ্ঠ তদা কথ্যত্তিয়াং তেন চক্ত দত্ত মহাজোপোলি মম প্রমোপকারক: সংসারভারক ভক্তি মার্কজাপকোহভ্দিতি ভাবং । ১০ ।

অবদাতঃ শুকঃ

ব্ৰহ্ণোৰ্মিতি ভৱতা ব্ৰহাস্তৰিন: খবকুন্ প্ৰতি খীয় খাস্থাং হুৱে উক্তৰণ্যতাং ভক্তানাং ভক্তেণ্ড মহাপ্ৰতাৰং ৰজুমিতি ভাবং নবিদাতে হৈতৃকাং শুছ তৰ্ক নিঠা হয় ডং । ১৪।

গতো মুনির্যাহতা কালেন নাগতঃ ভাবৎ ভাবতা সংবৎসরঃ অত্যপাৎ নিজান্তঃ । ১৫ ।

হে রাজন্। তুমি পারম ভাগবত, আমি তোমা কর্তৃক অমুগৃহীত হইলাম, তোমার এই দর্শনে, এই আলাপে এবং যাহাতে আলায় নেধা হয়, তক্ষপ এই আতিথ্যে তোমার প্রতি আমার যৎপরোনান্তি প্রতি জিমিল ॥ ১০॥

স্বর্গনাসি স্বাঙ্গনা সকল তোনার এই নির্মাল কর্ম সর্বাদাই গান করিবেন আর পৃথিবীস্থ মানব কুল সভত তোমার পবিত্র কীর্ত্তিন করিবে।

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্ পরীকিং! মহর্ষি তুর্ব্বাসা পরিতৃষ্ট চিত্তে এই প্রকার কহিয়া রাজ্যি অম্বরীষের সহিত সম্ভাষণানন্তর আকাশ পথে প্রক্ষালোকে গমন করেন ॥ ১৪ ॥

কিন্তু তিনি গমন করিয়া যাবং পর্যান্ত না আদিয়াছিলেন তাবং পর্যান্ত সম্প্রদান অভিক্রান্ত হুইলেও রাজা অম্বরীয় তাঁহার দর্শনাকাজ্লায় জল মাজাহারী হুইয়াছিলেন ॥ ১৫ ॥ গতেহথ চুর্বাদিদ দোহস্বরীবো বিজ্ঞোপযোগাতিপবিত্রমাহরৎ।
ঋষে বিমাক্ষং ব্যদনক বীক্ষ্য মেনে স্ববীর্যাঞ্চ পরাকুভাবং॥ ১৬॥
এবং বিধানেক গুণঃ দ রাজা পরাত্মনি ভ্রহ্মণি বাহুদেবে ।
ক্রিয়াকলাপৈঃ দমুবাহ ভক্তিং যয়া বিরিক্ষ্যালিরয়াংশ্চকার॥
শ্রীশুক উবাচ॥

অথাম্বরীষস্তনয়েষু রাজ্যং সমানশীলেষু বিস্তৃজ্য ধীরঃ। বনং বিবেশাত্মনি বাহুদেবে মনোদধদ্ব গুণপ্রবাহঃ॥

ইত্যেতং পুণ্যমাধ্যানমন্বরীষস্থ ভূপতে:। সংকীর্ত্তিয়ম্পুধ্যায়ন্ ভক্তো ভগৰতো ভবেৎ ॥ অন্বরীষস্থ চরিতং যে শৃণুন্তি মহাত্মন:। মুক্তিং প্রযান্তি তে সর্ব্বে ভক্ত্যা বিফো: প্রসাদত: ১৭

श्रीभद्रभागी।

দ্বিজ্সোপ্যোগেন ভোজনেন অতি প্ৰিত্ৰমাহৰৎ বুভূজে স্বীয়ঞ্ ধৈৰ্যাদি লক্ষণং প্রাস্থাবং শ্রীভগ্ৰতঃ প্রভাবং মেনে ॥১৬ এবংবিধা অনেক গুণা যদ্য সঃ বিরিঞ্চ পদ সহিতান্ ভোগান্ নিরম্ব প্রায়ান্ অপশাদিতার্থঃ॥ ১৭ ॥

ক্রম্পন্স র্ড:

তাদুশোপদ্রবাস্তরমাশকা পুত্রসা যোগাতাং দৃষ্টাচ তত্ত ক্ষিতিং বিহায় বনে মানস দেবায়ামেব মনশ্চকারেত্যাহ অর্থেতি ॥১৬।১৭

बीविश्वनाथठकवर्छी ।

দ্বিজ্ঞ উপবোগেন অভিপবিত্রং আহরৎ আহারং কৃতবান্। স্ববীর্যাঞ্চ ধৈর্যাদি লক্ষণং পরস্ত ভগবত এবাহুতাবং প্রভাবং নত স্বলা । ১৬ ॥

পরাত্মনীতি পরমাত্মা ব্রহ্ম ভগবানিভাকতত্ত্বা যো বাস্থদেব তাত্মিন্। ক্রিয়াকলাপৈশ্যন্দির মাজ্জনিল্যে ব্যাভক্তা আবিরি-ক্যাৎ ভোগান্নরকত্ল্যান্ ॥ •

মনোদধৎ মনোধাতুং বনং বিবেশ। নহুস বৈ মনঃ কৃষ্ণপদার বিলয়ে। রিত্যুকের্গার্ছাছোপি সংপূর্ণং মনোভগবত্যাসীদেব সভাং ভক্তাবহুরাগিণঃ থলু মহাধনগৃধোর্কণিজ ইব অভাবো ভবেং। কোটাখরে।পি বণেগাত্মানমল ধনং মনামানো ধনমুপার্জ-রিতুং বথা সমুজান্তমপি গছেভি তবৈৰ ভকোপি ভক্তিমুপার্জিরিতুমিতি ॥ ১৭ ॥

তদনন্তর দেই ঋষি প্রত্যাগত হইলে ঐ রাজা ত্রাহ্মণভোজন দ্বারা পবিত্রিত ভোজ্য ভোজন করিলেন এবং ঋষির ব্যাসন ও পরিত্রাণের বিষয় স্মরণ করিয়া আপনার ধৈর্য্যাদি রূপ বীর্যা ও ভগবানের প্রভাব মান্ত করিতে লাগিলেন॥ ১৬॥

হে ভারত ! অম্বরীষ নরপতির এবস্বিধ গুণ, তিনি ক্রিয়া কলাপ দারা পরমাত্মা ভগবান্ বাহ্লেবের প্রতি পরম ভক্তি প্রদর্শন করিতেন। দেই ভক্তির প্রভাবে ব্রহ্মপদ সুহিত দর্বব প্রকার ভোগ তাঁহার সমক্ষে নিরয় প্রায় বোধ হইত।

শুকদেব কহিলেন তদনন্তর ঐ ধীর অম্বরীষ আপনার তুল্য শীলবান্ তনয়ের প্রতি রাজ্যভার সমর্পণ করিয়া বন প্রবেশ করিলেন। তিনি ভগবান্ বাহ্নদেবের প্রতি আজা মনঃ ধারণ করাতে তদীয় গুণ প্রবাহ বিধ্বন্ত হইয়া গেলঃ। হে রাজন্! অম্বরীয় ভূপতির এই পবিত্র উপাখ্যান যে ব্যক্তি কীর্ত্তন এবং সতত ধ্যান করেন তিনি ভগবন্তক ভাগবত হইবেন। অপর যে সকল মানব ভক্তি পূর্ব্বক মহালা অম্বরীষের চরিত্র প্রবণ করিবেন ভাঁহারা সকলেই ভগবান্ বিফুর প্রদাদে অনায়াদে মুক্তি পদ প্রাপ্ত হইতে পারিবেন ॥ ১৭ ॥

| 5年| 6年

॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমশ্বন্ধেহস্বরীষো-পাথ্যানং পঞ্চমোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ৫ ॥ ॥॥

শ্রীশুক উবাচ 🛚

বিরূপ: কেতুমান্ শস্তুরস্বরীয় হৃতাস্ত্রয়:। বিরূপাৎ পৃষদখোহভূৎ তৎপুত্রস্ত র্ণীতর: ॥ ১॥ রণীতরস্থাপ্রজন্ম ভার্যায়াং তন্ত্বেহর্ধিত:। অঙ্গিরা জনয়ামাদ প্রশাবর্কস্থিন: হৃতান্ ॥ ২॥ এতে ক্ষেত্রপ্রসূতা বৈ পুন স্থাঙ্গিরদা: স্মৃতা:। রণীতরাণাং প্রবরা: ক্ষেত্রোপেতা দ্বিলাতয়:॥০

वी धवया भी।

॥ ☀ ॥ ইভিনবমে পঞ্ম: । ☀ ॥

বঠারতে ১ ঘরীর্মীয় বংশমূক্ত্ব ততঃ পরং। বঠাল। ইভিরধানে বিক্লেকার্থণ উচাতে। ততা বঠো শশাদাদির্মাক্ষতেরা নিজ-পাতে। প্রসঙ্গাং সৌহনে রাখ্যা মান্ধাত্তনরাপতেঃ ॥ ১॥

ভক্তবে সন্তানার্থ:॥ ২॥

দে অদিরস। জনিতা এতে রণীতরত কেনে প্রস্তবেদন রণীতর গোঝা: সম্ভ: অদিরসো বীর্ঘোণ প্রস্তত্বাদাদিরসাশ্চ প্রারণি রথীতরাণাং অফ্রেযাং জাতানাং প্রবর। মুখাা: স্বৃতা:। যুড: কেন্তোপেতা ব্যাস্থা ইতার্থ: ৪৩॥

ភាពអង្គមន

॥ 🕶 ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্ষে শ্রীকীবর্গোস্থামিক্ত ক্রমসন্দর্ভনা পঞ্চমোহ্ণ্যার: সমাধ্য: ॥ 🕶 ॥ •

প্ৰীবিখনাপচক্ৰবতী'।

। ♦ ॥ ইতি সারার্থদর্শিক্তাং হবিণ্যাং ভক্তচেডসাং। নবমে প্রধানঃ স্কৃতংশস্কৃতঃ সভাং ॥ ♦ ॥ বঠে শশাদেজবাহ যুবনাম কপোচাতে। মাকাতৃশ্চ চরিত্রাস্তঃ সৌভ্ব্যাথ্যান্মসূতং ॥ ১॥ তক্তবে স্থানার্থি। ২॥

বণীতরত ক্ষেত্রে ভার্যারাং প্রস্তুত্বাদ্দিরসো বীর্যালাত্ত্বাৎ এতে রণীতর প্রবের প্রবেদ প্রদিদ্ধাঃ ক্ষেত্রোপেতা বিজ্ঞাতরো বিপ্রাঃ। বে জাতী যেবাং তে ইত্যুবর্থসংক্ষা ॥ ৩॥

॥ 🗯 ॥ हेि निवस्य १४ 🛊 ॥ 🛊 ॥

ষষ্ঠাধায়ে অম্বরীষ বংশ, শশাদ অবধি মান্ধাতৃ পর্যান্তের র্তান্ত এবং প্রসঙ্গতঃ মান্ধাতৃ তন্যাপতি সৌভরির উপাথ্যান ॥ ৩ ॥

শুকদেব কহিলেন অম্রীমের তিন পুত্র বিরূপ, কেতুমান্ এবং শস্তু। তম্মধ্যে বিরূপের তনয় প্রদম্য, তাহার সন্তান রথীতর ॥ ১ ॥

রথীতরের পুত্র বা কন্স। কিছুই হয় নাই, তিনি অপ্রক্ষ ছিলেন, এ কারণ তাঁহার প্রার্থনাসুসারে সন্তানার্থ অর্থিত হইয়া মহর্ষি অঙ্গিরা তদীয় ভার্য্যায় ব্রহ্মবর্চনি কতিপর সুন্তান উৎপন্ন করিয়া দেন ॥২
. হে রাজন্! অঙ্গিরা হইতে যে সকল সন্তান জন্মিয়াছিল তাহারা রথীতরের ক্ষেত্রে প্রসূত হওরাতে যদিও রথীতর গোত্র হইয়াছিল তথাচ অঙ্গিরার উরসে উৎপত্তি নিমিত্ত আঙ্গিরস বলিয়াও বিধ্যাত হয়, অধিকন্ত যে হেতু তাহারা ক্ষেত্রোপেত ব্রাহ্মণ একারণ অন্যান্য রথীতর সন্তানদিগের মধ্যে মুখ্য ছিল ॥৩

ক্ৰেতস্ত মনোর্জ জে ইক্ষাকু অণিত: হত:। তদ্য পুত্ৰণত জ্যেষ্ঠা বিকৃক্ষি নিমি দণ্ডকা: ॥ ৪ ॥ তেষাং পুরস্তাদভবদার্ঘাবর্ত্তে নূপা নূপ। পঞ্চবিংশতি: পশ্চাচ্চ ত্রেয়ামধ্যেহপরেহ্সত: ॥ ৫ ॥ দ একদাই কাশ্রাছে ইক্ষাকু: হতমাদিশৎ। মাংস্যানীয়তাং মেধ্যং বিকৃক্ষে গছে মাচিরং॥ ৬॥ তথেতি দ বনং গছা মুগান্ হছা ক্রিয়াহণান্। প্রান্তা বুভুক্তিতো বীরঃ শশকাদদপশ্বতি:॥ ৭॥

धीभव्यामी।

তদেবং মনোদ শিহ্ন পুত্ৰেবু পৃষ্ঞদ কৰিক বিষক্তভাৱ বংশ প্ৰবৰ্তকৌ। করুবাদীনাঞ্চ সপ্তানাং বংশান্তার হৃদ্য ক্ৰেনিয়েতি বিতত মিক্লাকোর ংশমাহ ক্ষ্বত ইত্যাদিনা বাবং সোমবংশপ্রভাব:। ক্ষুণ কুর্বতো মনোর্ঘণিতো লজে। শুদ্ধায়াং জনমামাস দশপুত্রানিতিত পূর্বোজ্ঞং বাহলাতিপ্রায়েণেতি জ্ঞাইবাং। প্রাণাং শতে জ্যোষ্ঠাঃ। ৪॥

আব্যাবর্ত্তঃ পুণাভূমিম ধ্যং বিকাহিমাগবোঃ। ভলিন্ পুরতাং সমুদ্রপর্যাত্তং মঙল বিভাগেন পঞ্বিংখতি নৃ পা অভবন্। ছেন্প তথৈব পশ্চাচ্চ পঞ্বিংশতিঃ। সধোতৃ ভোষ্ঠাল্লবঃ। অপবেত্ অল্পতঃ অল্পতঃ অলভোহত দলিগোডরাণির্ । ৫ ।

বিকুক্সিরের শশাদ ইতি বিশ্রুত ইতি বক্ষাতি। তত্ত হেতু মাহ স একলা ইতি চতুর্ভি: এও এ কিয়ার্শান্ প্রাথমিক সাদং অভক্ষং এ ৭ এ

श्चीविश्वनाशहक्तवडी ।

মনোর্জ্যেষ্ঠ পুত্রভাতিবিভত মিক্ষ্কোর্কংশমাহ ক্বত বিত্যাদিনা। ক্তং কুর্কতো মনোর্ভ্রাণতো লজে প্রছারাং জনরামাস দশপুত্রামিতিত বাহল্যাদিপ্রায়েণেতি স্বামিচরণাঃ ॥ ৪ ॥

আর্থ্যাবর্তঃ পুণাভূমির্ম্বধাং বিদ্ধাহিমাগ্রোঃ। তরিন্ পুরস্তাৎ সমুদ্র পর্যাস্তং পৃথক্ পৃথয়্তবেরু পঞ্বিংশতি নুসি। অভবন্। পশ্চাক তথৈব পঞ্বিংশতিঃ। মধ্যে জোঠাল্লয়ঃ। অপরেজু অন্যতঃ অন্যতঃ অন্যতা দক্ষিণোত্তরাদিরু॥ ৫॥

বিকুকি: শশাদ সংজ্ঞোৎভৃত্তীর চেতুমাহ স ইতি চতুর্ভি: ॥ ७। १ ॥

হে রাজন্। সমুর দশ সন্থানের মধ্যে পৃষ্ধ ও কবি সংসারে বিরক্ত হইয়াছিলেন, একোরণ ভাঁহাদের বংশ হয় নাই, করাঘাদি সপ্ত তনয়ের বংশ কথিত হইয়াছে। ইক্ষাকুর বংশ অতিশয় বিস্তার্গ, এ প্রযুক্ত অগ্রে না বলিয়া এক্ষণে বলা যাইতেছে যথা ক্ষুত করিতে করিতে মমুর আগে হইতে ইক্ষাকুর জন্ম হয়, এই ইক্ষাকুর এক শত সন্তান, তন্মধ্যে বিকৃক্তি নিমি, দশুক প্রভৃতি প্রেষ্ঠ ॥ ৪ ॥

সেই শত পুজের মধ্যে পঞ্চবিংশতি জন বিদ্ধা ও হিমালয় পর্বতের মধ্যবর্তী আর্থাবর্তী সমূপে সমূদে পর্যান্ত এক এক মণ্ডলে রাজা ইয়েন। সেই রূপ পশ্চাতেও পঞ্চবিংশতি জন এক এক মণ্ডলে ভূপাল হন্। কিন্তু মধ্যহলে জ্যেষ্ঠ তিন জন, আর দক্ষিণ উত্তরাদি অন্যান্য ভাগে অন্যান্য পুজেরা রাজ্পদাভিষ্ঠিত হইয়াছিলেন। ৫॥

সে যাহা হউক, এক দিবস ইক্ষাকু রাজা অফকা আদ্ধ করিবার নিমিত্ত বিকৃক্তিকে আহ্বান করিয়া কহিলেন বংস। শীত্র বনে গিয়া আদ্ধার্থ পবিত্র মাংস আহ্রণ কর ॥ ৬॥

বিকৃষ্ণি "তাহাই করিতেছি"বলিয়া তৎক্ষণাৎ বন গমন পূর্বক আন্ধার্থ বহুতর মৃগ বধ করিলোন। তদনন্তর আন্ত ও ক্ষুধার্ত হুওয়াতে বিশ্বৃতি ক্রমে হত পশুর মধ্য হইতে একটা শশক লইয়া ভক্ষণ করিলোন॥ ৭॥

শেষং নিবেদয়ামাস পিত্রে তেনচ তালা কা:। চোদিত: প্রোক্ষণায়াহ দুইনেডদকর্মক:॥৮॥
ভারো পুত্রস্থা তৎ কর্ম গুরুণাভিহিত: নূপ:। দেশামি:দারয়ামাদ স্থত: ত্যক্তবিধি: রুষা॥৯॥
সতু বিপ্রেণ সংবাদ: জ্ঞাপকেন সমাচরন্॥ ১০॥

ত্যক্তা কলেবরং যোগী সতেনাবাপ যৎপরং॥ ১১॥

পিত্যু পিরতেহভ্যেত্য বিকৃষ্ণিঃ পৃথিবীমিমাং। শাসদীজে হরিং য**ৈজঃ শশাদ ই**তি বিশ্রুতঃ ॥১২ ়পুরঞ্জয়ন্তস্ত হলুবাহ ইতীরিতঃ। ককুৎস্থ ইতি চাপ্যুক্তঃ শৃণু নামানি কর্মভিঃ॥ ১০॥

चीभवत्रामी।

ছদাকুৰ শিষ্ঠ: প্ৰোক্ষণার আছে।চিত সংস্থারার ॥ ৮ ॥

গ্রীকোবিধিং সদাচারো যেন ভং॥ ৯॥

সতু ইক্।কু: জ্বপিকেন বশিষ্ঠেন ॥ ১০ ॥

রাজ্যভোগেন বিরকো যোগী সন্ তেন যোগেন কলেবরং তাজনু স যথ পরং তত্ত তদবাপ । ১১ ॥

শাসং পালয়ন্ হরিমীজে ॥ ১২ ॥

বৈতাপুৰসা জয়াৎ পুরঞ্জঃ। ইজ্রোবাহোহতে তীক্সবাহঃ। করুদি স্থিতখাৎ করুৎস্থ ইতিচ শশাদ স্থতত ত্রীণি নামানি

क्रममनार्डः।

সমাচরন্ বভূবেজি শেবঃ। সমাচরণিতি পাঠে চুবিতীরং সুইতি পদং সার্থকমেব। কচিচ্চ টীকা পাঠঃ। সুষ্থপরং জ্বং জ্বেলিতি ॥ ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । ১১ ॥

ঈলে হরি মিতি যক্ষন প্রভাবেনৈব পিতৃত্যাগদোষং চাতিক্রান্তবানিতি ক্লেরং ১১২।১৩।১৪।১৫।১৬।১৭।১৮।১৯।২০।

शिविधनां भठकवं वी ।

ত্তপাু কর্মশিষ্ঠ: ছ্টমিডা প্রভাগত বিকু কিশা ভূক হাং। ৮। ১॥

সতু ইক্ষুকু: জ্ঞাপকেন জ্ঞানদ।দ্বিনা বলিঠেন ॥ ১০ ॥

भ! तर भ! नग्रन् तन् ॥ ১১ । ১२ ॥

বৈত্যপুরত করাৎ পুরঞ্জঃ। ইংস্রোবাহে তেইতি ইস্রবাহঃ। ককুদি স্থিততাৎ করুংস্ ইতি। কর্মাভিরিতি বৈ: কর্মাভি

পরে অবশিষ্ট মাংস লইয়া পিতৃ গমীপে আগমন পূর্বকি সমুদায় নিবেদন করিলেন। ইক্ষাকু সেই মাংসের আানোচিত সংস্কারার্থ ক্লপুরোহিত বশিষ্ঠদেবকৈ নিযুক্ত করিলে সেই মুনি বলিলেন এ মাংস দূষিত হইয়াছে, ইহা কর্মার্থ হইবে না॥ ৮॥

তদনন্তর মহর্ষি বশিষ্ঠ তাহার বিবরণ বর্ণন করিলে রাজা পুজের কর্ম অবগত হইয়া রোষ বশতঃ তাহাকে দেশ হইতে নিঃসারিত করিয়া দিলেন,কারণ শ্রাদ্ধীয় মাংদের অগ্রভাগ গ্রহণ করাতে তাহার সদাচার পরিত্যক্ত হইয়াছিল ॥ ১॥

তাহার পর ইক্ষাকু বশিষ্ঠের সহিত আলা জ্ঞান বিষয়ক আলোচনায় প্রবৃত হয়েন॥ ১০ ॥

পরিশেষে রাজ্যভোগে বিরক্ত হইয়া যোগী হইলেন এবং যোগ দ্বারা কলেবর পরিত্যাগ পূর্বক যাহা পরম তত্ত্ব তাহা প্রাপ্ত হইলেন ॥ ১১ ॥

পিত। উপরত হইলে বিকৃষ্ণি স্বদেশ প্রত্যাগমন করিয়াছিলেন এবং শশাদ এই নামে বিধ্যাত হইরা পৈতৃক রাজ্য গ্রহণ পূর্বক পালন ও বিবিধ যজ্ঞ ছারা ভগবান্ হরির আরোধনা করেন। ১২॥

শশাদের পুত্র পুরঞ্জয়।, ঐ পুত্র ইন্দ্রবাহ নামেও কথিত এবং ককুৎস্থ বলিয়াও উক্ত হইয়া থাকে।

কৃতান্ত আসীৎ সমরো দেবানাং সহ দানবৈ:। পাঞ্জি গ্রাছে। ব্রতো বীরো দেবৈদৈ ত্যপরাজিতৈ: ॥১৪
বচনাদ্দেবদেবতা বিফোর্বিশাস্থন: প্রভো:। বাহনত্বে বৃতন্ততা বভুবেন্দ্রে। মহার্য: ॥
স সমজা বন্দুর্দিব্যমাদায় বিশিখান্ শিতান্। স্থ্যমানস্থযাক্ষত্থ যুযুধ্ম: ককৃদি ছিত:॥
তেজসাপ্যায়িতো বিকো: পুক্ষতা মহাস্থন:। প্রতীচ্যাং দিশি দৈত্যানাং অক্লণৎ ত্রিদশৈ: পুরং॥১৫
তৈন্তব্য চাভূৎ প্রধনং ভূম্লং লোমহর্ষণ:। যমায় ভল্লৈরনয়দৈত্যানভিষযুম্বি ॥ ১৬ ॥
তত্তেরু পাতাভিম্থং যুগান্তায়িমিবোল্বণ:। বিক্রা কুক্রবুদৈ ত্যা ইত্যমানা: স্থালয়ং॥ ১৭ ॥

बीशतकामी

তৎকর্ম নিমিন্তানি ॥ ১৩ ॥

তানি বাাচকাণ আহ কুতান্ত ইভি সপ্ততি:। কুতং বিশ্বমন্তরতীতি তথা পাঞ্চি আহ: সহায়: 1 ১৪ গ

ইজো বদি মম বাহনং ভাও তর্হি দৈতা।নৃহনিব।মীতি তেন বাহনখেন বৃতঃ সরিজো সজ্জরা তদনদী কুর্ন্থ বিজ্ঞার্কচনং ওভা বাহনখায় মহাব্বো বভূবেতার্থ: ॥ ১৫ ॥

বেংভিমুশং ষ্মুতান্বমং দশ্রিতুং সদেহানের ভটেররনরদিত।র্থ: ॥ ১৬ ॥ ভচে দৃষ্টাভোচ হুফুরু:। অমাস্রং পাতালং ॥ ১৭ ॥

এবিশ্বনাপচক্রবন্তী।

দ্বীণি নামানি তানি শৃণি,ভার্থ: । ১০।

ক্তত বিশ্বতাতোনাশো ব্যাতাদৃশঃ সমর আসীৎ তত্ত দেবে: পাঞ্চি গ্রাহো বৃতঃ ॥ ১৪ ॥

ইক্রোম্বলি মম বাহনং ভাতিলা দৈত্যান্ হনিব্যামীতি তেন বাহণ্ডেন সূতঃ সরিক্রো লজ্জরা তদনলীকুর্বন্ বিফোর্বচনাৎ ওভা বাহনং মহাবুৰোবভূবেতার্থঃ । স পুর্ঞ্জরঃ বৃৰং সমারুছেতীক্রবাহঃ ককুদিভিত ইতি ককুৎস্থভাতৃৎ ॥

ত্রিদলৈঃ সহিতঃ পুরং ন্যকণং ॥ ২৫॥ যমার জনমং যমং মৃত্যুং প্রাপমামাস গভার্থ কর্মণীতি চতুর্থী ॥ ১৬ ॥ দৈত্যাৰশিষ্টা জালরং পাতালং ॥ ১৭ ॥

যে যে কর্ম ছারা ভাহার ঐ ঐ নাম হয় বলিতেছি প্রবণ কর॥ ১৩॥

পূর্বেষ যৎকালে দানবদিগের সহিত দেবগণের বিশ্ববিনাশন সমর হইয়াছিল, দে সময় দৈবতারা দৈত্যগণ কর্ত্ত পরাজিত হইয়া ঐ বীরকে আপনাদের সহায় করেন ॥ ১৪ ॥

তিনি, "ইন্দ্র যদি আমার বাহন হন তবে আমি দৈত্যদিগকে বধ করিব"ইহা বলিয়া ইন্দ্রকে বাহনত্ত্ব বরণ করিয়াছিলেন। ইন্দ্র প্রথমতঃ লজ্জা বশতঃ অস্বীকার করেন, পরে বিশ্বাত্মা দেবদেব বিষ্ণুর বাক্যে শ্বীকার করিয়া পুরঞ্জারের বাহন হইবার নিমিত্ত মহার্গভ হয়েন। এই রূপে ইন্দ্রবাহন হও-য়াতে পুরপ্রয়ের ইন্দ্রবাহ এই দ্বিতীয় নাম হয়। তদনন্তর পুরপ্রয় বর্মা সমন্ধ্রকরিয়া দিব্য ধনুঃ তথা ভূরি ভূরি শাণিত শর গ্রহণ পূর্বক দেই ব্যভেব ককুদোপরি আরোহণ করিয়া অগন্থিত হন, তদ্দর্শনে দেবগণ তাঁহার স্তব আরম্ভ করেন। পরে পুরপ্রয় মহাগা পরম পুরুষ বিষ্ণুর তেজে বিদ্ধিত হইয়া দেব-তাদের দার পশ্চিম দিকে দৈত্যে দিগের পুরী নিক্ষ কিবিশেন ॥ ১৫॥

ভদনন্তর দানবগণের স্থিতি তাঁহ র তুমুল সংগ্রাম হইল। যে সকল দৈত্য সমরে তাঁহার সন্মুখীন হইল, তিনি ভাহাদিগার্কে যম সন্দর্শীর্থ প্রেরণ করিতে পাগিলের ॥ ১৬ ॥

তদর্শনে অবশিষ্ট দৈতিলৈ ধিল্যমান হইয়। অত্যুত্তণ প্রলয়ানল তুলা তদীয় বাণপাতাতিমুখ পরিহার পূর্বিক স্ব স্থালয় পাড়ালে পলায়ন পরায়ণ হইলু ॥ ১৭ ॥ জিছা পুরং ধনং দর্বাং দক্তীকং বজ্ঞপাণরে। প্রভাষক্তং দ রাজর্ষিরিতি নামভিরাক্ষতঃ ॥
প্রশ্নক্ষ পুজােহতুদনেনান্তং হতঃ পৃথুঃ। বিশ্বপদ্ধিন্ততশ্চন্দো যুবনাশস্ত তং হতঃ ॥ ১৮॥
শ্বাবন্ত তংহতো যেন শ্রাবন্তী নির্মানে পুরী। বুহদশন্ত শ্রাবন্তিন্ততঃ ক্বলয়াশকঃ ॥ ১৯॥
যঃ প্রিয়ার্থমূতক্ষদা ধৃদ্ধনাসান্তরং বলী। হাজানানেকবিংশতাা সহলৈরহনদৃতঃ ॥ ২০॥
ধৃদ্ধার ইতিখাতে তং হতা নেচ জহলুঃ। ধুদ্ধামুখায়না সর্বে তায় এবাবশেষিতাঃ ॥
দৃঢ়াশঃ কপিলাশশ্চ ভাজাশ ইতি ভারত। দৃঢ়াশপুল্লোহ্গাশো নিক্তা তং হতঃ শ্বাতঃ ॥ ২১॥
বিহলাশো নিক্তাত কুশাশোহধাস্য সেনজিং। যুবনাশোহভবং তদ্য সোহনপ্তাঃ বনং গতঃ ॥২২॥

विषद्रपामी।

ইত্যেতৈ: কৰ্জিং প্রশ্বাদি নাম্ভিরান্ত: ব্যাল্ড:। আহত ইতি পাঠান্তরে আহুত ইতার্থ: ৯ ১৮ । আবিতি প্রাবৃত্তিনা স্ত: ॥ ১৯ ॥
ক্বল্যাৰ এব ধুজুনার ইতি থাতে:। তাল কার্ণমাহ ব ইতি। স্তানাদেক বিংশত্যা সহলৈ বুভি: সন্হত্বান্ ॥ ২০ ॥
ধুজুমার ইতি চেভি চকারভাবর: ॥ ২১ ॥
অধ তালারিক্সাৎ কুশাব: ॥ ২২ ॥

क्रमनमर्खः ।

अविभनाशहत्ववर्ग

জিবা প্রসিতি প্রঞ্জাস বজাপাণি: প্রতাবচ্ছৎ পুন ওড রাজর্বে রাজর্বির দদৌ। অতএব স রাজর্বি: নামভি: প্রঞ্জা-দিভিরাত্ত বাজ্ত । আত্ত ইভি পাঠে আছুড ইভার্থ: ॥ ১৮ । ১৯ ॥

ञ्चलानामकविः भला। महरेखवू किः महहन । २०। २১। २२ । २०॥

অতএব অসনাগণ সহ সমস্ত ধন ও পুর জয় করিয়া সেই রাজর্ষি দেবরাজ ইন্তকে প্রদান করি-লেন। ঐ সকল কর্ম দারা তদবধি তিনি পুরঞ্জয়াদি নামে ব্যাহাত হইতেন। হে রাজন্ পরীক্ষিং! উলিখিত পুরঞ্জয়ের পুত্র অনেনাঃ। ভাহার স্ভান পূথু। ভাহা হইতে বিশ্বপদ্ধি জন্ম গ্রহণ করেন। ভাহার তনর চন্দ্র। চন্দ্রের পুত্র যুবনাশ্র ১৮॥

যুবনাখের হৃত আবস্ত, যিনি আবস্তী পুরী নির্মাণ করেন। ঐ আবিস্তের সন্তান রুহদখ,ভাহার পুত্র কবলয়াখ ॥ ১৯॥

এই নহাবল রাজা ঋষিবর উতত্তের প্রিরার্থ আপনার এক বিংশতি সহত্র পুত্রে পরিবৃত হইয়া ধুকু নামা অহুর বরকে সংহার করেন ॥ ২০ ॥

অতএব ধুজুমার বলিয়া বিধাতি হঁইয়াছিলেন। কিন্তু তাঁহার পুত্রগণ ধুজুর মুধাগ্রি ধারা সকলেই জ্বিয়া ভন্মসাৎ হইয়া গিয়াছিল,কেবল তিন জন মাত্র অবশিক্ত ছিল অর্থাৎ দৃঢ়াখ,কপিলাখ ও ভত্তাখ এই তিন জন জীবিত থাকেন। তন্মধ্যে দৃঢ়াখের পুত্র হর্ষাখ, তাহার ভনর নিকুত্ত । ২১ ॥

নিকুষ্কের পুত্র বহুলাখ, তাহা হইতে কুশাখ উৎপন্ন হয়েন। সেই কুশাখের তনর সেনজিৎ, ভাহার পুত্র যুবনাখ ঐ ব্যক্তি অনপত্য হইয়া অরণ্য গমন করেন॥ ২২॥ ভাষ্যা শতেন নির্বিশ্ব ঋষয়ে যাই সা কুপালব: । ইষ্টিং তা বর্ত্তরা কফুরৈন্দ্রীং তে অসমাহিতা: ॥২৩॥ রাজা তদবজ্ঞ সদনং প্রবিটো নিশি তর্বিত: । দৃষ্ট্বা শয়ানান্ বিপ্রাং তান্ পর্পো মন্ত্রজ্ঞলং ব্য়ং ॥২৪॥ উত্থিতাত্তে নিশম্যাথ ব্যাদকং কলসং প্রভো । পপ্রচ্ছু: কস্য কর্ত্মেদং পীতং পুংস্বনং জলং ॥২৫॥ রাজ্ঞা পীতং বিদিহা বৈ ঈশ্বরপ্রহিতেন তে । ঈশ্বরায় নমশ্চক্রু রহো দৈববলং বলং ॥ ততঃ কাল উপারতে কুক্মিং নির্ভিদ্য দক্ষিণং । যুবানাশ্বস্য তনয় শ্চক্রবন্তী জ্ঞানহ ॥ ২৬॥ কং ধাক্ষতি কুমারোহ্যাং ত্তন্যে রোরয়তে ভূশং । মান্ধাতা বৎস মারোদীরিতীক্ষো দেশিনীমদাৎ ॥২৭

शिषद्रभागी।

ভার্য।পাং শতেন সহ অঞ্চ পুতার্থং ইস্কলৈবভামিটিং প্রবর্ত্তরামানুঃ শ্বেডাাশ্চর্যে। ২০ ।

ভদেবাছ রাজেতি বড়্ভি:। ভিবিত ভূবিত: সন্ ললার্থ প্রবিটো মন্ত্রাতি মন্ত্রিতং জলং পট্ছা দেরং অল্পং পণ্টে ॥ ২৪৯ । বুলকং নিক্লকং। পুংস্বনং পুলোৎপত্তিকারণং ॥ ২৫ ॥

ष्मारा दिववनामय मुक्षाः वनः शूक्षववनद्ध न किकिनिक्ति वृत्तस स्रेचतात्र नमस्रातः हत्तः । २७ ॥

ক্ষরং কং ধাততি পাততীতি ছংধিতৈ বি'বৈশ্বস্তে সতি তভ।মিষ্ট্যামারাধিত ইংশ্রোমাং ধাতা পাতা হে বংস মারোদীরিতি ক্রবন্ দেশিনীং তর্জনীনদাদিত্যবং ॥ ২৭ ॥

अविश्वनाथहक वर्षी

ভৰিত: ত্বাৰ্জ: মন্ত্ৰানিভিশ্বন্তিতং পদ্মৈ। দেলং স্বৰং পপৌ ॥ ২৪। ২৫॥

देनववन्याय वन्धि वन्यः ॥ २७ ॥

অরং কং ধাততি পাত তীতি বিজৈককে সভি ভতামিট্যামারাধিতঃ ইল্লোমাস্থাতা পাতা হে ৰংস মারোদীরিতি ক্রন্ দেশিনীং ভর্জনীমদাং । ২৭ । ২৮ । ২৯ । ০০ । ০১ ॥

তাঁহার একশত ভার্যাছিল, তনয়াভাবে বনে গিয়াও সেই শত বনিতা দহিত তিনি দর্বদা বিষণ্ণ ভাবে থাকিতেন। তদ্দশঁনে অরণ্যবাদী ঋষিগণ তাঁহার প্রতি দ্য়ালু হন্ এবং দন্তানার্থ সমাহিত চিত্তে ইফ্রেদৈবত্য যজ্ঞ প্রবর্ত করান ॥ ২০॥

হে রাজন্। আশ্চর্য্য কথা শ্রবণ কর। যজ্ঞ প্রবর্তনান হুইলে এক দিন যুবনাখ নিশাভাগে তৃষিত্ত হুইয়া জলার্থ যজ্ঞ সদনে প্রবেশ করিলেন এবং ঋদ্বিক্ বিপ্রগণ শ্রান থাকাতে তথায় পদ্ধাকে দিবার নিমিত্ত মন্ত্রাভিমন্ত্রিত যে জল, ছিল পিপাসা পীড়ায় তাহাই পান করিলেন ॥ ২৪ ॥

পুরোহিতেরা নিজেপিত হইয়৷ দেখিলেন কলদে জল নাই, অতএব বিশ্মিত হইয়া জিজ্ঞাদা করি-লেন এ কর্ম কাহার ? পুজোৎপত্তিকারক জল কে পান করিয়া গেল ? ॥ ২৫ ॥

অনন্তর ষধন বিদিত হইল ঈশার প্রহিত হইয়া রাজা ঐ জল স্বয়ং পান করিয়াছেন, তথন "অহা দৈববলই মুধ্য বল, পুরুষের বল কোন কার্যোর নহে" এই বাক্য উচ্চারণ করত ঈশারকে বার-মার নমস্কার করিতে লাগিলেন। অনন্তর সময় পূর্ণ হইলে সুবনাশের দক্ষিণ কুক্ষি নির্দেশ করিয়া চক্রবর্ত্তি লক্ষণাক্রান্ত একটা ভনায় উৎপন্ন হইল ॥ ২৬ ॥

ভদর্শনে বিপ্রগণ ছংখিত হইয়া যথন এই বলিয়া চীৎকার করিতে লাগিলেন, হা! এই কুমার জ্ঞার্থ রোদন করিতেছে, কি পান করিবে? তথন দেবরাজ ইন্দ্র (বংস! রোদন করিও না, মাং ধাতা অর্থাৎ আমাকে পান করিবে) বলিয়া আপনার তর্জনী প্রদান করিলেন। ঐ কারণে মান্ধাতা নাম হয় ॥ ২৭ ॥

ন মমার পিতা তম্ম বিপ্রদেব প্রদাদতঃ। যুবনাশোহণ তত্ত্বৈব তপদা দিদ্ধিমন্থান ॥ ২৮॥ ত্রেদহারিতীন্দ্রাহেশ বিদধে নাম যম্ম বৈ। যমাৎ ত্রদন্তিছ বিগা দদ্যবো রাবণাদরঃ॥ ২৯॥ যৌবনাখোহণ মান্ধাতা চক্রবর্ত্ত্বনীং প্রভূঃ। দপ্তদীপবতীমেকঃ শশাসাচ্যুত্তেজ্বদা॥ ৩০॥ উল্লেচ যক্তঃ ক্রুভিরাত্মবিস্কুরি দক্ষিণৈঃ। দর্বদেবময়ং দেবং দ্বাত্মকাজীন্দ্রিং॥ দ্বাং মন্ত্রোবিধির্যজ্ঞো যজমানস্তথ্তি জঃ। ধর্ম্মো দেশদ্ কালক্ষ্ক সর্ব্বনেত্দ্যাত্মকং॥ ৩১॥ যাবৎ সূর্য্য উদেতিক্ম যাবচ্চ প্রতিতিষ্ঠতি। তৎ দ্বাং যৌবনাখ্য মান্ধাত্ম ক্রেম্ব্যুত্তে॥ তিশাবিশোর্ত্র বিক্রযত্যামধান্ধার। পুরুক্ৎসমন্বরীষং মুচুক্দ্র যোগিনং॥ ৩২॥ তেষাং স্বারং পঞ্চাশং দেখিছারং বিত্ররে পতিং॥ ৩৩॥

अध्यक्षायो ।

ত্সা পিতা যুবনাখো ভিন্ন কুফিবপি ন মমার কিন্তু কালান্তরে তপদা দিদ্ধিমন্ত্রগাৎ ॥ ২৮ ॥

মাকাতু মহিমানমাহ অগদ স্থারিতি বড়ভি:। অঙ্গ হে রাজন্ যুখাশাক্ষাতু দ ভব উবিগ্না: কম্পিকা: সন্ধ: অসতি অত ইত্তে। বহু অগদস্থারিতি নাম বিদ্ধে স্মাক্ষাতা অগনীমেক: শশ্বেতু ভবেণাৰয়: ॥ ২৯ ॥

অচ্যতক্ত তেজদা। অপ্রচাতেন তেজদেতি বা । ৩ ।।

আত্মবিদ্রি স বঞ্চং বিফুং দ্বলে তমেব বিশিন্তি সর্বদেবমন্ত্রমিভি সার্চ্চেন ॥ ৩১॥

প্রতিভিন্তি অন্তং গছতি॥ ৩২॥

প্রাপদাৎ সৌভরে চরিতমাহ তেবামিতি বাবৎ সমাপ্তি। তেবাং স্বপার: মান্ধাতু: কন্যা: ॥ ৩০ ॥

बीविधनाथठक वर्छी ।

প্রতিতিঠতি অস্তং গছতি ॥ ৩২। ৬৩॥

মান্ধাতার পিতা যুবনাশ, দেব আক্ষাণের প্রদাদে মৃত্যুগ্রস্ত হয়েন নাই, ওপক্সা দারা দেই স্থানেই কালাস্তরে দিন্ধি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন ॥ ২৮॥

় দে যাহা হউক, রাবণাদি দহ্যগণ ঐমান্ধাভার প্রতাপে কম্পিত হইয়া সন্ত্রস্ত হইয়াছিল, ইহাতে ইন্দ্র ভাঁহার অন্য এক নাম ত্রেদম্য রাখেন॥ ২৯॥

হে রাজন্। তদনন্তর যুবনাথ তনয় মান্ধাতা স্মাট্ হ্ইয়া ভগবান্ অচ্যতের তেজে একাকী সপ্ত দ্বীপা পৃথিবী শাসন করেন॥ ৩০॥

এবং আত্মজ্ঞ হইয়াও ভূরি ভূরি দক্ষিণা দিয়া বহু বহু যজ্ঞ করত তন্ধারা যজ্ঞরূপি সর্বদেবময় সর্বাত্মক অতীন্দ্রিয় সেই দেবের অর্চনা করেন, দ্রব্যুমন্ত্র, বিধি, যজ্ঞায়জসান, ঋত্মিক্,ধর্মোপদেশ এবং কাল এই সমস্ত ঘাঁহার অরূপ ॥ ৩১॥

হে রাজন্। যত দূর পর্যান্ত সূর্যা উদিত হন এবং যাবৎ পর্যান্ত অন্ত হইয়া থাকেন তত দূর পর্যান্ত সমুদায় ছান যুবনাম্পুত্র নাজাতার ক্ষেত্র বলিয়া কথিত হইয়া থাকে। সে যাহা হউক, ঐ রাজা শশবিন্দুর ছহিতা ইন্দুমতীর গর্ব্তে পুরুকুৎস, অন্বরীষ এবং যোগি মুহুকুন্দ এই তিনটী তনম উৎপন্ন করেন। ৩২।

এ তিন তনয়ের পঞ্চাশৎ ভগিনী অর্থাৎ মান্ধাতার পুত্র ত্রেয় ব্যতীত পঞ্চাশটী কল্পা হইয়াছিল।
তাহারা সকলেই সোভারিকে পতিছে বরণ করে ॥ ৩৩ ॥

যমুনান্তর্কলে মা গুপ্যমান: পরং তপঃ। নির্ভিং ক্ষান্ত্রাক্ত দৃষ্ট্র মৈপুনধর্মিণ: ॥ ৩৪ ॥ ভাতস্পৃহে। নৃপং বিপ্র: ক্যামেকামনাচত। গোহপাাহ সৃহতাং একান্কামং কনা। সমন্বের ॥৩৫ স বিচিন্ত্রাপ্রিয়ং স্ত্রীণাং করঠোছহমসক্ষ হং। বলা পলিত একংক ইত্যহং প্রত্যুগান্তরঃ ॥ ৩৬ ॥ সাধ্যেয়ে তথাস্থান: হরস্ত্রীণামভীন্দিতং । কিং পুন্মু সুক্তেরাণামিতি ব্যুর্গিতঃ প্রভু: ॥ ৩৭ ॥ মুনি: প্রেশিতঃ ক্তরা কনাতঃ পুরুষ্ট্রেবং । বুড়: স রাজকনাভিরেকঃ পঞ্চাপতা বরঃ ॥ তাসাং কলিরস্ভুয়াংস্তদর্পেহপোক্ত গোক্তাং । মমাকুরপো নায়ং ব ইতি তলাতচেতসাং ॥ ৩৮ ॥

श्रीभद्रभाभी।

নতুমহা ভাপসভা তভা কুতো বিবাহ প্ৰস্কঃ কণখা করা কর্জ'রতং রাজকল্পা ব্রিরে তলাহ ব্যুনান্তর্জলো ইতি বড়্ডিঃ॥ ৩৪ ॥ নুধং মালাভারং। সেংহপি মালাভা সঞ্জলের কামং গৃহভাষিত। হে । ৩৫ ॥

স বিবাং জীণামবিজাং মাং বিচিন্ধ।নেনারং কাড়াকোইত আজানং তথা সাধ্রিয়ামীতি রাব্রিতঃ নিকিছ্রানিতি ছরো-রবরঃ। অবিজাবে তেত্ঃ লরঠো ব্রদ্ধা বণীভিযুক্তিঃ। পাল্ডক এলংকঃ কলামান্শিরাঃ তাণ্সলাদিনা চাস্ত্রভাইত্রিতি মন্ত্রা ৩৬ ।

ভবেতাত প্রপঞ্চ: সুরস্ত্রীণামতীব্দিতং কিং পুন ম মুক্তেন্দ্রাণাং বাঃ জিরস্তাদামিতি । ৩৭ ।

ততঃ কিং বুরং তুদাহ মুনিরিতি বাভাাং। ক্ষরা প্রতীহারেণ। পঞ্চাশভাপি রাজকনাভিঃ স এক এব ব্রোরুছঃ । ১৮ ।

विविधनावहक्तवर्ती।

নতু মহাতপখিন। গৌভরিণা কথং তা ব্যুঢ়াঃ কথং ৰা জরাজজ্জারতং তা রাজক্তা ৰবিবে ত্রাহ্ । যমুনেতি । ত তো জলা-তুথার মধুন্সমাগতা নৃপং মাল্লাভারং ॥ ৩৪ । ৩৫ ॥

্একংক: কম্পমানশিরা: প্রভাষাজ্ভ: প্রভাগোত: ইতি বাবসিত নিশ্চিতবান্ ॥ ৩৬ - ৩৭ । ০৮ ॥

হে রাজন্! যমুনার জল মধ্যে নিদ্যা হইয়া তপভা করিতে করিতে একদা দীনরাজের থৈগুন জভ হুখজাত সন্দর্শন করেন ॥ 28॥

তাহাতে ঐ বিষয়ে তাঁহার সাতিশয় অসুরাগ হুমো, অতএব জল হইতে উত্থান পূর্বক মধুরা গমন করিয়া মান্ধাতার সনিধানে পদ্মর্থ একটা ক্যা যাচ্ঞা করিয়াছিলেন। মান্ধাতা তাঁহার প্রার্থনায় এই কথা বলিয়াছিলেন ব্রহ্মন্। আমার ক্যা স্থাস্থরা হইবে, ঘাহাকে ইচ্ছা হয় গ্রহণ করিবেন ॥ ৩৫.॥

সোভির তৎ প্রাথা মনে করিলেন আমি করাজীর্ণ হটয়াছি ও আমার কেশ পলিত এবং বয়:জ্রা-মের আতিশয় প্রবৃক্ত আমার মস্তক সভত কম্পনান। অপর আমি তাপদ, এই বলিরা বৃক্তি ইংলি সম্মত হইলাম না, ভাহাভেই ইনি আমাকে জ্রাদিগের অপ্রিয় বিবেচনা করিয়া ছলক্রমে নিরাকৃত করিলেন। ৩৬।

বাহা হউক, আমি আপনাতক দেই প্রকার করিতে চেন্টা করি বাহাতে সমুজেন্দ্রদিগের রম্থী-দংশর করা কি ? ত্বান্ত্রীগণেরও অভীপ্রত হইতে পারি, এই ব্লিয়া তদর্থ কৃতনিশ্চয় গ্ইলেন ॥ ৩৭ ॥

অনস্তর ভপ: প্রভাবে উঁহার তদ্রপ দ্লপ হইল। একদা রাজপুরীর প্রতিহারী উঁহাকে রাজকথাদিপের সমৃদ্ধিশালি অন্তঃপুরে লইয়া গেল, তাহাতে পঞ্চাশং রাজকথাই ওঁহাকে বর রূপে বরণ
ক্ষিল। হে রাজন্। সাজাতার ভন্যাদিগের পূর্বে পরস্পর অভিশয় প্রণয় ছিল কিন্তু সৌভরির সহিত
পরিশীতা ইইবার নিমিত্ত ভাহারা ভদগত চিতা হইরা পরস্পার বলিতে লাগিল ইনি আমারই অনুদ্রপ
বর, তোমাদিগের নহেন, স্তরাং তদর্থ তাহাদিগের স্মহৎ কলহ উপস্থিত, হইয়াছিল ॥ ৩৮ ॥

সবহাত ভাভিরপারণীর তপ: শ্রিয়ানর্য্য পরিছেদের।
গৃহেরু নানোপবনামলান্তঃ সর:ত সোঁগন্ধিককাননের ॥ ৩৯ ॥
মহাহ শিষ্যাসন বস্ত্র ভূষণ স্নানান্সলেপাভ্যবহারমাল্যকৈ:।
ফলক্বস্ত্রীপুরুষেরু নিত্যদা রেমেহমুগায়ন্তিজভূকবন্দির ॥ ৪০ ॥
ফলগহন্তির সংবীক্ষ্য সপ্ত্রীপবতীপতি:। বিশ্বিতঃ স্তন্ত্রসজহাৎ সার্কভৌমশ্রিয়ান্তিঃ ॥ ৪১ ॥
এবং গৃহেন্ত্রিরতে! বিষ্যান্ বিবিধিঃ স্থাধিঃ। সেবমানো নচাতুষ্যদাজ্যত্ত্রোকৈরিবানল:॥ ৪২ ॥

की पदचारी।

শুল গার্ছবাং বর্ণরতি স ইতি চতুর্জি:। বহুব্চ ইতি মন্ত্র সামর্থামূক্তং। তালি: সহ বেনে ইত্যন্তবেশাবর:। ক বেনে অপার্ণীরং ত্রন্ত^{ক্}বতণ: তক শ্রেমা সমৃদ্ধা অনর্থা: পরিজ্ঞা বের্তের্ গৃংহর্। তথা নানা বিধের্ উপবনের্চ অম্পানি অন্তাংসি বেয়া: তেরু সরংস্থান কীদৃশেরু সৌগদ্ধিকানাং কহল।বাণাং কাননানি ত্যোমা বেরু ৮৩৯ ৪

কীদৃশের গৃহাদির অলক্ষা: জির: পুক্রাশ্চ যেরু। অনুগায়জো বিজ্ঞাণ্ড প্রিংশ্চ বন্ধিনশ্চ যেরু কীদৃশ: মহার্ছ শ্বাং-দিভিক্রপদক্ষিত: সন্। ৪০ ॥

ष्ठञ्चः गर्त्तः ॥ ४> ॥ ष्रोकारः वृद्धिः ॥ ४२ ॥

बीविधनाभहक्तवर्छी।

বছবৃচ ইত্যোতাদৃশ সংপত্তি কটো মত্ত্ৰ সামৰ্থামেৰ কারণমিতি ভাবঃ। অপার্থীর্মনৈারশক্যং ব্রপ গুল্ল প্রিয়া সমৃত্যা ক্ষ্টেরু গ্রের্ গ্রেণেলন্দিতেরু বিবিধপুরেরু। সহার্ছ শব্যাদিভিকশ্লন্দিতোরেমে । ৩৯ । ৪০ ॥

चकुः १४वरः ॥ ४० ॥ भाकुःच (च।देवकिंगुजिः ॥ ४२ ॥

সে যাহা হউক, সৌভরি মস্ত্র সামর্থ্য সম্পন্ন ছিলেন। তাঁহার সুরস্ত তপ: প্রভাবে তৎক্ষণাৎ প্রত্যেক ভবনে অমূল্য পরিচছদ প্রস্তুত হইল এবং নানাবিধ বন উপবন স্থানোভিত ও সরোবর সকল সৌগন্ধি কহলার কাননে হুস্চ্ছিত হইয়া উঠিল॥ ৩৯॥

অধিকস্ত যাবতীয় গৃহে দাস দাসী সকল স্থানর রূপ অলঙ্কত এবং সর্বতি পক্ষী ভ্রমর ও বিদ্যাণ মধ্রস্বরে গান আরম্ভ করিল। তিনি সহামূল্য শয্যা, আসন, বসন, ভূষণ, সান ও অকুলেপনাদি সম্পন্ন হুইয়া সকল ভ্ৰম ও উপধনাদি দেই সমস্ত বনিতা সহিত অহরহ বিহার করিতে লাগিলেন ॥ ৪০ ॥

হে রাজন্! সৌভরির গার্হত্য ধর্মা অবলোকন করিয়া সপ্তত্তীপ পৃথিনীর অদিপতি মান্ধাতার হুষ-হৎ বিশ্বয় জন্মিল। তিনি সাআজ্য সম্পত্তি সম্পত্ত বলিয়া যে গর্মা করিতেন তাহা পরিতাপ করিতে হইল ॥ ৪১॥

্পরস্ত সৌভরি ঐ প্রকারে গৃহাজানে অভিনত হট্যা যদিও বিবিধ হুখে বিষয় ভোগ করিতে লাগি-লেন, তথাচ স্থতবিন্দুপাতে যদ্রপ বহুর পরিত্থি হয় না, তাহার ক্যায় কিছুভেই ভাঁহার তৃথি বোধ হইল না ॥ ৪২ ॥ স কণাচিত্বপাসীন আত্মাপত্নবমাত্মন:। দদর্শ বহন্ চা চার্য্যো মানসঙ্গমুথিতং ॥ ৪০॥ আহো ইমং পশাত মে বিনাশং তপদ্ধিন: সচ্চরিতত্ত্তত্ত্ব । আন্তর্জনে বারিচরপ্রসঙ্গাৎ প্রজাবিতং ত্রক্ষচিরং শ্বতং যই ॥ ৪৪॥ সঙ্গং ত্যক্তেত মিপুনত্রতিনাং মুমুক্ষু: সর্বাত্মনাংন বিস্ত্রেছহি রিজিয়ানি। একশ্চরম্ রহসি চিত্রমনন্ত ঈশে যুঞ্জীত তদু তিয়ু সাধুষু চেৎ প্রসঙ্গঃ ॥ ৪৫॥ একস্তরম্বাত্তমথান্ত্রিস মৎস্তাক্ষাৎ পঞ্চাশাদাসমূত পঞ্চন্ত্রসূর্যঃ।

ची पत्र च (मो ।

ইদানীং তভাত্তাপ পূর্বকং বান প্রস্থাপ্রমমাত স কদাচিদিতি সপ্ততি:। আ্থানো মনসো হেডে।রাত্মনোইপতুবং তপোহানিং দদর্শ ॥ ৪০ ॥

সংশ্চাসে চরিত ব্রভণ্চ বেংহ্ছং ভত ব্রন্ধ ভণঃ । ৪৪ ।

মিথুনব্রতিনাং দাম্পতা ধর্মবতাং চেদ্দদি প্রসক্ত ত্তি তিবু ঈশ্বরার্থ ধর্ম পরেছের কার্যা ইতি শেব: ॥ ৪৫ ॥ সক্ষাজ্ঞাতং দোবং প্রপঞ্চরতি এক ইতি। পঞ্চাশতা ভাষ্যালিঃ সম্বন্ধাৎ পঞ্চাশৎ অন্যং মতুবামতার্থঃ। তত্ত্বসূতিঃ

ক্ৰসম্পৰ্জ:।

কণা ভাদৃশঃ সন্ চিতঃ যুঞ্জীত জলাহ ভবু তি খিতি । ৪৫। ৪৬ ।

এবিখনাপচক্রবন্তী।

এবং ভক্ত গরুড়াপর দেখ গৃহাবেশ প্রাণক্ত ভোগাতে পুনর্কিবেকোদয়মাই সুইভি স্থাভিঃ। আত্মনঃ স্থাদেব হেতোরাত্মন আত্মনন্দত অপহান বক্ষনং। মীনস্পসমূধিভমিতি মীনস্পত কারণং ভূমীনরকার্থ গরুড়নিবারণ রূপোহ্ণরাধ এব
ভেবঃ ॥ ৪৩ ॥ এক ড্লাঃ ॥ ৪ ॥

ত খাদনোমাদ্শোমাতবিষ্ঠি স নির্কোদনাহ সঙ্গনিতি খাডাং। বহিরিজিয়ানি নবিস্জেদিতা ছরিজিয়ানি ন বিস্জেদিতি বিধাত্মশক্ষে। আপজাম্চানক স বিধেরপ্রামাণ্যাদিতি ভাব:। ত ছুতিবু অনস্ত ভাজিনিটেরু সাধুরু বদি প্রকৃষ্টঃ সঙ্গং সাদিতি মমত্ তদভাবাদেব গকড়ে দোব দর্শন জানিতো মিপুন ব্রতিনো মীনস্ত সলোং ভূদিতি ভাব:। চেংপ্রসঙ্গ ইত্যক্ষ নঞা ভূমাাহার্যঃ। ৪৫ ঃ

স্কাজ্জাতঃ দোৰং প্ৰণঞ্চতি এক ইতি পঞ্চতঃ ভাষাভি: সহজাৎ পঞ্চালাসং তভত স্কুতৈঃ পঞ্চত্ত সূচ্চ স্কুতি

কোন সময়ে বছৰ্চাচাৰ্য্য ঐ সোভরি নির্দ্ধনে উপৰিষ্ট হইয়া আপনার বিষয়ে চিন্তা করিতে লাগি-লেন,তাহাতে মৎস্ত সংস্থা বশতঃ আপনার যে তপ্তার হানি হইয়াছে তাহা জান পোচর হইল ॥৪০॥

অতএব আক্ষেপ প্রকাশ পুরংগর আপনা আপনি বলিতে লাগিলেন অহে। ! আমি সাধুচরিত ত্রত এবং তপষী ছিলাম, আমার এই বিনাশ দর্শন কর, জল মধ্যে জলচর সঙ্গে থাকাতে চির কালের উপার্জিত তপস্যা রত্ম বিন্তু করিয়া ফেলিয়াছি ॥ ৪৪ ॥

ষুষ্কু পুরুষের কর্ত্তর দাম্পত্য ধর্মবান্ ব্যক্তিদিপের সংসর্গ পরিত্যাগ করেন, অপর ইন্দ্রির সকলের বহিঃ প্রসর সর্ব্ব প্রযম্ভে নিবারণ করাও তাঁহার আবশ্যক। আর একাকী নির্দ্ধনে ভ্রমণ করত অমন্ত পার পরসেশ্বরে চিত্তযোগ করা কর্ত্তরা। যদি কদাচিৎ প্রসঙ্গ উপস্থিত হয় ঈশ্বরার্থ ধর্ম পর সাধুর সঙ্গেই তাহা করা উচিত ॥ ৪৫ ॥

আমি একাকী জল মধ্যে তপস্থা করিভেছিলাম, তথার মংস্থা সংসর্গ বশতঃ দার পরিপ্রেছ করিতে আমার বাসনা হয়, তাহাতে পঞ্চাশৎ সংখ্যক হইয়াছিলাম, তদনস্তর সেই পঞ্চাশং বনিতার প্রতেকে

নার্স্তং ব্রজামৃষ্টের কুটা মনোরধানাং মারাপ্তিণৈ স্থান্ত বিষিদ্ধ হর্পজাবিঃ ॥ ৪৬ ॥

এবং বসন্ গৃহে কালং বিরক্তোন্যাসনাস্থিত: । বনং জপামাসুইছি তথপদ্ধাঃ পতিলৈবতাঃ ॥

তত্ত্ব তপত্তীব্রমান্ত দর্শনিমান্ত্রীবেং । সহৈবাগ্রিভিরাত্মানং যুখোজ পর্মাত্মনিনা ৪৭ ॥

তাঃ স্থপত্য মহারাজ নিরীক্ষ্যাধ্যাত্মিকা গাঁতং । অত্যীয়ুত্তৎ প্রভাবেন পান্তমন্ত্রিকা চিন্তাঃ ॥ ৪৮

॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পার্মহংগ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসক্যাং নবসক্ষে সৌভ্যু-পাধ্যানং যঠেহিধারঃ ॥ ॥ ৬ ॥ ৯ ॥

द्विभदक्षाणी ।

পঞ্চ সুভল্ল সূৰ্ব আৰ্সিং প্ৰতিভাকং ভাল্প পূত্ৰণত স্থিপেণেংগতেঃ। উভন্ন ভাঙাণি প্ৰীইক পাইজিকাণি কৰাণি ভিনিবলাং ননো-বধানাং অৱভাবঃ পুজৰাৰ্থ বৃদ্ধিনান্ ॥ ৪৬ ॥

ক্তানোহত সঙ্গাগ এব বান গছ ধর্ম ইতার্থ। ৪৭ । আধার্যাক্তনীং গতিং এক নিশ্বং ॥ ৪৮ ॥

॥ ॥ विकि नद्दंग वर्ष: ॥ ॥॥

ক্রমসক্তঃ।

স্টেহ্বাগ্নিভি ব্লিতি আছাত্মীয়ং সর্বাদেৰ অসমুগতত্বেন বিভাব্যোৎক্রান্তথানিভার্থ: । ৪৭ । ৪৮ ।
। ৮ । ইতি শ্রীমন্তাগ্রত ন্রমন্তব্দ্ধ শ্রীকীবগোস্থান কড ক্রমসন্তে ব্রেটাহ্ধ্যার: স্মাপ্ত: । ৮ ।

श्चीवयनायहत्त्व वर्षे ।

প্রত্যেকং তাহু পূত্র শত রূপে েণাৎপত্তে:। উভন্ন রুভ্যানি ঐছিক পারত্রিকাণি কর্মাণি তহিবন্ধাণাং মনোরখানাং অর্থভাবঃ প্রিকাশ বৃদ্ধিঃ ॥ ৪৬ ॥

न्योतर नव छ।।। क्रिलेर वान अव धर्मिमिडार्थः ।

সিইহৰামিভিরিভারিভিঃ সইহৰ দৈহং তাইজ্বেতি শেষঃ ॥ ৪৭ র

व्यवीयुवकुरुकाः । ४৮ ।

4.

ं॥ + ॥ दिनि नोबीबवर्निकार रुविनार विकार ठंकार । वर्रहीई दर नवरेमो स्वाहर नेवान में निकार नेवार । ॥ + ॥

পুত্র শত রূপে উৎপন্ন ইইয়া পঞ্চ সহত্র ইইয়াছি, তথাচ ঐতিক পারিজিক কার্য বিষয়ক মনোরথ সক-লের অন্ত: প্রাপ্ত ইইতেছি না, কারণ মায়া শুণে আমার বুজি অপহতা ইইয়াছে ভজ্জ্বতি বিষয়েতেই পুরুষার্থ জ্ঞান কারণেছি॥ ৪৬॥

হৈ রাজন্! সৌভরি এই প্রকারে এই শ্রিটে বাদ করিতে করিতে বিরক্ত ইরেন, পরে সঙ্গতাগার্থ বানপ্রন্থ ধর্ম অবলয়ন করিয়া বনে প্রন্থান ক'রলেন। তাঁহার পত্নীগণ পতি পরায়ণা ছিল, তাহারাও তাঁহার অনুগামিনী হইল। আছিল দি মুনি ধাহাতে আছি দাকাংকার ইর'ভাদৃশ তীত্র তপ্তভা করিয়া আয়ত্র সাহত আছাকে পরমান্ধায় যোগ করিলেন ॥ ৪৭ ॥

হে মহারাজ। আপনাদিগের পতির ঐ রূপ ভাষ্যাত্মিক গতি আর্থাৎ পরপ্রেক্ষ বিলয় অবলোকন করিয়া তাঁহার পত্নী সকল, যেমন অগ্নি শিখা নির্বাণ প্রাপ্ত অনলের সঙ্গৈ যায়, তাহার ন্যায়, উদীয় প্রভাবে তাঁহার সহগামিনী হইল । ৪৮॥

॥ * । , देखि नैदर्भक्षक वर्ष क्योति ॥ * ॥

শ্ৰীশুক উবাচ B

মাজাতৃ: পুত্রপ্রবরো যোহস্বরীয়: প্রকীর্তিতঃ। পিতামহেন প্রব্রতো মুবনাশ্ত তৎক্তঃ।। হারীতস্ত্রস্থা পুত্রোহতুশাজাতৃপ্রবরা ইমে॥ ১॥

নর্মদা ভাতৃভিদ তা পুরুক্ৎসায় যোরগৈ:। তম্প রসাজলং নীতো ভূজগেন্দ্র প্রযুক্তয়া॥ ২॥ গদ্ধবানবধীতত্ত্ব বধ্যান্ বৈ বিষ্ণুশক্তিদৃক্। নাগাল্লক বর: সর্পাদভয়ং সারতামিদং॥ ৩॥

विषत्रवामी।

ম।का कृत्वमः (প্রাক্ত: স্থামে বত্র গীয়ভে। পুরুক্ৎসভ চাধানং হরি"চন্দ্রভ চোত্তমং ॥ • ॥

পুত্রপ্রবরঃ পুত্রপ্রেটঃ। স পিতামহেন যুবনাখেন প্রযুতঃ পুত্রপ্রেন স্বীরতঃ অতএব তম্ম নারাত্রপ্রর্গাছঃ। তৎসূতঃ অধ্ রীবস্ত স্তঃ। ইমে যুবনাখালরীৰ হারীতাঃ মান্ধাত্গোত্রস প্রবরঃ অবাস্তর বিশেব প্রবর্তনাঃ। বহা সুবনাখ বিশেষণং পিতা-মহেন মান্ধাতা সহ আর্বের প্রবরুদ্ধে প্রস্তুঃ। মান্ধাতা প্রবরো বেষাং ও ইমে অম্বরীর যুবনাখ হারীতাঃ। বংলাখালারনঃ। হরিত কুৎস পিক্লার্ড ভৈম প্রানামালির সাখ্রীব্রোবনাখাশেচতি মান্ধাতারং স্তেকে ব্রব্তে অবস্তীত্যালির সং মান্ধাত্রদীর

পুরুকুংসভ বংশং কথরিবালালে**ী ভভ বিবাহং প্রভাবকাহ। উর**গৈ দ্রাভিত্যা দত্তা নর্মদা তলা ॥ ২ ॥ বিধানে বধাহনি সুচ পুরুকুংসো **নাগালয় ব**বো**হভূৎ বল্লনাহ ইদং নর্মদালা** রসাত্ত নলনাদিকং অরতাং স্পাদ্ভর্মিতি ॥ ৩ ॥

क्रमननर्जः ।

মাজাজুরিভি সার্দ্ধকং। পিতামবেন প্রবৃত্তী বৌধনাখন্ত তৎ স্থৃত ইত্যের পাঠ:। দৃশ্যতেচারং গৌড় বিদেহের। অর্থত ততাকরীবক্ত ক্রেডা বৌধনাখ:। অরমণি মাল্লাত্ স্নামেতার্থ:। রিফুপ্রাণেত্ যুবনাখ ইতি নাম। বধা। গর্ডাচ যুবনাখ-জোদরেহতবং। ততো মাল্লাতা তবং। ইতি পূর্বে মৃজ্যা ততৈর গল্যান্তরেণাহ। অস্বরীয় মাল্লাত্ত নাল্লা স্ব্রোহত্থ তমাজ্বিত: বতোহলির সাহারীত ইঙি। টাকারা মর্থান্তরে আর্ব্যে প্রবৃত্ত ইতি অবিভি: স্থোত্তেন বৃত্ত ইত্যর্থ:। তেন সহ ভ্রাম্বীয়ক্ত স্তোহারীত: যুবনাখন প্রবৃত্ত ইতি ॥ ১। ২। ৩॥

विविधनाथहळ्वती ।

সপ্তমেতু হরিশ্চক্রো মাজাত্রের সম্ভব:। বরুণং বঞ্চন্ পুত্রস্বেধালীকে নুমেধত: ॥ • ॥

পিতামহেন যুবনাখেন প্রবৃতঃ পুত্রদেন স্বীকৃতঃ। ভৎসূতঃ ক্ষরীবপুত্রো বৌবনাখঃ। ইয়ে ক্ষরীব যুবনাখ হারীতাঃ মাদ্ধাভ্ প্রবরাঃ মাদ্ধাতৈব প্রবরো বেষাং তে । ১ ॥

মান্ধাতৃ প্তাত প্রকুৎসত বংশং বদন্ অধনং ভত বিবাহ্নাই। নার্মণা ধলু যা উরগৈনিতা তরা স প্রকুৎসো রসাতলং নীতঃ ॥ ২ ॥ বধাইনে অবধীং। ইদং বসাতল নরনাদিকং অরভাং জনানাং সপাদভরং ভাং ॥ ০ ॥

নপ্রমাধ্যায়ে মান্ধাতার বংশ র্ভান্ত প্রদক্তে তথা হরিশ্চন্তের উপাথ্যান ॥ • ॥

শুক্ত কাৰে কহিলেন অন্ধরীৰ ৰলিয়া বিশ্যাত দর্কশ্রেষ্ঠ নান্ধাত তনম সীয় পিতানহ যুবনাথ কর্তৃক পুক্ত রূপে পরিগৃহীত হওয়াতে মান্ধাতা আপোন্ধা শ্রেষ্ঠ ছিলেন। দেই অন্ধরীবের পুক্র যুবনাথ। তাঁহার তনম হারীত। ইহারা অর্ধশ্র অন্ধরীয়, যুবনাথ এবং হারীত এই তিন ব্যক্তি মান্ধাত্গোত্রের প্রধান ॥১॥

হে রাজন্। **উর্গর্গণ আপনাদের** ভগিনী যে নর্মদাকে পুরুক্ৎস হত্তে সম্প্রদান করেন, ভুজগেন্দ্রের নিয়োগে সেই নর্মদা কর্তৃক পুরুক্ৎস রসাতলে নীত হইয়া ॥ ১ ॥

বিফুশক্তি ধারণ পূর্বক বঁধার্থ বছ বছ গদ্ধবিকে নিহত করেন এবং আপনি নাগরাজ সকাশাৎ অুমু-ভ্রম বর প্রাপ্ত হন্ সেই বর এই, নর্মদার এই সমস্ত রসাতল নয়নাদি ব্যাপার যে সকল ব্যক্তি শ্মরণ করিবে তাহাসিপের সর্প ভ্রম থাকিবে না ॥ ৩ ॥ ত্তসদস্যঃ পৌরক্ংসো যোহনরণাত্ত দেহক্বং। হর্যাশ স্তৎস্ত স্থাপাৎ প্রাক্তনাহণ জ্ঞিবদ্ধনঃ ॥৪
তল্য দত্যব্রতঃ পুত্র স্থিশছ্রিতি বিশ্রুতঃ। প্রাপ্তশাভালকাং শাপাদগুরোঃ কৌশিক্তেজ্স। ॥৫
দশরীরো গতঃ স্থর্গমদ্যাপি দিবি দৃশাতে। পাতিতোহবাক্ শিরা দেবৈস্তেনেৰ স্বঞ্জিতো বলাৎ ॥৬॥
ত্রৈশক্ষে হরিশ্চন্দে বিশামিত বশিষ্ঠয়োঃ। যমিমিন্তম্পুন্ধুদ্ধ পক্ষিণোর্বাহ্ন বার্থিকং॥ ৭॥

वीधवयामी।

দেহরুৎ পিতা অসদজো: হুতোহনরণা ইভার্থ: । ৪ ।

ক্রী: শহর ইব ছ: থ হেতবো দোবা বজাসে ক্রিশহু:। তছজাং হরিবংশে পিছুশ্চাপরিভোবেণ শুরোর্দ্ধে। গ্রী বধেনচ। আপ্রোক্ষিত্তাপযোগাচ্চ ক্রিবিধতে ব্যতিক্রম ইতি পরিণীয়মান বিপ্রক্ষাহরণাৎ ক্রেক্স শুরো: পিতৃ: শাপাং। কৌশিক্স বিশামিক্স তেজসা প্রভাবেন ॥ ৫ ॥

(छट्नेव क्लिकिन । ७ ।

পক্ষিণাঃ আড়ীবকরোঃ সভোঃ। বিশামিত্রো রাজস্মদক্ষিণাছলেন হরিশ্বসং সৈর্জ্বপ্রস্তুত্য হাডরামাস। তৎশ্রুত্ব কুণিতো বশিষ্ঠো বিশামিত্র বং আড়ীভবেতি শশাণ। সোহণি তাং বকোভবেতি বশিষ্ঠং শশাণ তয়োশ্চ যুদ্ধ মতুদিতি প্রাসিদ্ধং এণ

ত্ৰমন কৰি:

অভদস্থারিভি অয়মপি মান্ধাতৃ স্নামেতার্থ: ॥ ৪।৫। ७। १॥

এিবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

দেহরুৎ পিতঃ অসদভোস্থতোহনরণ্য ইতার্থ: ॥ ৪ ॥

আর: শক্ষণ ইব হংখ হেভবোদোবা বন্দ স ত্রিশস্থা। তত্তং হরিবংশে পিতৃশ্চাপরিতোবেণ শুরোর্দোগ্রী বন্ধন । অপ্রোক্তিভাপযোগাচ্চ ত্রিবিবতে বাতিক্রম ইতি। পরিণীয়মানবিপ্রকল্ভাহরণাৎ ক্রেক্স শুরোঃ পিতৃঃ শাপাৎ। কৌশিক্স বিশামিক্রম তেলসা । ৫ । তেনৈব বিশামিকেটণৰ শুস্তিভোনাধঃ পপাত । ৬ ।

পক্ষিণোরিতি বিশামিতো রাজস্ম দক্ষিণাচ্ছলেন হরিশচন্ত্রক স্ক্রিমণজহার তচ্ছ বা কুপিতেবিশিটো বিশামিতং অমাড়ী ভবেতি

দে যাহা হউক, পুরুকুৎদের পুক্র অসদস্যা, তাহার তনয় অনরণ্য, তৎ স্বত হর্যাখ, তাহা হইতে প্রায়ণ জন্ম গ্রহণ করেন, তৎপুক্র তিবিদ্ধন ॥ ৪ ॥

ত্রিবন্ধনের সন্তান সত্যত্রত যিনি ত্রেশঙ্কু অর্থাৎ পিতার অসম্ভোষোৎপাদন, গুরুর ছগ্ধবতী ধেনু বধ করণ এবং অপ্রোক্ষিত মাংদদেবন,তুঃথ হেতু এই তিনটা দোষ পাকাতে ঐ নামে বিধ্যাত হইয়াছিলেন।

পিতা জুদ্দ হইয়া অভিশাপ দেন তাহাতে তিনি চণ্ডালত্ব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, কিন্তু পরে বিখামিত্র মুনির প্রভাবে ॥ ৫ ॥

সশরীরে স্বর্গ গমন করেন, অতএব অদ্যাবধি আকাশন্ত হইয়া আছেন, দেবতারা তাঁহাকে অবাক্ শিরা করিয়া স্বর্গ হইতে ফেলিয়া দিবার উপক্রেস করিয়াছিলেন, মহর্ষি বিশ্বমিত্র স্বীয় বলে ভিস্তিত করিয়া রাখিয়াছেন ॥ ৬॥

সে যাহা হউক, ত্রিশক্র পুত্র হরিশ্চন্দ্র, যাঁহার নিমিত্ত বিশ্বামিত্র ও বলিছের পরস্পার পালে পক্ষী অর্থাৎ আড়ী ও বক হইয়া বহু বংসর যাবৎ খ্যোরজ্র বৃদ্ধ হইয়াছিল। উক্ত বিষয়ের ইতিহাস এই। বিশ্বামিত্র মূনি রাজসুর যজ্ঞ করাইয়া তাহার দক্ষিণাক্ষলে সর্বাধ্ব আপহরণ পূর্বক হরিশ্চন্দ্রকে যাতনা দেন, তৎপ্রবণে মহর্ষি বলিষ্ঠ কোধাবিই হইয়া বিশ্বামিত্র সন্ধিধানে সিয়া এই শাপ দেন, অহ্যায়াচরণ হেতু তুমি আড়ী পক্ষী হও, বিশ্বামিত্রও তুমি নক হও বলিয়া প্রতি শাপ দেন, পরে সেই আড়ী ও

সোহনপত্যো বিষয়াক্সা নারদস্যোপদেশত:। বরুণং শরণং যাত: পুত্রো মে কায়তাং প্রভো ॥
বিদ বীরো বহারাক তেনির ছাং যজে ইতি ॥ ৮॥

তপেতি বরুণেনাম্ম পুজোজাতস্ত রোহিত: । জাত: হুজো ক্লনোল মাং যক্লম্বেডি সোহত্রবীৎ ॥৯॥ যদাপশু নির্দ্দশ: স্থাদধ্যেরেয়া ভবেদিতি । নির্দ্দশেচ দ আগত্য যক্তমেতাহ সোহত্রবীৎ ॥ দন্তা: পশোর্যজ্ঞায়েরেল্প সেধ্যো ভবেদিতি । দন্তা জাতা যক্তমেতি দ প্রত্যাহাধ দোহত্রবীৎ ॥

शिववंश्री ।

ছরিশ্চ জ্রো হ বৈশন ঐক্যাকবো রাজা অপুত্র আতে ইত্যাদি শ্রুতে প্রসিদ্ধং হরিশ্চ ক্রত চরিত মাহ নোহনপতা ইত্যাদিশা বাবৎ সমাপ্তি। কথং শরণং যাত ভাদাহ পুজ্রো মে জায়ভাং। যদি বীরঃ পুজ্রোমে জায়েত তহি তেনৈব পুরুষ পশুনা ঘাং যবে বজামীতি ভাষরা । ৮॥

তথেত্যক্তবতা বরণেন নিমিছেনাত রোহিতোনাম প্রোজাতঃ জাতে পুরে স্বরণো জাতঃ স্থােন্দ্রেন ব্লবেত্তা-ব্রীং ৷ > ৷

ৰদা পশু নির্দিশ: নির্গত দশ দিবস: ভাৎ ইতাত স রালা অত্রবীদিতামুবল: ॥ ১ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

শীভগদৈৰত হৈছেৰ শীভাগৰত এৰ সমল্লসভং ৰোধয়িত্ং হরিশুলুত চরিতমাহ। সোহনপতা ইত্যাদিনা। এবম্ভলাশি জেয়ং। তল্প ইতি যুগ্মকং ৪৮।৯।১০।১১।১২।১৩।১৪।১৫।১৬।১৭।১৮।১৯।

बीविश्वनाथहळावळी ।

শশাপ। 'সোপি বং বকোভবেতি শশাপ তত ভারোর্ক্মভূৎ ॥ ৭ । স হরিশচন্ত: । ৮ ।

তথেতি বরং দদতা বরুণেন হেতুনা। তত্তচ স বরুণা লাত ইত্যাদি আরবীং। তত্তচ রাজা পুত্রমেহাং তং ৰঞ্চয়ন্ যদে-ত্যাদি আরবীং নির্দশানির্গতদশদিবসা স্থাং ॥ ১ ৷ ১ » ॥

বকের পরস্পার যুদ্ধ হইয়াছিল। ৭।

ঐ হরিশ্চক্ত প্রাথমে অনপত্য ছিলেন, পুলার্থ সর্বাদা বিষণ্ণ থাকিতেন। একদা দেবর্ষি নারদের উপদেশে জলাধিপতি বরুণের শরণাগন হইয়া এই প্রার্থনা করিলেন, হে দেব! আমার একটা পুত্র হউক, বর দিউন। প্রভাগ মদি আমার বীর তনয় উৎপন্ন হয়, সেই পুরুষ পশু ভারা আমি আপনকার যজ্ঞ করিব॥৮॥

বক্ষণ তথাস্ত বলিলে তাঁহারই কারণে হরিশ্চন্দ্রের রোহিত নামে একটা পুত্র জন্মিল। সম্ভানোৎ পতি হইলে বরুণ ত্রিকটে আগ্যম পূর্ব্ধিক বলিলেন রাজন্। তোমার ত পুত্র জন্মিরাছে অস্পীকারামু-সারে এখন ইহার বারা আমার যজ্ঞ কর। ১॥

ধ্রিশচন্ত কহিলেন হে দেব। দশ দিন বয়ঃক্রম অভীত না হইলে পশুরা পৃত ও যজার্হ হয় না,
দশ দিবদ গত হউক যজ্ঞ করিব। দশ দিবদ অভিক্রান্ত হইবামাত্র বরুণ পুনরায় আদিয়া বলিলেন
রাজন্। যাগ কর,রাজা কহিলেন দন্ত জনিলেই পশু পবিত্র হয়। অনন্তর দন্ত জনিলে বরুণ আদিয়া
কহিলেন রাজন্। ভোমার পুজের দন্ত জনিয়াছে এখন যাগ কর। এতং প্রবণে হরিশচন্ত কহিলেন
ইহার এই দন্ত লক্তল যথম পভিত হইবে ভখন এ পশু বেণ্ড হইবে। কিয়দিন পরে রোহিতের দন্ত
নিপতিত হইল অভ্যাব হরুণ হরিশ্বন্ত সনিধানে পুনরায় আগমন করিয়া কহিলেন রাজন্। পশুর দন্ত
সকল পভিত হইয়াছে এখন আমার যাগ কর। হরিশ্বন্ত কহিলেন দন্ত ভর্ম ইইরা পুনশ্বন না কনিবিল

যদা পতস্তাত দন্তা **লখ মেধ্যো ভবেদিতি। পশোমে পিতিতা দন্তা যজকেত্যাহ সোহত্ত্তী** । যদা পিশো: পুনদান্তা কায়তে হথ পশু: শুচি:। পুনর্জাতা যজকেতি স প্রত্যাহাধ সোহত্ত্তীৎ ॥>•॥
সালাহিকো যদা রাজন রাজস্মেহথ পশু: শুচি:॥ >>॥

ইতি পুজামুরাণেণ স্নেহ যন্ত্রিত চেতদা। কালং বঞ্চাতা তং ভমুক্তোদেনস্ত নৈক্ষত ॥ ১২ ॥
রোহিতক্তদভিজ্ঞার পিতৃং কর্ম চিকীর্ষিতং। প্রাণপ্রেপ্সুর্ধ সুস্পাণিররণ্যং প্রত্যপদ্যত ॥ ১০ ॥
পিতরং বক্ষণপ্রস্তং প্রেফা জাতমহোদরং। রোহিতো গ্রামমেয়ায় তমিক্তঃ প্রত্যবেধত ॥ ১৪ ॥
• জুমেঃ পর্যাটনং পুণ্যং তীর্ধক্ষেত্র নিষেবলৈঃ। রোহিতায়াদিশছক্তঃ সোহপারণা বন্ধ স্মাং॥১৫

अध्यक्षामी

নিজন্তে বৰুণু ৰাজস্তঃ পঞ্চ ৰদা সালাহিকঃ কৰ্চবন্ধাৰ্য্য সংগ্ৰামে সমৰ্থঃ অথ তদা শুচিঃ ॥ ১১ ॥ ইডেট্ৰং তং তং কালং বঞ্চনতা রাজ্ঞা উজ্জঃ প্রাথিতো দেবো বৰুণ তং তং কালং প্রত্যৈক্তেতার্থঃ ॥ ১২ ॥ চিকীর্ষিতঃ আত্মনা পশুনা বঙ্গুণ্যজ্ঞনং ॥ ১৩ ॥ ততক্ত কুপিতেন বঞ্চনেন গ্রন্থং অত্এব আতং মহত্দরং বস্তু তং পিতরং শ্রুষা ॥ ১৪ ॥ সমাং বংসরং ॥ ১৫ ॥

अविधनां वहक बढीं।

রাজন্ হে বরণ রাজভাগেশু: সন্নাহিকঃ ক্ষ্ট্ৰ্কাই আত্তা শুচিং ॥ ১১ ॥ তং তং কালং ব্ৰুয়তা উজাং আর্থিডো বৃদ্ধ তং কালং প্রত্যৈক্ষতেতাহয়ঃ ॥ ১২ । ১৩ । । ১৪ ॥ সমাং বর্ষঃ ॥ ১৫ ॥

পশু পূত হয় না। এ কথায় বরুণ স্বস্থানে প্রতিনিব্রত হইলেন এবং কিয় কিন পরে পুনরায় আসিয়া বলিলেন তোমার ভনরের দন্ত বিতীয়বার জলিয়াছে এখন যজ্ঞ কর, ইহাতে হরিশ্চন্ত এই প্রতিবচন দিলেন ॥ ১ • ॥

হে ৰক্ষণদেব ! ক্ষত্ৰিয় পশু যথন ক্ষত্ৰ বন্ধনাৰ্হ হয় তথন শুচি হইয়া থাকে। আমার পুত্ৰ এখনও তাম্যোগ্য হয় নাই ॥ ১১ ॥

হে কোরব্য! রাজা হরিশ্চন্দ্রের চিত্ত স্নেহে যদ্রিত হইয়াছিল, তিনি পুত্রাশ্বরাগ বশতঃ ঐপ্রকারে অঙ্গীকৃত তত্তৎকাল ক্ষেপণ করত যে ২ কাল বলিতে থাকিলেন বরুণদেব সেই দেই কালেরই প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন। ১২॥

ইতিমধ্যে রোহিত পিতার অভিপ্রায় অর্থাৎ আপনাকে পশু করিয়া বরুণদেবের বাদ করণেছ। অবগত হুইলেন, অতএব তিনি প্রাণ রক্ষণ বাদনায় ধনুগ্র'হণ পুরঃসর অরণ্য প্রস্থান: করিছেন ॥ ১৩॥

ইহাতে ব্রুগের অভিশ্র কোপ জনিল, ক্রুত্ব হইয়া হরিশ্চস্তকে আক্রমণ করিলেন, সেই কারণে হরিশ্চস্তের উদর অভি রহৎ হইল। অনন্তর রোহিত শুনিলেন পিতা বরুণ কর্তৃক প্রস্ত হইয়াছেন, অত্এব প্রামে প্রভাগিমনের উদ্যশ্ধ স্থানেন, কিন্তু ইস্ত তাঁহার নিকটে আলিয়া নিষেধ করিলেন ॥৪৯॥

এবং কছিলেন ভীর্থকেত্র নিষেবণ পুরঃসর পৃথিবী পর্যাটন অভিশয় পুণ্য অনক, ভূমি ভাহাই করহ। ভাহাতে রোহিত সম্বংসর কাল অরণ্যে বাস করিলেন ॥ ১৫ ॥ এবং বিতীয়ে তৃতীয়ে চতুর্থে পঞ্চমে তথ।। অভ্যেতৃপক্তোতা স্থবিরো বিপ্রোভ্যাহ বিত্রহা॥
বর্চং দম্বংদরং ভত্ত চরিত্বা রোহিতঃ পুরীং। উপত্রজনন্তীগর্জীণাত্মধ্যমং স্কৃতং॥
শুনংশেফ্ং পশুং পিত্রে প্রদায় সমবন্দত ॥ ১৬॥
•

ততঃ পুরুষমেধেন ছরিশ্চন্তো মহাযশাঃ। মুক্তোদরোহ্যকদেবান্ বরুণাদীশ্বহৎ কথঃ ॥ ১৭ ॥ বিখামিত্রো ভবতিশ্বন্ হোতা চাধ্বযুঁ রোজবান্। যমদ্যিরভূত্ত হাল বশিষ্ঠোহ্যাভঃ সামগঃ ॥ ১৮॥ তথ্যৈ তুটো দদাবিদ্রঃ শাতকোন্তময়ং রধং। শুনঃশেকজ মাহাজ্যমুপরিষ্ঠাৎ প্রবক্ষাতে ॥ ১৯॥ সত্যং সারং ধৃতিং দৃষ্ট্যা সভার্যাস্য স্পুপতেঃ। বিশ্বামিত্রো ভূশং প্রীতো দদাববিহতাং গতিং ॥২০

की धरकाशी।

ৰিভীয়ে তৃতীয়েচ বৰ্ষে বৃত্তহা অংশতাতা তথৈব তং প্ৰতিবেধন্ কিঞাৰ কিঞালাহ । ১৬ । বৃদ্ধনে মৃক্তমূদ্দৰং বজ । মহৎক কথা যজ স: ॥ ১৭ ॥ আহাবান্ যমদ্যি রধ্বয়ুরভূৎ অল্লাস্যাম্নি: সামগ উল্লাভাভূদিভাৰ: । ১৮ ॥ উপরিটাৎ বিখামিত ক্তাথ্যান প্রসঙ্গে । ১৯ ॥ অবিহভাং গতিং আলাক: । ২০ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

ভাদৃশক্ত চাত্যস্তবৈদিককৰ্মপরত্বং চেৎ কথং চিদুহ্ম কৈৰ্লামেৰ ভাৎ । নতু ভগৰৎ সম্বন্ধ ইত্যাহ। স্তাসার মিতাাদি॥২•।২১।২২॥

शैविधनाथहळानको ।

এবং বিভীরেছপি বর্বে পুনঃ ক্লপষ্টেৰাগভং ভং বৃত্তহা পুনঃ প্র ভিষেধন ভবৈধবাই । ১৬ ।

মহৎস্থ কথা মতা স: ॥ ১৭ ॥

আয়ভোমুনি: সামশ উল্গাভ্যতৃশিতার্থ: ॥ ১৮ ॥

উপরিষ্টাৎ বিশ্বামিত্র স্মৃতাখ্যান কথাপ্রসঙ্গে 🛚 ১৯ 🖡

গতিং জানং ॥ ২০ ॥

এই রূপে দ্বিতীয় তৃতীয় চতুর্থ তথা পঞ্চম বংশরে যখন যথন রোহিত প্রত্যাগমনের উল্থোগ করেন সেই সেময়েই ইন্দ্র বিপ্ররূপ ধারণ করিয়া তাঁহার নিকট আদিয়া ঐ প্রকার বলেন অতএব রোহিত ষষ্ঠ সম্বং সর পর্যান্ত অমণ করিয়াছিলেন, তদনন্তর প্রত্যাগমন করত যথন পুরী সমীপে আদিলেন তথন অজী গর্ত্তের নিকট হইতে তদীয় মধ্যম পুত্র শুন:শেফকে ক্রেয় করিয়া আনিলেন এবং পিতাকে দিয়া প্রণাম করিলেন ॥ ১৬॥

তদনস্তর মহাযশা মহাজন প্রসিদ্ধ মহাথাজ হ্রিশ্চন্দ্র নরমেধ দারা, বরুণাদি দেবভার যজ্ঞ আরম্ভ করিলেন, তাহাতে বরুণ কর্ত্ব তদীয় উদর মোচিত হইল ॥ ১৭ ॥

সেই যজে বিশ্বামিত্র হোতা, যমদায়ি অধ্বয়ুৰ্ব, বশিষ্ঠ অক্ষা এবং অয়াস্ত মুনি উদ্গাতা হইরাছিলেন ॥১৮ হে রাজন্! এই ব্যাপারে দেবরাজ ইন্দ্র হরিশ্চন্দ্রের প্রতি তুই হইয়া তাঁহাকে স্বর্ণময় রথ প্রদান করিলেন। হে মহারাজ !- শুন:শেফের মাহাজ্য পশ্চাৎ (বিশ্বমিত্রের স্ফ্রানোপাখ্যান প্রসঙ্গে বর্ণন করিব ॥ ১৯ ॥

হে পরীক্ষিং! সভার্ষ্য হরিশ্চন্দ্রের সভ্য, সামর্থ্য এবং ধৈর্য্য অবলোকন করিয়া মহামুনি বিখামিত্র সাজিশয় প্রীত হইয়াছিলেন লেই কারণে তাঁহাকে অবিহতা, গতি অর্থাৎ প্রম জ্ঞান প্রদান করেন॥২০ মন: পৃথিব্যাং তামন্তিভেজ্ঞ গাপোহনিলেন তং। খে বায়ুং ধারয়ং স্তচ্চ স্তাদে তং মহাজনি ॥২১॥ তিমান্ জ্ঞানকলাং ধ্যাত্বা তয়া জ্ঞানং বিনিদ্দিহন্। হিছা তাং দেন ভাবেন নিৰ্বাণ হৃথ সংবিদা॥ অনিদ্দিশাপ্ৰতৰ্কোণ তকো বিধন্তবেদ্ধনঃ ॥ ২২ ॥

॥ #॥ ইতি শ্রীভাগণতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবসক্ষরে হরিশ্চন্তো-পাথ্যানং সপ্তমোধ্যায়ঃ ॥ #॥ ৭ ॥ #॥

গ্রীশুক উবাচ ॥

श्रीभवत्रामी।

তামেব গতিমাহ সান্ধান্তাং। মন: পৃথিবাং ধারয়ন্ জ্ঞানকলাং ধাাত্বা অক্সানং বিনির্দিহন্ তাঞ্চ হিত্বা মৃক্তবন্ধন তত্থা-বিভারেয়:। মনোম্লোহি সংসার: মনশ্চারময়ং অরময়ংছি সৌম্য মনইতি শ্রুতে:। অভোহরশন্ধ বাচ্যায়াং পৃথিবাং মনোধারয়য়য় কী কুর্মন্। তাং পৃথিবীমছিরেকী কুর্মন্ অপত্তেজ্ঞসা ভত্তেজোহনিলেন ভচ্চ থং ভূভাগে অহত্বারে তঞ্চ ভূভাগিমহত্বারং মহায়নি মহত্বতে ॥ ২১ ॥

ত স্থিন বিষয়াকারং ব্যাবস্তা জ্ঞানকলাং জ্ঞানাংশমাত্মছেন ধ্যাছা। ছয়া ধ্যানবৃত্তি রূপকা আত্মাবরকম্জ্ঞানং বিনির্দহন্ নির্বাণ স্থুধ সংবিদা ভাঞ্ছিছা মুক্তবন্ধন: সন্ম্নির্দেশ্যেনাপ্রতর্কেণ স্থেন ভাবেন স্থাম্বণেণ তত্তী ॥ ২২ ॥

॥ ♦॥ ইভিনবমে সপ্তমঃ ॥ ♦॥

অষ্টমে রোহিতক্রোকো বংশো যত্তাভবর প:। সগর: কপিলাকেপারিদ থা যত স্নব:॥ • ॥

ক্রেমসকর্পের

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নৰ্মন্তক্তে শ্রীজীবগোম্বামিকত ক্রমসলর্ভে সপ্তমোহধারি: সমাপ্ত: ॥ 🛊 ॥

শ্ৰীবিখনাপচক্ৰবন্তী ।

পতিমেবাহ মন ইতি। অল্লময়ং হি সৌমা মন ইতি শ্রুতেশ্বনসোহস্বর্তিখাদল শব্দবাচায়াং পৃথিব্যাং ধাররন্ তাং পৃথীং অতিরপস্থারয়ন্ তা আপ তেজসা তেজসি। তত্তেজ অনিলে তং বায়ুং থে। তচ্চ থং ভ্তাদাবহুলারে তঞাহুলার মহতত্ত্বে, তেশ্বিন্ তঞা মহাস্তঃ জ্ঞান কলাং জ্ঞানকলায়াং বিদ্যাঘাং ধ্যাদা তদৈর বিদ্যাবা অক্সান মবিদ্যাং বিনিশ্হন্ তাং বিদ্যাঞ্চ হিয়া বেল ভাবেন অ অর্পেণ তভৌ। কীদুশেন নির্বাণস্থিত সম্পদ্ধতা তেন ॥২১।২২॥

॥ * ॥ ইতি সারাপদর্শিতাং হর্ষিণাং ভক্তে তেসাং। নবমে সপ্রমোহধারিং সক্তঃ সক্তঃ সকাং । * ॥
 অইমে সগরঃ সমাট্তৎ পুত্রাং কশিলাগসা। দগ্ধা তক্ত প্রসাদ্যাক্ষণ শুমাননয়ৎ পুরীং । * ।

অতএব ঐ রাজা অশ্নময় মনকে আশ্ন শব্দ বাচ্য পৃথিবীতে ধারণ অর্থাৎ পৃথিবীর দহিত একীকৃত করিয়া পরে দেই পৃথিবীকে জ্বলের দহিত ঐক্য করিলেন তদনন্তর দেই জলকে তেজের দহিত একী-কৃত করিয়া দেই ভেজকে বায়ুর দহ মিঞ্জিত করিলেন। তাহার পর বায়ুকে আকাশে ধারণ করিয়া দেই আকাশকে অহকারে যোগ করিলেন। পশ্চাৎ দেই অহকার মহতত্ত্বে মিলিত করত ॥ ২১ ॥

বিষয়াকার ব্যাবর্ত্তন পূর্ব্বক জ্ঞানাংশকে আত্মরূপে ধ্যান করিয়। তাহার দারা আত্মার আবরক অজ্ঞানকে দশ্ধ করিয়া ফোলিলেন। পরে নির্বাণ হুথ সন্মিদ্ দারা জ্ঞানাংশ পরিত্যাগ পূর্বক মুক্ত বন্ধন হুইয়া অনির্দেশ্য ও অপ্রতর্ক্য স্বরূপে অবহিত হুইলেন॥ ২২॥

॥ # ॥ ইতি নবমে সপ্তম ॥ # ॥

অইমাধ্যায়ে রোহিত বংশ এবং কপিলদেবের আক্রেপে সগর সন্তানদিগের বিনাশ র্তান্ত ॥ • ॥ শুকদেব কহিলেন রোহিত্রে তন্ম হরিত, ঐহ্রিত হইতে চম্প উৎপন্ন হয়েন, যিনি চম্পাপুরী নির্মাণ ছরিজো রোহিতস্তশ্চম্পস্তশাধিনির্মিতা। চম্পাপুরী হুদেবোহতো বিজ্ঞাে যক চাজ্জঃ ॥ ১॥ ভরুকস্তং হৃতস্তশাদ্কস্তভাপি বাত্কঃ। সোহরিভিক্তিভূরাজা সভার্যাে বনমাবিশং ॥ ২॥ বৃদ্ধং তং পঞ্চতাং প্রাপ্তং মহিষ্কুমরিষ্যভী। উর্বেণ জাজতাত্মানং প্রজাবন্তং নিবাবিতা॥ ৩॥ আজ্ঞায়াকৈ সপত্মীভির্গরোদভোহ্জসা সহ। সহ তেনৈব সংজাতঃ সগরাংখ্যা মহাযশাঃ ॥ সগরশ্চক্রব্র্যাদীং সাগরো যং হৃতৈঃ কৃতঃ॥ ৪॥

যস্তালজ্ঞান্ যবনান্ শকান্ হৈহয় বর্ষরান্। নাবধীকা ফুবাক্যেন চক্রে বিকৃতবেশিন: ॥ ৫ ॥
মুঞ্জান্ শাশ্রুধরান্ কাংশ্চিমুক্তকেশার্দ্মন্তিতান্। অনন্তর্বাসসঃ কাংশ্চিদবহির্বাসসোহপরান্। ॥ ৬॥

क्षिपदयामी।

চন্দ্ৰ দিত্দ্যন চন্দ্ৰ বিনিৰ্দ্ধিত। অতশ্চন্দ্ৰ ॥ ১ ॥ জ্তা ভূৰ্যক । ২ ॥ উৰ্ব্ধেণ অধিণা আখানং দেহং প্ৰকাৰত্বং সগৰ্ভং ॥ ৩ ॥ গবোৰিবং। তেনৈৰ গ্ৰেণ সহ লাতঃ। ৪ ॥ শুক্ ৰাক্যেন উৰ্ব্ধিচনেন কাংশিচদহথৈৰ বিকৃত্বেশিনশ্চক্তে ॥ ৫ ॥ ভদৰোহ মুখ্যানিত্বি। মুক্তকেশান্ অৰ্দ্ধ মৃষ্টি ভাংশ্চ ॥ ৬ ॥

ক্রেম্পলড:

স্গ্র ইতি সার্জ্যুক্তং॥ ১। ২। ৩॥
অবণী দিতাতে নাবধী দিতি পাঠয় স্থামি স্মতঃ॥ ৫॥
সংগ্রিক্সপ্তিকি ব্যাধানে । নত জীপ্রাশ্রিয়া।

কাং-চিদহত্ত্তি ব্যাখ্যানাং। নচ প্রীপরাশরদা। তথাছি ভলাদাং। প্রায়দণ্ট হৈইয়ং জ্বানেত্যাদি। ওরুণাকোন

क्षिविश्वनामध्यक्व वीं।

ৰিনিৰ্দ্ৰিৰ। চম্পাপুৰী বেংনভি শেষ: । অক শিক্ষাং স্থানেৰ: ॥ ১।২॥ ঔৰ্বেণ অংখিণা আয়ানং মহিষা দেহং প্ৰেজাবস্তুং সগৰ্ভং ॥ অন্ধ্যা আন্দা আন্দা সহ ॥ ৪॥ ভালভাজ্যাল্যা জাভিৰিশেষা: । অৱে।কৌৰ্যাজ বাকোন বিক্লাহবেংৰণ এবাই মুখানিভাগি ॥ ৫।৬।৭॥

করিয়াছিলেন। দেই চল্পের পুত্র হাদেব, তাহার আত্মজ বিজয়॥ ১॥

বিজ্ঞারে তন্য় ভরুক, তাহার পুত্র বৃক,ঐ বৃক হইতে বাহুকের জন্ম হয়। বৈরিগণ এই বাহুকের রাজ্য অপহরণ করিয়া লওয়াতে তিনি ভার্যা সহ অরণ্য প্রবেশ করেন। ২॥

সেই স্থানে বৃদ্ধ হইলে পর আয়ুংশেষে তাঁহার পঞ্ছ প্রাপ্তি হয়। তাঁহার মহিনী অসুমৃত। হইবার উদ্যোগ করিয়াছিলেন, মহর্ষি উর্ব্ধে তাঁহাকে সগর্তা জানিয়া দে উদ্যম হইতে নিবারণ করিলেন ॥ ৩॥ হে, রাজন্। রাজমহিনীর সপত্নীগণ তাঁহাকে অন্তর্বাত্নী জানিয়া হিংদা পরবশ হইয়াছিল এবং তদীয় গার্ত্ত বিনাশার্থ অন্নের দহিত গর (বিষ) প্রদান করিয়াছিল, তাহাতে গর্গ দহিত প্রদাব হওয়াতে সেই পুত্র সগর এই আখ্যায় আখ্যাত হয়। ঐ সগর মহাযশনী স্ব্রাট্ হইয়াছিলেন তাঁহার পুত্রদের হইতেই সাগর নিখাত হইয়াছে॥ ৪॥

হে রাজন্ ! সগর রাজা শ্রীয় শুরু ঔর্ব ঋষির বাক্যে তালজঙ্গ, যবন, শক, হৈছর এবং বর্বর এই সকল জাতীয়দিগের প্রাণবধ করেন নাই, ভিন্ন ভিন্ন জাতিকে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারে বিকৃতকেশী করিয়াছিলেন ॥ ৫ ॥

অৰ্থাৎ কোন জাতিকে মুগু অধচ শাশ্ৰুণারী,কোন জাতিকে, মুক্তকেশ ও খুৰ্দ্ধ মৃণ্ডিড,কোন জাতিকে

সোহখনে বৈষ্মত্বত সৰ্ববেদ হ্রাজ্মকং। উর্বোপদিউযোগেন হরিদাজ্মানমীশারং ॥
তত্তোৎস্কঃ পশুং যজে জহারাখং পুরন্দরঃ ॥ ৭ ॥
হ্মত্যাস্তনয়া দৃপ্তাঃ পিতৃরাদেশকারিণঃ। হ্রমশ্বেষমাণাতে সসমস্তাম্থনমহীং ॥ ৮ ॥
প্রাপ্তদীচ্যাং দিশি হয়ং দদৃশুঃ কপিলান্তিকে। এব বাজিহরশেচার আতে নীলিতলোচনঃ ॥
হল্যতাং হ্যতাং পাপ ইতি ষ্টি সহ্প্রিণঃ। উদায়ুধা অভিব্যু ক্লমিনেৰ তদা মুনিঃ ॥
ব্দানীরামিনা তাবশাহেন্দ্র হতচেতসঃ। মহন্যাতিক্রমহতা ভস্মশাদভবৎ কণাৎ ॥ ৯ ॥
ন সাধ্বাদো মুনিকোণভর্জিতা নৃপেন্দ্র পুশা ইতি সন্ধামনি।

विषद्रकामी।

জুর্বোপদিটো বো যোগ উপায়তেন ॥ ৭ ॥
তক্ত ব্ব ভার্যাঃ ত্বানা তবা স্থলতাঃ পূজাণাং প্রভাবং মৃত্যুঞ্চাই স্থলতাইতি ষড়্ভিঃ । ৮ ॥
এব বালিহর ইতি ক্রণডোহভিষ্যু ষষ্ট সহস্রাণি পরিছেদক তবা সন্তি বেবাং। উদ্মিদেষ লোচনোনীলনককার ॥ ৯ ॥
কেচিত্র কণিলক্ত কোপাগ্নিনা দ্বাইতি বর্ণরত্তি ভারিরাকরোভি নেতি। কুত ইতাত আহ স্থামনি গুদ্ধসৃত্তী

क्रमनवर्षः।

বশিষ্ঠ বচসেত্যের বিজ্পুরাণ্মভং ॥ ৬ । ৭ । ৮ ॥

প্রাণ্ডলীতী মিতার্ককং। তদেশ দক্ষিণভ সমুক্তরেধারা গ্লাসংগ্রদেশে পরিবৃত্যা যুক্তাতে। আইক্সিল পরিব্লারাইক্স মেব বাসমাধেরং॥ ৯ । । ১০ । ১১ । ১২ । ১৩ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ । ২১ । ২২ । ২০ ॥

श्चीविधनायहळ्कवर्छी।

ভক্ত বে ভাৰ্য্যে স্থমতি: কেশিনীচ। তত্ত্ব স্থমতাা: পুত্ৰাণাং **প্ৰভাবং মৃত্যুঞাহ বড় ভি: ॥৮** ॥

স্বশরীরেদেব বোহগ্রি স্তীরং মহাভূতং তেনৈব মহদপরাধাদতিবর্ত্তমানেন দগ্ধা:। মহেক্তেটক্রেবৈব এব চৌর ইতি বিজ্ঞাপনাং॥ ১॥

অত্ত কপিলক কোপং বদন্তোহজা এবেজাহ। নেতি ম্নিকোপ ভৰ্জিতা ইতি ন সাধ্নাং বাদঃ কিন্তুসাধ্নামজ্ঞানামেবে-অন্তৰ্বাস বিহীন কেবল বহিৰ্বাস্ধারী, কোন জাতিকে বহিৰ্বাস হীন কেবল কৌপীনধারী ক্রেন ॥ ৬॥

বেং পরীক্ষিং! উল্লিখিত সগর রাজা মহর্ষি ওব্বৈর উপদিষ্ট উপায় দ্বারা অখনেধ যজ্ঞ করিয়া সর্বি বেদ ও সর্বাদেবময় পরমাত্মা পরমেশ্বর ভগবান্ হরির আরোধনা করেন। তাঁহার যজ্ঞার্থ উৎস্ট পশু দেবরাক্ষ ইন্দ্র হরণ করিলেন॥ ৭॥

হে কুরুপ্রবীর! দগর রাজার ছই বনিতা ছিল, স্মতি ও কেন্দিনী। রাজা ফজীয় অশ্ব অস্বেষণার্থ স্মতির দন্তানদিগকে আজ্ঞা দিলেন, তাহাতেই তাহারা দাহক্কার হইয়া যজ্ঞীয় অশ্বের অসুস্কান কর্ত্ত অবনীতলের স্কৃত্তি খনন করিতে আরম্ভ করিল॥ ৮॥

এবং কিয়দিন পরে উত্তর পূর্বে দিকে ভগবান কপিলের সিম্নধানে সেই ঘোটক দেখিতে পাইয়া "এই ব্যক্তি অশ্বচোর নয়ন নিমীলন করিয়া রহিয়াছে এ পাপাছাকে এখনি মারিয়া ফেল, মারিয়া ফেল, বিলয়া ষঠি সহত্র সহোদরে অস্ত্র শত্র-উদ্যুদ্ধ করত ওাঁহার অভিমুখে ধাবমান হইল। ভগবান্ কপিল সমাধিছ ছিলেন, কোলাহল ভানিয়া নেত্রছয় উদ্মিষিত করিলেন। হে রাজন্! ইচ্ছের মায়ায় সগর সন্তানদিশের বৃদ্ধি বিনফ ইইয়াছিল অভএব মহর্ষি কপিলের প্রতি ঐ রূপ অভ্যাচার করিতে উদ্যুত হর। কিন্তু মহা ব্যতিক্রম হেতু অতি মহৎ যে কপিলদেবের শরীরায়ি ভাহাতে ক্রণ মাত্রে ভাহারা সকলেই ভত্মসাৎ ইইয়া গেল॥ ৯॥

হে রাজন্! কোন কোন ব্যক্তিরা ব্লিয়া থাকেন দগর জনয়েরা কপিল মুনির কোপায়িতে ভর্জিত

কর্পং তবোরোষসয়ং বিভাব্যতে জগৎ পবিত্র।ত্মনি থে রজো ভূব: ॥ ১০ ॥

যভেরিতা সাংখ্যন্ত্রী দূঢ়েহ নে বিরা দৃষ্কু স্তরতে ত্রত্যয়ং।
ভবার্শবং-মৃত্যুপথং বিপশ্চিত: পরাক্ষ্ভৃতক্ত কথং পৃথব্যতি: ॥ ১১ ॥

যোহ্দমপ্তন ইত্যুক্ত: স কেশিক্তা নৃপাত্মত্র:। উক্ত পুজোহংশুমানাম পিতাসইছিতে রত: ॥১২॥
অসমপ্তন আজ্মানং দর্শরেরসমঞ্জনং। জাতিক্সর: পুরাসক্ষাদেবাগী যোগাবি চালিতঃ ॥

,

विषद्रशामी।

জগতঃ পৰিত্ৰঃ শুদ্ধিকর স্বাত্মা বস্ত ভত্মিন্ কথং বিভাবাতে সংভাবাতে। অসংভাবনারাং দৃষ্টান্তঃ ভূৰোরজঃ শে কথং সংভাবাত ইতি ঃ ১০ ঃ

কিঞ্বস্ত বেন ঈরিতা প্রবর্জিতা ভক্ত বিপশ্চিত: সর্ব্যক্ত কথং পৃথল্মতি: অরিমিত্রাদি ভেদদৃষ্টি: в ১১ в °.

তদেবং সুমতা: প্তেরু মৃতেরু কেশিলা: পোত্রেণাখা সমানীত: পিতৃবাোদ্ধরণ প্রবদ্ধ কৃত ইতি দর্শবিত্যাহ বোৎসমঞ্গ ইত্যক্ত: কেবলমক্তি:। বন্ধ ভন্ধ সমলম এব স্তু কেশিলা: স্ত:। কেত্রেজন্তমিব প্রতীতং বার্মতি ভট্ডেব নুণভান্ধনো দেহাজ্ঞাত:॥ ১২ ।

ভঙ কথামাহ চতুর্ভি: শ্লোটক:। অসমঞ্জন: পুরা পূর্ক জন্মনি যোগী সন্ সলাক্ষেতো গোগাৰিচালিত: অভ: ইলানীং ভাতিমূর:

ত্ৰীবিখনাথচক্ৰবৰ্তী।

ভাৰ্থ:। বত: সম্বধাননি ভ্ৰমন্ত মৃত্যে কাদিশি পৰিজং দৰ্শনাদিনা বত অধা ভূত আত্মা বেহো যত তামিন্। তমঃ ক্ৰথং বিভাবাতে সংভাবাতে। অসংভাবনারাং দৃষ্টাতঃ ভূবোরজঃ ধে কৰং সংভাবাতে। ধনিদং রজস্বদ্দিব মুনিরস্থ কোপীত্য-জ্ঞানামেবোক্তিরিভার্থ:॥ ১০ ॥

বস্ত ঈরিতা বেন প্রবর্ত্তিতা ভক্ত বিপশ্চিত: সর্ব্বজন্ত পৃথন্ধতি: প্রাকৃতী মতি: প্রমান্ধনাহি মতি: প্রমান্ধনৈব-ভাদিতার্থ: ॥ ১১ ॥

নৃপক্ত সগরকাত্মজোবোহনোহসমঞ্জস ইত্যক্তঃ স কেলিনাাঃ পুত্রঃ । ১২ ॥ পুরা পুর্বজন্মনি গহিতিং অচর্ত্তিতি সক্লপরিহারায়েভার্ধঃ ॥ ১৩ ॥

হইয়াছিল, সে কথা ভাল নহে,কারণ ভগবান্ কপিল শুদ্ধ দত্ত্ব মৃতি, তাঁহার শাত্মা জগতের পরিত্রকারী আকাশে পার্থিব ধূলির ভায়ে তাঁহাতে কি প্রকারে কোধ্যয় তমঃ সম্ভাব্য হইতে পারে॥ ১০॥

অপর যিনি এই সংসার সাগরে সাংখ্যময়ী দৃঢ়া তরণী প্রবর্ত্তখানা করিয়াছেন, যে তরণী দ্বারা মুমুকু জনে ছরতায় মৃত্যুবন্ধ ভবার্ণ উত্তীর্ণ হইতেছে সেই সর্বজ্ঞ পরমান্ত্র সক্রপ মহামুনির শক্ত মিত্রাদি ভেদ দৃষ্টিই বা কি প্রকারে সম্ভাব্য ॥ ১১ ॥

নৈ যাহা হউক, সগর রাজার যে পুত্র অসমঞ্জস বলিয়া উক্ত হইতেন যিনি কেশিনীর তনয় সগরেন রই শরীর হইতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন, কেবল অজ্ঞ লোকেরটে তাঁহাকে অসমঞ্জস বলিত, বস্তুত: তিনি সমঞ্জস ছিলেন। সেই অসমঞ্জদের পুত্র অভ্যান্, সর্কাদা পিতামহের হিতার্থ রত থাকিতেন॥ ১২

হে রাজন্। ঐ অসমপ্রস পূর্ব জান্ম যোগী ছিলেন,সঙ্গ হেতু যোগ হইতে পরিজ্ঞ হয়েন। অতএব জাতিমার হইরা জান গ্রহণানস্তর ইহজন্ম সঙ্গ পরিহারার্থ জাপনাকে অর্থতঃ অসমপ্রস রূপে প্রদর্শন করিতে প্রস্কৃত্ধ হইরাছিলেন, অর্থাৎ লোকের উদ্বেগ জানাইয়া লোক গহিত আচার তথা জ্ঞাতিগণের অপ্রিয় কার্ম কার্ম হেতার প্রায়মান বালকদিগকে সরমূ কুলো ক্ষেণ্ড করিতেন ॥ ১৩॥

আচরন্ গহিতিং লোকে জ্ঞাতীনাং কর্ম বিপ্রিয়ং। সর্যাং ক্রীড়ভো বালান্ প্রাক্তর্মেক্ষয়ন্ জনং॥১০॥
এবং বৃত্তঃ পরিত্যক্তঃ পিত্রা স্নেহমপোক্ষরৈ। যোগেশর্যোপ বালাংস্তান্ দর্শয়িছা তভোষ্যো ॥
অযোধ্যা বাসিনঃ সর্কের বালকান্ পুনরাগতান্। দৃষ্ট্রা বিসিন্মিরে রাজন্ রাজা চাপ্যস্থত ॥১৪
অংশুমাংশ্চোদিতে। রাজ্ঞা তুরগাস্থেবণে ইযো। পিতৃব্যখাতামুপথং ভন্মান্তি দৃশে হ্য়ং॥
তত্রাসীনং মুনিং বীক্ষ্য কপিলাখ্যমধোক্ষরং। অন্তোৎ স্মাহিত মনাঃ প্রাঞ্জলিঃ প্রণতো মহান্॥১৫
ন পশ্যতি হাং পর্মাজনো হজনো ন বৃদ্ধাতে হ্ল্যাপি স্মাধ্য যুক্তিভিঃ।

প্রীগরস্থামী

স্বাধী পরিহারার অনুনুম্বেলয়ন্লোকে গহিতিং জ্ঞাভীনাঞ্ বিপ্রিয়ারং কর্মাচরন্ ক্রীড়ভো বালান্ সরযুাং প্রাভিৎ প্রাকিপদিতি ব্রোরব্যঃ ৪ ১০ ॥

এৰস্বিশং বুত্তং কৰ্ম্ম যক্ত সঃ ॥ ১৪ ॥

পিতৃব্য থাত্ৰমুখ্য পছা ভং য্যৌ ভন্মান্তি ভন্ম স্মীপে ॥ ১৫ ॥

অলানভোহ্বকানভোহ্কপা। বর্দ্ধিত তুইাব বড়্ভিরীশানমংগুমানেব্যাশর: । অলা জলা ব্রুপি থামদ্যাপি ন পশুতি নচ ব্ধাতে। কথং ভূতং আত্মা খুলাং পরং পরং শর্কেইত্ভিঃ স্মাধি যুক্তিভিঃ স্মাধি নাপাপরোকং ন পশুতি। যুক্তিভিঃ পরোক্ষমপি স্মাঙ্ন ব্ধাতে ইতার্থ:। অপরেহ্র্লিটীনাল্ল কুত স্বাং পশ্লেষ্ড। অর্জাচীনাল্ল হেতুং তম্ম ব্রুপা মনশ্চ শরীর্ক ধীশ্চ সূবং তমার্কা: কার্যাণি তাভি বিবিধা বে দেবভির্গ্ড্ নর্গাংস্গাত্মেরু স্টাং তলাপি বরং অপ্রাকাশাং অজ্ঞা: কুতঃ

बीवियगाथठकवर्शे।

অসমজ্ঞস প্রতোহংশুমান্ পিতৃরা থাতিং অত্ বঃ পছাত্তং অতি অতিকে ॥ ১৪ । ১৫ ॥ অদক্ষানাদপরাধিনঃ পূর্বের দ্বাইতি নাতৃত্যমিত্যাহ নেতি আত্মানোজীবাৎ পরং তাং অজ্নো ব্রহ্মাণি নপশ্রতি নাপি বুদাতে।

এই প্রকার কর্ম দেখিয়া ভাঁহার পিতা সগর অপতাম্নেহ বিসর্জন পূর্বক ভাঁহাকে পরিত্যাগ করেন, তাহাতে তিনি নিজ যোগৈম্ব্য প্রভাবে নিহত বালকদিগকে পুনজী বিত করিয়া সকলকে দেখান, পরে সে স্থান হইতে বহির্গত হইয়া প্রস্থান করেন। হে রাজন্! অধাধ্যাবাসি লোকেরা অসমঞ্জদ কর্ত্ক নিহত স্বস্থ বালক স্থাকে সজীব ও পুনরাগত দেখিয়া যৎপরোনান্তি বিস্মাধ্তি হইয়াছিল, আর সগর রাজাও ভাঁহার নিমিত্ত পরে বিস্তর অসুতাপ করিয়াছিলেন॥ ১৪॥

সে যাহা হউক, স্থাতির সন্তান সকল বিনষ্ট হইলে পর নরপতি সগর যজার অশ্ব অশ্বেষণার্থ ঐ অসমঞ্জসাত্মজ অংশুমান্কে পাঠাইয়া দিলেন অতএব অংশুমান্ পিতৃব্যদিগের কৃত খাতের পূশ্চাৎ পশ্চাৎ যে পথ হইয়াছিল তদেযাগে গমন করিলেন এবং অনেক দূর গিয়া ভন্মরাশি সমীপে যজ্ঞাখ দেখিতে পাইলেন। হে রাজন্! সেই স্থানে কপিল নামা মুনিরূপী ভগবান্ বিষ্ণু বিস্থাছিলেন। তাঁহার দৃষ্টিপাত হওয়াতে অংশুমান্ সমাহিত চিত্ত ও কৃতাঞ্জলি হইয়া স্তব আরম্ভ করিলেন ॥ ১৫ ॥

হে ভগবৰ্! যে ত্রন্ধা জন্ম রহিত তিনিও অদ্যাপি আপনা অপেক্ষা পুর পরমেশর যে আপিনি, আপনি দাঁকে সমাধি দারা দেখিতে পাইলেন না এবং মুক্তি দারাও জানিতে পারিলেন না ইহাতে অফ অর্বাচীন ব্যক্তিরা কোথা হইতে আপনাকে দর্শন করিবে ? তাহারা ঐ ত্রন্ধার মনঃ, শরীর ও বুদ্ধি হইতে যে বিবিধ দেব তির্যুক্ নর•স্প্রি হইয়া থাকে তন্মধ্যে স্ফ হইয়াছে। তাহাদের মধ্যে আবার আমরা কুতোহপরে জন্ত মন: শরীরধী বিদর্গ স্কী বয়মপ্রকাশা: ॥ ১৬ ॥
যে দেহভাজ স্থিতা প্রধান। গুণান বিপশ্যস্তাত বা তমশ্চ।
যন্মায়য়া,মোহিতচেতদ স্থাং বিহ: স্বশস্থং ন বহি: প্রকাশা: ॥ ১৭ ॥
তং স্থামহং জ্ঞানঘনস্বভাবং প্রধান্ত মায়া গুণভেদমোহৈ:।
সনন্দনাদ্যৈ মুনিভির্বিভাব্যং কথং বিমৃত্যু পরিভাব্য়ামি ॥ ১৮ ॥
প্রশান্ত মায়া গুণ কর্মালিক্সমনামরূপং স্বদ্সভিষ্কাং।

श्रीसत्यामी ।

भक्ताम हेलार्थः । ১७ ।

ক্ষণরে তহি কিং পশান্তি তদেবাহ বে দেহভাজ: তে স্বনিন্সমাক্ স্থিতমণি স্বাং ন বিহ:। কিন্তু প্রণানেব বিপশীন্তি। স্বান গুণানপি অণিত্ত তমএব পশান্তি। বত লিগেগ ব্রিংরব প্রধানং বেষাং। ক্ষতো বহিরেব প্রকাশো জানিং বেষাং। বৃদ্ধি পরভন্ত তয়া জাগ্রং স্থারোক্ষিলান্ পশান্তি স্বৃধ্থীত্তম: এব কেবলং নতু নিপ্তাণং স্থাং। সর্ক্তি হেতুং বং যত তব নার্যেতি বা নোহিতং চেভো বেষাং তে ॥ ১৭॥

তপাপি বং বিচারেণ জ্ঞান্তসীতি চেত্ততাহ তং স্বামহং বিমৃত্য কথং পরিভাবয়ামি বিচারয়ামি। কথং ভূতং জ্ঞানখন স্বভাবং শুদ্ধ জ্ঞান মৃর্তিং। অন্তর্জাব প্রথমে আন্তর্গ নিমিত্তো ভেদমোহৌ বেবাং হৈ জিলিবাং বিচিন্তাং। অন্তর্জাব জ্ঞানখনস্বাস্থ তাবং জ্ঞানবিষয়হং বিচার বিষয়হং বিচার বিষয়হেপি মায়াশ্তবৈর ভিভূতোহং ন বিচারে সমর্থ ইতি ॥ ১৮॥

ত মাৎ হে প্রাণার বাং পুরাণং পুরুষং কেবলং ননামে ভাষম:। পুরাণ পুরুষ্তে হেডুঃ মারাগুণা: কর্মাণি বিশ স্ট্যাদীনি

শ্ৰীবিখনাপচক্র বন্তী।

অপারে অর্স্লাচীনা বয়ং কুতো বৃদ্ধামতে মন আদিভি র্থে বিসর্গা: দেবাদিসর্গা তেয়ু স্টা: অপ্রকাশা অজ্ঞা: । ১৬ ।

গুণান্ জাগর অপ্রায়ে। প্রিয়ানু পশান্তি সুব্ধ্যৌতু তম এব কেবলং নতু নির্গুণং আং অফিলেব সমাক্ ডিইডীতি অসংস্থং বহিঃ প্রকাশা বহিজ্ঞানবস্তঃ ॥ ১৭ ॥

সভাবত এব নতু সাধনৈঃ প্রধ্বত্থে মায়াত্তণ নিমিতে চিন্নেটো বৈতিতঃ ॥ ১৮॥ প্রাশাস্থানি মায়া সম্বন্ধীনি তাণকর্ম লিকানি বততঃ। তথৈব অনাম কপং মায়িকনাম ক্লপর্হিতঃ ॥ ১৯। ১০॥

অজ্ঞতম, অতএব আমন্ত্র। আপনাকে দেখিতে পাইব সম্ভাবনা কি ? ॥ ১৬॥

হে দেব! যে দকল ব্যক্তি দেহধারী,তাহারা,আপনি আত্মাতে সম্যক্ অবস্থিত, তথাচ আপনাকে জানিতে পারে না, গুণ সকলই দর্শন করে, অথবা গুণও তাহাদের দৃষ্টিগোচর হয় না, কেবল তমই দেখিতে গায়, কারণ ত্রিগুণা বুদ্ধিই তাহাদিগের প্রধান অতএব বহিদিকেই তাহাদের জ্ঞান, অর্থাৎ তাহারা বুদ্ধির পরতন্ত্র এ প্রযুক্ত জাগ্রৎ ও স্বপ্লাবদায় বিষয় দর্শন করে এবং হ্যুপ্তি দশায় তমা মাত্র দেখি,আপনি নিগুণ হতরাং আপনাকে কোন অবস্থায় দেখিতে পায় না,যে হেতু তাহাদের চিত্ত আপনার মায়ায় বিমোহিত॥ ১৭॥

প্রভো! আপনি জ্ঞান ঘন সভাব অর্থাৎ শুদ্ধ সন্থ মূর্ত্তি অতএব যে দকল ব্যক্তির মায়াগুণ নিমিত্ত ভেদ মোহ প্রধান্ত হইয়াছে ভাদৃশ দনন্দনাদি মুনি অনেরও বিচিন্তনীয়। আমি মূচ, বিচার ঘারাও কিরপে আপনাকে জানিতে পারি। ফলতঃ আপনি জ্ঞানঘন স্বরূপ, এ প্রযুক্ত জ্ঞানের বিষয় নুহেন, যদিক্তাৎ বিচারের বিষয় হন্ তথাচ আমি মায়াগুণে অভিভূত, স্ত্তরাং বিচারে সমর্থ নহি॥ ১৮॥

হে প্রশান্ত। হতরাং মায়া গুণই আপনার বিশুর স্ট্যাদি কর্ম এবং ত্রুলাদি রূপই আপনার লিঙ্গ।

জ্ঞানোপদেশায় গৃহীত দেহং নমামহে ত্বাং পুরুষং পুরাশং ॥ ১৯ ॥
ত্বনায়া রচিতে লোকে বস্তু বুদ্ধা। গৃহাদির । অমস্তি কামলোডের্যা মোহবিজ্ঞান্ত চেডসঃ ॥ ২০ ॥
ত্বাস্থানঃ সর্বস্তুতাত্মন্ কাম কর্ম্মেরিয়াশয়ং । মোহপাশোদ্চ স্থিলো ভগবংস্তব দুর্শনাৎ ॥
ত্রিশুক উবাচ ॥
•

ইখং গীতাকুভাবন্তং ভগবান্ কপিলোম্নিঃ। অংশুমন্তম্বাচেদমকুগ্রাছ ধিয়া নৃপ ॥ শ্রীভগবামুবাচ ॥

- ' অখোহয়ং নীয়তাং বৎস পিতা মহপশুত্তব ॥ ২১ ॥
 ইমেচ পিতরো দগ্ধা গঙ্গান্তোহর্ছন্তি নেতরৎ ॥ ২২ ॥
- তং পরিক্রম্য শিরদা প্রদান্য হয়মানয়ৎ। দগরত্তেন পশুনা যজ্জশেষং দমাপয়ৎ॥
 য়াল্যমংশুমতে শুস্ত নিস্পৃহোত্মকুবন্ধনঃ। ঔর্বোপদিউ মার্গেন লেভে গতিমকুত্রমাং॥ ২০॥

विषत्रकामी।

লিকানিচ ব্ৰহ্মাৰি ক্লণাণি ৰত ডং। প্ৰশান্তকৈ হেড্: সদসভাং কাৰ্য্যকারণাভাং পুণাপালাভাং বা বিমুক্তং। অতোহনাম ক্লণং ডংকুত নাম ক্লণ শূক্তং কিন্তু জ্ঞানোণৰেশার গৃহীতঃ প্রকটিতো দেহং গুৰু সন্ত মুর্তিব্রি ডং। ধ্বা হৈ প্রশান্তমায়েতি হে অন্তবেভিচ সংবাধা ক্র্যন্তিঃ স্ট্রাৰি কার্যোলি ল।নি বতেডি বোজাং। ববা প্রশান্ত মারাল্যো যদিন্ ইভোক্ষের পদং॥১৯॥

স্থ ভাগ্যং প্লাষ্টে ভক্ষাৰেভি ছাভাাং। কামাদিভিৰ্কিঞান্তানি চেতাংসি ধেবাং ত ইনে সর্কে গৃহাদিরু ভ্রমন্তি ॥ ২০ ॥
নোহ্মাক্ত হে সর্কাভূচান্ত্র ক্ষপবৈবং ঘটিভাৎ ক্ষপনাদদ্য দুঢ়োহপি মোহমরং পাশস্থির: তথং ভূতঃ কামাদীনাং
আশ্যং আশ্রং। স্বং প্রসাদেন ক্লভার্থে। ২১ ॥

অৰ্থ গৰাপি সাকাজ্যং প্ৰভাহে ইনেচেভি । ২২ । তং পৰিক্ৰমোতি শুকোজি: । ২৩ ।

अविश्वनाशहक्तव वी'।

কামাদীনামাশর: আশ্রর: ॥ ২১ ॥ নেতর্দিডি নানাণ। নিস্তার ইডার্থ: ॥ ২২ । ২৩ ॥

আপনি কার্য্য কারণ হইতে বিমুক্ত, একারণ মায়া গুণ যুক্ত নাম রূপ শূন্য, কেবল জ্ঞানোপদেশার্থ এই শুদ্ধসন্ত্ব মূর্ত্তি প্রকটিত করিয়াছেন, অতএব আপনি পুরাণ পুরুষ আমি আপনাকে কেবল নমস্কার করি॥১৯ বিভো! এই লোক আপনার মায়ায় বিরচিত হইগাছে ইহাতে বস্তু বৃদ্ধি করিয়া কাম, লোভ, ঈর্যা

ua: त्यांट् खांख हिन्छ मानव मकल शृहानिष्ड खमन करत ॥ २० ।

কিন্ত হে ভগবন্! আপনার কুপায় আপনার দর্শন লাভ হওয়াতে অদ্য আমাদিগের কাম কর্ম ও ইন্দ্রিয়ের আপ্রায় রূপ দৃঢ্তর মোহ পাশ ছিন্ন হইল। অর্ধাৎ আপনার প্রদাদে আমরা কুতার্থ ইইলাম। ক্রুদেব কহিলেন হে রাজন্। এই প্রকারে তাব করিয়া প্রভাব সকল গান করিলে পর ভগবান্ কপিল অনুগ্রহ প্রকাশ পুর:সর অংশুমানের প্রতি নিম্ন লিখিত বচন প্রয়োগ করিলেন। ভগবান্ কপিল ক্রিলেন বংস। তোমার পিতামহের যজপশু এই অশ লইয়া যাও॥ ২১॥

অধ পাইয়া অংশুমান্ সাকাজ্য হঁইয়া দ**গুরুষান থাকাতে মুনি তাঁহার অভিপ্রায় বুকিরা পুনরা**য় বলিলেন, তোমার এই দগ্ধ পিতৃগণ গঙ্গোদকার্ছ, **অভ্যক্তনে ইহাদের সদস্তি হইবে না ॥ ২২ ॥**

তৎ প্রবণে অংশুমান্ মুনিকে মন্তক দারা প্রণাম ও প্রদক্ষিণ করিরা প্রাক্তম করত যজীয় অর আনয়ন করিলেন। সগর রাজা তদ্বারা যজ্ঞশেষ সমাপ্ত করিয়া পরে উপরত স্পৃত্ত ইলেন, অতএব অংশুমা-নের হত্তে রাজ্যভার সমর্পণ পূর্বক বন্ধনোমূক্ত এবং ঔর্বোপদিক বন্ধ যোগে অসুত্তম গতি প্রাপ্ত ভইলেন॥ ১৩॥ ॥ # ॥ ইতি এভাগবতে ষহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নব্মক্ষকে সগরোপাধ্যান্যক্ষমোহধায়ঃ ॥ # ॥ ৮ ॥ # ॥

শ্ৰীশুক উবাচ॥

আংশুমাংশ্চ তপত্তেপে গলানরন কাম্যরা। কালং মহান্তং নাশকোত্তত: কালেন সংস্থিতঃ ॥ ১ ॥
দিলীপন্তংহতন্ত্রনশক্তঃ কালনেঘিযান্। ভগীর্থস্তক্ত হৃত ন্তেপে স হ্মহন্তপঃ ॥ ২ ॥
দর্শরামাস তং দেবী প্রসন্ধা বরদান্ধি তে। ইত্যুক্তঃ স্বমন্তিপ্রায়ং শশংসাবনতো নৃপঃ ॥ ৩ ॥
কোহপি ধার্য়িতা বেগং পত্ত্যা মে মহীতলে । স্কুথা ভূতলং ভিত্তা নৃপ যাস্যে রসাতলং ॥ ৪॥

धीयत्रचामी।

॥ * ॥ देखि नव्यम्बद्धमः ॥ * ॥

নৰমে ২ প্ৰমতে। বংশ: ধট্। কাবধি বৰ্ণাতে। পদা ভ্তলমানিজে বজ পৌতো ভগীরপ:। । ।
ব্ধা পৌত্রোর সগর: রাজাং দ্বা তপভোগে তথা ২ প্রমাঃ দ্বা মহাতং কালং তপভোগে ইতি চকারী জার্থ:।
নাশকোলাকামানেত্মিতি শেব:। সংস্থিত: মৃতঃ ॥ ১ । কালং মৃত্যুং এবিবান্ প্রাপ্ত: ॥ ২ ॥

তং প্রত্যাত্মানং দর্শয়ামাস তে বরদাত্মীতি গলয়োক্তঃ সন্ অমভিপ্রারং পূর্বজোদ্ধরণং শশংস ক্রমাস । ০ । আহু গলা কোহণি গ্রগাং পত্তা মে বেগং ধার্মিতা ধার্মিবাতি । ৪ ।

क्षमनमर्चः।

॥ • ॥ देकि श्रीमहाश्वत नवमक्षत श्रीकी वात्राचानिक्ठ क्रमनम्पर्धना चहेत्याव्यात्रः नमाशः ॥ • ॥

🗒 বিশ্বনাপচক্রবর্ত্তী।

া । । ইতি সারাধিদর্শিসাং হবিণাং ভক্তচেতসং। নবমসাইমোহধার: সলত: সলত: সলত: সভাং ॥ । । । ভরিং মুহুর্ত্তাং থট্। ল: আপেতি নবমে কথা। । ॥ । । বধা সগর: পৌত্রে রাজ্যং শুন্ত তপত্তেপে। ভবৈবাংশুমাংশ্চ দিলীপে অপুত্রে রাজ্যং শুন্ত ভপত্তেপে ইতার্থে চকার: ॥ ১ ॥ বধাংশুমান্ ভবং ॥ ২ ॥ বেবী গলা অমতিশারং পূর্ক্লোজরণং। কোপীতি পলোক্তিঃ। আমুক্তি কালরিয়ান্ত ত্রোপারং বিচিন্তাতাং ॥০।॥ । । ।

॥ 🛊 ॥ ইতি নবমে অফীম ॥ 🛊 ॥

নবমাধ্যায়ে খটু কি অবধি অংশুমানের বংশ এবং ভগীরথের গঙ্গা আনয়ন র্তান্ত ॥ ॰ ॥
শুক্দেব কহিলেন হে রাজন্ ! যদ্রপ গগর রাজা পোঁত হন্তে রাজ্য ভার সমর্পণ করিয়া তপত্যা
করেন, অংশুমান ও ভক্রেপ পুত্রকে রাজত্ব দিয়া গঙ্গানয়ন কামনায় দীর্ঘকাল তপত্যা করিয়াছিলেন, কিন্তু
মনোরথ দিন্ধ করিতে সমর্প হন্ নাই, কিয়ৎকাল পরে কাল বশতঃ তাঁহার মৃত্যু হয় ॥ ১ ॥

জুংশুমানের পুত্র দিলীপ। তিনিও পিতার স্থায় গঙ্গানয়নে অসমর্থ হইয়া কাল্আাদে পতিত হন্। দিলীপের সন্তান ভগীরণ, ইনি গঙ্গানয়ন কামনায় স্মহৎ তপস্থা করিলেন ॥ ২ ॥

তাহাতে গঙ্গাদেবী ইহাঁকে দর্শন দিয়া বলিলেন বংস! আসি তোমার প্রতি প্রসন্ম হইয়া বর দিতে আসিলাস। ভগীরথ তং প্রবণে অবনত হইয়া সীয় অভিপ্রায় অর্থাং পূর্বক গণের উদ্ধার প্রার্থনা করিলেন। ৩।

গঙ্গাদেবী কহিলেন রাজন্! আমি যথন আকাশ হইতে ভূতলে পতিত হইব তথন কোন ব্যক্তিকে আমার বেগ ধারণ করিতে হইবে, নচেৎ ভূতল ভেদ করিয়া রসাতলে গিয়া পড়িব, কে আমার বেগ ধারণ করিবে ? ॥ ৪ ॥

কিকাহং ন ভূবং যাজে নরা মধ্যামূজ ন্তাখ:। মূজামি তদখং কাহং প্রাক্তিত বিচিন্ত্যতাং ॥৫॥ শ্রীরাজোনাচ।

সাধবো কাসিন: শাস্তা ত্রন্মিষ্ঠা লোকপাবনা:। হরস্তাঘং তেহসপদাতেখাতে হুদভিদ্ধরি:॥৬॥ ধার্যায়াতি তে বেগং রাজস্বাত্মা শরীরিশাং। যন্মিনোভিমিদং থোকং বিখং শাটীব ভস্তব্ ॥ ৭॥ ইত্যক্ত্বা স ন্পোদেবং তপসা ভোষয়চ্ছিবং। কালেনাল্লীয়দা রাজস্তেক্তেশশ্চাখত্য্যত ॥৮॥ তথেতি রাজ্ঞাভিহিতং সর্বলোকহিতঃ শিবঃ। দধারাবহিতো গঙ্গাং পাদপ্তজলাং হরে:॥

विभवतामी।

কিক আমুস্ত কাল্মিয়ান্তি ত্ত্রোপায়ো বিচিন্তাভাং ॥ ৫॥ হরন্তি হরিয়ান্তি অঘ ভিন ত্রীতি অঘভিৎ ॥ ৬॥

• আ বা কথা ভূত: যত্মিরিদং বিশ্বং ওত: প্রথিতং উদ্ভিদ্ধাটী গট ইব প্রোত্ক ভির্যাক্তভরু গট ইব। অসৌ স্থাধার ক্ষেপং ধার্মিবাতীতার্থ: ॥ ৭ ॥

ইভোবং গল।মূক্।। তচ্চুদেতি পাঠে প্রাবরিদ্বেতার্থ: । ৮.৪ রাজাতিহিতং তথে ভালীক ভা হরে: পাদেন পূভং জলং বখা: ॥ ৯ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:

কিং চেঙি ময়ানিমিত্তভ্ৰমা অবং পাপং মুজতি নাশয়ভিঃ। তদৰ তং সকানভিকচে জাতিং মনসোত্ঃখমিভাগঃ। গ্ৰা প্ৰস্কে পাপাভাত নাশাস। কোটিগা পুরাণাদি প্ৰসিদ্ধে:। অভ্যোত্ঃখ বাসনেখ্য মিতামরকোবাং ॥ ১ 1 ২ । ৩ । ৪ । ৫ ॥

সাধবং স্বাধিকার প্রাপ্ত শাস্ত্রীধাচার নিরতা: ক্তাসিন: কর্ম্ম তং কলাহনাসক্তা: শাস্তা: শাস্তা: ক্রমণা: ব্রহ্মিষ্ঠা বেদবিচারদক্ষা: স্ব তেখাত ইঙি। অঘানি অঘ আদীনি ভিন্নতীতি তথা। সদা সাধুনা: ক্রমণ। তং স্কাৎ তং ক্রেই ওকু:খং ন ভবিতেতি ভাব: ॥৬।৭।৮।৯।১০।১১।১২।১০।১৪॥

ही विचना वहत्व नहीं।

অঞ্সসঙ্গং স্নানাৎ হরতি হরিবাজি তেবাং তদৰং কোহরিবাতীতি চেৎ হরিবের অবভিৎ। তেন হরিং বিনা তীর্থভণঃ প্রায়শ্চি-ভাদিভিঃ পাশং বস্কাত। ন নশাভীত।জামিলে।পাবাানোজঃ সিদ্ধান্তো দৃটীকুতঃ ॥ ৬ ॥

কত ইতাধুনাশি দং যত শির্সি তিইতেবেতি ভাব:। যদিনিদং বিশ্বমোতং এখিতং উদ্ভৱৰু শাটীবৎ প্রোভঞ্চ তিই।ক্ তত্ত্ব শাটীবেতি ততেশ্বদে দশ্তিং ॥ ৭ । ৮ ॥

তংগতি ধর যের গলা যাভাতি তওলেইছমেবেতি মজিরেভোব সা স্থেম যাস্তিভার্গ: ॥ ৯। ১০॥

অপর আমি পৃথিবীতে যাইতে ইচ্ছা করি না, কারণ মনুষ্টেরা আমাতে পাপ সকল প্রকালন করিবে, দেই পাপ আমি কোথায় মার্জন করিব, এ বিধয়ে উপায় চিন্তা কর। হ।

ভগীরথ কহিলেন মাতঃ। সন্নাদী ত্রন্মনিষ্ঠ শান্ত সাধ্যণ লোক পাবন, তাঁহার। স্ব স্থা অঙ্গ দক্ষ দারা আপনকার ঐ অপবিত্ততা হরণ করিবেন। তাঁহাদের অন্তরে অঘহারি হরি নিত্য বিরাজমান, অভএব তাঁহার। অঘনাশন বিষয়ে সম্পা ॥ ॥

আর ভগবান্ রুজ,যিনি সকল শনীরির আয়া এবং শাটা যেমন সূত্রে ওত প্রোত থাকে তাহার আয়, যাঁহাতে এই বিশ্ব ওত প্রোত হইন্ধা আছে, তিনি তোমার বেগ ধারণ করিবেন ॥ ৭॥

হে কৌরবা! ভগীরথ রাজা গঙ্গাকে এই প্রকার রুলিয়া তপতা দাখা ভগবান্ শিবের সভোষ কর্মীটতে যত্নবান্ হইলেন। অলকালের মধ্যেই ভাঁহার প্রতি আগুতোবের সভোষ হলৈ । ভগবান্ শর্ম স্ক্রিক ভগবান্ শর্ম স্ক্রিক হিতৈয়া, ভগীরথ যাত্বা প্রথিনা করিলেন তথাস্ত বলিয়া অকীকার পূর্মক

ভগীরথ: স রাজর্থি নি নাে ভ্বনপাবনীং। যত্ত স্থাপতৃশাং দেহা ভস্মীভূতা: সা শেরতে।
রথেন বায়ুবেগেন প্রবান্তমসুধাবতী। দেশান্ পুনন্তী নির্দ্ধানাসিকৎ সগরাত্মজান্। ৯।
যক্তন স্পর্শনিতেণ ত্রহাদগুহতা অপি। সগরাত্মজা দিবং জ্যা কেবলং দেহভস্মভি: ৪ ১০ ॥
ভস্মীভূতা স্বাস্তা: সগরাত্মলা:। কি: পুন: প্রাজ্মাকেবীং দেবকে যে ধ্রত্তা:।
নহেত্ত পর্মাশ্চর্ধাং স্থা স্বাদহোদিত:। অনন্তচরণাভোজ প্রস্তারা ভবচ্ছিদ:॥ ১১ ॥
গনিবেশ্য মনো যস্মিন্ প্রজ্মা স্নয়োহ্মলা:। তৈঞ্বং হেন্তাকং হিছা সদ্যোঘাতান্তদাত্মতা:।
প্রতিভিত্তা ভগীরণাজ্জতে তক্স নাভো প্রোহ্ডবং। দিজ্বীপ স্তত্ত্বস্মাদ্যুতায়্ততোহ্ডবং না>৩।
খাত্রপর্ণোনস্বাপ্রাহ্ম বিদ্যাসিয়াম্লাধ। দ্যাক্ষদম্কান্স সর্ব কামস্ত তৎ হত:॥ ১০ ॥

এণর সামী

প্রেন্সাপ্রস্মাহান্ত্রমাহ চ্ছু(ড্রারাল ক্লাম্প্রমারেণ। তচ্চ কেবলং দেহভ মভিরেব ন সাক্ষাৎ প্রক্ষি আছে ক্রেন দঙ্গেন ক্রাঅপি তাং প্রক্ষা দেবতেতি শেষঃ ১০ ঃ

এভৎ প্রেপক্ষরতি। ভ্রীস্ত্তেনাসেন বং সক্ষেদে ॥ ১১॥ অনস্তস্ত বিশেষণং সংনিবেশ্যেতি। বৈভিগাং দেইসম্মং ॥ ১২॥ নিল্ফ স্থা ইয়াওু প্রাপ্তিং ভংৎ স্কঃ ভক্ত ঋ্তপর্ণক স্কঃ ॥ ১২॥

क्षीविष्नां गांतिकात्वी व

ইত্যত্দিকং স্গরাক্সকৌক্সপ্রমতাশিবীং নতবতি ॥ ১১ ॥ विक्रियनक ॥ ১২ ॥ অরাং স্থা প্রাপ্তবে প্রথিষ্ঠ ইক্সবিং। অকল্বয়ং দ্যতবিদ্যারহতং অবৈ নলাম ॥ ১০ । ১৪ । ১৫ ॥

দাবধানে গলা ধারণ করিলেন। হে রাজন্! গলার মাহাত্ম্য কি বলিব ? ভগবান্ হরির পাদস্পর্শে তদীয় জল পবিত্র ইইয়াছে। রাজর্ধি ভগীরথ যে ছানে আপনার পিতৃগণের দেহ সকল ভশ্মীস্ত হইয়া পড়িয়াছিল, তথায় ভ্বনপাবনী গলাকে লইয়া গেলেন। তিনি বায়ুবৎ বেগপাসি রথে আরো-হণ করিয়া অত্যে গমন করিতে লাগিলেন,ত্রিলোক পাবনী গলা তাঁহার পশ্চাৎ ২ ধাবমানা হইয়া সকল দেশ পবিত্র করত নির্দিশ্ব সগর সভানদিগকে স্বীয় স্লিলে সেচন করিতে থাকিলেন। ১।

ে হে রাজন্। সগরাজাকোরা আক্ষণের প্রতি আত্মকুত স্থিতি হত হইয়াও কেবল দেহ ভদ্ম ধারা বাঁহার জল স্পর্শ মাত্রে অর্প্রে গমন করিল, প্রকা পূর্বক তাঁহার দেবা করিলে কি হয় বিবেচনা কর॥ ১০॥

ফলতঃ দগর দন্তানের। বাঁহার জলে ভন্নীস্কৃত অঙ্গ দঙ্গ মাত্রে অর্গগানী হইল, যে দকল ব্যক্তি ধৃত-প্রত হইয়া শ্রেদ্ধা পূর্বেক তাঁহার সেবা করিবে তাঁহাদের অর্গ গমন হওয়া বিচিত্রে নহে। হে রাজন্! এ স্থানে গঙ্গাদেশীর যে নাহাল্লা কীর্ত্তন করিলাম ইহা স্মন্ত শাশ্চর্যা নহে, যে হেছু জিনি অনস্ত চরণ পদ্ম প্রস্তা এবং সংগার নাশিনী ॥ ১১ ॥

হে কুরুবর্ষা। অমল মুনিগণ শ্রেষা সহকারে যে অনুষ্টে রানোনিবেশ করিয়া হস্তাল দেহ সম্বর্ষ পরিত্যাগ পূর্বক সদাঃ তদাল্লতা প্রাপ্ত হন্, তাঁহার পাদপ্রভবার প্রভাব অবশ্রই অনিব্রচনীয়। উল্লিখিত ভগীরথের পুত্র প্রক্র । তাঁহার তনয় নাভ। তাঁহা হইতে দিল্ল দ্বীপ উৎপদ হন্। তাঁহার সন্তান অযুতায়। ১২॥

অধুতায়ুর পুরুজ্জেপর, তিনি নলের সধা, অক্ষ্রদায় (দুত্বিদ্যা রহস্ত) দিয়া ভাঁহা হইতে অখ বিদ্যা প্রহণ করেন। এই অতপর্বের পুত্র স্ক্রিম ॥ ১২॥ । ততঃ ছদাসতত পুক্রো দময়স্তীপতিনৃপিঃ। আছ্মিত্রসহং যং বৈ কল্মাযাজ্যি মৃত কচিৎ॥ বশিষ্ঠশাপাক্তকো হভূদনপত্যঃ স্বৰুৰ্মণা ॥ ১৪॥

श्रीतां का नाठ n

কিং নিসিতো গুরো: শাপ: সোদাসক্ত মহাক্সন:। এতদেদিতুমিচ্ছাম: কথ্যতাং ন রহো যদি ॥ ১৫॥
শীশুক উবাচ॥

সোদাসো মুগরাং কিঞ্চিন্তরন্ রক্ষো জন্মানহ। মুমোচ ভ্রাতরং সোহ্ধ গতঃ প্রতি চিকীর্ষরা ॥১৬

• সংচিন্তরমন্বং রাজ্ঞঃ সূদরূপধরো গৃহে। গুরুবে ভোক্তু কামার পক্ত্যা নিন্যে নরামিবং ॥ ১৭ ॥

পরিবেক্ষ্যমাণং ভগবান্ বিলোক্যাভক্ষ্যসঞ্জনা। রাজানমশপৎ ক্রুদ্ধো রক্ষোহ্তবং ভবিষ্যুদি ॥১৮॥

व्यापत्रकामा ।

ভৎপুদ্ধা দোণাগ । ১৪। ন রহান রহস্তা । ১৫।

মৃগরাং চরন্ কিঞিজক: রাক্ষসং জ্বান ভক্ত প্রভিরং মুমোচ স লাভা । ১৬ । অবং অনিষ্ঠং। ত্রং পাচক: ডজপেধর: সন্ রাজ্বো গৃহে বর্তমান: ॥ ২৭ ।

ष्पञ्चामञ्जना विल्लाका। ध्वर नवमाः न वावहाद्वन ॥ ১৮ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

न রহো यनी তি শ্রীমহ শিষ্ঠ দৈয়ব তত্ত্ব দোৰৰৎ প্রতীতি শেচজ্বদা নোদৰাটনীরমিত্যর্য: ॥ ১৫ । ১৬ ॥ স্থানরণ ধর: তমাবিষ্ট: সরিভার্থ:। অপরিচিত্তসা পাকান ধিকারাৎ ॥ ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ । ২১ । ২২ । ২৩ । ২৪ । ২৫ । ২৬ । ২৭ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ । ৩৪ । ৩৫ । ৩৬ ॥

विविधनायहक्तवहीं।

কিঞ্চিত্রক: কঞ্চিত্রাক্ষসং ক্রবান তক্ত ভাতরং মুমোচ। স ভাতা в ১৬ র রাজ্যে য: স্ব: পাচক ক্তক্রণধর: в ১৭ র অভক্যং নর্মাংসং в ১৮ র

ভাঁহার তনয় হাদাদ, তৎপুত্র দোদাদ, যিনি দময়ন্তীর পতি। যাঁহাকে কথন কখন সিত্দেহ এবং কথন কথন কল্মাষণাদ বলিয়া থাকে। ভাঁহার সন্তান হয় নাই,তিনি স্থীয় কর্মাদোষে বশিষ্ঠ মুনির শাপে রাক্ষদ ভাব প্রাপ্ত হন ॥ ১৪ ॥

রাজা পরীক্ষিৎ জিজাসা করিলেন এক্ষন্! মহাত্মা সোদাদের প্রতি কি নিমিত বশিষ্ঠ মুনির অভি-শাপ হইয়াছিল, ইহা শুনিতে অভিলাষ করি, যদি রহস্ত না হয় বলিতে আজ্ঞা হউক ॥ ১৫॥

শুক্দেব কহিলেন এক দিবস সোদাস রাজা মুগয়ার্থ বহির্গত হইয়া অরণ্যে জ্ঞমণ করিতে করিতে একটা রাক্ষণ বধ করিলেন কিন্তু তাহার জ্রাতাকে ছাড়িয়া দিলেন, অতএব সেই নিশাচর সোদরহস্তার প্রতিকার বাসনায় গমন করিল ॥ ১৬ ॥

সে রাজার অনিউ চিন্তা করত পাচক রূপ ধারণ করিয়া তাঁহার গৃহে প্রবেশ পূর্বক অবন্থিতি করিতে লাগিল। এক দিন মহর্ষি বশিষ্ঠ রাজগৃহে আগমন পূর্বক ভোজনেচছা প্রকাশ করিলে সেন্বমাংস পাক করিয়া আনিল। ১৭॥

. যখন পরিবেশন হইতে লাগিল,সে সময় ভগবান্ বশিষ্ঠ দিব্য চকুর্বারাঁ নিরীক্ষণ করিলেন ভক্ষণার্থ অভক্ষা বস্তু প্রদত্ত হইতেছে, অতএব জুদ্ধ হইয়া লাজাকে অভিশাপ দিলেন, এরূপ নম্নাংস ব্যবহার দোবে তুমি রাক্ষস ভাব লাভ করিবা॥ ১৮॥ • রক্ষঃকৃতং তৰিদিছা চক্ষে বাদশ বার্ষিকং। দোহপ্যপোঞ্জলিমাদায় গুৰুং শগুং সমুদ্যতঃ ॥ ১৯ বারিতো দময়স্ত্যাপো রুষতীঃ পাদয়োর্জহো ॥ ২০ ॥

দিশঃ খমবনীং সর্বাং পশুঞ্জীবসমং নৃপঃ। রাক্ষসং ভাবদাপুদ্ধঃ পাদে কল্মাষ্টভাং গতঃ ॥ ২১ ॥ व्यवाग्रकारेल समृत्य वर्तारको मण्यको विदल्लो ॥ ২২ ॥

কুধার্ত্তো জগৃহে বিপ্রাং তৎ পদ্ধাহাক্তার্থবং। ন ভবাৰ্ রাক্ষদঃ সাকাদিক্যাকুনাং মহারথঃ॥
দময়স্ত্যাঃ পতিবার নাধর্মং কর্তু মহিদি ॥ ২৩ ॥

श्रीपद्रश्रामी ।

বশিষ্ঠ এব ভং শাপং দদা বাদশ বার্ষিকং চক্রে ॥ ১৯ ॥

क्वजी: ठीका व्यथ: व्यथापदार्कहो नामुख ॥ २० ॥

তত্র হেতু: দিশ ইতি। এবমনেন মিত্রসহত্তমপি দর্শিতং। মিত্রতা কলত্রতা বাচ: সহতে ॥ ২১ ॥

তদেবং রাক্ষসত্ত্ব ক্যাৰাভিবৃত্ত্বেচ কারণমুক্তৃণ স্বক্র্যণাহনপত্তো ইতি ষত্তকং তৎ প্রপঞ্চরতি ব্যবায় কাল ইভ্যাদিনা কর্মণাহ-প্রজাইত্যন্তেন। বনমোকো নিবাসো যথো স্তৌ বনৌকদৌচ তৌ দম্পতীচ। বনৌকাবিতি পৃপক্ পদত্বে সকার লোপ আর্থিং ॥২২ অক্কতার্থবং দীনস্বং॥২৩॥

গ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবত্তী ।

সর্বজ্ঞ ভয়া রক্ষদৈৰ কৃতং নভু রাজ্ঞেতি বিষুশ্য ভং শপনং বাদশ বার্ধিকং চক্রে ॥ ১৯ ॥

সোপি সৌদাসোপি। ক্ষতীঃ ক্রোধায়ি রূপাঃ স্থপাদয়োরের নান্যতা দিগাদীনাং দাহ প্রস্কাৎ। এতেন ক্রাষ্পাদ্তং মিত্রসহত্তক দর্শিতঃ মিত্রস্তা কল্ডক্স বাচঃ সহনাৎ ॥ ২০ । ২১ ॥

বনৌকদৌ চ তৌ দম্পতীচেতি তৌ পুণক্ পদ পাঠে দলোপ আর্ধ:॥ ২২। ২৩ ॥

পরস্ত তৎপরেই ঐ মুনি জানিতে পারিলেন রাক্ষ্য ঐ রূপ করিয়াছে, অতএব রাজাকে শাপ দিয়া অকারণ শাপ দানজন্য পাপক্ষয়ার্থ ছাদশ বার্ষিক ব্রত করিলেন। রাজাও বিনা অপরাধে অভিশপ্ত হও-য়াতে ক্রুদ্ধ হইয়া জলগণ্ডুষ গ্রহণ পূর্বকি গুরুকে প্রতিশাপ দিতে উদ্যত হইলেন॥ ১৯॥

কিন্তু তদীয় পত্নী দময়ন্ত্রী নিবারণ করিতে লাগিলেন, অতএব রাজা ক্রোধাগ্রি রূপ সেই জল আপ-নার পাদছয়ে পরিত্যাপ করিলেন ॥ ২০ ॥

শ্বনন্তর দিক্, আকাশ এবং ধরাতল সকলই জীবময় দর্শন করত স্বয়ং রাক্ষদ ভাবাপন হেইয়া পদে কল্মাষ্ডা প্রাপ্ত হইলেন । ২১॥

হে রাজন্। সোদাস রাজা কল্মাষপাদ রাজস হইয়া অরণ্যমধ্যে জ্ঞান করিতে করিতে একদা রতি-ক্রীড়াসক্ত বনবাসী দ্বিজ্ঞদম্পতী দেখিতে পাইলেন ॥ ২২ ॥

তংকালে তাঁহার অতিশয় কুধা হইয়াছিল, বুভুক্ষায় পীড়িত হইয়া আহারার্থ ঐ বিপ্রদম্পতী মধ্যে প্রাক্ষানতে প্রহণ করিলেন, ইহাতে প্রাক্ষানী অত্যন্ত দ্বীনা হইয়া কহিতে লাগিলেন রাজন্! তুমি রাক্ষান নহ,ইক্ষাকু বংশীয়দিগের সধ্যে এক জন মহাবীর,দময়ন্তীর পতি,ভোমার অধর্মাচরণ করা উচিত হয় না এ২০

দেহি মেহপত্যকামায়া অকৃতার্থং পতিং বিজং। দেহোহয়ং মানুবো রাজন্ পুরুষস্থাধিলার্থনঃ॥ তুস্মাদ্য বধো বীর সর্বার্থ বধ উচ্চতে॥ ২৪॥

এষ হি আক্লাবেদাংস্তপ: শীলু গুণাস্থিতঃ। আনিরাধ্য়িষু একি মহাপুরুষ সংজ্ঞিতং ॥
সক্ষেত্তাত্ম ভাবেন ভূতেস্সুহি তিং গুণৈ:। সোহয়ং অক্ষাধি বর্যাস্তে রাজধি প্রকাদিভো ॥
কথমহ তি ধর্মাজ্ঞ বধং পিভূরিবাজ্মজঃ। কর্মাণা মন্দা বাচা সক্ষিত্তেষু সৌহাদং ॥
বিদ্যা বিবেক সম্পন্নাঃ শীলমেডসিত্কি ধাঃ ॥ ২৫ ॥

়েতস্ত সাধোরপাপদ্য জ্রান্য ব্রহ্মবাদিন:। কথং বধং যথা বজ্রোম অতে সম্মতো ভবান্ ॥ ২৬ ॥
যদ্য য়ং ক্রিয়তে ভক্ষ্য স্তর্হি গাং খাদ পূর্ববিঙঃ। নজীবিষ্যে বিনা যেন ক্ষণক মৃতকং যথা ॥

श्रीयत्यामी ।

অকুতার্থং অসমাপ্তরতিং ॥ ২৪॥

সর্বভূত।নামাঘোতি ভাবনয়া আরাধ্য়িত্মিচ্ছু:। যথা সর্বভূতায় ভাবেন ভূতেরু স্থিতমণি অংটণেরস্তহিতিং একোতি সম্বন্ধ:। অন্তহিতি ইতি পাঠে অন্তহিতি: সোহ্যমিতাত্রেণাম্য: ।২৫॥ ·

জনক খোতিয়ক গর্কুসত ইতি বা। বলোগোঁঃ স্হাং সমতো ভ্ৰান্বধং কণং সাধুমকত ইত্যৰ্থ: ॥ ২৬ ঃ ক্ৰমপি ব্যন বিনান জীবিধ্যামি গোহ্যং যদি ভক্ষঃ ক্ৰিয়তে তহি মৃতকং যধা মৃতথায়াং মাং পূৰ্ক। ভক্ষয় ॥ ২৭ ॥

अविधनाषठक रखीँ।

অকৃতার্থং অসমাপ্তর ভিং॥ ২৪॥ গুইণ দৃষ্টিনিটোঃ স্থাদিভি হেত্ভিঃ অস্তহি তিমদৃশাং॥

(5 93: 1 20 11

ব্ৰহ্মবাদিনে। জ্ৰণক প্ৰক্ৰক আৰু পিতাপি ব্ৰহ্মবাদীভাৰ্থ:। জ্ৰণোহৰ্ডকে ৰালগৰ্ছে ইভাসব:। ৰজোৰ্গো: ॥ ২৬ ॥ তদ্পঃনিবৃত্তং দৃষ্ঠা পুন: প্ৰাহ্যদায়মিতি যেন প্ৰাণেনেৰ বিনেতাৰ্থ:। তভক্ষ যথা মৃতকংশ্ব তথাহং ভবিষাামীভাৰ্থ:॥ কৰুণভাষিণীমনাদৃত্য ॥ ২৭ ॥

এই বিপ্র আমার পতি, আমি অপত্য কামনা করিয়া ইহাঁর সেবা করিতেছিলাম, এখনও ইহাঁর রিতি সমাপ্ত হয় নাই, অফুগ্রহ করিয়া আমার পতিকে মৃক্ত কর। হে মহারাজ ! এই মানবদেহে পুরু-ষদিগেরে অথিল পুরুষার্থ দাধন হয় অতএব দেহ নাশকে স্বার্থি নাশ বলিয়া থাকে ॥ ২৪ ॥

অধিকস্ত এই বাহাণ বিদ্যান্ত লং, শীল ও গুণযুক্ত, অপর মহাপুরুষ সংজ্ঞাক যে পরব্রহ্ম গুণযোগে স্ক্রিভ্তে অন্তহিত আছেন "সক্রিভ্তের আছা।" এই রূপ চিন্তা দ্বারা ইনি তাঁহার আরাধনা করিতে বাসনা রাখেন। অতএব হে প্রভা! হে ধর্মজ্ঞ! তুমি রাজ্যি প্রবর, পিতা হইতে সন্তানের ন্যায় তোমা হইতে এই বিপ্রধি বধার্হ হৈতে পারে না। রাজন্! কর্ম মনঃ ও বাক্যের দ্বারা সক্র প্রাণির প্রতি যে সোহাল্যাচরণ তাহাকেই বিদ্যাবিবেক সম্পন্ধ বুধগণ শীল বলিয়া থাকেন ॥২৫॥

হে ধর্মাজ্ঞ ! আপনি সাধুজনের সন্মত, গোবধের ন্যায় এবন্ধিধ অপাপ জ্যোত্রিয় জ্রন্মবাদি জ্রন্ধ কি রূপে সাধু বলিয়া মানিতেছেন ? ॥ ২৬ ॥

পরস্তু আমি যাঁহা ব্যতীত ক্ষণকালও জীবন ধারণ করিতে পারিব না সেই এই আমার পতিকে যদি আপনি নিতান্তই আপনার ভক্ষ্য করেন আমি মৃত প্রায়া হইলাম, অত্যে আমাকে ভক্ষণ করুন। হে কুরুবুর্যা। বিপ্রপত্নী অনাথা প্রায় হইয়া ঐ প্রকার করুণ হরে কাতরতা প্রকাশ করিতে থাকিলেও এবং করণভাষিণ্যা বিলপন্ত্যা অনাথবং । ব্যাত্ম: পশুমিবাখাদং সেদিশিনঃ শাপমোহিতঃ ॥২৭॥ বাহ্মণী বীক্ষ্য দিধিষুং পুরুষাদেন ভক্ষিতং । শোচন্ত্যাক্সানমুক্তী শমশপং কুপিতা সতী ॥ ২৮ ॥ যক্ষাম্মে ভক্ষিতঃ পাপ কামতঃ অপতিস্থা। তবাপি মূর্ত্রাধানাদক্ত প্রজ্ঞ দর্শিতঃ ॥ এবং মিত্রসহং শপুন পতিলোকপরায়ণা। তদশ্বনি সমিদ্ধেহমৌ প্রাম্ম ভর্ত্রু গতিং গতা ॥ বিশাপো মাদশাকান্তে মৈথুনায় সমৃদ্যতঃ। বিজ্ঞাপ্য বাহ্মণী শাপং মহিষ্যা সনিবারিতঃ ॥ ২৯০॥ অত উদ্ধিং স তত্যাক্ত স্ত্রা হৃথং কর্মণাহ্প্রজঃ। বশিষ্ঠন্তদমুজ্ঞাতো দময়ন্ত্যাং প্রজামণাং ॥ ৩০॥ সা বৈ সপ্ত সমাগর্ত্ত্রমবিত্র ব্যক্ষারত। জন্মেংশ্রাদরং তক্ষাঃ সোহ্মাকন্তেন কথাতে ॥ ৩১ ॥

श्रीभवश्रामी।

निधिषुः গর্ভাধানকর্তারং ॥ २৮ ॥

আধানাৎ মৈথুনাং। হে অকৃতপ্রেক্ত মৃত্যুর্মাদর্শিত: ॥ ২৯॥

তদেবং কর্ম্মণাহপ্রজ: ॥ ००॥

অবিভ্ৰদ্ধারেত্যর্থ:। ন ব্যলায়ত ন প্রাস্ত। অতো বশিষ্ঠ এব ততা উদ্রদ্ধনা ক্লান। স উৎপল্ল: স্তোহ্মক:। ৩১ ।

শীবিখনাগচক্রবর্তী।

দিধিষুং গর্ভাধানকর্তারং ॥ ২৮ ॥

আধানাঁৎ মিথুনাৎ মৃত্যুৰ্মারা দশিতো ভবিষাতি । ২৯।৩০।

অবিভ্ৰদ্ধবি। ন্ৰাজায়ত ন প্ৰাস্ত। বশিষ্ঠ এৰাখনা জ্থান। ওতঃ স সূতঃ ॥ ২১ ॥

ব্যাত্র যেমন পশু খায় তাহাঁর ভায় শাপনোহিত দোদাস দেই আক্লণকে খাইয়া ফেলিলেন ॥ ২৭ ॥ আক্লাণী দেখিলেন গর্ত্তাধান কারি স্থামিকে রাক্ষ্যে ভক্ষণ করিল, অতএব আপনার নিমিত্ত শোক করিতে করিতে কুপিতা হইয়া ঐ মহীপতির প্রতি এই শাপ দিলেন ॥ ২৮ ॥

অরে পাপালা। যে হেতু তুই আমার পতিকে রতি হইতে নিব্রত করিয়া ভক্ষণ করিলি, এই কারণে তোরও রতি হইতে মৃত্যু হইবে। হে বাজন্। পতিলোক পরায়ণা দেই আক্ষাী এই প্রকার মিঅদহ নরপতির প্রতি অভিশাপ দিয়া পতির অস্থি সকল প্রজ্ঞালিত ত্তাশনে ক্ষেপণ পূর্বক স্বয়ং তদারোহণ দারা স্বামির গতি প্রাপ্ত হইলেন। দাদশ বংসর অতীত হওয়াতে নরপতি দৌদাদের শাপ মোচন হইল,তদনন্তর এক দিন মৈপুনার্থ উদ্যুত্ত হইলে ভাঁহার মহিষা আক্ষামির শাপ বিজ্ঞাপন পূর্বক ঐ উদ্যুদ্ধ ইতি নিবারণ করিলেন॥ ২৯॥

হে রাজন্! সোদাদ রাজা ভদবধি স্ত্রী হৃথে বঞ্চিত হয়েন এবং নিজকর্ম দোষে অপুত্রক হইয়া অব-স্থিতি করেন। কিয়ৎকালানস্তর মহর্ষি বশিষ্ঠ তাঁহার অসুমতি ক্রমে তদীয় পত্নী দময়ন্তীর গর্ভাধান ক্রিয়া দিলেন। ৩০ ।

কিন্তু ঐ রাজমহিধী শত বংসর যাবৎ দেই গর্ভ ধারণ করিয়া রহিলেন,কোন প্রকারে প্রসব হইতে পারিলেন না। তদনস্তর বশিষ্ঠ মুনি আসিয়া অশা ('প্রস্তর) দিয়া তদীয় গর্ভ আহত করিলেন, তাহা। তেই দেই গর্ভ হইতে উৎপন্ন পুত্র অশাক বলিয়া বি্থাতি হইল ॥ ৩১॥ . অশাকাদালিকে। অংজ যা স্ত্ৰীভিঃ পরিরক্ষিতঃ। নারীকবচ ইড়াজো নিঃক্ষত্তে মূলকোচ্ভবৎ ॥ ততো দশরথ স্তন্মাৎ পুত্র ঐড়বিড়িস্ততঃ। রাজা বিশ্বনহো যতা খট্বালশ্চক্রবর্ত্তিত্ব ॥ ৩২ ॥ যো দেবৈরথিতো দৈত্যানবধীদধু ধি তুর্জয়ঃ। মূহুর্ত্তনায়্ত্র্জাত্বেত্য স্বপুরং সক্ষধে মনঃ ॥ ৩৩ ॥ ন মে অক্ষকুলাৎ প্রাণাঃ কুলদৈবার চাত্মজাঃ। ন প্রিয়ো ন মহীরাজ্যং ন দারাশ্চাতিবক্সভাঃ ॥৩৪ নচাল্লেপি সতির্ম্ভ্যধর্মে রমতে কচিৎ। নাপভায়ত্তমংশ্লোকাদভাৎ কিঞ্চন বস্তুহং ॥ ৩৫ ॥

वीधत्रश्रामी।

ন্ত্রীতিঃ সংবেষ্ট্য পরশুরামাৎ পরিরক্ষিতঃ অতো নারীকবচ ইত্যুক্তঃ। নিঃক্ষতে সতি ক্তরংশক্ত মূলমভবদতো মূলক ইত্যুক্তঃ ॥ ০২ ॥

প্রসংস্থানে বৈবর্ধ রং রুণ্যে ত্যাকে পট্বালেনোক্তং প্রথমং তাবলমায়ুং কথাতামিতি দেবৈশ্চাক্তং মুহূর্তমাতামিতি তজ্ঞারা দেবৈর্দ্ধতেন বিমানেন শীল্পং স্ব প্রমেতা মনঃ প্রমেখরে সন্দধে ॥ ৩৩ ॥

এতদেব স্ব সাধু বৃত্তা সুস্থরণ পূর্বকং তৎ ক্তেন নিশ্চয়েন দর্শগতি নেতি সপ্ত জি:। কুলদৈবাৎ ব্রহ্মকুলাৎ সকাশাৎ মে প্রাণাদয়ে। নাতিবলভাঃ নাতিপ্রিয়াঃ ॥ ৩৪ ॥

মহাং ম্ম । ৩৫ ॥

জীবিখনাপচক্রব হী ।

ন্ত্রীভিরারন্ত্য পরশুরামাৎ রক্ষিতঃ প্নঃ ক্ষত্রংশন্ত মূল্ছানালকঃ ॥ ৩২ ॥

প্রসংরিদেবৈর্বরং বুণ্বেছাক্তে খটাক উবাচ প্রথমং ত্বিন্নমাযুক্ত তিও। দেবৈক্তোকং মুছুর্তমাত্রমিতি। ওজ্ঞাতা-দেবৈদ্যতন বিমানেন শীলং অপ্রমেতা মনঃ প্রমেশ্বে সন্দধে। ৩৩।

মুহূর্ত মধাএব প্রথমং ধট্।ক্স: স্থগতনাহ নেতি পঞ্চভি:। ব্রহ্মকুলাৎ কীদৃশাৎ। কুলত মদীয়ত দেবাৎ । ৩৪ ॥ মহং মম বস্তু স্বভোপাদেরমিতার্থ:। ৩৫ ॥

উক্ত অশাক হইতে বালিক রাজার উৎপত্তি হয়। স্ত্রী লোকেরা বেফন করিয়া পরশুরামের কোপ হইতে তাঁহাকে রক্ষা করিয়াছিলেন এই কারণে তিনি নারীক্ষচ বলিয়া কথিত হইয়া থাকেন। অপর পৃথ্বী নিঃক্ষত্রা হইলে তিনিই ক্ষত্রবংশের মূল হইয়াছিলেন, তাহাতে মূলকও বলিয়া উক্ত হয়েন। সে যাহা হউক, ঐ অশাক হইতে দশরণ জন্মন। দশরথের পুত্র ঐড়বিড়ি তাহার তন্য রাজা বিশ্বসহ,তৎ পুত্র মহারাজ চক্রবভী থিটু কয়ে। ৩২ ॥

খট্বাঙ্গ রাজা অভিশয় চুর্জয় ছিলেন, দেবতাদের কর্তৃক অভ্যর্থিত হইয়া যুদ্ধে দৈতাদিগকে বধ করেন তাহাতে দেবতারা প্রদন্ন হইয়া বর দিতে চাহিলে বলিয়াছিলেন প্রথমে আমার পরমায়ু কত বলুন। পরে দেবগণ প্রমুখাৎ মৃহুর্জু মাত্র পরমায়ু অবশিষ্ট আছে অবগত হইয়া উভাদিগের প্রদত্ত বিমান যোগে শীত্র শীর পুরে আগমন পূর্বক প্রমেশরে সনো নিবেশ করের ॥ ৩০॥

অবশেষে তাঁহার এই নিশ্চয় হয় কুলদেব যে ত্রহ্মকুল তাঁহাদের অপেকা আমার প্রাণ, আজ্ঞ ও ধন সম্পত্তি, পৃথিবী, রাজ্য এবং বনিতাও প্রিয়তর নহে ॥ ৩৪ ॥

আর আমার মতি কলাচিৎ অত্যক্ত অধ্যে রত হয় না এবং উত্তম:ক্লোক ভগৰান্ ভিন্ন অন্য কোন বস্তু সামি দেখিতে পাই না ॥ ৩৫ ॥ দেবৈঃ কাষবরো দত্তোমহৃং ত্রিভূবনেশরৈঃ। ন রূপে তমহং কামং ভূতভাবন ভাবনঃ॥ ৩৬॥
যে বিক্ষিপ্তেন্ত্রিরধিয়ো দেবাস্তে স্বহাদি স্থিতং। ন বিদ্য্তি প্রিয়ং শশ্বদাস্থানং কিমৃতাপরে॥৩৭॥
অপেশমায়াচরিতেরু সঙ্গং গুণেরু গন্ধর্বপুরোপমেরু।

রুঢ়ং প্রক্ত্যাত্মনি বিশ্বকর্তি ধিবেন হিন্না তমহং প্রপদ্যে ১ ০৮ ॥ ইঙি ব্যবসিত্যে বৃদ্ধ্যা নারায়ণসূহীতয়া। হিন্নাড়ভাবমজ্ঞানং ততঃ স্বং ভাবমান্থিতঃ ॥ ০৯ ॥ যতনুত্র পরং সূক্ষমশ্যুং শূন্য কলিতং। ভগবান্ বাহ্দেবেতি যং গুণস্তিহি সাম্বতাঃ ॥ ৪০ ॥

वीभवत्रामी।

ভূতভাবনো হরি ভারিরের ভাবনা বস্ত সোহহং তং কামং ন রুণে ॥ ৩৬ ॥

তত্ত হেতু: य ইতি। বিক্ষিপ্তানি ইক্সিয়াণি ধীক বেষাং তে দেবা অপি ৫ ৩৭ ॥

মধ তমাৎ প্রক্তা। বভাবেনাত্মনি ক্লচং গুণেরু সলং বিশ্বকর্তিবেন হিখা ওমেবাচং প্রপদ্যে ॥ ৩৮ ॥

অভ্যতাবং দেহাদ্যভিষান রূপমজ্ঞানং হিছা ॥ ৩৯ ॥

স্থাং ভাবমেবার যন্তদিতি। শৃক্তবং করিজং রাগাদ।বিষয়দ্বাং । বাহ্নদেব ইতি যং গৃণস্তি এক্ষণ এব ভক্তাহ্থাহার্থমাবিদ্ধুত শক্তেব্যাহ্বেবদ্বাং ॥ ৪ ॰ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

নাপশাসুত্তমংক্লোকাদনাদেৰেত্যেবার্থঃ ন চিন্তরামীতি স্থয়নর পালন বিক্ষেপদা পূর্বং স্থিতভাং ॥ ৩৫ । ৩৬ । । ৩৭ । ৩৮ ॥ নারারণ প্রহীতরেতি নারারণাবিষ্টরেতার্থঃ। অভএব মুহুর্তেন এক্ষলোকং ধটাক্লঃ দমদাধর্দক্যুক্তং ॥ ৩৯ । ৪০ ॥

बी विभागाभहक्तवडी ।

বুণে বুতবান্। যতো ভূতভাবনে হয়াবেৰ ভাবনা বভ সং ॥ ৩৬ ।

ष्यवद्राग (इजूमाह य हेकि । ०१ ।

琵

অভিরখেন গন্ধর্ম প্রত্লোর্ কর্ণ সঙ্গং হিমা প্রকৃত্যা মভাবেনৈর আত্মনি মরানদি বিশ্বকর্তিগবভো যো ভক্তিভেনৈর ডং প্রশ্বেয় ॥ ৩৮ ॥

নারায়ণেনৈৰ কর্ত্য গ্রীভয়া ধরা বৃদ্ধে নাক্তমাধিকার ইতার্থঃ। তয়া বৃদ্ধাৰ ততোহজ্ঞান ত্যাগানস্করং স্বভাবং পূর্বলোক নিশ্চিতং প্রপত্তি রূপং দাক্তমিভার্থঃ ॥ ৩৯ ॥

স্তব কো ব্যিন্ দাভামিত।পেক্ষারামাহ। যুত্তৰুদ্ধেতি যুত্ত ওৎ প্রসিদ্ধং ব্রহ্ম প্রমতিশ্রেন স্ক্রং নির্কিশেবং ক্রপমিভার্থ:।

অতএব ত্রিভুবনের দেবগণ প্রসন্ধ হইয়া আমাকে যে অভিল্যিত গ্রহণের বর দিতেছেন ভূতভাবন ভূপবান হরিতে আমার ভাবনা থাকাতে আমি তাহাও বরণ করি না ॥ ৩৬ ॥

কারণ যে সকল ব্যক্তির ইন্তিরেও বৃদ্ধি বিক্লিপ্ত, তাহারা দেবতা হইয়াও স্বীয় হাদয়ে স্থিত প্রিয় আত্মাকৈ নিত্য দেখিতে পান না, ইহাতে অপরে দেখিবে সম্ভাবনা কি ? এ ০৭ ॥

অতএব গন্ধবিপুর সমান, পরমেশ সায়া রচিত যে সকল গুণ তাহাতে সেই দক্ষ, যাহা স্বভাবতঃ আত্মাতে ক্লড় হইয়া আছে,বিশ্বকর্তার প্রভাবে তাহা পরিত্যাপ করিয়া আমি কেবল তাঁহারই শর্ণাপন্ন হই। ৩৮।

হে রাজন্। থটাক রাজা'নারায়ণবিষয়িণী বৃদ্ধি যোগে এই প্রকার নিশ্চয় করিয়া দেহাদ্যভিমান রূপ অজ্ঞান পরিত্যাপ পূর্বক পরে সেই খীয় ভাবে সবস্থিত হয়েন॥ ১৯॥

যাহা সূক্ষা পরত্রক্ষ ও রাগাদির অবিষয়, এ প্রযুক্ত । শৃক্ষবং কল্লিড হর অথচ অপ্ত বরূপ। অপর

॥ #.॥ ইতি জ্রীভাগৰতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং নবমক্ষকে ওট্বাঙ্গচরিতং নবমোধাায়ঃ ॥ # ॥ । । । । । । । ।

প্ৰীশুক উবাচ ॥

থটা সাদীর্ঘনাত্র রযুক্ত আৎ পৃথুপ্রবাঃ। অজন্ততো মহারাজন্ত আদশরথো হভ বং । তন্তাপি ভগবানের সাক্ষানু আময়োহরিঃ। অংশাংশেন চতুর্ধাগাৎ পুজ্রত্বং প্রার্থিতঃ হুরৈঃ। রাম লক্ষাণ ভরত শক্রেঘা ইতি সংজ্ঞরা। ১।

়্ ততাকুচরিতং রাজন্বিভিন্তজ্বদর্শিভি:। শ্রুতং হি বর্ণিতং ভূরি ছয়া সীতাপতেমুঁহ:॥ ২॥

🕮 धत्रचामी।

॥ * ॥ इंडि नव्या नव्यः ॥ * ॥

দশ্বে প্রাহ পট্।ক বংশে শীরাম সংভবং। তচ্চরিত্রক লক্ষেশং হ্রাবোখাগমাবধি । • । পট্।কাচ্চ দীর্ঘবাছ: ॥ ১॥ অবিভিক্ষালীক মুবৈগ জুরি বর্ণিতং ভরা মুহু: শ্রুণ্ড তথাপি সংক্ষেপতঃ কথামানং শুণু॥ ২॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

हे कि श्रीयहांशवक नवमक्रक श्रीकीवरशाचामि कृष्ठ क्रमनम्पर्छ नवरमाश्यां प्रभाशः मनाशः ॥ • ॥

श्रीविश्वनाथहळावळी ।

শৃক্তৰং করিজং রাগাদ।বিষরতাং বঞ্চ ৰাস্থদেব ইতি গৃণস্তি ভশ্বিরিতার্থ: । দেহং ত্যক্ত্বা তং প্রাপেতি জ্ঞেরং । পট্বলোনাম রাজ্বি জ্ঞাবিষয়তামিতার্ব: । মুহুর্কাৎ সর্কাম্ৎস্ক্য গতবান্তরং হরিমিতি পূর্বোজ্যে: ॥ ৪০ ॥

॥ 🕶 ॥ ইতি সার।র্থদর্শিক্তাং হর্ষিণাাং ভজাচেতসাং । নবমে নবমেহিধ্যার: সক্তঃ সজতঃ সতাং ॥ + ॥
মুশ্রে রঘুনাথস্য অন্ম কর্ম্মদোহমৃতং। স্কং নুন্পার্যামাস সংক্ষেপেশ মহামূনিঃ ॥ • ॥ ০

এৰ ৰয়া অমাতৃ গতে দৃষ্ট ইভাৰ্থ:। অংশাংশেন অংশত আংশং অংশসমূহত অংশাংশং তেৰ অংশাশেন তব্যাবি ৰথা ৰাজুদেৰব্য ইভাৰ্থ: ॥ ১ ॥

কাং স্থারবক্তৃ লিখিতৃং শকাশেষ গণেশরোঃ। বা রামলীলাধ্যালাভ্যাং দা শ্লোকেনালি কীর্ত্তাতে । ২ ।

বাঁহার প্রতি ভক্তজন "ভগবান্ বাহুদেব" এই শব্দ প্রয়োগ করিয়া থাকেন, কারণ পরত্রক্ষই ভক্তাকু-গ্রহার্থ শক্তি প্রকাশ পুরঃসর বাহুদেব হয়েন ॥ ৪০ ॥

॥ #॥ इंकि नदस्य नदमः ॥ #॥

দশমাধ্যারে খট্বাঙ্গ বংশে জীরামচন্দ্রের জন্ম এবং লঙ্কাধিপতি দশাননকে বিনষ্ট করিয়া অযোধ্যা গমন পর্যন্ত তদীর চরিত্ত ॥ • ॥

শুক্রদেব কহিলেন পট্বাঙ্গ রাজার পুত্র দীর্ঘবাস্থ, তাঁহা হইতে মহাযাপথি রখুর জন্ম হয়। ঐ রঘুর তনর মহাযাপাঃ জন্ম। তে মহারাজ । ঐ অল হইতে মহান্থা দশরধ জন্ম গ্রহণ করেন। ব্রহ্মমর হরি সাক্ষাৎ ভগবান্ দেবগণের প্রার্থনায় রাম, লক্ষাণ, ভরত ও শত্রুত্ব এই চারি নামে চারি জংশে বিভক্ত হইয়া বাঁহার পুত্রত্ব খীকার করিয়াছিলেন॥ ১॥

'হে রাজন্। বাঙ্গীক প্রভৃতি তত্ত্বদশী ঋষিগণ সীতাপতি ঐ রামচফ্রের চরিত্র বর্ণন;করিয়াছেন,তাহা যদিও তোমার বার্মার প্রভৃত হইয়াছে তথাপি সংক্রেপে বলিডেছি অবধান কর ॥ ২ ॥ শুর্ববর্ধ ত্যক্তরাজ্যো ব্যহরদপুরনং পদ্মপদ্ধ্যাং প্রিয়ায়াঃ
পাণিস্পর্শাক্ষমান্ডাং য়জিতপথক্রজো যোহরীক্রাকুলান্ডাং।
বৈরূপ্যাৎ সূর্পণিধ্যাঃ প্রিয়বিরহ রুষা রোপিত জ্রবিজ্ঞ

অন্তান্ধি ব্রুদেত্ঃ খলদবদহনঃ কোশলেক্রো হবভারঃ ॥ ৩ ॥
বিশামিত্রাধ্বরে যেন মারীচাদ্যা নিশাচরাঃ। পশ্যতো লক্ষ্মণিশ্রেব হতা নৈশ্রতপুঙ্গবাঃ ॥ ৪ ॥
বেখালোক্রীর সমিতো ধনুরৈশমুগ্রং সীতাস্বয়্রস্বরগৃহে ত্রিশতোপনীতঃ।

औषत्रशामी।

গ্রন্থ কিন্তু বাকীর্ণমন্ত্রং রামবিক্রমং। অধাবেদরতো বলারেকলোকে সমন্ততি। কোশলেক্স: প্রিরাম: নোংমান্ অবতাং পাতৃ। কথং ভূতঃ যো গুর্মরে পিতৃং সত্যপালনার্থং তাজারাল্যঃ মন্ পদাবদতিস্কুমারাল্যাং পর্যাং তদেবাহ প্রিরায়: গাণিনাপি ম্পানে নিজি ক্ষমা যরো: তাজ্যাং প্রভিবনং বাচরং। হরীক্রো হন্মান্ স্থগীবোবা অস্পোল্লাণ্য তাজাং মুদ্ধিতা অপনীতা পথকলা মার্গ্রেমা যক্ত। স্পাণ্যা বৈরপ্যাং কর্ণ নাসিকাছেদাদেতো: ছয়া প্রাণোভিতেন রাবণেনাপ্তারাং প্রিমেণ কলকেব বো বিরহং তেন ক্ষত্রয়া আরোপিডয়ো ক্রাবো বিক্তেশের অভোহনি বন্ধাং ততত্তবিজ্ঞাপনেন বন্ধ: সেতৃ-রেন। থলা রাবণাদর এব দবো বনং তক্ত দহন: ॥ ৩ য়

সংক্ষেণতো বর্ণিতং শ্রীরামচরিতং আদিত আর্ভা বিস্তারেশাহ বিশামিআধ্বর ইত্যাদিনা বাবচ্তরাধ্যার সমাধ্যি পশ্রতএব সক্ষ্যাক্ত ভ্রমণি অনপেটকাব হতা ইত্যর্থ:। ব্রুক্ষানাং স কোশলেক্সোহ্বতাদিভানেট্নবাধ্যঃ ৪৪৪

বে লোকে বীরা ভেরাং সমিতে সমালে ঐশং তৈর্ঘকং ধ্যুরিকু বৃষ্টিনিব লীলবৈবাদায় সজ্ঞীকৃতং আরোপিতং বিক্রবা মধ্যে

ক্রমসম্পর্জঃ

প্রকল ইক্রানেন পর্ণ শল্পাহকারাস্তোহ্ণ্যন্তীতি লক্ষ্যতে ॥১।২।৩।৪।৫।৬।৭।৮।৯।

खैविधनाथठकवर्ती।

শুরো: পিড়: সভাপালনার্থ ভাক্তরাফা: সন্ পল্নকভিত্তকুমারাভাাং প্রাাং অক্রনং বনে বনে বাচরং। অভি সৌকুমার্থ মেবাছ প্রিরায়: পাণাো: পরমস্কুমারয়োরাশ স্পাশং ন ক্ষমেতে ইতি ভাভাাং। ছরীক্রো ক্যুনান্ত্রীবো বা অস্থানা স্থাভাাং মুফ্লিভাছপনীতা পথ ক্লামার্গ্রমো যস্য স:। স্পাশ্যা বৈরূপ্যাৎ কর্ণনাসাচ্ছেলাছেভো রাব্ণনাপহারাং প্রিরেশ কল্লেণ যে। বিবহু ভোন যা কট ব্লুনি: সম্ভেশাপ্রানাৎ কোপভারা আবোপিত্যো ক্রিবার্কিল্ভেণের অভোহ্রি র্যাৎ স:। ধ্রা রাব্ণাদ্য এব দ্বো বনং ত্রা দ্বন:॥ ৩॥

অভি সংক্ষেণের ব্রিভং রাম চরিতমাদিত আরভ্য কিঞিবিস্তরেণার বিখানিজেতাবিদা অধ্যায় ব্যেন নিশা মার্যা চর্তীতি তে নৈর্ভপুলবা রাক্ষ্যভৌটাঃ । ৪ ।

लाटक दव वीत्रा (खवाः निमाल) नेमाल । क्षेत्रा माहितः सङ्घः हेक्त्राष्टिमिव नीगदेववानाव नव्याक्रिकः नर विक्रवा मध्या वटक ।

ছিল না, তাদৃশ পদানথ রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া প্রিয়ার হস্ত ছারাও যাহ। স্পর্শ করিতে ক্ষমতা ছিল না, তাদৃশ পদাবৎ হকুমার পদছরে বনে বনে ভ্রমণ করিয়াছিলেন,বানরেক্স হন্মান্ জথবা হাত্রীব এবং অকুজ লক্ষণ বাঁহার পথগ্রান্তি অপনয়ন করিয়া দিতেন, সূর্ণাধীক কর্ণ নাসিকা ছেদন করিয়া বৈক্ষপা করাতে সে রাবণের নিকট গিয়া লোভ দর্শাইলে রাবণ আসিয়া বাঁহার প্রেয়সী সীতাকে অপহরণ করিয়া লাইরা যায়, প্রিয়া বিরহ জন্ম রোবে যদীয় ভ্র বিজ্ঞাণে সমুদ্র সন্ত্রন্ত হয়, অনন্তর তাহার বিজ্ঞাপনে যিনি সেতু বন্ধন করিয়া রাবণাদি খলগণ রূপ গহনের দাবানল হন্ সেই কোশলেন্দ্র প্রিয়ামন্ত্রে আমাদিগকে রক্ষা কর্মন্। ৩ ৮

সেই রামচন্দ্র বিশ্বামিত্রের যজে মারীচাদি প্রধান প্রধান রাক্সদিগকে একাকী নিহত করিয়া-ছিলেন, লক্ষণ নিকটে থাকিয়া দেখিতেছিলেন ভাঁহায়ও অপেকা করেন নাই॥ ৪॥

ভিনি সীতার অয়ম্বর গৃহে বীর পুরুষ সমূহের সমাজ মধ্যে মহাদেবের ধ্যু ইকুদ্ভবং এইণ করিয়া

আদায় বালগজলীল ইবেক্যন্তিং সজ্ঞীকৃতং নৃপ বিক্ষা বভঞ্জ মধ্যে । ৫ ।
কিছামুরপ গুণশীল বয়োঙ্গ রূপাং সীতাভিধাং শ্রিয়মুরভাভিলব্ধমানাং ।
মার্গে বজন ভৃগুপতে ব্যানয়ৎ প্ররুচ্ন দর্পং মহীমকৃত যন্ত্রিররাজবীজাং ॥ ৬ ॥
যাং সত্যপাশপরিবীত পিতৃনি দেশং ত্রৈণক্ত চাপি শির্মা জগৃহে সভার্যাঃ ।
রাজ্যং শ্রেমাং প্রণায়নঃ স্ক্রেন। নিশাসং ত্যক্তা যথো বনমস্নিব মুক্তসঙ্গং ॥ ৭ ॥

श्रीभद्रश्वामा ।

ৰভন্ন । . . হে নূপ উপ্ত: কঠিনং গ্রিষ্ঠ:। তদাহ বাহকানাং ত্রিভি: শতৈক্পনীতং বা**লগলভ দীলেব লাল্**। য**ভ স:॥ ৫** ॥

অধুরূপাণি খবোগ্যানি গুণ শীলাদীনি বস্থা: গাং গীভাদংজাং পূর্ব মুরসি অভিদর্কো মানো বরা ডাং শ্রিরং জিলা। ধহর্তক মহানাদ শ্রবণ ক্ষৃতিভক্ত ভৃগুণতে দর্পিং বানরং অপনীতবান্। কথংভূতক ত্রিঃ সপ্তক্তরং রাজবীজশ্ভাং মহীং বোহকরে। তক্তী ১৬ ॥

ইদানীং গুর্মর্থ ইতি লোকং বিরুণ্নাহ য ইতি কণাচিৎ কৈকেয়া স্বাস্টেন রাজ্ঞা গুলপেন্দিতং লাজামীতি প্রক্রিশ্রতং ততঃ প্রীরামজ যৌবরাঝ্যাভিবেক সময়ে তয়া ভরত ও যৌবরাজ্যং শ্রীরামজ বনে বাসং প্রাথিতঃ। তলা স্তাপাশেন পরিবীতজ্ঞ পিতুর্নিদেশমাজ্ঞাং শির্সা জগৃছে। ততো রাজ্ঞাদিকং তাজ্যু সভার্যোবনং ব্যৌ ত্তাজ্ঞাপি সহর্বত্যাগে দৃষ্টাস্থঃ মৃক্তসঙ্গ বোগী অস্থ্ন প্রাণানিবেভি । ৭ ৪

গ্ৰীবিখনাপচক্ৰ বত্তী ।

কীদৃশং বাহকানাং ত্রিভিঃ শতৈরূপনীতং ॥ ৫ ॥

বিশ্ব। প্রাপ্য উরসি অভিসব্দোদান আদবং পূর্দ্ধমেব যয়া তাং ভৃগুপতে: পশুরামস্য দর্পং বানশ্বৎ বিপতীচকে। ক্রি: তিসপ্ত কুডোমহীং বং রাক্ষবীজপুঞ্জাং চক্রে ॥ ৬ ॥

ৰ ইতি কৰা চিং পূৰ্ব্ব: কৈকেব্যাং তুটেন রাজ্ঞা ওদপেন্ধিতং দাস্যামীতি প্রতিশ্রুতং ওতঃ প্রীরামস্য বৌৰরাজ্যাভিবেন সমরে ওয়া ভরতসা রাজ্যং রামস্ত বনে বাসং প্রাণ্ডিঃ। অতঃ সভাপাশেন পরিবীতসা পিতৃং হৈণদ্য লিহি কৈকেইয়ে সভ্যান্তরাধ্বশং হি তস্য নিরেশং সভার্থ্যাপি জগ্রাহ। ছন্তালস্যাপি সহর্ত্যাগে দৃষ্টান্তঃ। মুক্তসন্ধাধীে অসন্ প্রাণানিবেতি ॥ ৭ ॥ জ্যারোপণান তার আকর্ষণ ও মধ্যভাগে ভগ্ন করেন। হে মহারাজ ! সেই ধকু অতিশায় গুরুতর ছিল, তিন শত বাহকে তাহা আনয়ন করিয়া দেয়। পরস্ত রামচন্দেরে লীলা বালগজ তুল্য অনুত, অতএব তিনি অবলীলাক্রমে তাহাও ভাঙ্গিয়া ফেলেন॥ ৫ ॥

তদনস্তর যে দীতা নাম্নী ত্রা পূর্নের আপনার বক্ষঃস্থলে অবন্ধিতি পূর্বেক মান লাভ করিয়াছিলেন, বাঁহার গুণ শীল বয়স অসপোষ্ঠব আপনার অনুরূপ, তাঁহাকে স্বয়ম্বরে জ্বয় করিয়া লইয়া বাইবার সময় ধরু ভিসের মহা ধ্বনি শ্রেবণে ক্ষুভিত হইয়া পরশুরান আক্রমণ করাতে পথে গমন করিতে করিতেই তাঁহার প্ররু দর্প চুণী কৃত করেন। হে মহারাজ! পরশুরাম কে জ্বানেন! তাঁহা হইতেই এই পৃথিবী এক বিংশতি বার নিঃক্ষতিয়া হইয়াছিল ॥ ৬॥

সে যাহা হউক,কোন সময় কেকয়ীর প্রতি ভৃষ্ট হইয়া রাজা দশর্প এই প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন,যে বর চাহিবে তাহাই দান করিব। অতএব রামচন্দ্রের রাজ্যাভিষেক সময়ে ঐ কেকয়ী ভরতের যৌবরাজ্য ও রামচন্দ্রের বনবাস প্রার্থনা করিল। তথন যদিও পিতা স্ত্রৈণ, তথাপি তাঁহাকে সত্য পাশে বদ্ধ বিবেচনা করিয়া রামচন্দ্র অদীয় নিদেশ মন্তকে গ্রহণ করিলেন। পরে যেমন যোগী পুরুষ চুন্তাজ অন্ত (প্রাণ) বিসর্জন করেন তাহার আয়ে, রাজ্য, ক্রী, প্রণিয়ি, স্ক্রদ্ তথা নিবাস পর্যন্ত পরিভ্যাণ করিয়া অরণ্যবাসী হইলেন॥ ৭॥

अवत्यामी ।

রক্ষাে রাবণত অহা স্প্ণপারাঃ অভদ্ধ বৃদ্ধে: দীতাং জিল্পকো: কামাত্রায়া ইতি বা রূপং বাকৃত বিকারমনরং। ততাঃ ধর ত্রিশিরো দ্বণ মুধাা বন্ধবাে বেবু তান্ চতুর্দিশ সহস্রং জ্বান। অপারণীগ্রমণ্ডব্য অস্কং কোন্ধ্যং পাণীে যুক্ত সং ॥ ৮॥

সীতায়া: কণা শ্রবণেন দীপিতো হচ্ছেরো যত তেন দীতাং হরিবাতা সমাত্তীতেন সভাল্রমাদপকর্বণার্থং স্টাং নিস্টাং মামীচাং বিলোক্য জ্বান কণং ভূতং অভূতেন বপুরা স্বাহিরিশ্বেহেনোগল কিছিং। অতএব প্রানোডেন তেনাশ্রমতোইগ্রক্তী: সৃন্। বং দক্ষং যথা উগ্রাহীকুল: ॥ ১ ॥

ততত রকোহধমেন রাবণের অসমক মপনীভাষাঃ প্রিয়লং বিযুক্তো ভাভা গল্মণের সহ কুপণবছনে বিচ্চার কিমভিপ্রায়ঃ সন্ জনস্বতঃ ।

ইতি অনেন প্রকারেণ পরম ভক্তাত্তক্তেশাদীপন প্রকারেণ স্ত্রীসন্ধিশাং বাগতি শ্রেষ্ঠা বিলাপান্যা তামেব প্রথমন্ বিস্তারমং চচার

अविश्वनाष्ठक वर्षी ।

রক্ষণো রবিগদা অব্যা অপারণীরং অনুনারস্ক্রং কর্ণনাসাচেছদেন বিকারমনরং অব্যান। অপারণীরং অনুনারস্ক্রং কোদওং পাণো বদা সং। তভভ অটমানং বনে জনন্তুজ্ং স্ক্রমুবাস ॥ ৮ ॥

ততক দুৰ্পণথাস্থাৎ শ্ৰামা সীভাং হরিষ্যতা রাবণেন অসাজীতেন অভাশ্রমাদপকর্ষণার্থং কৃষ্টং বিস্টাং শ্রেষিতং মারীচং বিলোক্য জ্বান। কথস্ত অভ্নতিগ্রম্বা অর্থইবিশ্লালীরেণোপলক্ষিতং "অয়ং কথস্ত আশ্রমাভাংশকৃষ্টঃ দ্বং গতঃ। কং সকং মধা উপ্রঃ শ্রিক্তঃ ॥ ১॥ •

অধংমন রাবণেন বৃক্বং বৃক্কেণেৰ অসমক্ষং পরোক্ষত এবাপ্যাপিতায়াং অপদ্ধতায়াং সভাাং প্রিয়য়া প্রেমবত্যা সীভরা বিযুক্তঃ বিপ্রালম্ভ শৃকার রসাঞ্রালমনী ভূতঃ প্রেমাণ্ডেষ বিপ্রালম্ব ক্রমেরী ভূতমাআলমন্ তদন্তাব সাজিক সঞ্গর্যাদিকং বিলাপ নৃজ্জে আলাদিকং প্রক্রময়ের চচার। কণ্ডুতঃ ইতীজ্যনেনের প্রকারেণ জীসলিনাং গভিং বিলাপাদি তুঃখোদ্র্কাং প্রথমন্ বহিন্দিনি জনান্ প্রশাপ্রমিতি প্রশামাক মেতরত্ বস্তুত ইতার্থঃ। অস্ত্রনিক্ত ভিন্নবে আন্ মহাবিষ্ঠো জাতে যাশর্থে

অরণ্য মধ্যে কামাত্রা সূর্থাধীর কর্ণ নাসা ছেদন পূর্বাক রূপ বিকৃত ক্রিয়া ধর, দূবণ, তিলিরা প্রভৃতি দ্বনীয় মুধ্য বাহরে সহিত চতুর্দিশ সহত্র রাক্ষ্য বিন্ট করিলেন। পরে অস্ট্র ধৃত্যু হত্তে লইয়া সভত ভ্রমণ করত কট্টে বনবাস করিতে লাগিলেন ॥ ৮॥

ইতি মধ্যে জনক ভনয় সীতার সৌন্দর্যা বার্তা প্রবণে দশক্ষরের কামানল প্রস্থালিত হইল। সীতা হরণ মান্দে রামচন্দ্রকে শাপ্তম হইতে নিংহত করণার্থ দেই ছ্রাত্মা মারীচ নামক রাক্ষদকে নিযুক্ত করিল। তাহাতে মারীচ অছুত মৃগরূপ ধারণ পূর্বাক রামচন্দ্রকে শাপ্তম হইতে দূরে আকর্ষণ করিয়া লইয়া গেল। রামচন্দ্র দ্রাপকর্ষিত হইয়া, যেমন ভগবান ক্ষদ্র মুগ রূপে ধাবমান ব্রন্থার প্রতি বাণান্দ্রত করিয়াছিলেন তাহার ন্যায়, স্বর্গ হরিণ দেহধারী সেই নিশাচরকে শাণিত শর দারা আশু নিহত করিলেন। ১ ৪

ভাছার পর রাক্ষ্যাধ্য রাবণ ব্রকের স্থার, বৈদেহরাজত্হিতা রাম বনিতাকে অপহরণ প্রক অপনীত করিলে রামচন্দ্র প্রিয়তমা বিরহিত হইয়া, জীগদিনিদেরে যে পরিণামে এই রূপ চুঃখদ গভি ভাত্রা বনে কুপণবৎ প্রিয়য়া বিযুক্তঃ স্ত্রীদঙ্গিনাং গতিসিতি প্রথয়ংশ্চচার ॥ ১০ ॥
দক্ষ্মাত্মকত্য হতকৃত্যমহন্ কবন্ধং সথাং বিধায় কপিভিদ্যিতাগতিং তৈঃ।
বৃদ্ধাপ বালিনি হতে প্লবগেন্দ্রন্যে বেলামগাৎ সমসুক্ষোহজ ভবার্কিতাভিনুঃ ॥ ১১ ॥
যদ্রোধ বিভ্রম বিবৃত্ত কটাক্ষপাত সংভ্রান্ত মকরো ভয়গীর্ণঘোষঃ।
দিল্পুঃ শিরস্থাহ গং পরিগৃহ্ রূপী পাণারবিন্দমুপ্রসায় বভাষ এতৎ ॥ ১২ ॥

श्रीभवत्रामी।

ইত্যানের প্রকারেণ স্ত্রীসঙ্গিনাং ছ:বে।দর্কাং গতিং প্রথ্যাপয়ন্ ॥ ১০ ॥

আত্মার্থেন ক্রতোন কর্মণা রাবণেন সহ যুদ্ধেন হতং ক্লচাং শাস্ত্রীয়ং দহনাদিকং যত তং জটায়ুবং পুত্র ইব দথা কবন্ধং শগ্রহ-ণায় প্রসামিত বাহং রাক্সমহন্। অথ বালিনি হতে তৈক্ষিতা গতিং বৃদ্ধা অল ভবাভাামচিতাবজ্পী বত সং স মহজো বেলাং সম্ভতীমুমগাং ॥ >> ॥

ত অ অিরা অমুপ্রাদেন প্রতী গিতে। ২পি সির্বাণা নোপস্থিত: তদা বছারোৰ বিভ্রমণ কোধলী লয়া বিবৃত্তো যা কটাক্ষা তছা পাতেন সংভ্রমণ নক্রাণ্ড যিমিন্। ভয়েন গীর্ণা প্রতি তেওিটো ঘোষো যেন সাস্থিমান্ । ১২ ॥

ক্রেমণক 😸:

ইঙততোৰভাষ। ইদমেবোক্তঃ প্রিরমেতি। বক্ষাতেচ দরিতেত্যাদি॥ ১০॥ সঙ্গতোহ্মুক: শ্রীণক্ষণো যুত্ত ভাদৃশ:॥ ১১ ৷ ১২ ৷ ১৩ ৷ ১৪ ৷ ১৫ ৷ ১৬ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷ ২৩ ৷ ২৪ ৷ ২৫ ॥

ভি বিখনাথচক্রবর্তী।
হরাবিতি রামভাপনী শ্রুতঃ। দি প্রমাণেন চিদানন্দনয়মনো বুদ্দী ক্রম শরীরভ পরত্রদ্ধণ ভত হংধ সন্তাবনাপি শাস্তবৃক্তি প্রতিক্ কুলেতি পঞ্চমস্কদীয় কিংপুরুশবর্ষ রাম প্রসঙ্গ ব্যাধাতি যুক্তা ফানস্তোব ॥ ১০ ॥

আলাথেন কুতোন ক্ষণা রাধণেন সহ যুদ্ধেন হতং কুতাং শাস্ত্রীয়ং দহনাদিকং বস্ত তং অটায়ুবং পুত্র ইব দগ্ধা ক্বরং প্রহ-শাস্ত্র প্রসায়িত ৰাজ্ং রাজ্যসহন্ অথ বালিনি হতে সতি হৈঃ কপিভিদ্রিতা গতিং বৃদ্ধা বেলাং সমুস্ত তীরং মহুদোরামঃ ॥ ১২ ॥

ভত্ত তিরাতোপবাদেন প্রতীক্ষিতোপি সিন্ধু র্বনা নোপভত্তে ভদা বৈশ্বর্থাং সম্বাবেত্যাহ বস্তু রোধ বিভ্রমেণ জোধবিলাদেন বির্ত্তো বিকটোব: কটাগণাত ভেন সংভ্রাস্তা বিপন্ন। নজা মকরাশ্চ বস্তু সং। ভয়েন গীর্ণ: প্রস্তু: স্ত'স্ততো মোবো বেন সং। অর্হণ মর্থাাদি পুরোগহাবং ॥ ১১ । ১২ ॥

হয়, ইহা প্রখ্যাত করত দীনবং ভাতার সহিত বনে বনে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন । ১০ ॥

এক দিন পথিমধ্যে দৃষ্ট হইল তাঁহার নিমিত্ত কর্মা করিয়া অর্থাৎ রাবণের সহিত সংগ্রাম করিয়া জাটায়ু পক্ষী নিহত হইয়াছে, তাহার দেহ পড়িয়া রহিয়াছে, শাস্ত্রোক্ত সৎকার অর্থাৎ দাহনাদি সংস্কার কিছুই হয়নাই, অত এব পুজের ল্যায় ঐ পক্ষির শবদাহন পূর্বক সৎকার করিলেন। পরে আপনাকে গ্রহণ করিবার নিমিত্ত বাহু প্র্যারণ করিডেছিল যে একটা কবন্ধ, ভাহার প্রাণদংহার করিলেন। পশ্চাৎ বানরম্বদ্দের সহিত স্থ্য করিয়া বালি বধানস্তর ঐ সকল কপি বারা দ্য়িতার গতি অবগত হই-লেন। তৎপরে বানরসেনা সহ সমৃত্ব তীরে গমন করিলেন। তিনি মানবাবতার হইয়াছিলেন সত্য, কিন্তু মহেশ ও ব্রহ্মাত তাঁহার চরণপত্ম অর্চন। করিতেন॥ ১১॥

সে যাহা হউক, রাসচন্দ্র সাগর তটে উপনীত হইয়া ত্রিরাত্র উপনাস পূর্বক সমুদ্রের আগমন প্রতীক্ষা করিলেন, তাহাতেও যথন জলনিধি স্বয়ং উপন্থিত না হইল তথন অভিশয় জুদ্ধ হইলেন। ক্রোধ লীলায় রামচন্দ্রের কটাক্ষ এরপ বিবৃত্ত হইয়াছিল যে পাত্রমাত্রে সাগরন্থ নক্র মকরানি জলজন্ত্রগণ সাভিশয় উদ্বিশ হইল। অনস্তর সমৃদ্র ভয়ে আত্ম নিনাদ সংস্কৃত্রন পূর্বে ক্রেম্বান্ট্রল এবং স্তকে অধ্যাদি পুজোগহার ধারণ, করিয়া রামচন্দ্রের পদার্থিদের সমীপে উপন্থিত হওত কহিতে লাগিল॥১২

ন ছাং বয়ং জড়ধিয়ে ব্বিদান ভূমন কৃটয়্মাদিপুরুষং জগতামধীশৃং।
যথ সত্যতঃ হারগণা রজসঃ প্রজেশা সভ্যোশ্চ ভূতপতয়ঃ স ভবান্ গুণেশঃ ॥ ১৩ ॥
কামং প্রযাহি জহি বিশ্রবিদাহবমেহং ত্রৈলোক্য রাবণমবাপ্প হি বারপত্নীং।
বগ্রীহি সেতুমিহ তে যশসো বিতটেয় গায়িতি দিয়িজয়িনো য়ম্পেত্য ভূপাঃ ॥ ১৪ ॥
বিজ্ঞাদধী রঘুপতিবি বিধাদিকুটিঃ সেতুং কপীক্র কর কম্পিত ভূরুহালৈঃ।
হাত্রীব নীল হাতুহৎপ্রমুখেরনীকৈ ল্জাং বিভাষণ দৃশাবিশদগ্রদক্ষাং॥ ১৫ ॥

প্রীধরশানী।

ভাষণমেবাহ ন হামিতি ছাভাাং। এভাবং প্যান্ত হু নিশ্চিতং ছাং ন বিদাম ন জানীম ইত্যুৰ্থ:। ইদানীয় জাতোহ্সীভাাহ্ যদিতি পূপক্ পদং যন্তেভাৰ্থ:। ব্ৰশেভাঃ স্বাদিভাঃ সুৱগণাদ্যো ভৰম্ভি স ভৰানিতি ॥ ১০ ॥

কামং যথেক্তং জলমাক্রমাণি প্রথাই অবনেহং পুনীয়প্রায়ং। তৈলোক্যং বারস্থতি আক্রেলয়ণীতি তথা জংজাই। হে বীর বদ্যালি তব জলং প্রতিবস্ক্রং ন ভবতি তথাপীঃ সেভুং বিদ্নীই। তাহি কিমর্থং তে যশসে। বিভারায় তদেবাই যং সেভুমুশেত্য ছুহুরং কন্মাবেক্য ওদযশো গাভস্কি ভূণান্তঃ ১৪ ॥

তথাকামভিনন্দা যৎক্লভং তদাত বংজতি বিনিধৈরজীণা কুটি: শৃলৈ: সেতৃং বজা আগ্রে সীভাবেষণে হসুমতৈৰ দ্বাং লছাম-বিশং। কণং ভূটভঃ শৃলৈ কণীজাণা কবৈ: কম্পিভানি ভূকহাণামলানি শাখাদীনি যেষু ভৈঃ। বিভীষণত দুশা বুদ্ধা। কৈ: সহাবিশং স্থানীবাদয় প্রমুখা যেয়াং ভৈরনীকৈ: ॥ ১৫ ॥

শীবিখনাপচক্রবরী।

অত্ধিয়ো অলধিবাদজ্ঞাং স্বশান্তিস্প্রাপ্য বাং ন বিদাম: পশ্বোহি লগুড়প্রহার মনবাপ্য মুষ্যং যথা ন গ্ণয়ন্তি তথেতি ভাবং। ন্যধুনা প্রিচিতোমি ন বা তথাং যদিতি পৃথক্ পদং যভেত্যুৰ্থ:। মতোভ্যেস্য:। ততা গুণত গুণরূপ প্রধানত ঈশং নিয়ন্তাঃ ॥ ১০ ॥

বিশ্রবদোহবদেহং মৃত্তুলাং তৈঁলোকাং রাবয়তি ক্রন্দয়তীতি তথা তং। য' সেতুম্পেতা গায়তি ভালথো গাওতি । ১৪ ॥ অদি শৃকৈ: কীদ্শৈ: কপীস্তাণাং করে: কম্পিতানি ভূকহাণামস্থানি শাখাদীনি যেযু তৈ:। বিভীবণ্ড দুশা বৃদ্ধা । ১৫ ॥

হে ভূমন্! আমরা জড়মতি,এ এযুক্ত এতাবৎ কাল পর্যান্ত আপনাকে জানিতে পারি নাই। আপনি নির্বিকার আদি পুরুষ এবং কাগদাখার। অধিকস্ত বাঁহার বশবর্ত্তি সন্ত্রগণ হইতে হারগণ, রজোগুণ হইতে প্রজাপতি সকল,আর তমে।গুণ হইতে ভূতপতি নকল উৎপন্ন হন আপুনি সেই গুণেখার॥ ১০॥

ু প্রভো! আপনার যেমন বাঞ্ছা হয়, আমার জ্ঞল অতিক্রমণ করিয়া গমন করুন। বিশ্রার বিষ্ঠা ত্লা ছুরাত্মা রাবণ ত্রিভূবনের ক্রেশদায়ক,তাহাকে শীঘ্র বধ করুন এবং আপনকার পত্নীকে প্রাপ্ত হউন। হে বীর! যদিও আমার জল আপনকার গমনে প্রতিবন্ধক না হয় তথাপি ইহাতে দেভূ বন্ধন করুন, তাহাতে আপনকার কীর্তি চিরন্থাগ্রিনী হইবে, যে হেভূ এই দেভূ সমীপে আদিয়া ছুক্তর কর্মা নিরীক্ষণ করিলে নুপগণ অসংশয় আপনকার যশঃ গান করিবে॥ ১৪॥

হে রাজন্। সাগরের ঐ রূপ বচন প্রবণ করিয়া রামচন্দ্র বিবিধ পর্বত শৃঙ্গ দারা তাহার উপর সিত্বন্ধন করিলেন। সেই সকল গিরি শিখরে ভূরি ভূরি তরু ছিল,তৎ সগুদায়ের শাখা কপীন্দ্রদিগের কর দারা অত্যর্থ কম্পিত হইয়াছিল। সে যাহা হউক। সেতৃবন্ধন হইলে পর বিভীষণের পরামর্শ ক্রেম হাত্রীব নীল হনুমান্ প্রভৃতি সেনাগণ সহিত রঘুণতি লক্ষায় প্রবেশ করিলেন, সীতার অভ্যেশ সমরে হনুমান্ তাহা অত্যেই দগ্ধ করিয়াছিলেন॥ ১৫ ॥

দা বানৱেন্দ্রবলরক বিহারকোষ্ঠ শ্রীষারগোপুরদদো বলভী বিটকা।
নির্ভন্তরান শিষণধ্বক হেমক্স শৃসাটকা গলকুলৈ ব্রুদিনীব ঘূর্ণা॥ ১৬॥
রক্ষ:পতিস্তদবলোক্য নিক্স্ত ক্স্ত ধূমাক্ষ দ্বন্ধ হুরান্ত নরান্তকাদীন্।
পুক্রং প্রহন্তনতিকায় বিকম্পানাদীন্ দর্শবাস্থগান্ সমহিনোদ্য ক্স্তকর্ণং॥ ১৭॥
তাং যাতৃধান পৃতনামদি শৃল চাপ প্রাদষ্টি শক্তি শর তোমর খড়গ ছুর্গং।
স্থাব লক্ষণ মরুৎ স্তুভাক্ষমাদ নীলাসদক্ষ পনসাদিভির্যিতোহয়াৎ॥ ১৮॥
'তেহনীকপা রঘুপতেরভিপত্য দর্শ্বে দ্বন্ধং বর্ষণিভপত্তি রথাশ্বোধিঃ।

ন্ত্রীপরস্বামী

উতঃ সালফ। বুর্। প্রচলিত। বভূব কণংভূত। বানরেজ্রাণাং বলৈজ্জা বিহারাদ্যো যতাং সা নির্ভল্যমানা শিষণাদ্যো যতাং সা। তর্ত্ত বিহারঃ জীড়া স্থানং। কোঠং ধাতাগার।দি। আই: কোষং খারং গৃহাদীনাং। গোপুরং পুরুষারং সদং সভা। বল্ডী প্রাসাদাদি পুরে। ভাগাজ্ঞাদনী। বিউল্লেখণাত্তপালিকা। 'শিষণং বেদিকাদি। শৃলাউকং চতুস্পাং। ১৬।

রক্ষ:পতিঃ রাবণঃ। পুত্র ইক্রবিতং প্রহস্তাদীংশ্চ সমহিলোৎ প্রাযুঙ্ক ॥ ১৭ ॥

অসিশ্লাদিভিত্রসমাং তাং বাত্ধানানাং পৃতনাং স্থাীৰাদিভিত্তবিতঃ আহিমঃ অহাৎ। মকংস্তো হন্মান ঋকো জাহবান্ ১১৮ তে রবুণতেরনীকপা অফলাদ্যাঃ সর্বে রাবণক্ত ইভালিভি বহরপং সৈতাং তত্ত হলং যথা ভবতি তথাভিপতা সক্ষম ক্রমাদিভি-

ত্ৰীবিখনাপচক্ৰব ন্ত্ৰী ।

বানবেজ্ঞাণাং বলৈক্রা বিহারাদ্যো ঘতাং বিহার: ক্রীড়াস্থানং। কোঠং ধান্তাগারাদি ব্রী: কোষ:। খারং গৃহদারং গোপুরং পুর্বারং সদ: যভা বলাজী প্রাসাদোর্দ্ধ শিপর গৃহং। বিটহ্ন: কণোভণালিকা। ভতশ্চ নির্ভল্যমানাধিবণাদ্যা যুক্তাং। বিষশং বেদিকাদি শৃক্ষাটকং চতুশ্পং যুগা যুদ্ধিভা ॥ ১৩ ॥

भूख भिख्यक्रिकः समहित्नारम्कार्यः आयुङ्खः । ১१ ॥

অবিত: শ্রীরাম: । ১৮॥

তে রবুণতেরনীকণা অঙ্গদানাঃ সর্ব্ধে রাব্যক্ত ইভানিভির্যব্যুগং সৈত্তং তত্ত্ব দৃদ্ধং যথা ভবতি তথাভিণতা সংগ্রম জনানিত্তি-

রামচন্দ্র সদৈন্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র গজদমূহ দারা নদী যজেপ প্রচলিত হয় তাহার স্থায় লঙ্কাপুরী বিঘূর্ণিতা প্রায় হইল ? কারণ কপীন্দ্রদিগের সেনাগণ তত্রেছ ক্রীড়াস্থান, ধান্তাগার, কোষ, গৃহাদির দার, প্রদার, সভা, বড়ভী অর্ধাৎ প্রাদাদের অগ্রভাগান্তাদনী এবং কপোতপালিকা প্রভৃতি রুদ্ধ করিতে লাগিল। আর বেদী, পতাকা, স্বর্ণকলন তথা চতুত্বথ প্রভৃতি সমুদায় ভয় করিয়াদিল ॥ ১৬॥

রক্ষ:পতি রাবণ ইহা দেখিয়া নিক্স্ত, কুন্ত, ধূআফ, চুন্মুখ, হুরাস্তক, নরান্তক প্রভৃতি সমস্ত অনুচর তথা ইন্দ্রজিং, প্রহন্ত, অতিকাম, বিকম্পনাদি পু্জ্ঞদিগকে পরে কুন্তুকর্থকে প্রেরণ করিল ॥ ১৭ ॥

যদিও ঐ সকল রাক্ষণ সেনা অসি, শূল, ধ্যুং,প্রাস, ঋষ্টি, শক্তি, শর, তোমর, ধ্রুগাদি বিবিধ শক্তে অতিশয় চুর্ম্মর্য ছিল তথাচ রামচন্দ্র মালাগলঙ্কতের ভায় লক্ষণ,ত্থীব, হন্মান্, প্রমাদন, নীল, অঙ্গদ, জাহ্বান এবং পনমাদি সেনাপতি সময়িত হইয়া তাহাদের প্রতি যাত্রা করিয়াছিলেন ॥ ১৮ ॥

তে রাজন্। রামচ্চের ঐ সকল সেনাপতিগণ রামণের হস্তাখাদি স্থিত মত মেনা আসিয়াছিল তম্পো যে রূপে ছাত্র হয় সেই রূপ করিয়া পড়িতে লাগিল এবং পাষাণ, গদা,তথা বাণ ক্লেপণ পূর্বক তাহাদিগকে নিহত করিতে আরম্ভ করিল। হে সহারাজ। রাজস সেনার ঐরপ বিনাশ না হইবে

জনু ক্র' গৈ গিরিগদেষ্ভিরঙ্গদান্য: সীতাভিমর্থ হতমঙ্গল রাবণেশান্ ॥ ১৯ ॥
রক্ষ:পিতি: স্ববলন্তিমবেক্ষ্য ক্রেউ আকৃষ্য যানকমথ!ভিস্পার রাম:।
স্বঃস্থান প্রাত মাতলিনোপনীতে বিভাজমানমহন্দ্রিশিতৈ: ক্রুবৈ: ॥ ২০ ॥
রামস্তমাহ পুরুষাদ পুরীষ যন্ন কান্তাদলক্ষ: মদতাপছতা শব্বে।
ত্যক্তরপস্থ ফলমদ্য জ্ঞাপিতস্থ যাহানি কাল ইব কর্তুর্লজ্যাবীর্যা:॥ ২১ ॥
এবং ক্ষিপন্ ধনুষি সন্ধিতমুংস্সর্জ বাণং স বজ্রমিবতল্প্রায়: বিভেদ।
নোহস্থ্যন্দশ্রীপ্রত্পিত্রিমানাদ্ধাহেতি জন্নতি ক্রেন স্ক্রীব রিক্তঃ ॥ ২২ ॥

शिपद्रभागी।

র্জনু: কান্ শীন্তায়া অভিমর্বেণ হতং মঙ্গলং যত্ত স রাবণ ঈশো (যথাং ভান্॥ ১৯॥

স্ব্ৰস্ত নষ্টিং নাশং অবেক্ষা রুটা জুদ্ধান কং পুলাকং বিমানং রুপংবা আরু হ শীরাম্মভিস্থার অব তং সাং স্তলনে স্থাত ইক্ষা রুপে মাত্রিনা ইক্সার্থিনা উপনীতে হামতি দীপ্রিযুক্তে বিভালমান্মহন্ৎ অহন্ ॥ ২০॥ °. .

হে পুরুষাদ প্রীষ রাজসের প্রীষ প্রায়। যদবশাদপদ্তা খবং খা যপা অসমক্ষং গৃহং প্রবিশ্র কিমণি হরতি ভরং। তথাং জুগুপিতের কর্মণ: কর্তেংলা কাল ইব অলজ্যা বীর্ষ্যোধহং ফলং রুজ্ঞামি। অধ্য কর্তু: পুংস: কালে:যথা যদ্ভীতি বা ৪২১ ॥ রিক্ত: ক্ষীণপুণা: ক্রতী বিমানাদিব বিমানাং পুশাকারাপতদিতি বা ৪২২ ॥

धीविधनाणहळ्वर्ञी।

র্জ্মু:। কান্দী ভাষা অভিনর্গে ইরণেন হতং মদলং যক্ত তণা ভূতো রাবণ এব ঈশো দেবাং তান্। ১৯ ॥

ৰানকং পূপাকং বিসানং রথং বা। স্বঃজন্দনে স্বগীয়ি রথে দীপ্তিমতি মাতলিনা ইক্সপার্থিনা উপনীতে ভাজমানং রামং অহনং অহন ক্রুটেশ্রঃ শটর:॥২০॥

হে পুক্ৰাদ রাজসানাং প্রীব তুলা ৰদ্যমাদপজ্ভা সংবৎ শুনা বধা আসমক্ষমেব গৃহং প্রবিশা স্তমণভ্রিতে তহৎ। আদ্য জুগু-পিতিজ ক্রমণঃ কর্তু: কালো ধম ইব আহং তে ফলং বছানি এ২১॥

স বাণঃ তম্ম রাবশন্ত স রাবশীঃ। রিজ: ক্ষীণপুণা: স্কুটী বিমানাদিব নাপতং । ২২ ।

কেন ? সীতার অভিমর্ষণে যাহার অশেষ কল্যাণ বিনষ্ট হয় সেই রাবণ তাহাদিগের অধিপতি ছিল॥১৯
সে যাহা হউক, দৈন্দ্যদিগের বিনাশ দর্শন করিয়া রক্ষপ্রতি রাবণ পুপ্রাক বিমানে আরোহণ পূর্বক রামচন্দ্রের প্রতি ধাবমান হইল। ঐ সময়ে ইন্দ্রদার্থি মাতলি দীপ্তিশালি দেবেন্দ্রের রথ আনিয়া উপস্থিত করিলে রামচন্দ্র তাহাতে আরোহণ করিয়া বিরাজ করিতে লাগিলেন। তদর্শনে দুই রাবণ স্থতীক্ষ ক্ষুরপ্র ক্ষেপণ পূর্বক আঘাত করিল॥ ২০॥

রামচন্দ্র রাবণকে সম্বোধিয়া বলিলেন অনে ভূষ্ট ! তুই রাক্ষস মধ্যে পুরীষ প্রায়, কৃক্র যেমন অস-মক্ষে গৃহে প্রবেশ করিয়া কোন সামগ্রীচুরি করিয়া লইয়া যায়,ডেমনি অসাক্ষাতে আমার কান্তা অপহরণ করিয়া লইয়া গিয়াছিস্, তুই অতি নির্ভিভ, গহিতি কর্ম করিস্, আর্মি অলভ্যাবীর্যা, এখনি কুতান্তের স্থায় তোর জুগুপ্তিত কর্মের ফল দিচ্ছি॥ ২১॥

এই প্রকার ভর্পনা করিয়া ধসুকে যে শর সন্ধান করা ছিল তৎক্ষণাৎ নিক্ষেপ করিলেন, তাহাতে বজ্ঞতুলা সেই বাণ রাবণের ছালয়ে পভিত হইয়া নির্ভিন্ন করিল। দশমুথ রাবণ দশমুথে শোণিত বমন করিতে করিতে কীণপুণা হাকৃতি যেমন বিমান হইতে পভিত হয় তাহার ভায়, পুল্পক রথ ভ্ইতে পভিরা গেল। ভদবলোকনে সকল লোক হাহাকার করিতে লাগিল ॥ ২২॥

ততোনিজ্না नहां। याष्ट्रांणः महत्वनः। मत्नां पर्या ममः उद्य क्षत्रमञ्चा छेशाल्यन्। श्वान् श्वान् वस् न शतिष्ठा लक्षात्वपृक्षित्रक्षिञान्। त्रक्ष्यः श्वान प्रतिष्ठा आञ्चानमाञ्चना ॥२०॥ १। इताः श्वा वयः नाथ त्वां करावेण तावेण। कः याद्योष्ट्रतेणः लक्षः व्यविम। शतिक्षिणः॥ न ते त्वल महां विश्वा क्यान् कामवैभाः गठः। टिल्डाश्यू व्यवः मौकाया त्यन नोत्कः प्रभामिमाः॥२॥। कृतिम। विश्वा लक्षा वयक क्लमन्मन। त्वशः कृत्वाश्यः गृथाणामाञ्चानतक १००० ॥ २०॥ क्षिक केवा ।॥

স্থানা[,] বিভীষণ**শ্চক্রে কোশলেন্দ্রামুমোদিতঃ। পিতৃমেধ বিধানেন য**ত্ন**ক্তং সাম্প**রায়িকং॥ 'ততো দদর্শ ভগবানশোকবনিকাশ্রমে। ক্যামাং স্ববিরহব্যাধিং শিংশপামু নাশ্রিতাং॥ ২৬ গ্ল

श्रीभद्रशामी।

রীকেসে স্থীণাং বিলাপমাহ তত ইতি পঞ্জি:। মনদং স্বর্মুদ্রং যভা: তয়া রাবণ ভার্যায়া সহ ॥ ২০ ঃ পরৈবঁদি ছা ॥ ২৪ ৪

গুলাণাং ভক্ষা:। নরকছেতবে নরকভোগায়॥২৫॥

সাম্পরায়িকং ওঁর্দেহিকং। ২৬।

প্রীধরস্বামী।

জ্ঞাদন্শ সীতামিতি শেষঃ ॥ ২৬ । ২৭ । ২৮ । ৩৯ । ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ । ৩৪ । ৩৫ ॥

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰ বত্তী।

মন্দোপিয়া রাবণভাষ্য্যা ॥ ২০। ২৪ ॥ অল্ল: ওক্ষাং নরকতেছতবে নরকভোগায় ॥ ২৫ ॥ সাম্পরায়িকসৌর্দ্ধিক্ষং ॥ ২৬ ॥

তদনন্তর সহত্র সহত্র রাক্ষণী লক্ষা হইতে নির্গত হইয়া মন্দোদনী নাম্মী রাক্ণ বনিতার সহিত রোদন করিতে করিতে করিতে রণস্থলে ভ্রমণ করিতে লাগিল। লক্ষণের বাণে তাহাদের যে যে বন্ধু বান্ধব নির্ভিন্ন হইয়া রণশায়ী হইয়াছিল, তাহাদিগকে আলিঙ্গন করিয়া আপনা আপনি বক্ষঃস্থলে আঘাত করত করণস্থরে রোদন আরম্ভ করিল॥ ২০॥

আর কহিল হা নাথ। আমরা হতা হইলাম। হে রাবণ! তুমি লোক রাবণ ছিলে, আমাদের লঙ্কাপুরী তোমা বিহীন হইয়া শক্ত কর্তৃক নিপীড়িত হইডেছে, একণে কাহার শরণ প্রাপ্ত হইবে ? হে মহাভাগ। তুমি কামনশ হইয়া একেবারে হত বৃদ্ধি হইয়াছিলে ? জনকনিদ্দনীর প্রভাব ও অমুভাব জানিতে পার নাই, তাহাতেই এই দশা প্রাপ্ত হইলে ॥ ২৪ ॥

হে কুলনন্দন! তোমা হইতেই এই লক্ষা এবং আমরা পতি ছীনা ছইলাম। তুমি আত্মদোষে আপনার দেহকে গুধ্রগণের ভক্ষা ও আ্আাকে নরকভাগি করিলে॥২৫॥

শুকদেব কহিলেন অনন্তর বিভীষণ কোশলাধিপতি রামচন্দ্র কর্তৃক অনুষ্টোদিত হইয়া পিতৃযজ্ঞ বিধান ক্রান্ত জাতিদিগের ঐক্লিছেক ক্রিয়াকলাপ নির্দাহ ক্রিলেন। তাছার পর রামচন্দ্র অশোক বনিক্লাশ্রমে গমন করিলেন। তথায় শিংশপা তর্কমূলে অবস্থিতা অতি ক্রীণা স্বায় বিরহ ঘ্যাধির স্থায় জনকনন্দিনী তাঁহার দৃষ্টিপথবর্তিনী হইলেন ॥ ২৬ শা

রামঃ প্রিয়তমাং ভার্যাং দীনাং বাক্ষ্যাত্মকম্পত। আত্ম সন্দর্শনাহ্লাদ বিকসমূখপক্ষরাং ॥ আরে প্যারুক্তহে যানং ত্রাভৃত্যাং হতুমদ্যুতঃ ॥ ২৭ ॥

িভীলায় ভগবান্ দত্তা রক্ষোগণেশতাং। লক্ষামায়ুশ্চ কল্পান্তং যথো চীওিতঃ পুরীং ॥ অবর্ণ বিমোণঃ ক্ষেইম লোকিপালাপি তৈঃ পথি। উপগীয়মানচরিতঃ শতপ্ত্যাদিভিগুদা ॥ ২৮॥ গোড় ন্যাবকং প্রেছা ভাতরং বক্ষলাম্বরং। মহাকারণিকোহতপাজ্জটিলং স্কৃতি লে যাং ॥ ২৯॥ ভরতঃ প্রাপ্তমাকর্ণ পোরামাত্য পুরোহিতিঃ। পাছকে শিরদি অস্ত রামং প্রত্যুদ্যভোহ্ঞজং শ্বনি ভাষাং বাশবিরাং গীতবাদিত্র নিষ্ঠানঃ॥ ৩০॥

श्रीववश्रामी।

আন্থান: স্বন্ধ দৰ্শনে য আহলাদ জেন বিক্সং মুখণকলং যতা ভাং। যানং পুশকং। ভাতৃভাং লক্ষণ জগীবাভাং ॥২৭॥ আয়ুক্ত ৰহা ভেনাপি সহৈব যথে। ॥২৮॥

গোম্জ যাণকং গোম্মপ্র ধ্বার্ডোজনং ভাতরং ॥ ২৯ ॥

স্থানিবরাং বাসং বিনাহযোগ্যামপ্রবিশন্ স্বস্থার নির্মিতবান তত্মাৎ সকাশাৎ পৌরাদিভিযুঁতে। রামং প্রত্যাস্তঃ অভিমুধ্য যথে ১৩০॥

शिविधनानहत्त्वकी ।

সীত ং প্রারোণা ভাত্তাং রাম শক্ষণাভ্যাং আরুক্তে যানং পুপাকং। হর্মদযুতঃ হর্মতা সহ যুৎ সাহিতাং প্রাণ্যযু মিশ্রণে ভাৰ কিব র'রারোণে পঞ্মী । ২৭ । ২৮ ॥ গোম্ত্যাবকং। গোম্ত প্রধারভোজিনং ১২৯ ॥

খানি বিবাং খীয় বৈনাজানাং। গীতাবিভিযুক্তি:। পঠিতাং এক্ষবাদিনাং বেদঘোৰেণ্চ। খণ্ডিয়া কলা: প্রায়ান্ যাসাং ভাতিঃ প্রাকাভিঃ। পুর্ট ব্যুভিঃ খণ্কব্চ যুক্তি:। পার্যেষ্ঠানি ছত্র চামরাদি রাজ চিহ্লানি। প্রাণিন বৃত্ মূলানি রজাদীনিচ ॥ ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩১ । ৩৪ ॥

প্রিয়ত্যা পনিতাকে অতিশয় দীনা অবলোকন করিবা মাত্র রামচন্তের হৃদর অনুক্রপায় আর্ড্রেল, কিন্তু পতি দর্শনে আনন্দোদয় হওয়াতে জানকীর বদন পদ্ম বিক্সিত হইতে লাগিল সে যাহা হউক, লক্ষ্মণ ও স্থাবি দারা রামচন্দ্র জনকতনয়াকে যানে আরোহণ করাইয়া পরে হনুমানের সহিত্ত আপনি রথারত হইলেন ॥ ২৭॥

অনন্তর বিভাষণকে রকোগণের অধিপতি করিয়া লঙ্কা ও কল্লান্ত পর্যায়ু: প্রদান করিলেন। পরে অত গমাপন পূর্বকৈ তাহার দহিত অযোধ্যাপুরী যাত্রা করিলেন। পথে-রামচন্দ্রের উপর লোক-পালদিগের হন্তোমুক্ত পুষ্পার্ম্ভি পড়িতে লাগিল এবং শতধৃতি প্রভৃতি গন্ধর্বারুল পরম আনন্দে তদীয় চরিত্রে গান করিতে লাগিল ॥ ২৮॥

রায়চন্দ্র আসিতে ২ শুনিলেন ভ্রতি ভরত অযোধ্যার বহির্ভাগে শিবির করিয়া জটিল ও ছণ্ডিলশায়ী এবং বিদ্ধলাম্বরধানী হইয়া আছেন,প্রাণ ধারণার্থ গোমূত্র পক যবাম মাত্র ভোজন করেন, অভএব করু-ণার্দ্র ইয়া তদর্থ সন্তাপ করিতে লাগিলেন ॥ ২৯ ॥

এ দিকে ভরত অবগত ইইলেন রামচন্দ্র প্রত্যাগমন করিছেছেন অতএব তাঁহার প্রস্থানের পর আপনি অযোধাার প্রবেশ না করিয়া বাসার্থ নিশিগ্রামে যে শিবির নির্মাণ করিয়াছিলেন তথা হইতে অমাত্য পুরোহিত ও পুরবাসিগণ সহিত মিলিত হুইয়া আনিবার নিমিত্ত তাঁহার অভিমুখে গমন করি-লেন এই সময় উদ্লেশকৈ গীত বাঁলোর ধনি॥ ৩০॥

ব্রক্ষপতাকাভিহৈ মৈশ্চিত্রধ্বৈদ্ধবিদ্ধ । সদ্ধার্ক্ষ সন্নাহৈ উটিঃ পুর্ট বর্ণ্মভিঃ ।
বর্ণকক্ষপতাকাভিহৈ মৈশ্চিত্রধ্বেদ্ধবিদ্ধ । সদ্ধার্ক্ষ সন্নাহৈ উটিঃ পুর্ট বর্ণ্মভিঃ ।
শোলিকারম্থ্যাভিন্ত তৈ কৈবি পদানুলৈঃ ॥ ৩২ ॥
পারমেণ্ট্যানুপাদায় পণ্যানুচ্চানিচ। পাদয়োন্ত পিতৎ প্রেম্বা বিক্রিম হৃদ্দেক্ষণঃ । ৩০ ॥
পাত্রকে অত্য পুরতঃ প্রাঞ্জলিব। স্পালোচনাঃ । তনাল্লিম চিরং দোর্ভাণে নাপন্নত্তেক্তি কলৈঃ ॥ ৩৪
রামো লক্ষ্মণ দীতাভাণি বিখেভাগ যে অহ্তিমাঃ । তেভাঃ স্বাং নমশ্চক্তে প্রভাভিশ্চ নমস্কতঃ ॥
ধুষ্ত উত্তরাসঙ্গান পতিং বীক্ষা চিরাগতং । উত্তরাঃ কোশলা মালোঃ কির্দ্ধো নন্ত্মুদা ॥ ৩৫ ॥
পাত্রকে ভরতোহ সুহ্লাচামর ব্যক্তনোত্রমে । বিভীমণঃ স প্রত্রীবঃ খেতচ্ছত্রং মরুৎগ্রতঃ ॥ ৩৬ ॥

व्यापदयामी।

ুরেন্ধবোষণ বৃহতা পোষেণ পঠন্তি: ৪০১ । স্বর্ণুসাক্তা: প্রকাং প্রাস্তা যাসাং ভাভি: পতাকাভি: হৈনৈরিতি চন্তারি বথ বিশেষণানি । ০২ । পারমেঠাানি রাজাহানি ছত্ত চামরাদীনি । প্রেন্ধা বিক্লিন্ড্রেদ্যা ঈক্পেচ নেতে বস্ত । ১০ । নেত্রস্বৈ জলো স্থাপন্নালিব। ॥ ৩৪ । বে অহ্তিমাং কুলব্জান্তেভ্যোহ্সি নমশ্চকে ॥ ৩৫ । অবোধ্যা প্রবেশ প্রকারমাহ পাত্রে ইতি সাহিদ্ধি ক্লিভি: ॥ ৩৬ ।

ক্রঃমস**ন্দর্জঃ**।

পাছকেতাৰ্দ্ধকং। বাম্পলোচনোহ ভূদিভি শেবঃ ॥ ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯।

मी विभगाभहत्क शही ।

উত্তরা: কোশলা অবোধ্যাবাদিন:। উত্তরাসঙ্গান্ উত্তরীয়ান্ধুয়ন্ত: কম্পরন্তো নন্তু: ॥ ৩৫ । অবোধ্যা প্রবেশ প্রকারমাহ পাত্কে অগৃহাৎ ভরভোহগ্রবত্তী। বিভীষণ স্থাীবৌ পার্ধায়বর্তিনী চামরব্যজনহত্তী খেভ চ্ছত্রধারী হন্মান্পৃষ্ঠবন্তী । ৩৬ । ৩৭ ॥

তথা অধ্যয়নকারি একাবাদি আকাণদিগের বেদ ধ্বনি হওয়াতে সাতিশন্ন কোলাহল হইল॥ ৩১ ॥ আর যে সকলের প্রান্তভাগ অর্ণম্ভিত, তাদৃশ বহু পতাকা তথা চিত্রধ্বজে শোভিত সদশ সমস্বিত অসংখ্য অর্ণমার রথ, বর্ণ্মবদ্ধ ভূরি ভূরি সেনা,প্রেণীবদ্ধ বহু বহু বরাঙ্গনা এবং পদচারী বহুতর ভূত্য সঙ্গে । ৩২॥

সে যাহা হউক, রাজযোগ্য ছত্র চামরাদি ও উচ্চাবচ বহু মূল্য রত্নাদি গ্রহণ করিয়া গাক্ষাং হইবা মাত্র সমর্থণ পূর্বক ভরত অগ্রজের পদতলে পতিত হইলেন, প্রেমাশ্রু ধারায় ঠাহার হৃদয় ও নয়ন আকুল হইল। ৩০॥

আদে কিতাঞ্জলিপুটে পাছকাৰয় সম্মুধে স্থাপন করিলেন, পরে অশ্রুপ্র লোচন হইয়া নয়ন জলে স্থান করাইতে করাইতে অনেক ক্ষণ পর্যান্ত বাস্ত্ ভারা আলিঙ্গন করিয়া রহিলেন॥ ৩৪॥

খানন্তর রামচন্দ্র লক্ষাণ ও দীতার সহিত মিলিত হইয়া আহ্মণ এবং কুলর্দ্ধ ব্যক্তিদিগকে ন্যস্কার করিলেন, তাহার পর প্রজারা তাঁহাকে নমস্কার করিতে লাগিল। আর উত্তর কোশলাম্থ সমন্ত মানব বছকালের পর আপনাদিগের অধিপতিকে আগত দেখিয়া আনন্দ্রাগরে মগ্ন এবং স্থ উত্তরীর বসন কম্পিত করত হর্ষে পুষ্প মালা বর্ষণ ও নৃত্য আরম্ভ করিল। ৩৫॥

. হে রাজন্। রামচন্দ্র যথন অযোধ্যায় প্রবিষ্ট ইনু তৎকালে ভরত পাতৃকাদ্বয় প্রহণ করিয়াছিলেন, বিভীষণ ও হুগ্রীব চামর এবং ব্যক্তন লইয়াছিলেন প্রবন্তনয় খেতচ্ছত্রে ধারণ করিলেন॥ ৩৬॥ ধক্মি বলাঞ্জায়: দীভা তার্থকিন গুলুং। অবিজ্ঞান গং পড়ানং হৈরাং বর্গান্ধিরার পা ।
পুলাকন্থাক্তঃ স্ত্রীভিন্ত গ্রমান গর্গ বিলিভিঃ। বিরেজে ভগবান রাজন এই গড়ান ইবাদিতঃ ॥৩৭॥
ভাজাভিনিশিভঃ দোহণ দোহণাং প্রাবিশহ পুরীং। প্রাক্রিশ রাজভবনং গুরুপারীঃ স্বমাতরং।
গুরুন্ব বর্গাবরজান পুলিভঃ প্রভাপ্রারহণ। হৈদেহী লক্ষ্মণশৈচ্ব ঘণাবহ দুমুপিয়তুঃ ॥ ৩৮॥
পুজান স্বমাতরস্তান্ত প্রাণাংক্তর ইবোপিভাঃ। আরোপ্যাকেইভিষিকক্ষোবান্দোহি বিজ্ঞাং শুচঃ।
আটা নিক্ষ্মির বিধিবহ কুলার্টরেঃ দমং গুরুঃ। অভ্যাধিকদ্যথৈবেন্দ্রং চতুঃদিল্লাদিভিঃ।
এবং কৃত শিরঃ স্নানঃ স্বাদাঃ প্রথালক্ষতঃ। স্বলক্ষ্মির স্বাদোভিন্ত ভিভিন্নিরা বভৌন গ্রাপ্রানির ভা বর্ণাপ্রাম গুলাদিভঃ।
আহীদাসনং ভারা প্রণিপত্য প্রমাদিতঃ। প্রজাঃ স্বধ্র্মানির ভা বর্ণাপ্রম গুলাহিছাঃ।
জুগোপ পিত্রজামো মেনিরে পিতরক তং। ত্রেভারাং বর্ত্তানায়াং কালঃ ক্তগ্রেমাহ্রবং ১

अध्वयामा ।

ষত্নত নিৰ্দেষ্ট্য ভানু ॥ ৩৭ ॥
ভক্ষপত্মীঃ কৈকেষ্যাল্যাঃ বয়স্তান্ অবয়স্থাংশ্য ॥ ৩৮ ॥
বাস্পৌট্যরভিষিক্ত ঃ ভচঃ শোকান্ বিজ্ঞ ॥ ৩৯ ॥

প্ৰীবিশনাগচক্ৰ বস্তী।

ভরণদ্ধীঃ কৈকেব্যাদা। স্মাতরং কৌশলাক। ভরনভাশে ভরণোকান্ বনিধা বরভানবরলাংক প্রতাপ্রমুৎ ১৩: প্রিতঃ সন্ । ৩৮ ॥

ষ্পাবৎ ষ্থে।চিভং বন্দনাদিভি: সমাগুপের্জু: ॥ ৩৯ ॥

শক্তিম ধনুক ও তুণ, সীতা তার্থেদিকের কমগুসু মার মাসদ খড়গ ও ঋক্ষরাজ স্থানির বর্ম ধারণ করিয়া আদিলেন। রামচন্দ্র পুষ্পক রথে অবস্থিত হইয়া যথন নারীগণ কর্তৃক প্রংশদিত এবং বন্দিরন্দ কর্তৃক স্তত্ত্বেন ভখন গ্রহণণ সহ সমুদিত নিশাকরের যজেপ শোভা হয়,তাঁহার তজ্ঞপ শোভা হইয়াছিল ॥ ০৭ ॥

দে যাহা হউক, ভাতৃকর্ত্ব অভিনন্দিত হইয়া রামচন্দ্র উৎসবাধিত পুরীমধ্যে প্রবেশ করিলেন। তদনন্তর রাজভবনের অভ্যন্তর গিয়া কৈকেয়ী প্রভৃতি গুরুপত্নী এবং আপনার জননা তথা গুরুদিগের পূজা
করিলেন, পরে বয়সা ও কনিষ্ঠ ব্যক্তিদের কর্তৃক পূজিত হইয়া তাহাদিগেরও যথোচিত সম্মান করিলেন, পশ্চাৎ দীতা ও লক্ষ্মণও যথা নিয়মে সেই সকল গুরুজনের সন্ধিধানে গমন করিলেন ॥ ৩৮ ॥

প্রাণ প্রাপ্ত হইলে যেমন দেহ উপিত হয় তাহার স্থায় স্ব স্ব তনয় পাইবামাত্র মাতৃগণ সহসা
উপিত হইলেন এবং তাহাদিগকৈ ক্রোড়ে আরোপণ করিয়া বাল্পগারি দারা অভিষেক করত শোক
সন্তাপ পরিভাগি করিলেন। অনস্তর ৰশিষ্ঠ মুনি রামচন্দ্রের কটা মোচন করাইয়া কুলর্ম্ব ব্যক্তিদিগের
সহিত মিলিয়া সাগরোদক প্রভৃতি দারা দেবেক্রের স্থায় অভিষেক করিলেন। হে রাজন্! রামচন্দ্র
উক্ত প্রকারে শিরংমাত হইয়া প্রথমে স্থামাভন বসন পরিধান করিলেন, পরে মাল্য ও অলকারে অলক্রত হইয়া বসন ভ্রণে ভ্রতি আতৃবর্গ তথা ভার্যার সহিত দীপ্তি পাইতে লাগিলেন। তদনত্তর
ভরত প্রণিত পূর্বক প্রস্ক করাইলে রাজসিংহাসন গ্রহণ করিলেন এবং স্বধ্র্ম নিরত ও বর্ণাঞ্জ্ম
ভণোপেত প্রজা পুঞ্জকে পিতৃবহ পালন করিতে প্রস্ত হইলেন। প্রজারাও তাঁহাকে পিতা বলিয়া
মান্ধ করিতে ধাকিলা। তের রাজন্। সর্ব্ম প্রাণির স্থাবহ ধর্মজ্য রাজাভ্রত রাজা ভ্রেকে পর মৃদিও

রামে রাজনি ধর্মজ্ঞে দর্বভূত স্থাবছে। বনানি নদ্যে গিররো বর্ষাণি দ্বীপ দিছবং। দর্বে কামত্বা আসন্ প্রজানাং ভরতর্বভ। নাধি ব্যাধি জ্ঞরা গ্লানি তুংধ শোক ভ্রন্ত ক্ষাং। মৃত্যুশ্চানিচ্ছতাং নাগী দ্রামে রাজ্মগুধোকজে। একপত্রীব্রতধরো রাজ্মি চরিতং শুচিং। স্বধর্মং গৃহমেধীয়ং শিক্ষান্ স্থামাচরৎ। প্রেলানু স্বভাগ শীলেন প্রপ্রাবনতা দত্রী। ভিয়া হিয়াচ ভাবজ্ঞা ভর্তুঃ গীতা হরশ্ননঃ॥ ৩৯॥

/ ॥ * ॥ ইতি ঐভাগণতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষমে প্রীরামচরিতে দশমোহধ্যায়ঃ ॥ * ॥ ১০ ॥ * ॥

প্রীশুক উগ:চ ॥

ভগবানাস্থানাং রাম উত্তম কল্পকৈ:। সর্ববেদবময়ং দেবমীজেহপাচার্য্যবাদ্মধৈ:।
হোত্রেস্কুদদাদ্দিশং প্রাচীং ত্রহ্মণে দক্ষিণাং প্রভু:। অধ্বর্য্যবে প্রতীচীং বা উত্তরাং সামগার সং ॥১
আচার্য্যায় দদৌ শেষাং যাবতী ভৃত্তদন্তরা। মন্তুমান ইদংকুৎস্নং ত্রাক্ষণোহর্ছতি নিম্পৃত:॥ ২॥

শ্রীগরস্বামী।

ইভিনৰমেদশনঃ **##**#

ভাৰতে কাদশেষ যোগামাবসামূহলৈঃ সহ। যজাদি যজকারেশো রাম্ভানসূর্ণাতে ৪১৪ তদ এবং ভালাং দিশাং মধে। যাবভী ভূতাং এ:কাণ এবার্ছ তীতি মস্ত্রানঃ ৪২৪

ক্রম্পর্কঃ

॥ ♦ ॥ ইতি আঁমছাগৰত নৰ্মক্ষে ে **উজীৰগোমামিকৃত ক্ষেস্নতে দশ্মোহধারে: স্মাপ্ত: ॥ ● ॥** ভগৰানাক্ষাকান্যবী**ক ইতি লোক্স**প্রহার্থমিতার্থ: ॥ ১ । ২ । ৩ । ৪ ॥

अविश्वनाश्रक्तवडी ।

॥ ৽॥ ইতি সাবার্ণদর্শিলাং হ্রিণাাং ভক্তেচ্চসাং। নব্যে দশ্মেহ্ধার: সৃক্ত: স্বতঃ এ ০ ॥
মবাংশ্চকার ভতাাজ দীতাং সাবিবরং প্তা। ভাতৃন্ দিবিল্লেহ্যুঙ্কে রাম একাদশে বিভূ: ॥ ০ ॥
আাল্মনাল্মানমিতি ব্জসাধনক ব্জনীয়ত্চ অভিরম্ভাভাবাৎ ॥ ১ ॥
ভদস্করা তাসাং দিশাং মধ্যে যাবতী ভূ অং শেবভূতাং আক্ষণজাতিমের ব্দানপানীকরোতি ভার হেতুঃ। ইদং কুংল্মের

তথন ত্রেতাযুগ প্রবর্তমান ছিল তথাচ দেই কাল সত্যকালের সমান হইল। সমুদ্র নদ নদী গিরি অরণ্য ছীপ বর্ষ দকলই প্রকাদিগের পক্ষে কামধুক্ হইল। অপর অধােক্ষে রামচন্দ্রের রাজত্বে রাজ্যমধ্যে আধি ব্যাধি জরা শােক ছুঃখ ভয় প্লা'ন অথবা ক্লান্তি কিছুই রহিল না, ইচ্ছা না করিলে মৃত্যু কাহারও প্রতি আক্রমণ করিতে সমর্প হটত না। হে রাজন্। রামচন্দ্র শুচি ও একপদ্ধীরতধারী হইয়া লােক-দিগকে রাজ্যিদিগের অনুষ্ঠিত গৃত্যেধীয় ধর্ম উপদেশ করত স্বয়ং অনুষ্ঠান করিতে লাগিলেন। আর ভাবজ্ঞা গীতাদেবী প্রপ্রয়াবনতা হইয়া প্রণয়, আনুস্ঠ্য, শীল্ডা, ভয় এবং লক্ষ্যা ছারা তদীর চিত্ত হরণ করিতে তৎপর হইলেন। ৩৯ ॥

॥ 🗱 ॥ टेजि नवस्य मण्य ॥ 🗱 ॥

একাদশাধ্যায়ে অফুজনিগের সহিত রামচন্দ্রের অযোধ্যায় বাস এবং যজানির অফুষ্ঠান ॥ • ॥
শুক্দেব কহিলেন তদনন্তর ভগবান্ রামচন্দ্র আচার্য সমীশ্বত হুইয়া উত্তমোভ্য যাগ যজ্ঞ করিয়া
স্কাদেব্যয় পর্ম দেব আপনারই অর্চনায় নিযুক্ত হুইলেন। যজ্ঞান্তে হোতাকে পশ্চিম নিক্, এক্ষাকে
দক্ষিণ্দিক্, অধ্বযুদ্ধিক পশ্চিম নিক্ এবং সামগানকারিকে উত্তর্গাদক্ দান করিলেন॥ ১॥

ু आत्र के मकत पिरकत মধ্যন্তি যত ভূমি ছিল। "এ সমুদার আক্ষণেই পাইবার যোগ্য" ইহা

ইত্যয়ং তদলস্কার বাসোভ্যানবশেষিত:। তথা রাজ্ঞ্যপি বৈদেহী সৌমস্বল্যাবশেষিতা।
তেতু আক্ষণদেবস্য বাৎসল্যং শীক্ষ্য সংস্কৃতং। প্রীতাঃ ক্লিমধিরতল্ম প্রত্যুপ্তিদং বভাষিরে এ০ঃ
অপ্রতঃ ন স্থান কিং মু ভগবন্ ভ্রনেখর। ধলোহন্তর্লয়ং বিশ্য তমোহংসি ষরোচিষা ॥ ৪ ॥
নমো জ্রন্ধান্যের রাসায়াকুঠনেধনে। উত্তমংশ্যাক ধুর্যায় নাত্তদণ্ডাপিতাভ্রুয়ে!
কদাচিল্লোকজিজ্ঞান্থ পূঁচে।রাজ্ঞানলক্ষিতঃ। চরন্ বচোহশুণোজ্ঞানো ভার্যামৃদ্দিশ্য ক্স্তুচিৎ।
নাহং বিভ্নিমি বাং মুন্তানসভাং পরবেশাগাং। জ্বৈণোহি বিভ্যাৎ সীতাং রামো নাহং ভ্রেল পুনঃ ॥৫

श्रीभवश्राभी।

ভিষয়ং জীরাম: তত্তনা সৌমদলামাভিদ্ণাদিকং তাবন্ধাত্রমবশেষিত যন্তা:। তৰাভিবিক্তং হিরণাদি সর্বাং দদাবিভার্থ: ১০ দ অপ্রস্তাং অপ্রদন্তং বিশ্র প্রবিশা । ৪ । ক্তত্তনতৈ মুনিভিরপিতে চিত্তে ক্রতাবতবা বস্তু তবৈ তেছপিতাবস্থী বেনেভি বা : ১ ।

'ক্রম∗করে'ড:

অথ বৈরাগ্য লীল। বাঞ্জকং মন্তালোক পরিত্যাগ দীলারস্তং কর্তুং লক্ষামাই ক্ষাচিদিতি। ক্স্যুচিৎ কুছ-ভিদক্ষাদাগতস্য ভিত্র বসভোহসরল সত্সা । ৫ ।

बीविभनाषहळवडी ।

ভূতশং ব্ৰাহ্মণ এবাছ তি, যতৈ। নিস্পৃত ইভি মন্তমান: ॥ ২॥

ভিদ্ৰত্বতি দেগছালত বিজ বাতিরিকানামছেবা মৰ্কারাদীনামপি দ্রভাং সীতাতু দেহাদপুত্রিগালকার্দিকং দ্দা-বিভাাহ সৌম্পলাং নাসভেরণ চূড়াদিমাজস্বশেষিভং বভাং সা ৮০ ছ

কিং অপ্রাক্ত অপিতৃ সর্পানের প্রাদত্তঃ যদ্যাম। বিশ্ব প্রথিত অত্যেহনেন পৃথীরাজ্যোনালমিতি ভাবঃ ॥ ৪ ॥ অভাগতে । নিবৈর ভক্তে লোহি শিবজ্যী যেন তলৈ ॥ ৫ ॥

মনে করিয়া উপরত স্পৃহ হওত অবশিষ্ট স্মন্ত আচার্যাকে দিলেন। ২।

এই প্রকারে সম্দায় দান করাতে সে সময় রামচন্দ্রের বসন ও ভূষণমাত্র অবশিষ্ট রহিল, আর রাজমহিষী জানকীও আভরণমাত্রে অবশেষিতা হুইলেন। পরস্ত আজাণদেব প্রীরামচন্দ্রের ঐ রূপ বাং-সল্য অবলোকন করিয়া সেই সকল আজাণের মাতিশয় প্রীতি জামিল। তাঁহারা স্তব করিতে করিতে সেই সমস্ত বস্তু প্রত্যপণি পূর্বক কহিতে লাগিলেন। ৩॥

হে ভগবন্! হে ভুবনেখর! আপনি আমাদিগকে কি না দিয়াছেন ? অর্থাৎ আপনা কর্ত্ক সকল ই প্রদত্ত হইয়াছে, যে হেতু আপনি আমাদিগের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়া স্বীয় প্রভা দারা আমাদের অন্তান ভিনিরাবিনাশ করেম ॥ ৪ ॥

প্রতিষ্ঠা আপনি অক্ষণ্যদেষ, অক্ষ্ঠমেধানী, আপনাকে আমরা নমস্বার করি। ভগবন্! আপনি উদ্ধা: শ্লোকদিগের অগ্রগণা, মুনিগণও স্থা চিত্তে অপনকার চরণহর সতত চিন্তা করেন। তদনন্তর কোনা সময়ে রামচন্দ্র আপনার প্রতি রাজ্যন্থ লোকের কি রূপ ভাব ভক্তি, অগগত হইতে বাসনা করিয়া রক্ষনীযোগে ছাম্বেশে অলাক্ষ্ ত হইনা অমণ আরম্ভ করিলেন। এক দিন একাকী অমণ করি-তেছেন এমন সময় এক ব্যক্তির ভার্যার উদ্দেশে কথিত বাক্য তাঁহার কর্ণগোচর হইল। সে ব্যক্তি শ্রীয় বনিতাকে কহিতে ছিল, 'তুই পরের অর্থে গিয়া থাকিস্, তুই অতি তুইা, অসতা, আনি আর্থ তোর ভরণ পোষণ করিব না, রামচন্দ্র স্থোগলোকন করিব না । ৫ ॥

हैि त्त्कृष्ट्यूथाम् ताताधामगः विदः । প্তा। जीद्दन् मा जाङ्का आखा आद्वानामाः । चारुक्यागृद्व कात्त् यद्भी मा समूद्व सुद्वी ॥ ७ ॥

কুশোলৰ ইতি থ্যাতে) তয়ে শহুকে কিয় য় য় নি:। অক্লাশিচ ক্কেত্শ্চ লক্ষাণদা আছে । তক্ষ: পুকল ইত্যান্তা: ভরতদা মহীপতে । হাবাহ: গ্রুত্দের্শ্চ শক্তে সদা বছুরতা:। গদ্ধবান কোটিশো জ্পে ভরতো বিজ্যে দিশাং। তদীয়ং ধনমানীয় দর্বং রাজে ভাবেদয়ং। শক্তে স্বাং নাম বৈ পুনাং।
শক্তে স্বাং নাম বৈ পুনাং।
য়্নো নিক্ষিপ্য তনয়ো দীতা ভক্তা বিবাদিতা। ধ্যায়ন্তী রামচরণো বিবরং প্রবিবেশহ। ৭॥
তৎপ্রেছা ভগবান রামে। ক্রম্মপি ধিয়া শুচঃ। আরং শুনাং গুণাং গুণাং বাং বাংশিকে। দেনজ্মীশকঃ। ৮

श्रीश्रद्धामी ।

অনংবিদ: অঞ্চানাৎ অন্তৰ্মনী গর্তিণী দতী প্রাচেত্রেগা বা্স্ফাকি, গুক্তাশ্রমং প্রাপ্তা ॥ ৬ ॥

क्तियाः जाङकर्यामाः॥ १॥

ঈশবোহলি ওচোরোজ্ং নাশকোৎ ৫৮ ৪

क्रम्मक्रः।

লোকাৎ রাষ্ট্র'স্তরস্থাৎ ভীতেন শঙ্কমানেন ॥ ७ ॥

জীসলিনাং গতিমিভালি পূর্বমুক্তং বথার্থত্বে জচুর্ং অধীয়স্বংকুরুণ্ং দর্শুর্জি। তচ্চুত্বিজ্ঞা, সমুরোলীভাগেরজাপালর অহো তস্যা ভক্তি প্রণানাং মহিমেতি ভাবং ৪৭।৮॥

এবিখন।প্রক্রবর্তী ।

অসংবিদ: জ্ঞানশৃস্তাৎ প্রাচেতলো বাল্মিক:॥

অন্তর্বতী। ৬॥ ভর্ত্বিছেদ ছঃখনসহিষ্ণু ভূবোবিবরং প্রাবিশ্ব॥ ৭॥,

ঈখরোপি রোজুং নাশক্লে।বিতি ভগ্ন প্রেমবশ্রর শভাবাবিতি ভাবঃ ॥ ৮॥

এই কথা শুনিবামাত্র অজ্ঞান অবাধ্য ৰছমুখ লোক হইতে রামচন্দ্রের সাজিপদ ভয় ক্লামাল, গৃহে প্রত্যাগম্ন করিয়া দীতাকে পরিত্যাগ করিলেন। ভীত পত্তি কর্তৃক পরিত্যক্তা হওয়াতে ক্লাক্নিশিনী লাভিণাবস্থায় মহর্ষি বাল্মীকের আশ্রম প্রাপ্ত হইলেন এবং দেই স্থানে সময় পূর্ণ হইলে উচ্ছার চুইটি যুমজ পুত্র প্রসূত্ত ইইল ॥ ৬॥

সেই সন্তানৰয় কুশা ও লব এই ছুই আখ্যায় বিখ্যাত হয়। মহর্মি বাল্লীকি ভাহাদিশের জাত কর্মাদি সম্দায় সংস্কার করেন। হে রাজন্ পরীক্ষিং! এ দিকে অযোধায় লক্ষ্ণের চুইটা পুজ জামিল, তাহাদের নাম অঙ্গদ ও চিত্রকেড়ু। ভরতও ছুই সন্তান উৎপন্ধ করিলেন একের নাম ভক্ষা, বিভীয়ের নাম পুক্ল। শক্রাহের হুইটা তন্ম জালিল যথা হুবাহ ও প্রুত্তেনেন। এ সময়ে ভরত দিবিজারার্থি যাত্রা করিয়া কোটি কোটি গন্ধবি নিহত করিলেন এবং ভাহাদের ধন স্থানিমা, সম্দায় রাজাকে দান করিলেন। আর শক্ষা মধুপুত্র লবন রাজ্যের প্রাণ সংহার করিয়া মধুবনে মধুরা পুরী নির্মাণ করিন লেন, জনকাজ্যলা সীতা ভর্তা কর্তৃক বন মধ্যে বিবাসিতা হুইয়া যে ছুইটা ভনম প্রস্ব করেন কিয়াজন পরে ভাহাদিগকে বাল্লীকি মুনির হত্তে সমর্পণ করিয়া তিনি স্বীয় প্রক্রি প্রিরাষ্ট্রের চরণ খ্যান করিতে করিতে স্বিবরে প্রবিষ্টা হুইলেন । ৭।

के घटनात वार्डा क्षीतामहरस्तत् कर्गागाहत् , इरेट्स युन्छ , जिल्ला, वस्त्र नेश्व , अवः श्रीत वृद्धि वरण

b4

ত্রী পুং প্রদক্ষ এতাদৃক্ দর্বত্তে ত্রাসমাবহ:। অপীখরাণাং কিমৃত গ্রামাদ্য গৃহচেতদ: ॥ ৯ ॥ তত উর্দ্ধং ত্রক্ষচর্ব্যং ধারয়মস্হােৎ প্রভু:। ত্রেরোদশাব্দদাহত্রমগ্রিহোত্রমধণ্ডিতং ॥ ১০ ॥ স্মরতাং হৃদি বিশুস্থ বিদ্ধং দণ্ডককণ্টকৈ:। স্বপাদপল্লবং রাম্মাস্ক্রজ্যােতিরগান্ততঃ॥ ১১ ॥

শ্ৰীধৰ স্বামী ৷

নচাভিচিত্রমেভনিভাহ। ত্রীপুংসরো: প্রসঙ্গ আসজিজাসমাবহঠীতি। তথা বিভক্তেরলুক্ আর্থা। সর্বান্ত নিভি পাঠত স্থান:। কিম্তেভি প্রাস্থিকোজি:। ১॥

अधिरहाजमञ्जूरहार ॥ ১०॥

व्याचायाणि निवः शाम ॥ ১১ ॥

क्रभगमर्खः।

নৰস্ত্ৰাপি ত্ৰীপ্ৰে বিশ্বাহি । প্ৰসঙ্গে ভাদৃশহং দৃশ্যতে ত্ৰাহ ত্ৰীতি। এটাবৃক্ কিন্তু নেতি কাৰ্ক্সং। কৃতঃ সৃহি স্বিরাণাং ক্ষাবোগাদি কিন্তানানিপ সৰ্ব্বে পৰত চেহচ আসং সংসারভর মাৰহতি। আমসা তৃ স্ত্রামেবেভাবং। তরো খেব ভাবং সর্ব্ব প্রবাহাধিক প্রেম সারমর এবেতি ভাবং। বদা কাক্ং বিনৈবারমর্বং। এতাবৃক্ এত তুলাছেন সংভাবামানো যং ত্রীপুং প্রসঙ্গং স তৃ সর্ব্ব আসমাবহ ইতি। অন্ত ত্রীপুমিতি সমাসাম্ভকার্যাভাব আর্বং। আসমিতি পুংভাবশ্চাস্কৃল মুদ্হতীতিবং। অনুকিত্ কলোগে বঠোব ভাবিতি সাণ্যাধী বি করা। ১ ব

্ষীরামস্থানুরাগং বহিরীহয়াপি দর্শরতি তত উর্জুমিতি। তত উর্জুমধ্তিতং ব্রহ্মচর্যাং ধারম্মস্কুহোৎ। তাং বিনা নির্দ্রেদাদিতি ভাবং। অস্থোদশ সাহস্ত্র অগ্নিহোত্তমধ্তিতমকুহোৎ। ১০ ॥

তদনস্তরঞ্জ কৰিরোগ হেতু লোক প্রবাদময় নরলোকং তাজ্বা। নিতা তৎ সংযোগময়ং নিজলোকমেবার্চ্বানিতাাই। বে লোকরক্ষেত্রা কেচিন্তান্তা তেখাঞ্চ সন্ততং স্বয়মেবাসৌ মহাপ্রেয়া ক্ষুর্তি ক্ষেতিচাহ স্বরতামিতি। বিদ্ধং বিদ্ধেন প্রেইয়ব প্রতীত্মিতার্থ:। শিল তৃণাস্কুরে: সীদ্তীতি নঃ কলিল্ডাং মন: কান্ত গছতীতি বং। ইতি গিত্রাজ্ঞাপালন মর্য্যাদা স্বরণং।

शिविधनामा कवा वे ।

আন্তে কামাস্কা: ত্রিবং শ্বরগুত্ত সংসারএব মজ্জতীত্যাই জীপুংসংখা: প্রাস্ক: সমাসাস্তাভাব আর্থ:। ঈশ্বরাণাং ত্রশ্বাদীনামণি সর্ব্বত ইংলোকে পরলোকেচ আসং সংসার মাবহতীতি সং বঠাভাব আর্থ: প্রসঙ্গত প্রাকৃততাং কাম মৃশক্ষাচেতি ভাব:।
এতবেবাধ এতাদৃক্ এতবাে রামসীতরােরিব দৃষ্ট: কেনচিদংশেন ব্যাবহারিকেশৈব নতৃ তাবিকেন নব্বতবােরপীতার্থ:। প্রস্কৃত্যাপ্রাকৃত্যাং কেন ক্রাক্ততাং ক্রেম মৃশক্ষাচেতি ভাব:। অতএবেশ্বরাণামিতি নবীশ্বরভাপীতাুক্তং ১৯৪

ততण ज्यानीखनान् चश्वश्वान् मीटेव्याखर्द्धान मीलाः हकात् ॥ > ॥

কিন্তুল দেশস্থিতানামস্থাপি ভজানাং হাদি দশুক কণ্টকৈৰ্মিছং পাদমিতি তে কণ্টকা জেখাং ঠালোব সহস্ৰ খণং লগন্ত তান্ মুক্তি তান্ কুৰ্মন্তিতি বুলৈঃবৈভি তেবু রামত দরা নাভুদিতি ব্যালছতিঃ। আত্মন এব নতু মার্যা জোতির্যত্ত তৎপরং প্রাণঞা-

শোক সম্বরণ করিতে যত্ন পাইলেন তথাচ এপ্রিসীর অ্সহৎ গুণ রাশি বারম্বার স্মৃতিপথে উদিত হওরাতে একেবারে নিরোধ করিতে তাঁহার সামর্থ্য হইল না ॥ ৮॥ •

হে কুরুপ্রবীর! স্ত্রী পুরুবের আসক্তি সর্বজ্ঞই এই রূপ ভর্প্রদ। ফলত: ঈশ্বনদিগেরও যথন ভরাবহ হইল তথন গৃহাসক্ত চিক্ত আম্য পুরুষদের কথা কি ?॥ ৯॥

সে বাহা হউক, ভদনস্তর ঐ প্রভূ অথণ্ডিত ত্রক্ষচর্য্য ধারণ করত ত্রয়োদশ সহস্র বৎসর যাবৎ অগ্নিহোত্ত করিলেন । ১০ ॥

ভাহার পর দওকারণ্যের কণ্টকে আপনার যে চরণকমল বিদ্ধ হইয়াছিল সারণকারি ভক্তজনের হুদ্য

নেদং যশো রঘুপতে: হার্যাচ্ঞ্রান্ত দীলাতনো রধিকদান্যবিমৃক্তধার:।
রক্ষোবধাজলধিবদ্ধন মন্ত্র পূগৈ: কিন্তুক্ত শত্রুহননে কপয়: দহায়া: ॥ ১২ ॥
যক্ষামলং নৃপদদঃহ্য যশোহধুনাপি গায়ন্ত্যাঘদ্ময়ধয়ে। দিগিতেক্তপট্টং।
তদ্মাকপালবহুপাল কিরীটজুইটগাদামুক্তং রঘুপতিং শরণং প্রপদ্যে॥ ১৩ ॥

विषंद्रपानी।

জলধিবন্ধনং অন্তপুৰ্টগশ্চ রক্ষসাং বধ ইতি ইলং কৰিজিরাশ্চর্যামিৰ বর্ণিত মিদি বশস্কৃতি নঁভৰতি। তত্ত্ব হেতৃঃ অধিক সামান্তাং বিমৃক্তং ধাম প্রভাবে। যুক্ত তম্ভ কিং কপন্ন: সহান্ধাঃ অতঃ স্থতীবাদ্যাপ্রদণং যথা দীলামাত্রং তথৈবেদমদি। যুক্ত ঞ-তদিতাহি স্বাণাং যাক্ষ্রনা আতা সীক্ষতা দীলার্থা তমুর্যেন তম্ভ ॥ ১২ ॥

এবৰিধ লীলা প্রান্তনাল দর্শন প্রাণমতি বক্ত যশ: নৃপাণাং যুধিষ্ঠিরাদীনাং সদঃস্থ ঋষয়ে। মার্কণ্ডেরাদরো গায়স্তি। দিগি-ভেক্রোণাং পট্রদাবরণ রূপং তৎপর্যান্তং ব্যাপ্তমিত্যুর্থ:। নাকপালা দেবা ৰস্থপালাশ্চ বস্থাপালাঃ ভেষাং কিরীটেজ্ ইং পাদাস্কং যক্ত ও রুঘুপতিঃ । পাঠান্তরে তত্তক রুঘুপতে জু ষ্টিং পাদাস্কং প্রপদা ইত্যুর্থ:। ১০ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

আবাদানো জ্যোতী রূপং ম বৈকুঠং ॥ ১১ । ১২ ॥

তদেব মৃত্তরোত্তরং গুণ বিশেষং শ্বরতি চতুর্ভি:।

তথানি তস্য লৌকিক লীলা মাধুর্যাবেশ মহুস্বতা জীবমূক্তাদ্যা অণি পরম অধাবেশালগারতীত্যাই বস্যেতি তথাচ ৰক্ষাতে প্রীকৃষ্ণ লীলায়াং। ভিত্যুত্ত ৰাস্ত ইত্যাদৌ তথাপি মর্ত্যাস্থিধসা বর্ণাত ইতি ॥ ১৩ ॥

श्रीविधनाभहक्तवादी ।

গোচরং অধায়: প্রকাশমগাদিতার্থ:॥ ১১॥

নরলীলছেনৈর চমৎকারং ভক্ত যশোমাধুর্যা মাঝালাতে নতৈখর্য্য দৃষ্টোভাাই। নেদমিতি আসমাগের আত্তনোর্নিতা গৃহীত লীলাবিগ্রহক্ত রক্ষদো রাবণক্ত বধ ইতীদং যশস্ততি নভবতি। ভত্ত হেতু:। অধিক সাম্যাভাাং বিমৃক্তং ধাম প্রভাবো যক্ত তক্ত কিং কৃপয়ং সহায়া:। তেন নরলীলম্ব মাধুর্যোটন্ব সর্বমেতত্বপদাতে ইতি ভাবং ॥ ১২ ॥ '

রামং প্রাপদ্যমানক সর্কোৎকর্ষমাহ যক্ত নির্দ্ধাণ যশং নৃপাণাং যুধিষ্টিরাদীনাং সদঃক্ ঋষয়ো মার্কপ্রোদরো গায়ক্তি দিগি-ডেক্স পট্টং পট্ট শব্দকাসন বাচিত্বাৎ দিগ্গক্তেক্সাক্ষ্ট মিতার্থঃ। তেন যশসং সর্কাদিথিক্ষয়িসেনানীত্ব মুক্তং। নাকপালাঃ দেবেক্সাদ্যাঃ বস্পালা নরেক্সাশ্চ তেখাং কিরীটেজু ষ্টং পাদাৰুক্সং যক্ত তং। জুইমিতি রঘুপতে রিভি পাঠে তত্তেতার্থঃ ॥ ১০ ॥

মধ্যে তাহা স্থাপন করিয়া নিজধান প্রাপ্ত হইলেন ॥ ১১ ॥

হে রাজন্! রামচন্দ্রের সমুদ্রবন্ধন ও অস্ত্র সমূহ দারা রাক্ষণ বধ ইত্যাদি কার্য্য যদিও কবিগণ আশ্চর্য্য বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন, তণাচ তাহা তাঁহার যশংস্তৃতি বলিয়া গণ্য হইতে পারে না, কারণ যাঁহার প্রভাব আধিক্য ও দাম্য বর্জিত, তাঁহার বৈরিবধে কপিগণ কি সহায়তা করিবে ? অতএব হুগ্রীবাদি সমীপে রামচন্দ্রের আশ্রেয় গ্রহণ যজ্ঞপ লীলামাত্র রাক্ষণ বধাদিও তজ্ঞপ লীলা মাত্র জানিবে। হে মহারাজ! আমার এ কথা অযুক্ত, এমত মনে করিও না, দেবগণের প্রার্থনায় লীলার্থ ই ভগবান্ ঐ অবতার স্বীকার করিয়াছিলেন॥ ১২ ॥

অহো। যাঁহার নির্মাল যশঃ দিগন্ত পর্যন্ত ব্যক্তি হইয়া দিগ্হন্তি সকলের আচ্ছাদন গট স্বরূপ হইয়াছে বলিয়া এখনও যুখিন্তিরাদি নরপতির সভায় অঘিগণ নিরন্তর গান করিয়া থাকেন এবং বাঁহার পাদপদ্ম অমর ও ধরণীপাল্দিগের কিরীট সেবিভ, সেই রামচন্তের শ্রণ প্রহণ করি॥ ১৩॥

38

স বৈঃ স্পৃক্টোহভিদৃক্টো বা সংবিক্টোহৰূপতোহপি বা।

কোশলান্তে যযু: ছানং যত্ৰ গচ্ছন্তি বোগিন: ॥ ১৪ ॥

পুরুষোরাম চরিতং শ্রবণৈরুপধারয়ন্। আনৃশংস্থপরোরাজন্ কর্ম বদৈর্বিষ্টাতে ॥ ১৫॥ শ্রীরাজোবাচ ॥

কথং স ভগবান রামো ত্রাত্ব বা ধরমান্তন:। তার্মন্ বা তেহধবর্তত প্রজা: পৌরাশ্চ ঈশ্বরে॥১৬॥ শ্রীবাদরায়ণিক্রবাচ॥

অথাদিশদিষিজয়ে ভ্রাতৃং স্ত্রিভুগনেখর:। আত্মানং দর্শয়ন্ স্বানাং পুরীনৈক্ষত সামুগ:॥ ১৭ ॥

द्यैशवयामी।

স রামঃ সংবিষ্টা উপবেশিতঃ অনুগতো বা বৈঃ তে কোশলদেশৰাসিনঃ সর্কে যতা যোগিনো গছাৰি তৎ স্থানং যযুঃ ॥ ১৪ ॥ আনুশংস্য পরঃ উপশ্যনিষ্ঠাঃ সন্ বিষ্চাতে ॥ ১৫ ॥

সরাম: স্বরং কথমবর্তত লাতৃন্ প্রতি কথমবর্তত। কথংভূতান্ আত্মন: আত্মাংশভূতান্ তামিন্ বা ঈশামে তে লাআনুদয়: তাম্ অনস্তরং কথমবর্তত্তি প্রশালয় ॥ ১৬ ॥

ত্র প্রীরামক লাতাদিব বৃত্তি প্রকারমাহ অবেতি। অনেনৈর লাতৃণামপি তদা**জাহুসারিভয়া** বৃত্তিক্তা অব সিংহাসন

ক্রমসন্দর্ভ:

অপ প্রীসীতাদীনাং পুনস্তন্মিলনং কৈমুভ্যেনাহ। স বৈবেতি। কোশলা ইত্যুপলক্ষণমেৰ। যোগিন ভঙ্জিং দিয়া: ॥ ১৪ । ১৫ ॥ ॥ ১৬ । ১৭ । ১৮ । ২০ । ২২ । ২৩ । ২৪ । ২৫ ॥

अविश्वनाथहळावळी ।

সংবিষ্টঃ নথ্যাৎ হৈঃ সংহাপবিষ্টঃ শল্পিতো বা। তে কোশলদেশবাসিনঃ যোগিনো ভক্তিযোগবস্তঃ স্থানং বৈকুঠা ॥ ১৪ ॥ আনুশংস্য পরঃ ক্রোহ্য শ্রোমৎসর ইত্যর্থঃ ॥ ১৫ ॥

আত্মনো ভাতৃন্ প্রতি কণমবর্ত্ত স্বয়ং বা ক্রমবর্ত্ত ভিমিন্ ভারোদয়: ক্রমবর্ত্তে প্রেম্প্রয়ং ॥ ১৬ ॥

ভাতৃন্ দিখিলয়ে আদিশদিতি, ভাতৃণাং তদর্শন রূপং স্মৃথ মপি পরিহায় তদাজাপালন রূপা তদ্মিরহুর্তিরজা। রামস্যাপি তেব্ সেহাততদেশাধিকারদান রূপা বৃত্তিরজা। স্থানাং স্থানাং স্থানাং দেওতি প্রজাত পৌরাংকেতি প্রজাত দেশিন কুপাবলোকাদি দান রূপা তসা বৃত্তিরজা। পুরীমৈকতেতি স্বয়ং কথমবর্ততেতাস্যোত্তরং। অভতস্যেক্ণীরাং পুরীং বর্ণয়তি আসিজেত্যাদি স্তরাং মতামিক সমুদ্ধাং বেতি বিতর্কে। বাসিত গামিবেতি পাঠে বাসিতাং কামোত্রতাং গামিবেত্রগাঁ। সমাসাভাভাব আর্থ: ১০৭১৮

অযোধ্যানিবাসী পুণ্যাত্ম। যে সকল ব্যক্তি সেই রাষ্চন্দ্রকে স্পার্শ অথবা দর্শন করিয়াছিলেন কিন্তা বাঁহার। তাঁহাকে উপবেশন করাইয়াছিলেন অথবা বাঁহারা তাঁহার অনুণত হইয়াছিলেন তাঁহারা সকলেই যোগিগণ যে ত্থানে যান তথায় গমন করিয়াছেন ॥ ১৪॥

হে রাজন্। যে পুরুষ শ্রবণ যোগে শ্রীরাসচচ্চের এই উপাথ্যান ধারণ করিবেন তিনি উপশম নিষ্ঠ হইয়া অসংশয় কর্মা বন্ধ হইতে বিষ্কুক্ত হইবেন ॥ ১৫॥

তদনন্তর রাজা পরীকিৎ জিজাদা করিলেন একান্! ভগবান্ রামচন্দ্র স্থাং কি প্রকারে বর্তমান ছিলেন ? ওাঁছার আপনার অংশ স্বরূপ যে ভাতৃত্রের তাঁহাদের প্রতি তিনি কি রূপ ব্যবহার করিছেন। অপর সাক্ষাৎ পরমেশ্বর স্বরূপ রামচন্দ্রের প্রতি সেই ভাতৃগণ ও প্রজাপুঞ্জ এবং পুরবাদী সকলেই বা কি প্রকার আচরণ করিত ? ॥ ১৬ ॥

শুকদেব কহিলেন রাজন্। ত্রিভ্বনের ঈশ্বর রামচন্দ্র অযোধ্যায় প্রত্যাগত হইয়া রাজিদিংহালন শীকারানস্তর ভাতাদিগকে দিখিলয়ার্থ আদেশ করেন, পরেজ্ঞাতিগণের প্রতি পাঞ্জীয়তা প্রকাশ করিয়া ----

আসিজমার্গাং প্রোদেঃ করিণাং মদশীকরৈঃ। স্বামিনং প্রাপ্তনালোক্য মন্তাং বা হতরামিব॥
প্রামাদ গোপুর স্তা চৈত্য দেশগৃহাদির। বিশ্বস্তহেমকলসৈঃ পতাকাভিশ্চ মণ্ডিতাং ॥
প্রৈ: সর্বৈত্তরম্ভাভিঃ পট্টিকাভিঃ হ্যাসসাং। আদশৈরংশুকৈঃ প্রগ্ভিঃ কৃতকোতৃকভোরণাং॥১৮
তম্পেয়্স্তর তরে পৌরা অর্হণপাণ্যঃ। আশিষে। যুযুদ্দেবি পাহীমাং প্রাক্ তয়াছ্ভাং॥ ১৯॥
ততঃ প্রজা বীক্ষ্য পতিং চিরাগতং দিদৃক্ষয়োৎস্টগৃহাঃ গ্রিয়োনরাঃ।
আরুছ হর্ম্যাণ্যরবিন্দ লোচনং ন ভ্পনেত্রাঃ কৃষ্ঠমরবাকিরন্॥ ২০॥
অপ প্রবিত্তঃ স্বৃহং জুইং হৈঃ প্রবিরাজভিঃ। অনস্তাধিলকোষ্যান্যমনর্য্যাক্সপরিচ্ছদং॥ ২১॥

वीयत्रश्रामी।

शीकावानस्त्रः । ১१॥

পুৰীং বৰ্ণহতি ত্ৰিভিঃ। প্ৰোদকৈৰ্মদৰিক্তিক আসিকা মাৰ্গা বস্থাং। স্বভরাং মন্তামিৰ সমৃদ্ধাং। বেতি বিভৰ্কে বাসিতামিতি পাঠে বাসিতাং কামোল্লভাং গামিবেতাৰ্থঃ॥ ১৮॥

পৌরাণাং তমিন্ র্তিমাহ তম্পেয়্রিভি। বরাংরপেণ ছয়োজ্তামিমাং পৃথীং পাহীতি । ১৯ ॥ প্রামানাং তম্মিন্ রুতিমাহ ততঃ প্রজা ইতি । ২০ ॥

খনং কণম বর্ততে তাতের মাহ অপেতি বাবং সমাপ্তি। খগৃহং প্রবিষ্টঃ সন্তখিন্রেম ইতি পঞ্চেম নাৰমঃ গৃহং বর্গতি সাহিছিল্ডিঃ। অনেতা বেহথিলা রম্পানাং কোবা জৈরাড়াং। অন্তাগি উর্বঃ পরিজ্ঞা ব্যিন্ । ২১॥ ,

এবিখনাপচক্রবন্তী।

পৌরাণাং ত বিরম্ব ডিমাত তমিতি ইমাং পৃথীং প্রাক্ররাহরণে ॥ ১৯ ॥
প্রাকানাং ত বিন্তু ডিমাত। তত ইতি। চিরাগত মিতি বনবাদাগামন সময় ভব দর্শনিমিদং জেরং ॥ ২০ ॥ ।
সমং কথমবর্ততে তাস্যোত্তর বিভারেণ প্রয়াই অবে গাদিনা ॥ ২১ ॥

স্হচরগণ সহিত নিরম্ভর পুরী নিরীকণ করিতে প্রবৃত হয়েন ॥ ১৭ ॥

তাঁহার রাজ্যাভিবেকাবধি অযোধ্যাপুরার বল্প সকল অহরহ: অগন্ধি সালিলে তথা হস্তিগণের সদজলে সিক্ত হইত। অপর ঐ পুরী আপনার স্বামি প্রাপ্ত হইয়া সর্বতোভাবে সমৃত্তি সম্পানের স্থায়

হইয়াছিল। তত্ত্বে প্রাসাদ, গোপুর সভা, পাষাণাদি বন্ধ, দেবায়তন প্রভৃতিতে জলপূর্ণ স্বর্ণকৃত্ত সভত
বিভাপ্ত থাকিত। সর্বত্তে সর্বাদা পতাকা শোভা পাইত। বৃত্ত সহিত গুরাক, রস্তা তথা অশোভন
বসনপট্টিকা,অপর আদর্শি, বস্ত্র,মাল্য ইত্যাদি দারা স্থানে স্থানে নিয়ত সঙ্গল ভোরণ রচিত হইত ॥১৮॥

আর যেখানে যেখানে রামচন্দ্র গমন করিতেন পুর্বাসিগণ উপায়ন হল্ডে লইয়া দেই ২ ছানেই উপস্থিত হইত এবং এই বলিয়া আশীর্ষচন প্রয়োগ করিত, হে দেব। আপনি পুর্বে বরাহ রূপে এই অবনীর উদ্ধার করিয়াছিলেন এক্ষণে ইহাকে প্রতিপালন করুন॥ ১৯॥

রাজ্যন্থ প্রজাপুঞ্জ বছকালের পর আপনাদের অধিপতির আগমন দম্বাদ পাইয়া দর্শন বাসনায় স্ত্রী পুরুষ সকলেই স্ব স্থা সদন পরিত্যাগ পূর্বক হর্ম্মপৃষ্ঠে আরু চু ইয়াছিল এবং অবিভূপ্ত লোচনে অর-বিন্দলোচন রামচন্দ্রকে অবলোকন করত তত্পরি কুমুম বর্ষণ করিয়াছিল ॥ ২০ ॥

দে যাহা হউক, রামচন্দ্র যথন অভবনে প্রবিষ্ট হরেন তথন যদিও তাঁহার আছ্মীয় নৃপতিগণ পূর্বেতাহা ভোগ করিয়াছিলেন তথাচ অনম্ভ অথিল রত্নাদির কোষে তাহা পরিপূর্ণ তথা বছ বছ সহামূল্য পরিচহদে অগজ্ঞিত ছিল ॥ ২১॥

বিদ্রান্ত স্থান বিদ্রান্ত স্থান প্রান্ত কর্মান কর্মান করিছে আনি কর্মান ক্ষিত ভিত্তি । ২২ ॥
চিত্র অগ্তি: পদ্ধিকাতি বাসোমণিগণাংশুকৈ: । মুক্তাক লৈশ্চিত লাসৈ: কান্তকানোপপতিতি: ॥২০॥
ধূপদীপৈ: অরভিতি মণ্ডিতং পুষ্পমণ্ডনৈ: । স্ত্রীপুংতি: অরসঙ্কাশৈ জুক্তিং ভূষণভূষণা: ॥
তিমিন্স ভূগবান্ রাম: প্রিয়রা স্থিয়েই রা। বেমে স্থারাশ ধীরাণাম্যভ: সীতরা কিল ॥ ২৪ ॥
বুজুজেচ যথা কালং কামানভানপীভূরন্। বর্ষপ্রান্ বহুন্গামভিধ্যাতাজ্যি পল্লব: ॥ ২৫ ॥
॥ ॥ ইতি প্রভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈরাসিকাশং নবমক্ষমে প্রীরামচরি-

॥ *। ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষকে শ্রীরামচরি-তমেকাদশোহধ্যায়ঃ ॥ *॥ ১১ ॥ #॥

গ্রীশুক উবাচ 🛙

अधितवामी ।

বিজ্ঞমনর। উজ্বরা শেহলো। যেবু তৈহ বির: খজৈ: হলৈ: তৃতীরাস্তানাং মণ্ডিভমিতি তৃতীয়েনামর: । ২২ ।
বাসনাং মণিগণানাঞ্ অংশুকৈ দীপ্তিভি: চিৎ চৈত্তঃ তহত্ত্তানৈ কৃজ্জলৈ: যথা চিদিতি কচিৎ কচিৎ বৈছ্যাত্তভালিবু ব্ধা
শোভসুজ্জলৈস্কাকলৈস্ভিতমিত।ধি:। কাস্তা: কমনীরা: কামোপপত্ত্যো ভোগসাধনানি ভাভি: । ২০ ॥

ভূৰণানাং ভূৰণভূতৈঃ ॥ ২৪ ॥ নৃশাং মধ্যে বছা নৃভিরভিধ্যাতমভিবু পরবং ৰচ্ছেভি ॥ ২৫ ॥

॥ 🕶 ॥ हे डि नवस्य धकानभः 🛚 🕶 🛭

বাদশে বামপ্তাত কুশীতাবম উচাতে। এবনিক্।কু প্তাত লশানতে রিভোহ্যর: । । ॥

क्रथममर्खः ।

॥ 🕶 । ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্ষে শ্রীদীবগোম্বামিকত ক্রমসন্দর্ভন্য একাদশোহণ্যার: সমাপ্ত: ॥ 🛊 ॥

🚨 বিখনাপচক্রণতী ।

বিজ্ঞনমন্ত্ৰ উত্থবা দেহলো হেবু তৈৰ্বিরে:। তৃতীরাস্তানাং মণ্ডিতমিতি তৃতীয়েনাবর:। বাসসাং মণিগণানাং চাং তকৈ:। চিত্ত-ভিত্তেক্ললাসৈ নিজ্মবৈ বিতি সর্কোষাং বিশেষণ্সিদং পূর্ব্যা অধ্যাকৃতভাৎ কাস্তা কমনীয়া ভোগানাং উপপত্তিঃ সিদ্ধিত তৈরিতাপি সর্কোষাং বিশেষণং ঃ ২২ । ২০ ঃ

তিমিন্মগৃহে ॥ ২৪ ॥ নৃণাং নৃতিঃ ॥ ২৫ ॥

म । ইতি সারার্থদর্শিকাং হরিণাাং জক্তচেডসাং। নবনৈকাদশোহধারে: সলত: সলত: সভাং । । । ।

তথাকার বাবের দেহলী (স্বারাতাস্থান) সকল বিক্রমময়, স্তম্ভশ্রেণী বৈদুর্ঘ্যময়, গৃহতল মরকতময় ও অতি স্বচ্ছ, আর ভিত্তি সকল ক্ষটিকময় ও অতিশয় উদ্দীপ্ত ছিল ॥ ২২ ॥

অপর দেই ভবন বিচিত্র পুজামাল্য, উৎকৃষ্ট পট্টিকা এবং বসন ও রত্ব সমূহের কিরণে উদ্দীপিত তথা চৈত্রত তুল্য উজ্জ্ব মুক্তাফলে ও কমনীয় ভোগ সাধন দ্রব্য সমূহে সর্বতোভাবে মনোহর ছিল ॥২০ অপিচ অপদ্ধি ধূপদীপে অবাসিত ও পূজা মন্তনে মণ্ডিত আর অলকার সকলেরও অলকার স্বরূপ দেব-তুল্য ত্রীপুরুবে নিষেবিত ছিল। ভগবান্ রামচন্দ্র যদিও আ্যারাম মুনিগণের অগ্রগণ্য তথাচ দেই তেবনে স্বীয় স্থিয়া প্রিয়া প্রিয়া ব্যহিত ক্রীড়া করেন ॥ ২৪॥

আর অক্সের অপীড়ায় বহু বৎসর যাবৎ যথাকালে অস্থান্য অভিলয়িত ভোগ করিয়াছিলেন। তদা-নীস্তন মানবমাত্রে নিরস্তর তাঁহার পাদপল্মের অসুধ্যান করিত ॥ ২৫ ॥

॥ *। देखि नवस्य धकामण ॥ *॥

चानण অধ্যায়ে জীরামতনয় কুণ এবং ইক্ষাকু পুত্র শশাদের বংশ বিবরণ । । ॥

কুশস্ত চাতিধিন্ত মানিষধন্ত ংক্ত তোনভঃ। পুশুরীকোহণ তৎপুদ্ধঃ কেমধন্বা ভবন্ত ওঃ। ১ । দেবানীক ভারোহীনঃ পারিষাতোহণ তৎ হৃতঃ। ততোবলন্ত মান্দ্রনাভোহক সম্ভবঃ ॥ সগণন্ত ২ হৃতন্ত মানিধৃতি শ্চাভবং হৃতঃ ॥ ২ ॥

ততে। হিরণ্যনাভোষ্ড্দেষাগাচার্যস্ত জৈনিনে:। শিষ্য: কৌশল্য আধ্যাত্ম্যং যাজ্ঞবক্ষ্যো ইষ্যগাদ্যতঃ ॥
যোগং সহোদয়মুষিষ্ঠ দয়গ্রান্থিভেদনং। পুল্পো হিরণ্যনাভক্ত প্রুবসদ্ধিন্ততোষ্ভবৎ ॥
ত্বদর্শনোষ্থায়িবর্ণ: শীজ্ঞক্ত মরুঃ ত্বতঃ ॥ ৩ ॥
যোধ্যাবান্তে যোগসিদ্ধ: কলাপগ্রামমান্থিতঃ। কলেরত্তে সূর্যবংশং নকীং ভাবয়িতা পুন: ॥
' তত্মাৎ প্রস্থান্তত্তক্ত সন্ধিন্তকাপ্যমর্ধাঃ। মহন্বাংস্তৎক্তন্তক্তমাৎ বিশ্ববাহরকায়ত ॥

वीपत्रश्रामी ।

কুশান্ত শ্ৰীরামপুদ্রত অভিধিশ্চ হৃতে হিডবং॥১॥

অর্কসন্তবঃ অর্কসাংশাৎ সংভূতঃ ॥ ২ ॥

হিরণানাতঃ কথং ভূতঃ কৈমিনেঃ শিবোা যোগাচার্যা গুদাহ বতঃ স্কাশাৎ কৌশল্যো বাজ্ঞবক্ষাঃ ঋবিরাধ্যাত্মং বোগমধ্য-গাং। মহাস্ত উদরাঃ সিদ্ধরো যদ্মিন্ তং প্রদর্প্তাহে র্জেদকঞ্চ । ৩ ।

মকং বিশিন্টি বোহ্সাবিতি। পুন ভাবেরিতা ভাবরিষাতি ॥ ৪ ॥

ততঃ প্রদেনজিতস্মাতক্ষকো ভবিতা পুনঃ ॥ ৪ ॥

विविधनायहळ्कवही ।

দাদলে কুশবংশত অমিতান্তত কীর্ত্তনং। সমাপ্তশেক্ষাকুস্নো বিকুক্ষেরয়ময়য়য় ॥ ১ ॥ অর্ক সম্ভবং অর্কভাংশাৎ সম্ভুতঃ ॥ ২ ॥

হিরণ্য নাভন্ত জৈমিনে: শিষাঃ সন্ বেগগাচার্য্যোহভূদিত।বয়ঃ। বতে। ছিরণ্যনাভাৎ কৌশল্যোযাজ্ঞবক্যঃ পবিঃ অধ্যায়ং যোগং অধ্যগাৎ ॥ ৩ ॥

যোষক: প্রস্থাদ্য কলাপ্রাম মাপ্রিভোহধ্যাপাতে। ভাবরিভা পুন: প্রস্থাদ্য প্রস্থাদ্য কলাপ্রাম মাপ্রিভোহধ্যাপাতে। ভাবরিভা পুন: প্রস্থাদ্য প্রস্থাদ্য কলাপ্রাম মাপ্রিভোহধ্যাপাতে।

শুকদেব কহিলেন হে রাজন্। শ্রীরামতনয় কুশের অতিথি নামা যে পুত্র জন্মিয়াছিল তাঁহার ঔরদে নিষ্ধের উদ্ভব হয়। তাঁহার পুত্র নভ, নভের সন্তান পুগুরীক, তাঁহার তময় ক্ষেমধ্যা॥ ১॥

ক্ষেমধন্বার তনর দেবানীক, তাহার পুত্র হীন, হীনের সন্তান পারিযাত্তর, পারিযাত্তের হৃত বলস্থল। তাহার তনয় বজ্রনাভ,ইনি সূর্য্যের অংশে উৎপন্ন হয়েন। বক্তনাভের পুত্র হুগণ,তাহার হৃত বিধৃতি । ২

ঐ বিধৃতি হইতে হিরণানাভের উদ্ভব হয়। ইনি জৈমিনির শিষ্য এবং যোগাচার্যা ছিলেন। ইহাঁর নিকট যাজ্ঞবল্ধ্য ঋষি সেই অধ্যাত্ম যোগ অভ্যাদ করেন যাহাতে মহতী দিদ্ধি ও হাণয়এছির ভেদ হর। দে যাহা হউক, এই হিরণানাভের পুত্র পুত্প, তাহা হইতে গ্রুবদন্ধির উদ্ভব হয়। তাহার পুত্র স্থান্দিন, তৎস্ত অগ্নিবর্ণ, তাহার দন্তান শীত্র। ঐ শীত্র হইতে মরু জন্মেন॥ ৩॥

তিনি যোগসিত্ধ হইয়া কলাপথামে অবস্থিতি করিতেছেন, কলিষ্ণের অবসানে সূর্য্যংশ বিনষ্ট হইতে দেখিয়া পুজ্রোৎপাদন দারা পুনরায় প্রবর্ত্তিত করিবেন। ঐ মরুর হৃত প্রস্কুত, তাঁহার সন্তান সন্ধি, তাহার পুত্র অমর্থ। অমর্থণের সন্তান মহস্বান্, তাহা হইতে বিশ্ববাহর জন্ম হয়, তাহার সন্তান প্রসেনজিৎ, তাহা হইতেই ভক্ষক উৎপন্ন হয় ॥ ৪ ॥

ততো বহদলো যস্ত পিতা তে সমরে হত:। এতে হীক্ষাকৃত্পালা অতীতাঃ শৃণুনাগতান্॥
বহদলক্ষ ভবিতা পুজো নাম্মা বহদেশ:। উরুজিয়ঃ হতন্তক বংসবুদো ভবিষ্যতি ॥
প্রভিব্যাম ন্ততোভামু দিবাকো বাহিনীপতিঃ। সহদেবন্ততোবীরো বৃহদশোহধ ভামুমান্ ॥
প্রতীকাশ্যে ভামুমতঃ স্প্রতীকোহধ তংহতঃ। ভবিভা শরুদেবোহধ স্থনকজ্রোহধ পুক্রঃ ॥
তক্ষান্তবীক্ষণ্ডং পুজঃ হতপান্তদমিত্রজিং। বৃহদ্যাক্ষণ্ড ভক্ষাপি বহিন্তিমাং কৃতপ্পরঃ ॥
বপঞ্জর ন্তক্ষ হতঃ সপ্রয়োভবিতা ততঃ। তম্মাচ্ছাক্যোহধ ভদ্যোদোলাস্লন্তংহতঃ মৃতঃ ॥ ৬ ॥
বিজ্ঞাক্তামাং কুলকোভবিতা ততঃ। হুমিজোনাম নিঠান্ত এতে বার্হলাম্যাঃ ॥ ৭ ॥
ইক্ষাকৃণাময়ং বংশঃ স্থমিত্রান্তো ভবিষ্যতি। যতন্তং প্রাপ্য রাজানং সংস্থাং প্রাপ্যাতি বৈ কর্পো ॥৮
॥ ॥ ইতি প্রভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষন্তে শ্রীরাম বংশাসুকীর্ত্রনং দ্বাদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ১২ ॥ ॥

विधवचामी।

তে পিতা অভিমন্তানা ॥ ৫॥ তৎ তমাদমিত্তি ও । নিঠা বংশগুদ্ধিতি ওপা অভঃ ॥ ৭॥ তদেবাহ ইক্ষৃক্ণামিতি ॥ ৮॥
। ক । ইতি নবমে বাদশঃ ॥ + ।

अविषमाथहळ्यथी ।

পিতা অভিম্মানা। ৫। ৬।

নাম নিষ্ঠরোর্কাচক বাচায়োরস্ভোনাশো যত্মাৎ সং। তত্মাদক্তো নু ভবিবাতীত্যর্থ:। যথা নামেৰ নতু ক্ষাচন কীর্ত্তা নিত্রাং ত্রিস্তীতি নাম নিষ্ঠা বৃহত্বসমুভাদর ভেবামপি অস্তঃ প্রবাহং সমাপ্তি হ'লাৎ সং ৪৭।৮॥

॥ * ॥ देखि त्रांतार्यमर्तिकार हर्तिगार खखराउठतार । नवाम बानामार्थातः त्रक्षः त्रक्षः त्रकार ॥ * ॥

তক্ষকের পুত্র বৃহত্বল, তোমার পিতা অভিমন্ত্য বাহাকে সমরে নিহত করিয়াছিলেন। হে রাজন্! উলিখিত ব্যক্তি দকল ইক্ষাকু বংশীয় অতীত নরপতি। পরে বাঁহারা হইবেন বলিতেছি শ্রেবণ কর। বৃহত্বলের বৃহত্বেণ নামে পুত্র জন্মবে, তাহার পুত্র বংগর্জ, তিনি হুমহৎ ক্রিয়াকলাপ সম্পন্ন হইবেন। ঐ বংগর্জ হইতে প্রতিব্যোম, তাহা হইতে ভামু, তাহা হইতে সেনাপতি দিবাকরের জন্ম হইবে। তাহার তনয় সহদেব, সহদেবের পুত্র বৃহদেশ, তংগ্ত ভামুমান্। সেই ভামুমানের পুত্র প্রতীকাশ, তাহা হইতে হুপ্রতীক জন্ম গ্রহণ করিবেন। তদনন্তর মক্রদেব, তৎ পশ্চাৎ হুনক্ষত্র, তাহার পর পুক্ষর উৎপন্ন হইবেন। ৫॥

সেই পুকরের পুত্র অন্তরীক, তাহার আত্মজ হতপা, তাহার সন্তান অমিত্রজিৎ। অমিত্রজিৎ চ্ইতে বৃহদ্রাজ,তাহা হইতে বহি,বহি হইতে কৃতঞ্জয়ের উত্তব হইবে। কৃতঞ্জয়ের তনয় রণঞ্জয়, তাহা হইতে সঞ্জয় জন্মিবেন। সঞ্জয়ের হৃত শাক্য, তাহার পুত্র শুদ্ধোদ, তৎহত লাক্ল ॥ ৬ ॥

লাক্ষন হইতে প্রদেনজিৎ, তাহা হইতে কুদ্রক,কুদ্রক হইতে স্থমিত্র উৎপন্ন হইবেন। এই সকল কাঞ্জি রহম্পের বংশ ॥ ৭ ॥

রাজন্ ! ইজ্বাকুর হুমিত্র পর্যান্ত উদ্লিখিত বংশ পশ্চাৎ হইবে কিন্ত হুমিত্র রাজা হইলে পর কলি-মুগে ঐ বংশ ধ্বংশ হইরা যাইবে ৫ ৮ ৪

॥ * ॥ देखि नर्राम चौमन ॥ * ॥

গ্রীপ্তক উবাচ।

নিমিরিক্ষাক্তনয়ো বশিষ্ঠমর্ত হিজং। আরস্তা সত্তাং সোহপ্যাহ শক্তেণ প্রাষ্ট্রেছিয়া ভো: ॥১॥ তং নির্বার্ত্যাগিনিয়ানি তাবমাং প্রতিপালয়। তৃষ্ণানাগীদগৃহপতিঃ সোহপীক্ষতাকরোমাধং ॥২॥ নিমিশ্চলনিদং বিঘান্ সত্তমারক্তাস্থাবান্। ঋছিগ্ভিরপরৈ স্তাবন্ধাগমদ্যাবতা ভুকঃ॥ ৩॥ শিষ্যব্যতিক্রমং বীক্ষা তং নির্বার্ত্যাগিতো ভুকঃ। অশপৎ প্রতাং দেহোনিমেং পণ্ডিত্যানিনঃ॥ নিমিঃ প্রতিদ্দেশ শাপং গুরুবেহধর্মবর্তিনে। ত্রাপি প্রতাং দেহো লোভাদ্রম্যকানতঃ॥ ৪॥

विश्ववामी।

ইক্ৰেবের পূত্র নিমের্নংশ স্থানোদশে। বর্ণাতে বজিরে ভত্ত ব্রহ্ম জানকাদয়ঃ ॥ • ॥
নিমেরেরিকঃ পূত্রে। নাভূদিতি দর্শধন্ কথামাহ নিমিরিছে জালশভিঃ সত্তমার্ভ্য বৃশিষ্ঠং ঋদিলং অবৃত বব্রে ॥ ১ ॥
ডং শক্তমধং নির্কর্জ্য প্রতিশালর প্রতীক্ষাত্রতি গৃহপতি নিমিঃ ॥ ২ ॥
ইদং জীবিতং চলং অন্তিবং বিদান্ ॥ ০ ॥
ভমিক্রন্ত মধং নির্ক্ত্যাগতোশ্ডকঃ। শিব্যান্ত বাতিক্রমমন্তারং বীক্ষা নিমের্দেইঃ পত্তু ইত্যাশপং ॥ ৪ ॥

এ বিশ্বনাথচক্রবর্তী।

নিমেরিক্বাকু প্ত্রেক বংশমুক্বা অরোদশে। সমাপিতঃ স্থা বংশো বিফু বৈষ্ণৰ সৎকথঃ ॥ ১॥ প্রতিপালয় প্রতীক্ষ। গৃহপতি নিমিঃ॥ ২॥ ইদং শীবিতং চলমন্থিরং বিধান বত আত্মবান্ সূব্দিঃ॥ ৩॥ নির্কিটা শক্রক মধং নিল্পাল্য ভাগতঃ শিব্যক্ষ নিমের্ক্যতিক্রমং অস্যানপেকাং ॥ অধুত্বিনো লোভাৎ ইন্ততো মত্যোশি দক্ষিণাক্যজ্ঞান্ধপাৰ ॥ ৪॥

ত্রেরোদশ অধ্যায়ে ইক্ষাকু পুত্র নিমির বংশ বিবরণ, যাহাতে ত্রহ্মন্ত জনকাদির উদ্ভব হয় ॥ • ॥
ত কদেব কহিলেন ইক্ষাকু তনয় নিমি যজ্ঞ আরম্ভ করিয়া মহর্ষিবশিষ্ঠকে ঋত্বিজ কর্মে বরণ করিলে

ঐ মুনি বলিলেন অত্যে ইস্ত আমাকে বরণ করিয়াছেন ॥ ১॥

ইন্দ্রয়ন্ত সমাপন না করের। তোমার যজ্ঞে বৃত হইতে পারি না, যাবৎ ইন্দ্রবজ্ঞ সমাপন না হয় তাবৎ পর্যন্ত প্রতীক্ষা কর। এ কথায় নিমি আর কিছু বলিতে পারিলেন না, মৌনী হইরা রহিলেন। বশিষ্ঠ ও ইন্দ্রযুক্ত করিতে গোলেন ॥ ২॥

পারস্তা তৎপারেই নিমি বিবেচনা করিলেন জীবন অভিশয় অভির, ইন্দ্রসত্তা স্বাপন না হইতে ২ ঘদি আমার মৃত্যু হয় তবে ত ফুল্ড হইল না, অভএব যাবৎ পর্যান্ত কুলণ্ডক্র বশিষ্ঠ আগত না হন তাবৎ অন্য ঋত্বিক্ দারা সত্তাকর্ম আরম্ভ করি। ইহা ভির করিয়া যজ্ঞ আরম্ভ করিলেন ॥ ৩ ॥

জনস্তর বশিষ্ঠমূনি ইশ্রদত্ত সমাপন করিয়া নিমির ভবনে জাগমন করিলেন, শিষ্যের জ্যায় দর্শনে মুনির ক্রোধ জন্মিল। রোধ বশতঃ এই অভিশাপ দিলেন, পশুভাভিমানি এই নিমির দেহ শীত্ত পত্তিক। কুলগুরু ঐ প্রকারে অধর্ম বতী হওয়াতে নিমিও তাঁহাকে এই অভিশাপ দিলেন, ভূমি লোভ পরতি ত্র হইয়া ধর্মের প্রতি দৃষ্টি করিলে না তোষারও দেহ পতিত হউক ॥ ৪ ॥

ইত্যুৎসমর্জ বং দেহং নিমিরধ্যাত্মকোবিদ:। মিত্রাবক্ষণয়ো র্জ্জে উর্বেশ্যাং প্রণিতামহ:।
গদ্ধবস্তুরু তদ্দেহং নিধায় মুনিদত্তমা:। সমাপ্তে সত্ত্যাগেচ দেবান্চু: সমাগতান্॥ ৫ ॥
রাজ্যে জীবতু দেহোহয়ং প্রসন্না; প্রভবেষদি। তথেতুত্ত্বে নিমিঃ প্রাহ্ মাভূমে দেহবদ্ধনং॥৬
যক্ত যোগং নবাস্কৃত্তি বিয়োগভয়কাতরা:। ভক্ততি চরণাড্যোক্তং মুন্রোহ্রিমেধ্সঃ।

Bugyin :

উর্জনীদর্শনাৎ ক্ষম রেড: ভাষাাং কুন্তে নিবিক্তা ভষাৎ প্রণিতামারো বশিরো ক্ষেত্র। তদাহ মিত্রাবরুণহোরিতি তথাট শ্রুতি: কুন্তে রেড: স্বিচ্ডু: স্মানমিতি ॥ ৫॥

বিদি প্রসেরা: প্রান্তব: সমর্থাশ্চ তহি জীবতু ইত্যুচ্: ॥ ७ ॥ ষস্ত দেহস্ত বোগং নবাছ কি অপিতু মোকারের ভজকি ॥ ৭ ॥

क्यनमर्खः।

ৰাদশো নাজি। অথ এয়োদশে। নিমিঃ প্ৰাহেতি যোগবলেন লিকশরীরমবলস্থৈতে জিরং॥ ১।২।৩।৪।৫।৯॥
অন্ত বিরোগো ভবিব্যতীতি ভরেন কাতরা বিরবাদ্মানঃ। সভো ৰসা ৰোগমাত্রং কিমৃত তৎ সম্বন্ধি নানা ক্ষম নানা কাতীর
স্থাং ন বাঞ্তি কিন্তু ভল্কি কেবলং নতু চরণাস্থোলং ভল্কীতি সেবাস্থাপছা দর্শিতা। সেবা চ দেহং বিনা নসম্ভবতি তহি কথং
তত্পস্ক দেহমণি ন বাঞ্জি। নেতাহে। দেহমিতি হুংধাদাবিহমেৰ নকামরে। তদীয় পরম সেবোণযুক্ত দেহত্ত পার্কি রূপতাব।

श्रीविधनाथहळ्वा ।

প্রশিতামহোবশিষ্ঠা দেহং তাজনু। নিআবকণরো **র্জনে ইতি উর্ন্দীদর্শনতভদীর রেভনঃ কুন্তনিহিতাদিভার্থঃ।** তথাচ শ্রুতিঃ কুস্তে রেড: সিবিচ্জু: সমানমিতি॥

তদেহং নিমিশবীরং 🛚 🖒 🖁

বনি প্রসন্না: প্রাক্তবা সমর্থাশ্চ ভর্মি জীববিভূাচু:। তথেতি দেবৈক্তে সতি ॥ ৬ ॥
ভল্পতীতি দেহাভাবে চরণাপ্তেলে ভল্পনাসপ্তবাল্ম ভগবৎ পার্বদ দেহোছবিতি প্রার্থনা রূপো গুঢ়ো ধ্বনি: ॥
নাবক্রবংসে ন ধর্জু মিজামি। উদকে উদকেইপি। উদকে জলচনাদ্যাল্য বিভাগ বভাবাক মৃত্যুবিভাগ ॥

দেবা উচুরিতি দেহো জীববিতি মুনীনাং প্রার্থিতং নজীববিতি রাজ্ঞঃ পার্বদদেহো ভববিতি তৃতীয় প্রার্থিতভ দাতৃ মশক্য-

এই বলিয়া নিজ দেহ বিদর্জন করিলেন। সেই দমর বশিষ্ঠ ঋষিরও শরীর পাত হইল, কিন্তু কিরৎকাল পরে মিত্রাবল্পণের যজে উর্বাশী গর্জে তিনি পুনরায় উৎপদ হয়েন। অর্থাৎ যজ করিতে করিতে উর্বাশী দর্শনে মিত্রাবল্পণের যে রেতঃ ঋলিত হয় বাহা তাঁহারা কলদ মধ্যে রাখিয়াছিলেন তাহা হইতে বশিষ্ঠের পুনরায় উদ্ভব হইল। দে যাহা হউক, যজ করিতে করিতে নিমির দেহ পত্ন হইলে মুনিগণ গন্ধ বস্তু মধ্যে তলীয় কলেবর খাপন করিলেন। অনন্তর ক্রতু সমাপ্ত হইলে পর উপভিত দেব-গণকে মিবেলন করিলেন। ৫॥

আপনারা যদি প্রসম্ব ভন বসুন নিমিরাজের এই দেহ সজীব হইরা উপিত হউক। ইহাতে দেবতারা তথাস্ত বলিলে নিমি গদ্ধবস্ত মধ্য হইতে বলিলেন আর কথনই যেন আমার দেহ বন্ধ না হয়। ৬।

ব্রি সেবক সুনিরা বিরোগ ভয়ে কাজর ছাইয়া কদাপি বেছ কোগ বাঞা করেন না, মুক্তির নিমিত কেবল ভগবামের পালপত্ম ভজনা করিয়া থাকেন। অপর মানবলেছ ছাথ শোক ও ভয়ের আন্পাদ, তাহা আর আদি ধারণ জারতি তারনা করি না, যে ছেছুজালে মংখ্য সকলের ন্যায় সর্বত্ত বাহনা করি না, যে ছেছুজালে মংখ্য সকলের ন্যায় সর্বত্ত বাহনা করি না, যে ছেছুজালে মংখ্য সকলের ন্যায় সর্বত্ত বাহনা করি না, যে

टनरः नावक्रक्रस्टरमरः ष्ट्रः भटणाक खन्नावरः । मर्ख्यामा चटणाम्र्जू र्मरमानाम्बरक यथा ॥ १ ॥ टनवा छेत्रः ॥

বিদেহ উষ্যতাং কামং লোচনের শরীরিণাং। উলােষণ নিমেষাভ্যাং লক্ষিতোধ্যাল্প সংস্থিতঃ ॥৮॥

অরাজক ভয়ং নৃণাং মন্তমানা মহর্ষঃঃ । দেহং মমস্থুঃ আ নিমেঃ কুমারঃ সমজায়ত ॥ ৯॥

জন্মনা জনকঃ নােছ্ছবৈদেহস্ত বিদেহজঃ। মিথিলো মথনাজ্জাতো মিথিলা যেন নির্মিতা।

তত্মান্তদাবস্থক্ত পুত্রোহভূদন্বির্দাঃ। ততঃ স্কেছ্স্তস্যাণি দেবরাতো মহীপতে ॥ ১০॥

धिषत्रचामी।

নিমি বিদেহ এব সনুব্যতাং বস্তৃ কামং যথেজং। এবং সতি বৃমাভিঃ প্রাথিতং জীবিতসক্ত ভবিষ্যতি নচ দেহবন্ধ ইতি ভাবুঃ সচ অধ্যাম্ম সংস্থিতঃ সন্ উল্লেখন নিমেষাভাগং তৎ প্রবর্তক্ষেন লক্ষিতো বর্তত ইতি শেবঃ ॥ ৮ ॥

ভদ্পেবং মৃতাদুলি নিমে দেঁহাৎ বংশ প্রবৃতিং দর্শমতি অরাজক ভর্মিতি । ১ ॥

ভক্তাৰপানি ত্ৰীণি নামাস্তাহ। জন্মনা অগাধারণেন জনএব জনকঃ। বৰা অণেহ ৰাবা জনকভাৎ স নিমির্জনকোইজুদি-ভার্থঃ। মিথিলা বেন নির্দিতেভানেন বৃংপত্যস্তবমর্থাজ্ঞং॥১०॥

क्रियममर्छः ।

সচ নিত্য সুধাত্মক এবেতি ভাবঃ। আশ্রয়াদিতি পাঠেপি স এবার্থঃ।। ৭ ।।

দেবা উচ্বিতি বেবাল বং কিঞিদেব সমাদধৎ উচ্বিতার্থঃ। রাজ্ঞো জীবতু দেহোহরমিতি মুন্যর্থিতন্য রাজ্ঞা ভরিবেধসাচ করণে সংকটবাপাতাং। তদীর পরমাভীইসা চ দাতুং শকাবাদিভি ভাবঃ।।৮।।

अत्राज्य हेखि। छड: प्रदाकार हावार्थर ८७ ठळ दिखि खादः ॥ २०। २२। २२। २२। २४। २४। २४। २४।

शिविधनायहळ्वां।

দ্বাহভরমেব দিৎসস্তঃ উচুরিত্যর্থ: । १ ।

নিমির্বিদেহ এব উষাতাং ৰস্তু লক্ষিটো জাতঃ সন্লোচনের অধ্যাত্মসংস্থিত ইঙ্যাভাং স্থীবিতং দেহবদ্ধাভাবশ্চেত্যভয়। প্রাথিতং সেংস্থীতি ভাবং ॥ ৮। ৯॥

क्याना क्याधातरान छात्र हे छि क्या कः । ১० ।

সম্ভাবনা আছে। ৭।

দেবতারা কহিলেন তবে এই নিমিত্ত দেহ শৃশ্য হইয়াই দেহি সকলের লোচনে যথেচ্ছাক্রমে বাস করুন। এ কথার তাৎপর্য্য এই, এরূপ হইলে মুনিগণ যে নিমিত্ত জীবনু প্রার্থনা করিতেছেন তাহা সিদ্ধ হইবেক অথচ তাঁহার দেহ সম্বন্ধ হটবে না। হে রাজন্। উক্ত বাক্যামুসারেই নিমি শাস্ত্রহু ইয়াছিলেন, নেত্রের উদ্মেষ ও নিমেষ সময়ে তৎ প্রবর্তক বলিয়া দৃষ্ট হইডেন মাত্র ॥ ৮ ॥

পরস্তু তদনস্তর মহর্ষিরা বিবেচনা করিলেন অরাজক রাজ্যে প্রজাজনের সর্বাদা ভর সন্তাবনা, অভএব সকলে রাজপুত্র কামনা করিয়া ঐ নিমির দেহ মন্থন করিলেন, তাহাতে উহার মৃতদেহ হইতে একটা কুমার উৎপন্ন হইল ॥ ৯ ॥

দেই নিসি তনর অসামান্ত জন্ম হৈছু জনক নামা হয়েন, তাহার অর্থ জনই। অপর বিদেহ হইয়া জন্ম এহণ করাতে তাঁহার নাম বৈদেহও হয়। মণুনে জন্ম হেছু মিখিল মলিয়াও খাতে হন্, অথবা তিনি মিখিলা পুরীর নির্মাণকর্তা একারণ মিখিলাধিপ হইয়াছিলেন। সে যাহা হউক, ঐ জনকের পুত্র উদাবহু, তাহার নক্ষন নক্ষিবর্জন। নিক্ষাণ্ডনের তন্য় হুকেছু, ভাহার পুত্র বেবরাত ॥ ১০ ॥ , তত্মাৰ্হ অপকাশ মহাবাৰ্ধ্য: অধুৎপিতা। অধুতে ধু কিকেতুৰ্বৈ হ্ব্যাশোহণ মককতঃ।
মরো: প্রতীপক ক্তমাজ্যাতঃ কৃতরবোষতঃ। দেবমাত ক্তমা পুজোবিত্যত তোহণমহাধৃতিঃ।
কৃতিরাভক্ত ক্তমামহারোমাত তহত্তঃ। অর্ণরোমা অক্তমা প্রবামা ব্যক্ষারত।
ততঃ শীর্ণরাজ্যে ক্রাম্থারে কর্বতোমহীং। গীতা শীরাক্রতো জাতা তত্মাৎ শীর্পর আহুঃ।
কুশপর ক্তমা পুজ ক্রতোধর্মপ্রকান্প। ধর্মপ্রকাশ হো পুজো কৃতপরক্ষতিপর্কো । ১১॥
কৃতপরকাৎ কেশিপর গণতিকান্ত মিতপরকাৎ। কৃতপরক্ষতোরাজনাত্মবিদ্যাবিশারদঃ।
খাতিক্যঃ কর্ম তত্মতো ভীতঃ কেশিপরজাদ তঃ। ভাতুমাং ক্তমা পুজোহভূক্ত হামন্ত তৎুম্তঃ।
ভাতিন্ত ত্ররব্যাৎ সন্ধার্জ হ্রতোহভূব্ধ । ১২॥
উর্ক্রেক্ত সন্ধার্জাদকোহণ পুরুজিৎ স্তঃ। অরি্করিন্মি স্তাগাপি শ্রুতার ক্রতংপার্শকঃ। তত্শিক্রেরব্যায়াল ক্ষোধির্মিণিলাধিপঃ। তত্মাৎ সমর্বস্তুসা স্তঃ সত্যরপক্ত । ১০॥
তত্শিক্রেরব্যাযাস্য ক্ষেমাধির্মিণিলাধিপঃ। তত্মাৎ সমর্বস্তুসা স্তঃ সত্যরপক্ত । ১০॥

क्षित्र वामी।

কুধ্ব কুধুভি: তন্ত পিঙা । ১১॥ তন্ত কেশিধ্বজন্ত ভার্মান্ । ১২॥ তব্ তন্থাৰ কুপাৰ্শক: । ১০॥

@বিশ্বনাথচক্রবর্ত্তী।

স্থুতে: পিতা স্থুৎ পিতা।
ক্ৰিডো বস সীচা রামপত্নী শীদাগ্রতো লাজগাগ্রডো লাভা তত্মাদেও হেডো: শীর্থাব ধ্বল: কীর্তি বাঞ্চলো বস সং ৪ ১১ ৪
ফ্রান্ পলায়িত: । তাস কেশিধ্বলস্ভ ভালুমান্। তৎ তাস ৪ ১২ । ১৩ ৪

দেবরাত হইতে রহদ্রশের জন্ম হয়। তাহার পুত্র মহাবীর্যা। মহাবীর্যাের সন্তান অধৃতি, তাহার পুত্র ধৃষ্টকেতু, তত্তনয় হর্যান্ধ, তাহা হইতে মরুর উদ্ভব হয়। মরুর পুত্র প্রতাপ, তাহা হইতে কৃতর্প জন্ম গ্রহণ করেন। তাহার হৃত দেবমীঢ়, দেবমীঢ়ের সন্তান বিশ্রুত, বিশ্রুত হইতে মহাধৃতি, মহাধৃতির পুত্র কৃতিরাত, তাহার পুত্র মহারোমা, মহারোমার পুত্র হুর্ণরোমা। তাহা হইতে ব্রুরোমা জন্ম গ্রহণ করেন। ব্রুররোমার সন্তান শীর্ধকেল। ক্রুরোমা রাজা যজ্ঞার্প ভূমি কর্ষণ করিভেছিলেন সেই সময় তাহার শীরা অর্থাৎ লাক্ল প্রতের অগ্রভাগ হইতে ঐ ব্যক্তির জন্ম হয়, এই কারণে তাহার নাম শীর্ধকেল হইয়াছিল। শীর্ধকেলের সন্তান কুশধ্বজ, তাহার পুত্র ধর্মধ্বল। ধর্মধ্বজের সন্তান কুশধ্বজ, তাহার পুত্র ধর্মধ্বল। ধর্মধ্বজের সূই সন্তান কুশধ্বজ এবং মিতধ্বজা। ১১ ৪

তথাধ্যে কৃতধ্যক হইতে কেশিধ্যক উৎপদ্ধ হন এবং মিতধ্যক ইইতে থাগুকোর কথা হয়। হে

নাকন্! কৃতধ্যকের পুত্র থাগুকা আত্ম বিদ্যার বিশারদ এবং বিলক্ষণ কর্ম তত্ত্ত ছিলেন। একদা
কোন কারণে কেশিধ্যকের ভয়ে পলায়ন করেন। কেশিধ্যকের পুত্র ভাতুমান্, তাহার পুত্র শতচাল,
শতচ্যক্ষের পুত্র শুচি। ঐ শুচি হইতে সন্ধাক উৎপদ্ধ হয়েন॥ ১২॥

সন্বাজের আত্মন উর্জেড়, তৎপুত্র পুরুজিং। পুরুজিতের পুত্র অরিষ্টনেমি, তাহার তন্য অ্ততায়, ভাহার পুত্র অপার্থ,অপার্থ ইইতে চিত্ররথ উৎপর হয়, ভাহার পুত্র কেনাধি। কেনাবির সন্তান সমর্থ, ভাহার পুত্র স্তার্থ ॥ ১৩ ॥ 21

আনীত্রপঞ্জ ক্রন্মাত্রপঞ্চথোহ্মিদক্তবঃ ॥ ১৪ ॥

বন্ধনাত্ত তৎপুত্রে। যুর্বান্ যৎ অভাষণঃ। শ্রেভান্ত জয়ন্ত সাধিজরোহ স্মানৃতঃ হতঃ।
ভানকত্তংহতো জল্জে বীতহবেট্ন গ্রুভিন্ত । বহুলাশোগ্নতে ভদ্য কুভিরদ্য মহান্ বলী ॥ ১৫ ॥
এতে বৈ মিথিলা রাজমাস্ম বিদ্যা বিশারদাঃ। যোগেশন প্রদাদেন দক্ষেম্প্রণা গৃহেদ্বপি ॥ ১৬ ॥
॥ ॥ ইতি শ্রিভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংদ্যাং দংহিতারাং বৈরাদিক্যাং নবমক্ষদ্ধে সূর্য্বংশ কীর্ত্তনং ত্রোদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥॥ ১৩ ॥ ॥॥

। বাচর্ড কঞ্জী, •

অধাতঃ ভারতাং রাজন্ বংশঃ সোমদ্য পাবনঃ। যিস্মিলাদয়োভূপাঃ কীর্ত্তান্তে পুণ্যকীর্ত্তরঃ।

व्यिभवतामी।

অনিস্কুবঃ অন্যেরংশাৎ সংভূতঃ ॥ ১৪ ॥ যদ্বভাৎ সুভাষণঃ ॥ ১৫ ॥ যোগেশ্বরা যাজ্ঞাবক্ষাদয় ব্যেষাং প্রসাদেন ॥ ১৬ ॥ ॥ ॥ ॥ । ইতি নবমে অব্যোদশঃ ॥ ⇒ ॥

চতুর্দশাদিভি: সোম ৰংশমাহ সমাপ্তিত:। যশ্বিরৈশাদরে। ভূপা: কীর্তাত্তে পুণাকীর্ত্তর:। চতুর্দশে গুরো: পদ্ধাং তারারাং

ক্রমসন্দর্ভঃ।

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তকে শ্রীজীবগোশামি কত ক্রমসন্দর্ভে অবোদশোহধ্যার: সমাপ্ত: ॥ * ॥

অধাত ইতি শ্রুত পূর্বমীমাংসান্ প্রতাধাতে। ব্রহ্ম জিজাসেভি বং শ্বরং ভগবদাবিভাবাস্পদ বংশ কথনারন্তে মাদল্যারানন্তর্ব্য

হৈত্বিশেষ্যারের্বাধনায়চ। সোমস্য ভবংশধরসাপি পাবনোবংশ:। যথা সোমস্য উষাস্হচরস্য শিবভালি। বং পাদনিঃ ক্ত

স্বিং প্রবরোদকেন তীর্থেন মূর্দ্ধান্তিতেন শিবঃ শিবোহভূদিভি বং। শ্বরং ভগবদাবিভাবাং। অস্ত ভাবত্তং স্বক্ষেন ভাদৃ
শবং শতোপান্তঃ। প্রশাস্থনিত্যাই যশ্বিরিতি ॥

अविधनायहळ्यकी ।

অগ্নিসম্ভৰ: অগ্নংশস্ভুত:।। ১৪। ১৫। ১৬।।

॥ # ॥ ইতি সাবার্থদশিক্তাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেতসাং। অয়োদশোহ্মং নবমে সঙ্গতঃ সভাতঃ সভাং । # ॥ ভারায়াং অংখ্যবাঃ পদ্মামিশ্না ফনিভাশুধাং। জাত ঐবং বডুর্মপ্রাং প্রান্ প্রাপ চতুর্দশে । ১ । ২ ॥

সভারথের পুত্র উপশুরু, তাহা হইতে অগ্নির অংশে উপশুপ্ত জন্ম গ্রহণ করেন ॥ ১৪॥
উপশুপ্তের সন্তান কমনন্ত, তৎপুত্র যযুক্রান্। তাহা হইতে হভাষণ উৎপদ্ধ হয়েন। হভাষণের
পুত্র প্রুত, তাহার পুত্র জয়, জয়ের তনয় বিজয়, বিজয় হইতে ঋত জন্ম গ্রহণ করেন। তাহার পুত্র
শুনক, তাহার সন্তান বীতহব্য, ভত্তনয় ধৃতি, ধৃতির পুত্র বহুলাশা, তাহার পুত্র মহাবশী কৃতি॥ ১৫॥

হে রাজন্! এই দকল মৃহীপাল মিথিলাদেশীয়, ইহাঁরা আত্মবিদ্যায় স্পণ্ডিত এবং যাজ্ঞবন্ধ্যাদি যোগীখরদিগের প্রদাদে গৃহে বাদ করিয়াও স্থ হুঃখাদি দক্ষ নিমুক্ত ছিলেন । ১৬।

॥ 🛊 ॥ टेंकि नवरम खरत्रां 🕶 ॥ 🛊 ॥

চতুর্দশ অধ্যায়ে রহস্পতির পত্নী ভারার গর্ম্ভে গোম.হইতে বুধের জন্ম এবং বুধ হইতে ঐল ও ঐর হইতে উর্বাদীর গর্ম্ভে আয়ুমুখ্য প্রভৃতি ছয়জনের উৎপত্তি॥ • ॥

ভকদেব কহিলেন রাজন। অনন্তর পাবন সোম বংশের বিবরণ বলিতেছি আবণ কর। ঐ বংশেই পুণ্যকীর্তি এল প্রভৃতি ভূপতি কীর্তিত হইয়া থাকেন। হে মহারাজ। সহত্র দীর্ঘা পরম প্রকৃষ ভগবা-

সহজ্ঞশিরণঃ পূংসোনাভীক্রদসরোরশ্হাং। জাতগাদীং ক্রভোবার্ডুরাত্তঃ পিতৃসনোভাগে। ১ । ভক্ষাদিশোহভবৎ পুত্রঃ সোমোয়তগয়ং কিল ৮২॥

বিজ্ঞানধুভূগণানাং এক্ষণা কল্লিচঃ পড়িঃ। সোহ্যক্সজুদ্যেন বিজিপ্ত ভূগনতারং॥ ৩॥ পত্নীং রুহাস্পতে দর্পান্তারাং নামাহরছলং ॥ ৪॥

যদা স দেব গুরুণা যাচিতে। ছবিক্ষণো মণাং। সাত্যদ্ধ তথকতে জজে হ্রদানক বিগ্রহঃ ॥৫॥
তক্ষোর্হম্পতে বেধাদপ্রহীৎসাল্রোড়ুপং। হবে। গুক্ততং স্নেহাৎ সকাভ্তগণার্ভঃ।

धीनव्यामा ।

८मानकाव्यार । 🕒 का ठरेल्लाः म जिल्लामायुव्यानकी बनर ॥ 🗸 ॥

দৃশ্ভাং আনন্দাঞ্জাং। অভ্ৰেষ্ড্ৰয়:। ক্লেডাস্চ্যো। দুশ ইতি গাঠে দুশোমেরাৎ ৫২ ।

অপটনাণ দৰ্গত কাৰণমাধ বিজ্ঞোতি॥৩॥

্মান্ত পুল বুধ হাতি কথা বাবেণাই পত্নীমিতি মার্কৈন্ধিলিঃ ॥ ৪ ॥

करकर क किशिष्ट म स प्र

ত্বলোপন ন গালাপ বিগ্রহে কারণনাই শুক্র ইতি। অস্তরে: সহিত উচুপ্নধাহীদিতাব: দক্কিংয়া। ওয়ো: পুতং বৃহস্পতি

ውካጻብቱ:

ভাষেত্র প্রসংন 🗝 ।ব্লসিতং ভাবৈধন মুহ্ছু বিভয়বি শীলারাগ্রণ মার্টা শংসিতুমারভাতে গ্রাক্রেতি ॥ ১। ২। ০। ৪। ৫॥

ই।বিখন।পচক্রবর্তী।

দৃগ্রা ভান-কাঞার এই এব। মৃত্যমা দৃশ ইতি চ পাঠি। তাজে পরানস্যা জীন্ হাজে স্বশ্যা প্রতান্। সোমং হ্রাস সংস্কৃনাজ্যে প্রস্থানিতি চতুর্গোজে:। সা প্রতং অগতে ক্লারেডি কেডিং। সঙ্গালে আনক্ষেণ্ণি তভাং আধ্যতেতি। ভানো পতুঃ প্রথেন ভলাএব হুত ইতাগরে ৪০।৪।৫॥

সালবঃ অলুৱৈ: সহিত: উছুত্বঃ চল্লয় এই ৭ তিই ভব পক্ষো বভূব। সন্ধিবধেঃ। ওকুত্ ভমিতি থলিকসং স্কাশাৎ প্ৰাপ্ত

নের নাভি হ্রদ সরোক্তর ইইতে যে বিধাতা উৎপন্ন হয়েন, তাঁহার পুত্র স্বতি। তিমি গুণ সমূহে পিতৃ তুল্য হইয়াছিলেন ॥ ১ ॥

সেই অত্তির নেত্র হইতে অমৃত্যম গোম নামা তন্য উৎপন্ন হন্॥ ২ ॥

ভগৰান্ জন্মা ঐ নোমকে বিপ্রা, ওয়ধি তথা নক্ষত্র পকলের অধিপতি ক্রিয়াছিলেন তাহাতেই তিনি ত্রিভূবন কর করিয়া বাকসুয় মজ্জ করেন ॥ ৩॥

একদা ঐ দোন দর্পত্তে বল প্রকাশ পূর্পক রহস্পতির পত্নী ভারাকে হরণ করিয়াছিলেন ॥ ৪ ॥

হে রাজন্। শেবদানৰ মধ্যে যে কিপ্রহ হর্ম তাহার কারণ জান। ভার্যা হরণ করিলে পর দেব-শুরু বৃহ্ম্পতি খানেক বার সোণের নিক্ট গিয়া খনিতা প্রভার্মণার্ম প্রাণনা করিলেন কিন্তু মদমন্ততা প্রাযুক্ত লোম শুরুপত্নী পরিভাগে করিলেন না। ভাষার নিসিন্তই হুর ও অন্তর্গণ সংগ্য মহা বিগ্রহ উপস্থিত হুইল। ৫ ॥

র্হস্পতির উপারে শুক্রাচার্যের ঘেষতাব ছিল, একারণ তিনি থাপনার শিক্ষ শহরণ সহিও পোলকে এবণ করিলেন শর্মাৎ গোনের শক্ষ হটলেন। আর ক্ষণকান্ হর শঙ্গিরার নিকট পিন্যা প্রাপ্ত হত্তরাজে যের বশস্তঃ সকল ভূতপনে পরিষ্ঠত ক্রিয়া নিজ গুরুল্ড র্হস্পতিকে এইণ করিলেন। পরে সমুলার ব্যক্তার বহিত নিজিত হইয়া ইক্রড ক্রপ্সায়নের গ্রেক্ষ বৃহস্পতির অসুগামী হইপেন। তাহার দর্বদেব গণোপেতে। মহেন্দ্রো গুরুষররাহ। হ্বাহ্র বিনাশোহভূহ সমরন্তারকাষয়ঃ ॥ ৬ ॥
নিবেদিতোহ্থাঙ্গিরসা সোমং নির্ভহ্য বিশক্ষ । তারাং স্বভত্তে প্রায়চ্ছদন্তর্বত্নীমবৈহ পতিঃ ॥৭
ত্যক্ষ ভাকাশু হুপ্রাক্তে মহক্ষেত্রাদাহিতং পরেঃ। নাহং বাং ভন্মসাহ ক্র্যাং দ্রিয়ং সান্তানিকোহসতি।
ভত্যাক্ষ ত্রীড়িতা তারা কুমারং কনকপ্রভঃ। স্পৃহামাঙ্গিরসম্চক্তে কুমারে সোম এবচ।
মনারং ন তবেত্যুকৈ ন্তন্মিন্ বিবদমানয়োঃ। পপ্রচ্মুন্নয়ো দেবা নৈবোচে ত্রীড়িতা তু সা।
কুমারোমাতরং প্রাহ কুপিতোহলীক লজ্জ্যা। কিং নবোচস্যদ্ত্তে আত্মাবদ্যং বদাশু মে॥ ৮

क्षितवामी ।

মগ্রহীৎ। অঙ্গিরসং সকাশাৎ প্রাপ্তবিল্যাহর ইতি গ্রাসিদ্ধিঃ । ৬ ।

নিবেদিভো বিজ্ঞাপিত:। বিশ্বরং একা। অবৈৎ অব্ধাত ॥ ৭ ॥

বুঁহস্পভিরাহ তাজ ভাজেভি। পরৈ রাহিভং গর্জং। গর্জে ভাতিক ভন্নীকরিবাডীভি বিভাভীং প্রভাহ নাহমিভি। সাস্তা-

ক্রমসন্দর্ভ:

ক্ষরাক্ষরের। বির্নাশো যন্তাভাদৃশঃ। তারকাময়তারকাকারণ ইত্যর্থঃ। ৬। ৭ ।

ভাজ তাজেতি গৃহাগমনানন্তরং গুরুবচনং॥

> 0

মমালং নতবেভি তুপুন: সভাগমনে ব্রোর্কিবাদ:। তলিন্পুনর্জাতে সদসি ১৮ : ১। ১০ ।

প্ৰীবিখনাপচক্ৰ ৰত্তী।

বিদ্যোহর ইতি প্রাসিদ্ধিরতি শ্রীম্বামিচরণা: ॥ ৬ ॥

অকো একা (সামং নির্ভংক তত্মাৎ স্কাশাৎ তারাং নিকাশ্র অভবে বৃহস্পত্রে স্চণ্ডিতাং অন্তর্মন্ত্রী গতুর্বভীং ভবেৎ

বৃহস্পতিক্রাচ। তাজেতি পরৈরাহিতং গর্ত্তং মৎক্ষেত্রাদশাং তাল দ্রীকুর । গর্ত্তে তাজে মাং ভশ্মীকরিষাতীতি বিভ্যতী মাখাসরলাহ। নাহসিতি সাস্তানিক: সন্তানার্থী পরি সন্তানম্ৎপাদরিত্মনা অত্মীতার্থ:। সাস্তানিকে ইতি পাঠে সংঘাধনং চ

পরেই তারার নিমিত্ত হার ও অহারদিণের বিনাশক ঘোরতর সমর আরক্ষ ইইল ॥ ৬ ॥

হে রাজন্! কিয়দিন যুদ্ধ হইলে পর দেবগুরু বৃহস্পতি ব্রহ্মার নিকট গমন পূর্বক ঐ বিষয় নিবেদন করিলেন। তাহাতে ব্রহ্মা দোমকে সমিধানে আহ্বান করিয়া ভর্মনা করিলেন এবং অপহৃত্য তারাকে তদীয় স্থামি হল্পে দেওয়াইয়া দিলেন। বৃহস্পতি আপনার বনিতা পুনঃ প্রাপ্ত হইয়া জানিতে পারিলেন, ঐ অবলা অন্তর্বিত্বী হইয়াছেন॥ ৭॥

অত এব তাহার প্রতি স্থা প্রকাশ করত কহিতে লাগিলেন, মরে মুর্ব্ ছি! আমার কেত্রে মন্যের আহিত বীজ ধারণ করিস্, আশু ত্যাগ কর্। আরে অসতি! গর্ত্ত তাইলে আমি ভোকে বিনষ্ট করিব মনে করিয়া ভীত হইস্না, যদিও আমার ক্রেখানল প্রজ্বলিত হইয়াছে তথাচ তুই স্ত্রী জাতি, তোকে জন্মগাৎ করিব না, অধিকস্কু আমি সন্তানার্থী। পতির এই সকল কথায় তারার অতিশয় লজ্জা হইল। তৎক্ষণাৎ গর্ত্ত হইতে কনকপ্রভ কুমার পরিত্যাগ করিলেন। হে রাজন্! পরম ফলর-কুমার দর্শনে তাহার প্রতি বহক্ষতি ও সোম উভয়েরই ক্পৃহা জন্মিল তাহারা পরক্ষার কহিতে লাগিলেন আমার এই বালক তোমার নহে, স্তরাং মুই জনের মধ্যে বিলক্ষণ বিষাদ উপস্থিত হইল। পুজার্থ তাহাদিগের বিষাদ দেখিয়া দেব ও ঋষিগণ তারাকে জিজ্ঞাসা করিলেন কাহার এ সন্তান ? ভারা তজ্জন্য অভিশয় লাজ্জ্বা হইয়া ছিলেন, লজ্জা প্রয়ক্ত কিছুই বলিতে পারিলেন না, মৌনভাবে রহিলেন। অনন্তর সেই বালক অলীক লজ্জায় কুপিত হইয়া জননীর প্রতি বলিতে লাগিল, মরে অস-

ব্রহ্মা তাং রহ আহুর সমপ্রাক্ষীক সাম্বরন্। সোমসোত্যাহ শনকৈ: সোমস্তং তাবদগ্রহীৎ।
তদ্যাম্বানেরকৃত বুধ ইত্যভিধাং নৃপ। বৃদ্ধা গন্তীরয়া যেন পুজেনাপোড়ুরাগুদং।
ততঃ পুরুরবা জন্তে ইলাযাং য উদাহতঃ॥ ৯॥
তদ্য রূপ গুণৌদার্য শীলদ্রবিণ বিক্রমান্। প্রুম্বেশীক্রভবনে গীয়মানান্ হর্মবিণা।
তদন্তিকমুপেয়ায় দেনী স্রশরাদ্যিতা॥ ১০॥
মিত্রাবক্ষণযোঃ শাপাদাপন্না নরলোকতাং। নিশাম্য পুরুষপ্রেষ্ঠং কন্দর্পমিব রূপিনং।

वी धर्मामी ।

নিক: সম্ভানার্থী। সাম্ভানিকে ইতি পাঠে হে সপুত্রে ইতার্থ: ॥ ৮ ৪ রহ একামে ৪ ৯ ৪ পুরুর ৭স উর্ম্ঞানায় গুমুশা: বট্পুত্রো আতা ইতি বক্তু কথানাহ তত্তে তাাদিনা বাবৎ সমাধি ৪ ১০ ৪ নতু কুছো দেবী নতুবাজিক মুণ্পজ্ঞেত আহ নিজাবকণ্যো: শাণালরবোক তাং সহুব্য ভাবমাণলা সতী ৪ ৯১ ৪

ক্রমসন্দর্ভ:।

वृक्तिः विष्ठेषा उपनीतन बाठ प्रश्वानिविकात प्रश्वनात रेभर्गमयनचा ॥ ১১। ১२॥

बीवियना भठक वडी ।

আত্মনোহ্বদাং দোৰং কিং ন বদসি ॥ ৮ ॥ রহ একাস্কে ॥ ১ । ১ • ॥ মিত্রাবরুণযো গুদ্ধন জনিভ্জাম বিকারয়োরুর্বশীত্বং মাহ্যীব মহ্বাভ্কা ভবেভাভিশাপাৎ নরলোকভাং নরলোকং ॥১৭।১৮॥ নৌরভিরভা ॥ ১১ । ১২ ॥

দুত্তে! কথা কহিতেছিস্না কেন? শীঅ আমার নিকট আপনার দোষ বল্। ৮।।

অনন্তর ত্রক্ষা ঐ তারাকে নির্ম্জনে আহ্বান করিয়া সাস্ত্রনা করত জিজ্ঞাসা করিলেন বংসে! কাহার পুত্র আমার নিকট ব্যক্ত কর। তারা নত্র বদনে এই সাত্র বলিলেন সোমের সন্তান। হে রাজন্! তারার মুখ হইতে এই বাক্য নির্গত হইবামাত্র সোম (চক্র) সেই পুত্র লইয়া গেলেন। লোক কর্তা বিধাতা ঐ বালকের গস্তীর বৃদ্ধি দেখিয়া "বুধ" নাম রাখিয়াছিলেন। হে মহারাজ ! নক্ষত্রপতি সোম সেই পুত্র হইতে পরম হর্ষ প্রাপ্ত হন্॥ ৯॥

সে যাহা হউক, ঐ বুধ হইতে ইলার গর্ভে পুরুরবার জন্ম হয়। ঐ ব্যক্তি অতিশয় বিখ্যাত ছিলেন।

এক দিবদ দেবর্ষি নারদ ইন্দ্রালয়ে ভাঁহার রূপ, গুণ, ঔদার্যা, শীলতা, ধন ও বিক্রম গান করিতেছিলেন, মর্বেশ্যা উর্বাদী তাহা ভনিয়া কামশরার্দিতা হইল এবং ঐ রাজার নিকট স্বয়ং ভাগমন
করিব। ১০॥

হে রাজন্! উর্বাণী দেবল্লী হইয়া মানব সমীপে কি প্রকারে গেল এ আশকা করিও না, মিত্রাবরু-নের শাপে দে সময় ঐ অপারাও মসুষ্ডাব প্রাপ্ত হইয়াছিল। এ বিষয়ে পদ্ম পুরাণীয় স্থিপিওে উর্বাণী জন্মানস্কর ইতিহাস যথা। একদা ইন্দ্র উর্বাণীকে আহ্বান করিয়া কহিলেন পদ্মাকি! তুমি আমাকে আত্ম সমর্পন কর, উর্বাণীও দেবরাজের বাক্যে সন্মতা হইয়া গমন করিল, পরে মিত্রদেবতা উর্বাণীর রূপলাবণ্য অবলোকন করন্ত কাম মুখ্র চিত্তে কহিলেন দেবি! আমাকে আত্ম সমর্পণ কর, তৎ পশ্চাৎ বক্লবন্ত ঐ প্রকার প্রার্থনা করিলেন। উর্বাণী কাহারত বাক্য প্রতিপালন করিতে সন্মতা হইল না এবং কহিল আমি পূর্বের ইন্দ্রকর্ত্ব হুতা হইয়াছি, তাঁহার অভিলাষপূর্ণ করণানন্তর ভোষাদের মনো- ধৃডিং বিক্টভা ললমা উপতত্তে তদ্ভিকে। স তাং বিলোকা নৃপভিহ্বেশে।ৎকুল লোচনা। উবাচ শ্লীক্ষা বাচা দেনীং হাউতম্লহঃ ॥ ১১ ॥

জীরাজোবাচ॥

স্বাগতং তে বরারোহে আসভোং করবাম কিং। সংরমস্ব ময়া মাকং রভি নৌ শংখতীঃ স্বসাঃ ॥১২ উর্বস্তাবাচ॥

ক্স্যান্থ্যি ন শক্জেত মনোদৃষ্টিশ্চ জ্বলন । যদস্যান্তরমাধাদ্য চাবতেহি রিরংসয়া ॥ ১৩ ॥ এতাব্রণকো রাজ্যানো রক্ষ ধানদ । সংরংভো ভবতা দাকং শ্লাঘাং ত্রাণাং বরং শৃতঃ ॥ ১৪॥ ংল্লান্থ বার ভক্ষাং স্থান্ধেকে ছাত্রর মৈধুনাৎ । বিবাদদং ভর্থেতি প্রতিপদে মহামনাঃ ॥১৫

श्चीगतंत्राभी।

্রৌ আবয়োরভিবন্ধিতি পেব: ॥ ১২ ॥

ষক্ষ জ্বৰ অস্বাঞ্চলিং ৰক্ষ আনাদা বিবংসমা এক্তিফিলা হ ক্টেই ম চাবতে মাপধালি যৎ যথাদিতি ৰা ॥ ১৩ ॥

শাপাবিধানে ভাষা ভক্ষমিষেণ জিগমিষোগুলা ভাষাবন্ধ সাই এভাধিতি স্বাস্থ্য ে উর্প্তেট মেবৌ লাগে নিক্ষেণ্যতে নী রক্ষর বং শ্রাঘাং স্থাব স্ত্রীপাং বরং মুক্তঃ। অতো বিজ্ঞানীয়ন্ত্রণ ন্যোষ ইতি ভাষা ॥ ১৪॥

হে ৰীৰ স্বতং মে ভক্ষাং আদস্তং বা আজানিতি জাতেঃ। দেবানাঞ্স্তাশিলাং হৈণ্যুদাণ্ঠুত বিবাসসং স্বাং নেকিছে;

জীশরস্বাসা।

মনোগৃষ্টিণ্চ ন চাৰত ইতি পুর্বেইণবাষয়ঃ ॥ ২৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯ ঃ

श्रीविधनायहळ्वकी।

মদ্যবাৎ অঙ্গ হে বাজন অন্তরং রহসি অবকাশং আসাদ্য প্রাপ্য রিরংগর। মনশ্চাব্তে বিকৃতী ভবতি ॥ ১৩ ॥

শাপাবসানমিবেণ স্বৰ্গং জিগমিষে। তজা ভাষাবন্ধমাই এতাৰিতি শ্বভাগে। উল্লেখ্য মেৰৌ আসে নিংক্ষেণক্তে বুক্ষ। যংখাঘাং সূত্ৰ স্ত্ৰীশাং বুরং শুকু ইতি বিজাতীয় হংস্কীণাম্পাকং ন দোৰ ইতি ভাবং গ্ৰহণ

স্বং নৈ ওঁকানিতামূহং বা আলামিতি আতে দৈবানাকামূহাশিবাং স্বা বাং। ওৱসাৰচনুং তথাস্থিতি প্ৰতিপেদে অসীকুম্বান্॥ ১৫॥

রথ সিদ্ধি করিব। এতৎ তাবণৈ মিতা ও বরণ উভয়েই শাপ প্রদান পূর্ণক করিলো। খারে বদ্ধাসনা। তোর এই ধর্ম মিধ্যা, তুই ফর্গে থাকিবার যোগ্য নহিদ্ আদাই মধ্যা কোনে গমন করিয়া সোগবংশ জাত পুররবাকে ভজন কর। অতএব পুরুষ ভোঠ পুররবাকে কন্দর্প তুল্য রূপবাদ্ আখণ ক্রিয়া দৈহা হইয়াছিল, স্থতরাং অহাং ভাঁহান নিকট গিয়া উপাসনা করিছে জাগিল। ১১॥

হে রাজন্! উর্বাদীকে অবলোকন করিয়া পুরুরবারও নয়ন আনলে উংকুল্ল হইল। রাজা পুলকাকুল কলেবর হইয়া প্রমধুর বচনে কহিলেন। হে বরারোহে! ছবে আগমন হইল, উপবেশন কর, বল
আনি কি করিব। হে নিবিড় নিভম্বিনি! আমার সহিত রমণ কর। বহু বৎসর যাবৎ আমাদের উদ্ধ্রের পরম স্থাধ রমণ হউক॥ ১২॥

উর্বাদী কহিল হে স্থার! তোমার প্রতি কাহার মনঃ ও নয়ন আস্প্রচনা হইবে! যে চেছ্ তোমার বক্ষাস্থল প্রাপ্ত হইলে রমণেচ্ছায় কেইউ তথা হইতে অপাগত ছইতে চাহে না ॥ ১৬॥

তদনস্তর শাপাবদানে প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ ছলে প্রস্থানের মানসে কহিতে লাগিল হৈ রাজন্! এই চুইটা মেয় নিক্ষেপ স্বরূপে রক্ষা কর। ছে সানদ! আমি ভোমার সহিত রুমল ক্ষেব, কারণ কে পুরুষ স্থান্ত, সেই ব্যক্তিই রুমণী দিপের ব্রুণীয়া, অতএব আপনি কিজাভীয় পুরুষ হইলেও ব্রুণে লোহ মাই। স৪। কিন্তু হে বীর! অধি ভোষার নিকটে থাকিরাও নিত্য স্থৃত (অষ্ক্ত) আহার ক্ষিব, আন মৈয়ু-

ভাবোরপ মহোভাবো নরলোকবিষোহনং। কো ন সেবেভমসুজো দেনীং ছাং সম্মাগভাং।
ভয়া দ পুরুষভাবে বিময়ন্তা যথাহঁতঃ। রেমে হুরবিহারের কামকৈত্রবাদির ॥ ১৬ ॥
রম্মাণ ন্ত্রা দেব্যা পদ্মকিঞ্জন্ধক্ষাং। ভদ্মধামাদমুষিভো মুম্দেহর্গান্ বছুন্ ॥ ১৭ ॥
অপশ্যমুক্তিশীমিন্দ্রা পদ্ধকান দমচোদয়ং। উর্দাশী রহিতং মহামানান নাভিশোভভে ॥ ১৮ ॥
ত উপ্রেভা মহারাত্রে তম্নি প্রভ্রোলীর্মানয়ো:। হভাস্মাহং ক্নাথেন নপুণা বীর্মানিনা ॥ ২০ ॥
নিশম্যাক্রন্দিতং দেবী পুত্রেরালীর্মানয়ো:। হভাস্মাহং ক্নাথেন নপুণা বীর্মানিনা ॥ ২০ ॥

बीशवयामी।

के कि व्यक्ति स्परंत अभी क्षंत्रवान् । ১৫ । जानवार व्यव्हा वे कि । ১৬ ।

পদ্মকিঞ্জজ্ঞ গন্ধ ইব গদ্ধো ৰক্ষা ক্তমা মুধামোদেন মুধিত: প্ৰংলাভিত: সন্॥ ১৭ ॥ মহং সম ॥ ১৮ ॥ মহারাতে মধ্যরাতে । মহানিশা ছে ঘটিকে ঝাতেক্ষণান বামগোরিভি আছে । ১৯ ॥ জিগনিধো তক্ষা: প্রুষোক্তিমাহ হতাতীতি সার্কেন । নপুংসা নপুংসকেন ॥ ২০ ॥

क्रमभक्षकः

নিশ্নোতি ত্রিকং।, দেবী আছেতি শেবং। যথা। নিশ্নোবাচেতি শেবং। যথা দেবীতাত ছাক্ষ্ ভালা সূত্ ভেন

श्रीविधनाभ६क्वव श्री।

ভাবে। ভাবহাবালি ॥ ১৬ । ১৭ ॥ মত্মাস্থানং মম সভা ॥ ১৮ ॥

মহারাতে মধারাতে। মহানিশা বে ঘটিকে রাতের র্গম বানহারিতি স্থতে। ১৯॥

পুত্ররোর্মেবরো:। নপুংসা নপুংসকেন মত্র বিভান্ত বীজারমিতি বিখালাৎ দিশি নারী কথা তথা শেতে শংকভঃ। চৌলা-

নাতিরিক্ত সময়ে তোমাকে বিবস্ত্র দেখিতে পারিব না। পুরুরবা তদীয় পৌশদর্য্য মাধুর্ব্যে বিমুগ্ধ হইয়াছিলেন, সে যাহা যাহা বলিল তৎ সমুদায়ই অঙ্গীকার করিলেন । ২৫ ।

এবং কহিলেন হৃদ্দরি! তোমার আশ্চর্য্য রূপ ও আশ্চর্য্য ভাব দেখিলেট নরলোকের গোহ হয়।
অপর তুমি স্বর্গবাদিনী দেবী, স্বয়ং আগমন করিয়াছ, কোন্ মনুষ্য ভোগার গোনা না করিবে?
হে রাজন্। এই কথা বলিয়া পুরুষ প্রধান পুরুরবা উর্বেশীর সহিত দেবগণের জ্বীড়াস্থল চৈত্ররথ
প্রভাতে রুমণ করিতে আরম্ভ করিলেন। উর্বেশীও যথাযোগ্যরূপে এ কার্য্য সম্পাদনে ব্যাপৃতা
রহিল ॥ ১৬ ॥

সেই দেবীর গাত্তে পদ্মকিপ্রস্কের গন্ধ তুলা, হৃগন্ধ বহিত, রাজা তাহার সহিত ক্রীড়া করত তদীয় সমক শেষকেড প্রকোভিত হইয়া অনেক দিন পরম আমোদে রহিলেন ১ ১৭ ॥

এবিদ্ধান নিৰ্মাণ ইন্ত ক্ষুপুৰে উৰ্ক্ৰীকে দেখিতে না পাইয়া গল্পদিগকে আদেশ করিয়া পাঠাইলন উৰ্ক্ৰী কোঞাল পাছে শীল্ল লইয়া আইন, আমার স্থান উৰ্ক্ৰী রহিত হইয়া শোভা কাইছেনে। ১৮॥

ক্ষত এব মধ্যনাতে যখন গাঢ় অন্ধকার উপস্থিত হইল মেই সসম এ দকল গন্ধৰে মৰ্ত্তলোকে গমন করিল এবং অংপনাদের জানা উর্নাধী পুরুষধার নিকট যে ছুইটী মেন নিজেপ স্থানে রাখিনাছিল, ভালা হুল করিয়া আনিল। ১৯।

त्मरे इस्की त्मग्रदक स्वर्तानी शूळ जूना स्थान कहिल, खादाबा नहस्त्रांन कईक बील हरिनांत मग्र

যদ্বিজ্ঞাদহং নকী হতাপতাচে দহাভিঃ। যা শেতে নিশি সন্ত্ৰো যথা নানী দিনা পুনান্। ইতি বাক্শায়কৈবিদ্ধঃ প্ৰতোদৈনিৰ কুঞ্জাঃ। নিশি নিজ্ঞিশানাদায় বিৰ্ণ্ডোহভাজনজ্ঞা ॥২১॥ তে বিস্জোকিনী তত্ৰ ব্যালোভিজন্ম বিহাজঃ। আদায়মেষাবায়ান্তঃ নগ্ৰনক্ত সা পতিং॥ ঐলোহপি শানে জায়ামপশান্ বিমনা ইব । তিচিতো বিক্লবঃ শোচন্ ব্যামোনাত্ৰব্যাহীং॥ ২২॥ স তাং বীকা কুকক্তে সেরস্বভাকে তৎ স্থীঃ। প্ৰ প্ৰহ্নিবদনঃ প্ৰাহ সূক্তং পুক্রবাঃ॥ ২০॥

শ্রীমন্তাগবভম।

श्चीपत्रश्वाभी।

যথা নীবী তথা সম্ভতঃ শেতে॥ ২১॥

বিজ্যতঃ বিশিষ্ট্যাতিমস্তঃ বাংল্যাত্ত দীপ্ৰিমক্ৰত। য**া তেপের তড়িতঃ প্রাকাশত্তে**তার্থঃ। নাট্নেকত সতো ভাষাভ্লাৎ নির্প্রামেতি জেষং ॥ ২২ ॥

ভক্তাঃ স্থী দ ুৰ্ণিং বীক্ষা স্কং শোষন বচনং। অহে। জারে ইভ্যাদি । ২০ 🛭

ক্রেম্পক্ত:

দেবা। ইতি বাক্শায়কৈ বিশ্বি ইতি তৃতী সনাযয়: । যো দিবা দিবদে পুমান্ পুংভাৰ আংশকোপি নিশি রাজৌ তুনারীর সন্ততঃ । কেবলং শেতে। গৃহাত্তবারং পিধার অপিতি নচেও ততে। বক্ষার্প ভ্রমতি চেত্যর্থঃ ৮২০।২১ ॥

তিঙিয়ে। বিক্লব ইভি পঠি: সম্বন্ধে।'ক্ত মতঃ বিক্লবে। বি**হ্লল ইভি ব্যাধ্যানাৎ** । ২২ ।

ञ्कः (तमष्टः यर ञ्काषाः छनीयः वहनः ऋत्मव व्याह ॥ २०। २८। २८ ॥

श्री विश्वनाशठक वर्ळी ।

ব্যেবাবংলেজুমসমর্থং। ভত্মাদ্দিবৈৰ ষং পুমানু নিস্ত্রিশং থড়গং । ২০ । ২১ ৫

িবিহাকং বিশিষ্ট হৃতি মস্তঃ বাদোভেষণী প্রিমকুর্ক্ত। ভদৈৰ নগ্গমৈকতেভি ভাষা ভকারিজঁগামেভি ভেয়ং ॥২২।২৩॥

আর্সিরে রোদন করিতে লাগিল, উর্বিশী ভাহা শুনিতে পাইয়া রাজার নিঞ্ট হইতে প্রান বাসনায় থেদ করিতে করিতে কহিল, হাঃ আমি এই কুৎসিত স্বামি হইতে বিন্ট হইলাম, ইনি নপুংসক, ইহাঁর পুরুষ্মাত নাই, অংগনিই আপনাকে বার বলিয়া অভিমান করেন ॥ ২০॥

ইংগার প্রতি বিশাস করিয়া গামি নট ইইলাম। আহা। আমার অপতাগুলি দৃত্য কর্তৃক অপহাত হইল, আহো। ইনি দিবায় পুরুষ জ্ঞাপক ইইয়াও নারীর ভায়ে ভীত ইইয়া রাজিতে ওইয়া আছেন। হৈ রাজন্। হস্তী যদ্রপ অহুশে বিদ্ধা হয়, তাহার ভায়ে উর্বিশীর ঐ প্রকার বাধানে বিদ্ধাহইয়া পুরুরমা সেই রাজিতেই নিস্তিংশ (থড়াগ) গ্রহণ পূর্বক রোষে বিবস্তা ইইয়া মেযাপহারক দিগের প্রতি ধাবনান ইইলেন ॥ ২১॥

তদর্শনে গদ্ধগৈণ তৎক্ষণাৎ মেই সুই সেষ পরিত্যাগ করিল এবং বিশিন্ট ছাতিশালী হইয়া দীপ্তি প্রকাশ করিতে লাগিল। রাজা ছইটা মেষশাবক লইয়া স্বভানে আগমন করিলেন সভা কিন্তু তথন তিনি নম থাকাতে উপিশী তীহাকে বিষদ্ধ দেখিল। হে রাজন্। নৈথুন ভিন্ন সময়ে ভোমাকে বিষদ্ধ দেখিতে পারিব না, ঐ অপ্যরা এই সময় করিয়াছিল তাহা ভঙ্গ হওয়াতে তৎক্ষণাং সে স্থান হইতে প্রসান করিল। অনন্তর পুররবা শয়নে কায়ার দর্শন না পাওয়াতে অভিশয় বিমনা হইলেন, ভাগত চিত্ত চি

কিয়াজন পরে ক্রকেজে সরস্থা তীরে সেই অপ্সরা এবং তদীয় পাঁচটী গুখী তাঁহার নিয়নপথে পতিতা ২ইল, অতএব ব্যস্ত-সমস্ত হইয়া প্রছফ বদনে এই হুশোভন বচন কহিলেন ॥ ২০ ॥ ১০১

অহো জায়ে তিন্ঠ তিন্ঠ ঘোরে ন তাক্তুম্ছিদ। মাং অমদ্যাপ্যনির্ভ্য পচাংসি কুণবাবহৈ ॥২৪॥ হ্মদেহোহয়ং পতভ্যত্ত দেবি দূরং হৃতস্থয়া। খাদস্যেনং রকা গৃধাস্তং প্রসাদস্য নাম্পানং ॥২৫% **उतिलागा**ह ॥

মা মূপাঃ পুরুষোহদি ত্রং মাম্মতাদ্রার্ক। ইমে। কাঁপি দ্বাং নবৈ স্ত্রীণাং রকাণাং হৃদয়ং যথা ॥২৬ ব্রিয়োহকরণাঃ ক্রুরা ছুর্মর্যাঃ প্রিয়নাহ্দাঃ। স্ব র স্কার্থেহাপ ি জব্ধ: পতিং লাতর্মপুতে 📳 🤒 বিধায়ালীক বিজ্ঞেমজেষু তাজগোষকাঃ। নবং নবমভাপারাঃ পুশ্চনাঃ দৈরবুরুয়া ॥ ২৭ 🛭

ভদেবাৰ্থত আহু আছে। ইতি ৰাভাাণ। জনিবৃতি। মংকভাং নিবুতিমপ্রপ্যে অনিপ্রেটাতিপাঠে মাং নিবৃতিমগম্মিত্ব মত্রানস্তেল্ভি বা বাবারি কণবাবতে গে ঠী করবাবহৈ ৮২৪ ॥

ञ्चरमण्डाञ्च कन्नीर्य ६ सः मन रहतः ॥ २०॥

পুরুর বো নামুল। ইত দি দক্তাঃ প্রতং তদপাণতি আহ মা মুগা ইতি চঙুতিঃ মাঞ্জির পুরুষোধ্যি অভোধৈর্য মাবছেতি ভাব:। ইনে রুক: প্রাণ বা তা ইতি তাং মাল অহা: ভক্রেয়ু: ই:ক্রের্লোম:ভবে এপ: ॥ ২৬ ॥

किमभन्दि।

কুত ইতাজাহ বুক পাং হৃদয় যথা ভবৈধৰ স্ত্ৰীণামিতাল: । ২৬ । ঠিয়ে ইতি যুগাকং। প্রিচয় নিজ।ভিক্তিভে সঃহসং যাসাং ডাঃ ॥ ২৭ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ ॥

অব্যাপি অনির্ভি ননির্ভি। ভ্যাম্কভাং নির্ভিনপ্রাপ। মাং ভ। জুং নাহ সি। অনিবংগ্তি গাঠে মাং নিঃশেষেণ অব্ভ-श्चिका व्यक्षीतास्त्व अध्यः यनि ता ত।ক।সি তদপি ক্ষণः ভাবৰচানস ক্ৰবাবহৈ গোষ্ঠীং করবাবহৈ ॥ ২৪ ॥

পঞ্জ। ख्रुः नय मुः भानतः अ ख्रुन् हे छ ॥ २०॥

মা মুগাংল। মাবৰ প্রাংখাহদীতি লপুংসক লক্ষণ মধৈৰ্যাং ভাজেতি ভাবং। ইমে বুকা ইতি বুকাং পলুল বুকাং কি স্থিতিয়া-পোর সুকা ফ্রারেছাং মাথ অহা: ভক্ষের্: অকিতেক্রিরোমা গ্রিতাব: ॥ २७ ॥

[া] যত ছং বিজ্ঞ ছল'ভং ম এ্ৰাং বিফলয়াস ভাসামগাকং জীজাহীনাং অভাবং শৃণিভূতাই জীয়ে ইতি ছাভাগং চুৰ্মাধী অপরাধা

অহো ভায়ে! থাক, থাক। হে ঘোরে! আমি অদ্যাপি হুল্ব হই নাই, আমাকে হুল্থ না করিয়া পরিত্যাগ কর: তে।মার উচিত হয় না, আইদ, হুই জনে একতা বদিয়া কথা কহি॥ ২৪॥

ে হে দোবি! আমার এই অতি কমনীয় কলেবের তে।মা কর্ত্কে দূরে হাত হইয়া এই খানে পড়িয়া যায় এবং তোমার প্রসন্নতার আম্পদ না ছওয়াতে এই দেখ গুপ্ত বকগুণ ইহাকে পাইয়া ফেলে॥২৫

উক্ৰী কহিল রাজন্! নরিও না, ভুমি পুরুষ দৈর্ঘা অবলম্বন কর, এই সকল বুক অথবা প্রদিদ্ধ ইন্দ্রিয়গণ তোমাকে ভক্ষণ না করুক, অর্থাৎ তুমি ইন্দ্রেয় পরবশ হইও না। হে রাজন্। জ্রীদিগের কুত্রাপি সধ্য বাকে না ভাষাদের হৃদয় রুকদের হৃদয় তুল্য ॥ ২৬ ॥

'বে তেতু রমণীগণ সভানত: অকরণ, ক্রুর ও ক্লান্তি রহিত, প্রিয়ের নিসিত্ত অধ্যাদিতে সাহ্য করিয়া থাকে, অল বিষয়ের নিমিতও বিশ্বত পতি অথবা ভাতার প্রাণবধ করে। অধিকস্ত যাহারা পুংশ্চলী, স্বেচ্ছাচার করিয়া বেড়ায়, ভাহারা সৌহার্দকে একেবারে বিগর্জন দিয়াছে, অজ্ঞ পুরুষের নিকট বাছ অলীক প্রণয় দর্শন করে, কিন্তু অপ্রকাশে সদাই নৃতন মৃতন অভিনায় করিয়া থাকে ॥২৭॥

সংবংসকান্তে হি ভবাবেকরাত্তং করেশ্বন। রংশ্বতাপজ্যানিচ তে ভবিষ্ঠাপরাণি ভো: ॥ ২৮॥ অন্তর্মন্ত্রীমূপালক্ষ্য দেবীং স প্রথমে, পুরীং:। পুরস্তত্ত্ব পজোহ্পান্তে, উর্বশীং বীলমান্তরং॥ উপলভ্য মূদাযুক্তঃ দম্পাদ তথা নিশাং। অধৈনমূর্দশী প্রাহ কপণং বিরহাজুরং । পদ্ধান্ত্রমান্ত্রা কামিতি: ॥ ২৯ ॥ পদ্ধান্ত্রমান্ত্রা ক্রিয়ালীং দত্ত্বি ॥ ৩০ ॥ উর্বাশীঃ মন্ত্রমান্ত্রাং সোহবুধ্যত চরন্ বনে ॥ ৩১ ॥ বিরহাজান বাব বিরহাজা

शिवयामी।

তং সাম্মতি শংবংসরার ইতি অপরাণীতি বচনাৎ অন্তর্শস্থীমূপালক্ষা ৫ ২৮ ৫ ২৯ ৫ অনেনাগ্নিনা কর্ম ক্ষম তরশাত্র্শশীং প্রাপদাতীতা ভিন্ধায়েশাগ্রিস্থ লীং দত্য দ ২০ ৫. সতু তাং স্থালীমেব উর্ন্দীং মন্ত্রমানস্তরা সহিত্যে বনে বিচরন্ নেয়মূর্মণী ক্রিম্ব অধিশ্রালীতার্ধান্ত এড১.৫. ভতশচ তাং স্থালীং বনে স্থাপ্রিয়া গৃহান্ গম্বা নিশি নিতাং তামেবা ধারত স্বত্ত মন্দি থেতা**রাং অমী অবর্জত ক্রমেশসকং**

ক্র'শ'র ব

স্থাল্যা মুর্স্কশী মননং তৎ প্রাপ্তা তৎ প্রোপ্তিরের জাতেতি সনন্দবেশাও। কোধশাক্তি পরিচয়ে শ্রীতি জ্ঞেয়ং ॥ ১২। ৩০॥ শ্রীবিখনাগচক্রবত্তী।

প্রবোধনিত্মশকাং পুনঃ সান্ত্রতি। সংবংসরাস্ত ইন্ডি এ ২৮ এ অন্তর্গন্ত্রী মুপালক্ষ্যেতি তন্ত্রা অপরাণীতি বচনাং ॥ ২৯ ॥ ওক্ত জ্বিন্ প্রক্রিন্ অবতি সতি তুটা গন্ধা আনেনাগ্রিনা কর্ম ক্রা. তর্প: কুর্মণীং প্রাক্ষানিতাভি প্রায়েণ।কৈ স্থালীং কর্ম। সতু উর্বাধান স্থানিতাভি কানাক্ষ্যাং স্থালীমেবার্মণীং মক্তমান ভ্রা সহিত্যে বনে বিচরন্ সঙ্গলমন্ত্র নেরমূর্মণী কিন্ত্রিক স্থালীভাবেশত ॥ ৩১ ॥

নিশি আ। সনাক্ তামুর্বশীমের ধ্যায়ত গুল্ল তেতারতে এমী অবর্তত কর্মবোধকং বেদএয়ং প্রাত্রভূদিতি কামিনএর কর্মে কার্যা

সে যাহা হউক, তুমি দম্বৎদরান্তে এক রাত্রি মাত্র আমার সহিত ক্রীড়া করিতে পাইকে ভাহাতেই তোমার অপরাপর মন্তান উৎপন্ন হইবে॥ ২৮॥

হে রাজন্! তদনন্তর পুররবা ঐ দেনীকে সদত্য দেখিয়া ত্দীয় বাক্য স্বীকার করত আপনার পুরে আগমন করিলেন। কিন্তু বংশর শেষ হইনামাত্র পুনরার সেই স্থানে গেলেন। বীরগ্রসনিনী উর্ব্বলিকে নিরীক্ষণ করিয়া তাঁহার পরম হর্ষ জাগল, প্রমুদিত চিত্তে তাহার সহিত্ত এক রাজি বাদ করিলেন। পরে বিচ্ছেদ ভয়ে রাজার, অন্তঃকর্থ আকুল হইল। উর্বাণী দীন নরপতিকে বিরহাতুর দেখিয়া কুপা প্রকিক কহিলেন রাজন্! আমার নিমিত্ত বিষধ হইতেছ কেনং গ্রহারিদের অনুনয় কর, ইইারা আমাকে তোমার ইত্তে দক্ষান করিতে পারিকেন। ২৯॥

হে নহারাজ। উর্বশীর ঐ কথায় পুরারবা পদ্ধনিদিগের স্তব আরম্ভ করিকেন, ভাহাতে আচিরেই তাঁহাদের সংস্থায় জন্মিল। তাঁগারা প্রদান হইরা রাজাতে অমিয়ালী প্রদান করিলেন। ভাহার ভাৎ-পর্যা এই যে ঐ অগ্রি, দারা কর্মা করিলে তথেয়াগে উর্বশী লাভ হইবে ॥ ৩০ ॥

কিন্তু প্ররবা সেই অমিখালাকেই উনিনা বোধ করিয়া ভাহার অহিত কডক বিনা করে করে বিধার, ক্রিলেন পরে তাঁহার অম দুর হইল, অর্থাৎ এ উর্জুলিকার ক্রিড়া আরালী, ইল্ বুরিতে আমিলেন। ১৯ তদনন্তর সেই অমিছালী বন মধ্যে আনুসন করিয়া গৃহত্ ধননাপ্রক মিডা কলনীধনতে ভাহারই স্থালীস্থানং গতোহখথং শমীগর্ত্তং বিলক্ষ্য সং। তেন দে অরণী কৃত্বা উর্বেশীলোককাম্যয়া ॥৩৩॥ উর্বিশীং মন্ত্রভোধ্যায়মধরারণিমূভরাং। আত্মানমূভয়োর্মধ্যে যন্তৎ প্রজননং প্রভুঃ॥ ৩৪॥ তম্ম নির্মাথনাজ্জাতো জাতবেদা বিভাবহঃ। ত্রেয়া স্বিদ্যয়া রাজ্ঞা পুক্রতে ক্রিভিন্তির্থ॥ ৩৫॥ তেনাযজ্ঞত যজ্ঞেশং ভগবস্তমধাক্ষজঃ। উর্বিশীলোকম্বীচন্ন্ স্বিদেবস্থাং হ্রিং॥ ৩৬॥

श्रीभवत्रामी ।

(वनवायः श्राञ्चल्य ॥ ०२ ॥

ততঃ স্থালীস্থানং গতঃ সন্ তত্ত শেমা। গৰ্জে আৰু তমখণং বিলক্ষা। আৰু ত্তিসাৱকীতি বিশেষণে শক্ষেত্ৰ তেনাখণে ন কৈ আৰু আৰু নী কুৰা অধিং মমস্থেতি শেৰঃ। শুনীগ্ৰাদিখিং মুম্ভেডি শুডে: ১০০ ৪

মগনপ্রকারমাহ অধরারণিম্র্কশীং ধ্যায়ন্ উত্তরাঞ্চারণিমাত্মানং ধ্যায়ন্ উত্তরোল্লবংগার্মধ্যে বং কাঠং তং প্রক্রিনং পুত্রং ধ্যায়ন্। তপাচ মন্ত্র: । উর্বিশ্যা উরদি পুরুরবা ইতি ॥ ৩৯ ॥

ভক্ত তেন কতালিশ্বনাৰিভাবস্বয়িজ্ঞাত:। কৰা ভূত: জাতং বেদোধনং ভোগ্যং ৰশাৎ । সচ অ্যা বিদায়া বিহিছতনা-ধান সংস্থানে তিন্ত আহ্বনীয়াদির প: সন্ কাজা প্রেরবস্য প্রত্তে কলিভ: প্ণালোকপ্রাপক্ষাৎ । ৩৫ ॥ • • • • তদাহ তেনেতি । ৩৬ ॥

ক্রম্পর্ড:।

পুরা আক্ষ করভ প্রথম সভাযুগ ইভোবার্থ:। স্বায়ভ্বমারভা বেলাদি বর্ণানাং ভেদ বাবহার শ্রবণাং ॥ ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭॥

बीविचना पठक वडी

মিত্যভিব্যঞ্জিতং । ৩২ ।

তত শচ স্থালী যত্ত্ৰ তাৰ স্থানং গতঃ সন্ছোকর ইতি খাতে শম্যা গত্তে লাতমখখং বিশক্ষ্য তেনৈবাখবখন বে ক্ষরণী ক্ষা অগ্নিং মমষ্টেত শেষঃ। শমীগর্ভাগয়িং মমষ্টেত শ্রুডেঃ ॥ ৩০॥

মত্ন প্রকারমাহ অধরারণি মুর্বাশীং ধ্যায়রুত্রারণিফাঝানং ধ্যারন্ উত্তরোশ্বধ্য যৎকাঠং তং প্রজননং প্রেংধ্যায়ন্। তেপাচ মল্লং উর্বাঞাম্বসি প্ররবাইতি ॥ ৩৪ ॥

তত্ত তৎ কর্ত্কারিম থনাৎ ভিতাবস্থ্র গ্রিজাত:। জাতং বেলোধনং ভোগ্যং বন্ধাৎ সচ অবা। বিদায়া সংস্কৃতো রাজা প্রছেন কল্লিত: পুণ্যলোক প্রাণকত্বাৎ। ত্রিবৃৎ আহবনীয়াদি রূপ: ৪৩৫ । তেনাগ্রিমা ৪৩৪

ধ্যান করিতে লাগিলেন, তাহাতে ত্রেতা যুগ প্রার্তির সময় তদীয় হৃদয়ে কর্ম বোধক বেদতায় প্রাহ্-ভুতি হইল ॥ ৩২ ॥

ভাহার পরে তিনি পুনরায় অগ্নিস্থালীর স্থানে গমন করিয়া দেখিতে পাইলেন শমীব্রক্ষের গর্জে একটা অখপ তরু জন্মিয়াছে। অতএব এতন্মধ্যে অগ্নি আছে ইহা বিশেষ করপে লক্ষ্য করিয়া উর্বাণী-লোককামনায় রাজা সেই অখপ ঘারা ছুইটা অরণী নির্মাণ পূর্বক অগ্নি মন্থন করিলেন॥ ৩৩॥

হে রাজন্। পুরুরবা কি প্রকারে অগ্নি মন্থন করেন বলি শ্রেণ কর। মন্ত্রাস্থারে অধর অরণিটাকে উর্বেশী এবং উত্তর অরণিকে আত্মা বোধ করিয়া এই ছুইয়ের মধ্যে যে কার্চ্চথণ্ড ছিল ভাহাকে পুত্র স্বরূপে ধ্যান করিতে লাগিলেন॥ ৩৪ ॥

অনস্তর সেই অরণি মন্থন করিবা মাত্র তাহা হইতে অগ্নি উৎপদ্দ হইল। ঐ অগ্নি সামান্য নহে, তাহা হইতেই ভোগ্য ধন ক্ষত্রে। তদনস্তর সেই অগ্নি ত্রেয়ী বিদ্যায় বিহিত, আধান সংস্কার দারা ত্রিবিৎ অর্থাৎ আহ্বনীয়াদি ত্রিরূপ হইলে পর রাজা সেই ত্রিবিৎ অগ্নিকে আপনার পুত্র বলিয়া কল্পনা ক্রিবেলন ॥ ৩৫ ॥

खरः छर्वनीत्नाक कामना कतित्रा छाहात घाता गर्वतात्रमय यह्या छ्राना हतित वस्य कतिएउ नागित्नम ॥ ०७ ॥ এক এব পুরা বেদং প্রণবং দর্শবাদ্ধায়:। দেবোনারায়ণো নাক্ত একোংগ্রিবর্ণ এবচ ॥ ৩৭
পুরুরবদ এবাদীৎ এয়ী জেতামুখে নৃপ । অমিনা প্রক্রমা রাজা লোকং গান্ধর্মমেয়িবান্ ॥ ৩৮ ॥
॥ ॥ ॥ ইতি শীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং দংহিতায়াং বৈরাদিক্যাং নবমস্কন্ধে ঐলোপা।
খ্যানং চতুর্দশোহধায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১৪ ॥ ॥ ॥

শ্রীবাদরায়ণির বাচ॥

ঞলস্য চোকাশী গর্ত্তাৎ ষড়াসনাত্মজা নৃপ। আয়ু: আংতায়ু: সত্যায়ুর য়োহ্থ বিজয়ো জয়: ॥ ১ ॥

अधिवत्रामी ।

নত भनामिर्व्सम्बद्ध বোধিতো আশ্বাদীনাং ইক্সাদ্যনেকদেৰ্যজ্ঞনেন স্বৰ্গ প্ৰাপ্তি হৈছে: কর্ম্মার্গ:। কপং সাদিরিব বর্ণাতে ভ্রোহ এক এবেতি বাভ্যাং। পুরাকৃত যুগে সর্ধবাস্থয়: সর্ধাদাং বাচাং বীজস্তুতঃ প্রাণৰ এক এব বেদঃ দেবশ্চ নারায়ণ এক্রার। অফিটেশ্চক এব লৌকিক:। বর্ণ শৈচক এব হংসো নাম ॥ ৩৭ ॥

বেদল্লীতু পুরীরবদঃ সকাশাৎ আসীং। এরিবান্ প্রাপ। আরং ভাবঃ ক্তত্ত্বে সত্ত্ প্রধানাঃ প্রায়শঃ সর্কেইপি ধ্যাননিষ্ঠাঃ। রজঃ প্রধানেতু ত্রেতাযুগে বেদাদি বিভাগেন কর্মনার্গ প্রকটো বভূবেভি॥ ৩৮॥

॥ 🛊 ॥ ইভি নবমে চতুর্দশ: । ♦ ॥

ভত: পঞ্চলশে গাধিবৈল পুত্ৰাৰৱেইজনি । যদৌহিত্র স্থভোরাম: কার্ত্তবীর্ঘ্যহন্ রুবা ॥ ১ ॥

ক্রম দল ডঃ

পুক্ৰরণ এবেতিকু তদৰজারস্তাত ততা তেতা মুপে তমাদেৰ ভত্তৎ প্ৰেণ্ডনং তৰ্ৎ পূৰ্ব পূৰ্ব মন্ত ভোৱাত ইঙা ভিপ্ৰায়াৎ। আত আৰু পূক্ষাৰ্ণ চিডুইয়োৰণতি তি কি কিংক কি কিংক কাল বাৰধানতো ভোৱা। ॥ ৩৮ ॥

แ 🛊 แ है कि औमहाशवक नवमक्रत्त अविविश्वाचामिक्क क्रमनन्दर्क इक्त्रिमाश्यातः नमाश्वः ॥ 🛊 แ 🕫

विविधनावहक्तवर्शी।

নত্ন বেদজনবোধিত: কর্মার্গ: প্রাঙ্গাসীৎ সভাং প্রকটোনাসীদেবেতাছে এক এবেতি শাভাাং। পুরা ক্বত্যে দর্ক বালার: স্কাসাং বাচাং বীল্লুড: প্রণৰ এক এব বেদ: দেবশ্চ নারাশ্বশ একএব অগ্নিশ্চৈক এব লৌকিক: বর্ণ শৈচক: হংসোনাম বতঃ ক্বত মুগে সন্ধ প্রধানাঃ প্রায়স: সর্কোপি ধাাননিষ্ঠা এবেতি ॥ ২৭ ॥

জ্ঞোরত্বে প্রেরবন: সকাশাদেব কর্মনার্গ প্রাত্র্জাব:। এবং স্বারস্ত্ব ময়ত্তরাদাবণি। বহু চত্ত্র্প ব্যাণক রাজ্জনতঃ:। প্রিয়ন্ত্রজাদিতা এব তত্র তত্তর ত্রেভারত্তে কর্ম প্রাত্র্জাব ইত্যাপি জেলং । ০৮॥

়॥ *॥ ইতি য়ারার্থদর্শিকাং হর্ষিণাং ভক্তচেতসাং। চতুর্দ্ণোহ্রং নবমে সম্পতঃ স্কৃতঃ স্তাং ॥ *॥ ঐলবংশ্ভুবো গাধে দৌহিত্রাক্সক ঈশরঃ। অর্জুনং পেফু হর্তারং রামঃ পঞ্চদশেহবধীৎ ॥ ১॥

হে রাজন্। পূর্বে সত্যযুগে দর্ব প্রকার বাকে।র বীজ্তুত প্রণবই একমাত্র বেদ, দেবতাও এক-মাত্র নারায়ণ, অগ্নিও একমাত্র লোকিক এবং বর্ণও হংস নামে একমাত্র ছিল। ৩৭।

পরে ত্রেতা যুগের প্রথমে পুররবা হইতে দেবত্রর হয়, একারণ ঐ যুগে ঐ রাজা অগ্নিরপ প্রজা বারা গন্ধর্ব লোক প্রাপ্ত হন। ফলতঃ সভাযুগে সকল ব্যক্তিই সন্ত্র্পণ প্রধান ছিল, স্থতরাং প্রায় সকলেই ধ্যান নিষ্ঠ হইয়া থাকিত। ভাহার পর রজোঞ্জণ প্রধান ত্রেতা সুগে কোদির বিভাগ বারা কর্মার্স প্রকাশিত হইয়াছে ॥ ও৮ ॥

।। 🖦।। ইতি নবমে চতুর্দশ 🔐 🛊 ।।

পঞ্চদশ অধ্যায়ে ঐল পুত্তের বংশে গাণির জন্ম, এবং ঐ গাণির দেছিত সন্তান রাম কর্তৃক কার্তিনীর্ষ্যের বধ ॥ ০ ॥

অনন্তর শুকদেব কহিলেন রাজন ! এলের উর্বনী পর্যে ছয়টা সন্তান হয়, তাহাদের নাম আয়ু,

শ্রুতারো বঁহুমান্ পুত্র: সভ্যায়োশ্চ শ্রুতজন্ম:। রর্জ্য হত একণ্ট জন্মা তন্য়োহ্নিত:।
ভীমস্ত বিজয়স্যাথ কাঞ্নো হোতাকস্তত:। তস্ত জহু: হতো গঙ্গাং গণ্ড্যাকৃত্য যোহপিবং ॥২ এ
জহোস্ত প্রুত্তস্যাথ বলাকশ্চাস্ক্রো হকক:। ততঃ কুশঃ কুশ্স্যাপি কুশ্যস্ক্তন্যো বহু:।
কুশ্নভিশ্চ চহারো গাধিবাসাং কুশামুজঃ ॥ ৩ ॥

ভদ্য সভাৰতীং কন্যায়চাকোহ্যাতত দ্বিজঃ। বঁরং বিসদৃশং মত্বা গাধির্ভার্গবমত্রবীৎ ॥ ৪ ॥ একতঃ শামকর্ণানাং হয়ানাং চন্দ্রবর্চসাং । সহত্রং দীয়তাং শুক্ষং কন্যায়াঃ কুশিকা বয়ং ।

नी पत्रकामी ।

হ্পাহ্যায় অরাদিক্রনেণ শাভায়ু প্তৃতি বল্লাং বংশানাছ শাভায়েরিভাবিনা এক: একস্ংক্ত: অমিড: তৎস্ংক্ত: । ২ বি ক্ষোং প্র: ডড় বলাক: ডড় অল্ক:। ৩॥

গাবেঃ পুত্রে। বিখানতো অন্ধরিক্লিত্ত এরধানে বক্ষাতি গাবেরভ্রহাতে আইত্যাদিনা। তত্র ভাবত্পোদ্বাত ছেন ভ্রথংশ-ভবত ঋটীক্ত চরিত এগ্রান্থ প্রসক্ত থেনচ পর্ধরামাব্তার চরিত মাহ তত্ত স্ভাবতীগিত্যাদিনা। বিসদৃশং আন্ম্রণং ভাগবং ঋচীকং ॥ ৪ ॥

দক্ষিণ বাসলোটোক চঃ শ্রামকর্ণোবেষাং দর্ক্ষিদ্রদে চক্ততেৰ বর্চে। গেষাং নচেন্দ্রপি পর্যাপ্তমন্ত্রকালাঃ। বতঃ কৃপিকাঃ

ক্রমসন্মর্ভ:

জাছে! রিভি সার্দ্ধিকং। জাহেশতে পুকা অস্যাপ বালক-চাত্ম কোজাক ইভোব পাঠ: সংক্র পাঠান্তরং ভুকুরোণি ন দৃশাতে। টীকা ভুনির্গলিভাগবেন সংগগতে হে । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ | ৯ । ১০ । ১১ । ১২ । ১৩ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১ । ২০ । ২১ । ২২ । ২৩ । ২৪ । ২৫ । ২৭ । ২৭ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ ॥

चै विचना **पठक वर्छो**।

আনোৰ্কংশং বিভৃতমুপ্রিটাম্মান্ প্রথমং আভায়ু প্রভৃতীনাং বরাং ৰংশান্ সংক্ষিপ্তানাছ জভায়েরিভি একচেড্যেক সংক্ষাঃ ॥ ভনয়তং সংক্ষাঃ ॥ ২ । ৩ ॥

গাংধঃ পুত্রে। বিখামিত্রো ব্রহ্মীর্ষরভূদিত্যন্তরাধ্যায়ে বক্ষান্ত ভক্ত ক্সা বংশ প্রসংক্ষেত্র পপ্র (মাবভারং বক্ষান্ প্রথমং ঋটীক্ ঋষি চরিত্যাহ ওক্তেতি কুশিক। ইতি কুশক্ষ বংশা বরং ক্ষরিয়া অপি দর্পতােহ্শি কুলীনা ইতি ভাবং। দক্ষিণ বাময়ে। আহতঃ শ্রামা কর্ণো বেষাং তেষাং ৪ ৪ । ৫ ॥

শুতায়ু, সত্যায়ু, অয়, বিজয় এবং জয়॥ ১॥

তমধ্যে শ্রুতায়ুর পুদ্র বহুমান্, সত্যায়ুর সন্তান শ্রুতঞ্জয়, ভায়ের তনয় একনামা, জয়েব সন্তান অমিত, বিজ্ঞার হৃত ভীম। ভামের পুদ্র কাঞ্চন, তাহার তনয় হোত্রক। প্র হোত্রক হইতে সেই জহুর জম হয়, যিনি এক গণ্ডুয়ে গঙ্গা পান করিয়াছিলেন ॥২॥

সে যাহা হউক, ঐ জহুর পুত্র পুরু, ত।হার পুত্র বলাক, বলাকের আজাজ অজক। সেই অজক হইতে কুশ জন্ম গ্রহণ করেন। কুশের কুশাস্থা, তনয়, বহু এবং কুশনাত, এই চারি সন্তান হয় তন্মধ্যে কুশাস্থাইতে গাধি জন্ম গ্রহণ করেন॥ ৩॥

ঐ গাধির সভ্যবতী নামে এক কন্সা হয়। দ্বিজবর ঋচীক গাধির নিকট সেই কন্সা যাচ্ঞা করিয়া ছিলেন, তাহাতে গাধি, তিনি কন্সার অমুরূপ বর নহেন বিবেচনা করিয়া নিবেদন করেন ॥ ৪ ॥

ব্রহ্মন্! যাহাদের দক্ষিণ অথবা বাম একদিকের কর্ণশ্যাম বর্ণ এবং দকল অঙ্গে চন্দ্রের তুল্য জ্যোতিঃ তাদৃশ সহস্র সংখ্যক অখ আমার কম্মার শুক্ষ প্রদান করুন। আপনি ইহা যথেই বিবেটনা ক্ষরিবেন না, বে হেতু শাম্রা কুশিকবংশোদ্ধব। হে,রাজন্! সেই ঋষি এই প্রকার উক্ত হইয়া গাধির ইত্যক্ত ন্তম্মতং জ্ঞাত্বা গতঃ স বরুণান্তিকং। আনীয় দন্ত্বা তানখানুপ্যেমে বরাননাং ॥ ৫ ॥ স ঋষিং প্রাণিতঃ পদ্মা খঞা চাপত্যকাম্যা। প্রপয়িছোভগৈর্ম দ্রৈশ্চরং প্রাতুং গতো মূনিঃ ॥৬ তাবৎ সভ্যবতী মাত্রা স্বচরুং যাচিতা সতী। প্রেষ্ঠং মত্বাহনয়া যচ্ছন্মাত্রে মাতুরদ্ধ স্থাং॥ ৭ ॥ তি দিলি মুনিঃ প্রাহ পদ্মাং কঠনকার্যাঃ। তোরো দণ্ডধরং পুক্রো ভ্রাতা তে ব্রেক্ষবিভ্রমঃ ॥ ৮ ॥ প্রসাদিতঃ সত্যবত্যা মৈবং ভূরিতি ভার্গকঃ। অথ তর্হি ভবেৎ পৌ্জ্রো ক্রমদ্যিন্ততোহ্ভবং ॥৯॥

श्रीश्वत्राथी ।

কৌশিকা বয়ং ॥ ৫॥ উভয়য়: পছৈ। এালৈর্ছা খালৈ তু ক্লালৈরিভার্থ: ॥ ৬ ॥

বাবিৎ স্নাম্বা মনিনাপত স্থাবভাগ্যাসাং ভর্ত্সেকাধিক্যাৎ পুরাোঃ সভাবত্যাঃ চক্রং শ্রেষ্ঠং মন্বাহনয়া যাত্রা সভাবতী বাচিত। সভী ব্রাক্ষমন্ত্রাভিমন্ত্রিকং স্বচক্রং মাত্রেহ্যক্ত্ব প্রাণাধ । মাতুশ্চকং ক্ষাত্রমন্ত্রভিমন্ত্রিতং স্বর্মদ্ধ আব্ধ ॥ ৭ ॥

ুকষ্ঠং জুগুলিত:। তদেবাহ তে প্ত্ৰোঘোরো ভবিষ্যতি ভ্রান্তাত্ত্বক্ষবিস্তমে। ভবিষ্যতীতি । ৮ ॥ -এবং মানুদ্ধি প্রাদানিতো ভার্গব আহ অপ তর্হি পৌল্লো ঘোরো ভবিষ্তীতি ততো লমদলিঃ পুলোহভব্দিতার্থ: ॥ ৯ ॥

श्रीविषमाथठकवको ।

উভ देशमंदितः दारिक्रमंदितः शरेका हकः गया पटेटा कु कारिवामंद्रित्रविकार्थः ॥ ७ ॥

যাবং লাখা মুনির্নাগত ভাবদেব স্তাবতাাং ভর্তুলেহাধিক্যাৎ তস্তাশ্চক শ্রেষ্ঠং মত্বা অনরা মাত্রা যাচিতা স্তাবতী মাত্রে অচকং ব্রহ্মমন্ত্রাভিমন্ত্রিতং অবছেহ। মাতৃশ্চকং করে ইস্তাভিমন্ত্রিতং অব্যমদাং ডকিতবতী ॥ ৭ ॥

কটং ক্ওপিতং দণ্ডধরঃ ক্ষত্রিরো ভবিষ্যতি ত্রন্ধবিস্তমো ত্রান্ধণঃ সচ বিশ্বামিত্র উত্তরাধ্যারে বক্ষাতে । ৮॥

এবং মাতৃদিতি প্রসাদিত ঋচীক উবাচ। অথেতি ভাহি পৌত্রো দশুধরো ভবিষ্যতি সচ পশুরামএব ততো হেতোঃ পুত্রো ব্যদ্যিমুশিরভূৎ ॥ ৯ ।

অভিপ্রায় পরিজ্ঞান পূর্বক তৎক্ষণাৎ বরুণের নিকটে গেলেন এবং তদ্রেপ সহত্র অখ আনয়ন পুরঃসর প্রদান করিয়া বরাননা সেই ললনার পাণি গ্রহণ করিলেন ॥ ৫ ॥

কিয়ৎকাল পরে ঋচীকের পত্নী ও খত্র পুত্র কামনা করিয়া যথাবিধি চরু করিতে প্রার্থনা করি-লেন, তাহাতে তিনি পত্নীর নিমিত্ত ব্রহ্মমন্ত্রে এবং খত্রার নিমিত্ত ক্ষাত্রমন্ত্রে চরুপাক করিয়া স্নান করিতে গেলেন॥ ৬ ॥

এই সময়ে সত্যবতীর জননী মনে করিলেন ভার্যার প্রতি ভর্তার সমধিক স্নেহ হইয়া থাকে, জামাতা জামার ক্যার নিমিন্ত যে চরু পাক করিয়া গেলেন তাহা অবশ্য জামার নিমিন্ত প্রাপিত চরু অপেকা প্রেষ্ঠ হইয়া থাকিবে, অতএব কনার নিকট ঐ চরু প্রার্থনা করিলেন। সত্যবতী মাতার যাচ্ঞায় আক্মমন্ত্রাভি মন্ত্রিত স্বীয় চরু তাঁহাকে প্রদান করিয়া আপনি কাত্রমন্ত্রাভিসন্ত্রিত জননীর চরু ভোজন করিলেন। ৭ ৪

অনস্তর মূনি প্রত্যাগত ইইয়া যখন ঐ বিষয় অবগত হইলেন তথন পদ্ধীকে সংঘাধন করিয়া বলিতে লাগিলেন অভিশয় গহিত কর্ম করিয়াছ, চরু বিপর্যায় করাতে তোমার পুত্র খোরদওধর হইবে. আর তোমার ভাতা ত্রহান্ত হইবেন ॥ ৮ ॥

এতৎ প্রবণে সত্যবতী ভীতা হইয়া "এমত না হউক" বিবিধ বিনয় স্হকারে মুনিকে প্রসন্ন করাইতে বাগিলেন। অতএব ভার্সব প্রসন্ন হইয়া বলিলেন তবে ভোষার পৌক্র ভয়ানক হইবে। হে রাজন্! তাহার পরে সত্যবতীর ক্ষমদ্যি নামে তনঁর হইল। ৯॥

সাচাভূৎ স্মহৎপুণ্যা কৌশিকী লোকপাবনী। রেণোঃ স্থতাং রেণুকাং বৈ জমদনিক্লবাহ যাং ॥>
তক্ষাং বৈ ভার্মবঞ্চন্দ স্থতা বস্ত্রমদাদয়ঃ। ঘৰীয়ান্ জঞ্জ এতেবাং রাম ইত্যভিবিঞ্চতঃ ॥
যমাক্ বাস্ত্রদেবাংশং হৈহয়ানাং কুলান্তকং। তিঃসপ্তকুছো ম ইনাং চক্রে নিঃক্ষত্রিরাং নহীং ॥>>॥
দৃপ্তং ক্ষেত্রং ভূবোভারমত্রহ্মণ্যমনীনশং। রক্ষত্তমোত্বতন্ত্র ফলুন্যপি কৃতেহংহিসি ॥
ত্রিরাজোবাচ ॥

किः छनः दिन क्नः मकेः कवित्रानामधीक्षणः ॥ ३२ ॥ भ्योगनाम् निक्रवाष्ट्र ॥

হৈহয়ানামধিপতিরক্ষ্ ন: ক্ষত্রির্বভ:। দত্তং নারার্ণাংশাংশমারাধ্য পরিকর্মভি:॥ বাছুন্ দশশতং লেভে ছর্ম্বজ্মরাতিবু॥ >৩॥

व्यवाहर्कित्रांकः व्याक्तिकार्वा मरणावनः। वार्म्यत्रवर्षाः भ्रमा मर्जानमानमः॥

अवत्रामी।

त्राह मजावकी क्लोनिकी नमाज्य । > ।

कार्गवयद्वसमारगः श्रुकाः ॥ >> ॥

অনীনশং নাশরামাস। তলেবাহ রজভাষোত্তমিতি। মহদিতি পাঠত স্পম্এব ॥ ১২ ॥

কার্ডবীর্যার্জ্নের রুজমণরাধং বক্তুং ওঞ্চ দর্শতেজুলৈমধ্যাদিক্ষাত হৈছবানাদিতি বড়্ভিঃ পরিকর্মতঃ পরিচর্ব্যা কর্মতিঃ। দত্তং দতাজেরমারাধ্য । ১৩ ॥

व्यवाह्यभिक्षितात्रिकः लाजः। यद्य वित्र क्षेत्रं व्यविमानता अवाः । ১३ ।

श्चित्रवायहळ्यकी ।

नाह महावछी को मिकी नवा छूर ॥ > ॥

श्रमीनमञ्जूरवांकात्रमञ्जूषनामधार्त्त्रिक मिकि । वृथेरक्त्यः जूरवांकात्रमञ्जूषनामनीनमनिकित नार्विवर । ১১ । ১২ । ১৩ । ১३ । ১৫ ।

এবং সেই অবলা লোক পাৰনী মহাপুণ্যা কোশিকী নদী হইয়া রহিলেন। হে রাজন্ ! উরিখিত জমদগ্রি রেপুর কন্যা রেপুকার পাণি গ্রহণ করেন॥ > ॥

তাঁহার পর্ট্রে ঐ শ্বরির (অসদ্যার) ঔরসে বহুমান্ প্রস্তৃতি বহু সন্তান হয়। স্প্রধ্যে "রাম" এই নামে বিধ্যাত পুত্র কনিষ্ঠ। পণ্ডিতগণ তাঁহাকে বাহুদেবাংশ তথা হৈহয়কুলাতক কলিয়া বর্ণন করেন। তিনি এই পৃথিবীকে একবিংশতি বার নিঃক্ষত্রিয়া করিয়াছিলেন ॥ ১১॥

পূর্বেক ক্ষত্রের কাতিরা রক্তঃ ও তামাওণে গরিপূর্ণ হইরা সাহস্কার ও বেদ বিরুদ্ধাচারী হওয়াতে ভূমওলের মহৎ ভার অরপ হইরাছিল, অভএব বলিও অত্যর অপরাধ ছিল তথাচ পরভরাম তাহাদি-পের প্রাণ সংহার করিরাছিলেন। রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞানা করিলেন ব্রহ্মন্। অজিতেন্তির ক্ষত্রির ক্ষতিরেরা ভ্রমন্ পরভ্রাবের এমত অপরাধ কি করিয়াছিল যাহাতে তদীর ক্রোধানলে বার্থার ক্রিরকুল বিষ্ট হর ? ॥ ১২ ॥

ভবদেৰ ক্ৰিলেন হৈহলুদিগের অধিপতি ক্লব্রিয়প্রেষ্ঠ কার্ত্তবিধ্যার্ক্তন পরিচর্যা কর্ম বারা নারাম-শের অংশের অংশ গুগবান্ দভাবেরের আরাধনা করিয়া দশশত বাস্ত এবং অরাতিগণ মধ্যে মুর্ক্তব লাভ করিয়াছিলেন ৪ ২০ ৪

व्यभन्न मखाराजनसम्बद्धा क्षेत्राकात व्यवाह्य रेखिन्न, मानर्था, मण्यम्, श्रावान, वीदा, वन, स्थाप-

চहात्रागाहरू गाँउ (लाटक्यू भवरना यथा ॥) 8 ॥

স্ত্রীরজৈরার্ত: জ্রীড়ন্ রেবাস্কসি মদোৎকট:। বৈজয়ন্তীং অরুং বিভ্রজনের সরিতং ভূজি:॥১৫ বিপ্লাবিতং স্বশিবিরং প্রতিত্যোত: সরিজ্জলৈ:। নাম্য্যক্ত তথীর্ঘ্য বীর্মানী দশানন:॥ ১৬॥ গৃহীতো লীলয়া স্ত্রীণাং সমক্ষং কৃতবিভ্রিয়: মাহিল্পত্যাং সংনিক্ষদ্ধো মৃক্তো যেন কপির্থা॥১৭॥ স একদাতু মুগয়াং বিচরন্ বিজনে বনে। যদুচ্ছয়াশ্রমপদং জমদ্যেক্সপাবিশৎ॥ ১৮॥

धी ध्रुषामी ।

রেবাস্তসি নর্মদা জলে। সরিভং নর্মদাং ॥ ১৫॥

রুবিশো দিখিলরে মাহিমত্যাঃ সমীপে নর্মণায়াং দেবপূজাং কুর্বন্ তেন প্রবাহস্থাবেরাধাৎ প্রতিযোভসঃ সভ্যান্তস্তাঃ স্বিতেগ জলৈবির্য়াবিতং ক্ষণিবির্মালক্য তম্ম ভ্রীষ্যং ন সেছে॥ ১৬॥

তত চ কুত কি বিবঃ জী ভূত মভিভবিত্ং প্রার্থাঃ সন্গৃহীতঃ। মাহিমভাাং স্পৃথাাং। কপিরিব স্নিক্দ্রণ্চ প্নদ্বাবজ্ঞরণ বেন মুক্তঃ॥ ১৭॥

हेमानीः एर कुछमश्राधः प्रमात्रहार म अकरम्कामिना ॥ ১৮॥

बिविधनाथठकवर्की ।

রাবণো দিখিলারে মাহিম্ন চা: সমীপে দেবপুলাং কুর্বন্তেন প্রবাহসাবরোধাৎ হেতোঃ প্রতিশোতাঃ প্রতিক্লপ্রবাহা সরি জেবা তস্তা কলৈঃ প্লাবিতং অশিবির্মালকা তম্ম ত্রীর্যাং ন সেহে তেন সাকং যোজুমগ্রদিভার্থঃ ॥ ১৬ ॥

ভতশ্চ স রারণ জেন পরাঞ্জিত: গৃহীত: ॥ ১৭ ॥

এবং বীর্ঘোপি সোহজ্ন: পর্জায়েণ হত ইতি বক্তং তৎকৃত্মপরাধং দশ্রতি স ইতি ॥ ১৮ ॥

খরত্ব, আর যাহাতে অণিমাদি গুণবিরাজমান, তাদৃশ ঐশ্বর্ধা লাভও ছইয়াছিল। অতএব তিনি পবনের ভায়ে অপ্রতিহতগতি হইয়া সকল লোকে অবাধে ভ্রমণ করিতেন॥ ১৪॥

একদা ঐ অর্জ্ন বৈজয়ন্তী মালা ধারণ করিয়া বহুতর রমণীরত্ব সহিত নর্মাদা জ্বলে ক্রীড়া আরম্ভ করিলেন। মদোম্মন্ততা প্রযুক্ত কেলি করিতে করিতে বাহু সকল ছারা হঠাৎ একবার সেই নদীর ত্রোতঃ রোধ করিয়া ফেলুলিলেন॥ ১৫॥

সেই সময় রাক্ষসেশ্বর রাবণ দিখিজয়ার্থ বহির্গত হইয়া মাহিত্মতী পুরী সমীপে শিবির স্থাপন পূর্বক ঐ নদীর তটে দেবার্চনা করিতে ছিল। কার্ত্তবীর্যার্ডনে জলপ্রবাহ রুদ্ধ করাতে নদীর প্রোতঃ প্রতিকৃদ হইয়া তট নিকট প্লাবিত করিতে আরম্ভ করিল, প্রতিকৃদ স্রোতের জলে আপনার শিবির আপ্লাবিত দেখিয়া অর্জনের ঐ বীর্যা বীরাভিমানি দশাননের সহু হইল না ॥ ১৬ ॥

তৎক্ষণাৎ ক্রীড়াকারি অর্চ্ছনকে অভিভব করিবার উপক্রেম করিল। হে রাজন্। রমণীগণের সমক্ষেরাবন ঐ প্রকার অপরাধ করাতে অর্চ্ছনক্ত্র হইয়া তাহাকে গ্রহণপূর্বক স্থীয় পুরী মাহিম্মতীতে লইয়া গেলেন এবং কপির (বানরের স্থায় কিয়দিন অবক্রম রাখিয়া পরে অবক্রাক্রমে ছাড়িয়া দিলেন ॥১৭

• হে রাজন। কার্ত্বীর্যাজ্জুন কি প্রকারে অপরাধী হইয়া পরশুরাসের হস্তে নিহত হন, তাহারও বিবরণ বলি প্রবণ কর। তিনি একদা মৃগয়ার্থ বহির্গত হইয়া বিজ্ঞান বনে ভ্রমণ করিছে করিতে হঠাৎ জমদিয় মুনির আশ্রেমে প্রবিষ্ট হইলোন ॥ ১৮॥ তিয়ে স নরদেবায় মুনিরর্হণমাহরং। সতৈ আমাত্যবাহায় হবিমত্যা ভণোধন:॥ ১৯॥
স বৈ রত্বস্ত তদ্ ইয়া আত্মৈম্বাতিশায়নং। তয়াত্রিয়তায়িহোত্রাং সাভিশাস: সহৈহয়:॥ ২০॥
হবিধানীয়্রেদর্পায়রান্ হর্তুমচোদয়ৎ। তেচ মাহিম্মতীং নিম্যা: সবংসাং ক্রন্দেতীং বলাং॥
অথ রাজনি নির্যাতে রাম আশ্রমমাগতঃ। শুছা তত্তক্ষ দৌরাম্মাঃ চুক্রোধাহিরিবাহতঃ॥ ২০॥
ভোরমাদায় পরশুং সভূণং বর্ম কাম্মুকং। অম্বধাবত চুর্মর্বে। মুগেক্রে ইণ মুথপং॥ ২২॥
তমাপতত্তং ভূত্বর্যমোজসা ধমুর্ধরং বাণ পরম্বধায়্বং।
ঐণেয়চর্মান্বরমর্কধামভির্তিং জটাভি দ্দুশে পুরীং বিশন্।
অচোদয়ন্ধতি র্থাশপতিভির্গদাসিবাণ্টি শত্মিশক্তিভিঃ।

शिधवयामी।

অহণমাভিথাদি। হবিল্লভা কামধেষা॥ ১৯ ॥
তদহণিং নাদ্ৰিগত তিলিলাত্যাৎ যতোহলিহোজাং হোমধেনী সাভিলায়ঃ। স্টেহ্নঃ টেছেনৈঃ সহ বর্তমানঃ॥ ২০ ॥
দপাকেতো ঋ বৈহ বিদ্ধানীং অগ্নিহোজধেকুং হর্তুং নরান্ অচোদরৎ ॥ ২১ ॥
সত্পং কামুকিং বৃশ্চাদার ॥ ২২ ॥
ত্বিগ্রদ্ধ ক্ষাজিনমন্ত্রং যভা ॥ ২০ ॥

श्रीविचनाषठकवर्छी ।

ছবিশ্ব তা বি কাম দেখা ॥ ১৯ ॥
তৎ অহ লি সাধন গৈছি গৃষ্ট্ৰ তৎ অহ লিং নাজি ছত। বতো হবিছো আৰাং কাম দেনে । ৪২০ ॥
ঋ বিশ্বিনীং কাম দেহুং তর্তুং ॥ ২১ ॥
পুবীং প্রবিশালে বার্জ্নো দদশু ॥

আমাত্য, দৈন্য, দামন্ত ও অখাদি বাহন সহিত নরদেবকে আশ্রমে উপস্থিত হইতে দেখিয়া জমদাগ্রি ঋষি অতিশায় ব্যন্ত দমন্ত হইলেন এবং আপনার কামধেকু ছারা যথাবিধি আভিথ্য করিলেন ॥১৯॥
মুনির ঐ ধেকুরত্নকে আপনার ঐখার্য্য অপেকা শ্রেষ্ঠ দেখাতে ঐ আভিথ্যে অব্দুনের সম্ভোষ হইল
না, হৈহয়গণ সহিত পরামর্শ করিয়া ঐ ধেকু লইয়া যাইতে অভিলাষ করিলেন ॥ ২০॥

অতএব দর্প করিয়া স্বীয় পুরুষদিগকে আদেশ করিলেন ঋষির অগ্নিহোত্র ধেতু হরণ কর। তাহাতে তাহারা রে।রুদ্যানা সবৎসা সেই ধেতুটীকে বলে ধরিয়া মাহিম্মতী নগরে লইয়া গেল। অনন্তর রাজা বহির্গত হইলে পর মুনিতনয় পরশুরাম আশ্রমে আসিলেন। অর্জ্বনের দোরাম্মা বার্তা তাবণ মাত্র আঘাত প্রাপ্ত সর্পের স্থায় তাঁহার কোধানল প্রস্থালিত হইয়া উঠিল ॥ ২১ ॥

তৎক্ষণাৎ ঘোর পরশু, তুণ সহিত ধকু এবং বর্ম গ্রহণ করিয়া সিংহ যেমন যুধপতি হস্তির প্রতি ধাৰ্মান হয়, তাহার ভায় মহাজোধে ঐ রাজার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাৰ্মান হইলেন॥ ২২॥

হে রাজন ! কার্ত্বীর্যার্জন অগ্নিহোত্ত ধেনু হরণ করিয়া পুরী প্রবেশ করিতে করিতে দেখিতে পাইলেন ভ্তাপ্রেষ্ঠ পরশুরাম ক্ষাজিন পরিধান পূর্বক পরশু বাণ প্রভৃতি ভার্ধ সহিত ধনু ধারণ করিয়া মহাবেগে আগমন করিতেছেন এবং সূর্যা ভুলা জ্যুতিখালী তদীয় জটাসমূহ ইতন্ততঃ বিক্তি হইলা পরিজাণার্থ হন্তি, অখ, রথ, পদাতি, তথা গদা, অসি, বাণ, খন্তি (ভন্ত বিশেষ) শতমী ও শক্তির সহিত স্থাদশ অকোহিণী সেনা পাটাইয়া দিলেন কিন্তু পর-

আকেছিনী: সপ্তদশাতিভীবনা স্থা রাম একো ভগবানস্নরং ॥ ২০ ॥

যতোযভোহদে প্রেরং পরস্থামনোনিলোজা: পরচক্রস্থন:।

তত্তভভিদ্র ভ্জাক কল্পরা নিপেতৃকর্ক্যাং হতস্তবাহনা:॥ ২৪ ॥

দৃষ্টা সন্সাং ক্থিরোবকর্দমে রণাজিরে শাসক্চারশারকৈ:।

বিরক্ষবর্দ্ধজনাপ বিপ্রহং নিপাতিতং হৈহয় আপতক্রষা॥ ২৫ ॥

অথাজ্ব: পঞ্চপতের বাভ্ভিধ সুংর্ বাগান্ সুগপং স সন্ধা।

গ্নামার রামোহপ্রভৃতাং সমপ্রীস্তানোকধ্রের্ভিরচ্ছিনং সৃষং॥ ২৬ ॥
পুন: সহত্তৈরচলান্ধহেভিত্রপানুৎক্ষিপ্য বেগাদ্ভিধাবতো সুধি।

🖣 শহসামী।

প্রাহরন্ পরষ্ধোষ্ঠ । মনশ্চ অনিশশ্চ তরোরিবৌজো বীর্যাংষ্ঠ । পরেষাং চক্রং দৈঞাং প্রমন্তীতি ভথা । ছিরা ভ্রমা উরবং কর্রাশ্চ বেষাং। হতাং স্থতাং বাহনানিচ বেষাংতে বীরা নিপেঞ্: ॥২৪॥

विवृक्ता वर्षामस्त्रा यक्त ॥ २०॥

পঞ্চশতের ধহার বোহর্জুন: রামায় সংদধে একমের ধলুর্জ স:। একবল্কের্জিরিতি পাঠে এক.এব বন্ধ: সন্ধানং বেবাং তৈরিবৃত্তি: তানি ধনুংবি সমং সহ তৎকণমেবাচ্ছিনৎ ॥ ২৬॥

मृत्य नाधनकृतानहनान् व्यन्ति नाश्यक्तिमा विषयिक खन्न कृतान् हित्कृत व्यक्त कर्णानित्वकार्थः ॥ २१ ॥

मितियम्य। शहरूकको ।

हन्तानिक र्गनानिकिन्त कीवना व्यक्तिकिनीत्रातानवर श्रिववामान । २० ।

প্রহরন্ পরখধো ৰভ সং। মনোনিধরে। রিবৌজো বেগো বভ সং। প্রথমং সৈক্সভাতিবাছল্যে দৃত্তে মনস ইব আত্মনো বেগজ্তঃ তত্মিরই প্রায়ে সতি কিঞিৰিশ্রমণার্থ মনিলস্যেবেডার্থঃ ডক্স ডক্স বীরা নিপেডুং ৪ ২৪ ৪

टेहरदार्क्नः । २८ ॥

রামায় রামং হত্তং রামত্ত তানি ধন্ংবি সমং বালৈঃ সহিতানোৰাজ্ঞিনং ॥ ২৬ ॥ অচলান্ পর্বতান্ অভিধাৰত তানঃ অংকঃ ফণানিবেডার্থঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

শুরাম একাকী ভাহাদের সমুদায়কেই বিনষ্ট করিলেন ৫ ২৩ ॥

পরশুরামের বীর্যা, মনঃ ও অনিলের তুলা, হাতরাং পর চক্র বিধ্বংসনে সমর্থ ছিল। তিনি শীয় পরশু দারা প্রহার করত বৈধানে যেখানে গেলেন সেই সেই ছানেই বিপক্ষ পক্ষের বীরগণ ছিল বাহু, ছিল উরুও ছিল ক্ষার হইয়া ধরণীতলে পড়িতে লাগিল, আর তাহাদের অশ্ব দার্থি সমন্তই নিহত হইল। ২৪।

হৈহয়াধিপ অজ্ব দেখিলেন রগাঙ্গণ রুধির ধারায় কর্দ্দময় হইয়া উঠিরাছে এবং পরশুরামের কুঠার ও বাণ প্রহারে বর্ম, ধরুলা, ধরু:, বাণ ও কলেবর ছিন্ন ভিন্ন হওয়াতে প্রায় সকল সৈতই যুদ্ধে পতিত হইয়াছে, অভএব রোষ প্রকাশ পূর্বক পরং সমরে আগমন করিল ॥ ২৫ ॥

অনন্তর অর্জন পরশুরাদের নিবিত স্বীয় বাজ সকল ছারা একেবারে পঞ্চণত ধকু: প্রহণ পূর্বক পঞ্চণত হুতীক্ষ শর দক্ষান করিল। হে রাজন্। পরশুরান অন্ত্রধারিদিশের পথানী, যদিও একখানি ধকু! ধারণ করিয়াছিলেন তথাপি ভাছাতেই বহু সংখ্যক বাণ দিয়া একেকালে অর্জ্বের সেই সম্পার ধকুক কাটিয়া কেলিলেন॥ ২৬॥

ध्युन्हित रहेता भन्न चक्त् न चीव कूक मम्ह मध्यमाधन कृति कृति भर्या ७ इक महेना वहाताम तरा-

ভূজান্ কৃতিরেণ কঠোরনেমিনা চিচ্ছেদ রাবঃ প্রসভং স্বছেরিব।
কৃত্বাহোঃ শিরস্তস্থ গিরেঃ শৃঙ্গমিবাহরং। হতে পিডরি ভংপুতা অযুতং তুক্তবৃর্ভরাং ॥ ২৭ ॥
আগ্রহোত্তীমুপাবর্ত্তা সবংসাং পরবীরহা। সমুপেত্যাগ্রমং পিত্রে পরিক্রিন্টাং সঙ্গপরং ॥
অকর্ণ্ম ভংকুতং রামঃ পিত্রে আভূভ্য এবচ। বর্ণরামাস তং শ্রুদ্ধ অসদ্যিরভাবত ॥
রাম নহাবাহো ভবান্ পাপমকার্মীং। অবধীনরদেবং বং সর্বাদেবময়ং রূপা ॥ ২৮ ॥
বরং হি ত্রাক্ষণান্তাত ক্ষমরার্ছ পতাং গভাঃ। বরা লোকগুরুদে বং পার্মেন্ত্রম্পাং পদং ॥ ২৯ ॥
ক্ষমরা রোচতে লক্ষ্মীত্র শ্রমী সৌরী বুপা প্রভা। ক্ষমিশামাশু ভগবাংশ্বয়তে হরিরীশ্বঃ ॥ ৩০ ॥
রাজ্যে মুর্জাভিষ্টিক্রন্য বংধা ত্রহ্মবধানগুরুঃ। ভীর্থসংসেব্যাচাংহো অন্তর্গাচ্তেচেতনঃ ॥ ৩১ ॥

विषद्रयामी।

नमर्भग्रद नमार्भग्रद ॥ २৮ ॥

षह नजाः श्रवाकाः ॥ २३॥

तोती प्रशंख खाउउ । ৩ ।

ভীর্থসংসেবরা চকারাৎ বমনির্মেশ্চ। অচ্যুতে চেওনা চিত্তং বক্ত সং ॥ ৩১ ॥

बिविधनायठक वर्धी।

व्यर्गठाः भृषायः । २३ ।

এাক্ষী এক্ষণ সম্বন্ধিনী শল্পীঃ শোভা ক্ষমহৈৰ রোচতে লোততে সৌরী ক্রাপ্রতেব 🛭 ৩০ 🗈

চকারাক্ষম নির্মাদিভিক্ত। রেষেশ ন চ্যুত চেডনা চিছ্জিক র্যনা তথাভূত ঈশরেশি লোকসংগ্রহার্থনিতার্থ: ॥ ৩১ ॥

মধ্যে পরশুরামের প্রতি ধাবমান হইল। তদ্দর্শনে জামদগ্র কঠোরাথা কুঠার থারা, সপ্কণার ভায়, তাহার বাহু সকল ছেদন করিয়া কেলিলেন। পরে পর্বতের শৃঙ্গ সদৃশ অজ্পন্মণ ছিল করিয়া আনি-লেন হে রাজন্! কার্ত্বীর্য্যার্জনুন নিহত হইবামাত্র তাহার দশসহক্র পুত্র ভয়ে পলায়ন প্রায়ণ হইল॥ ২৭॥

অনস্তর পরশুরাম বৎস সহিত অগ্নিহোত্রীয় ধেমু প্রহণ করিয়া আশ্রমে আসিলেন এবং বিপক্ষ হত্তে পতিত হওয়াতে পরিক্লিষ্টা সেই গাভীকে আনিয়া, পিতৃহত্তে সমর্পণ করিলেন। পরস্ত তিনি যখন আপনার কৃত কর্ম পিতা ও আতাদিগের নিকট বর্ণন করিলেন তথন তংশ্রমণে মুনিবর অমদগ্রির সস্তোষ হইল না, বরং যথেক বিরাগ প্রদর্শন পূর্বক কহিলেন, অহে রাম। অহে রাম। অহে মহাবাহ। ভূমি পাপ করিয়া আসিলে। কি খেলের বিষয়। নরদেব রাজা সর্বাহেব স্বরূপ তাঁহাকে রুণা নিহত করিয়াছ। ২৮।

হে ভাত ! আমরা আক্ষণ ক্ষমাগুণে পূজা হইয়াছি। ঐ গুণ সামান্য নহে, তাহার স্বারাই জক্ষা লোকগুল্ল হইলা পার্মেণ্ঠ্য পদ প্রাপ্ত হইয়াছেন ॥ ২৯ ॥

হে বংস। ক্ষমা ছারাই সূর্য্যসম্বন্ধনী প্রভার স্থায় বন্ধা সম্বন্ধিনী শ্রী, শোভা প্রাপ্ত হয়। অপর ক্ষমানীল পুরুষদিগের প্রতি ভগবান্ ঈশ্বর হরি আন্ত সম্ভন্ত হইয়া থাকেন। ০০।

হে অল ! মূর্দ্ধাভিষিক্ত রাজার বধ এক্ষবধ অপেক্ষাও গুরু। অতএব ভূমি ভগবানের প্রতি চিত্ত সমর্পণ করিয়া ভীর্থ সেবা এবং বম নিয়মাদি দায়া পাপ মোদ্ধন কর ॥ ৩১ ॥ ॥ *। ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং নবমক্ষকে পরশুরাম চরিতে পঞ্দশোহধাায়: ॥ *। ১৫ ॥ *॥

बिक्षक छेवाह ।

পিত্রোপশিক্ষিতোরামস্তথেতি কুরুনন্দন। সংবৎসরং তীর্থচর্য্যাং চরিত্বাশ্রমমাত্রজং ॥
কদাচিদ্রেণুকা যাতা গঙ্গায়াং পদ্মমালিনং। গন্ধর্বিরাজ্ঞ ক্রীড়ন্তমপ্দরোভিরপশ্রত ॥ ১ ॥
বিলোকয়ন্তী ক্রীড়ন্তমুদকার্থং নদীং গভা। হোমবেলাং ন সন্মার কিঞ্চিত্রেরধম্পৃহা ॥ ২ ॥
কোলাত্যয়ং তং বিলোক্য মুনেঃ পাশবিশক্ষিতা। আগত্য কলসং তত্ত্বী পুরোধায় কুতাপ্রলিঃ ॥ ১

श्रिक्षामी ।

॥ * ॥ देखि नदाम शक्षमणः ॥ * ॥

বোড়শেহথার্জন স্থাত জমদয়ো হতে মূহ: । রামাৎ ক্ষত্রবধ্ প্রোজেশ বিশ্বামিত্রত চাহয়:॥ ১ ॥
কিঞ্চিনীয়াচ্চত্রবথে গদ্ধর্করালে স্থা যতা: সা কিঞ্চিন সন্মারেতি ॥ ২ ॥
কলসং পুরোধায় অতো নিধার ॥ ৩ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

॥ #॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্ষে শ্রীকীবগোস্থামিকত ক্রমসক্ষ্পা পঞ্চশোহ্ধার: স্মাধি ॥ # ॥
কলাচিদিতি। কাউনীব্যবধাৎ পূর্কবেতার্থ:। রেণ্কাবধানস্তরং ক্রোধে ভাকেচ ভক্ত কামধেন হরণ মিতি স্থাকে প্রসিদ্ধে: ॥১॥
কিঞ্ছিৎ কাচিৎ কৌত্ক মধ্যের নত্ কামমন্ত্রী চিত্ররথে স্পৃহা বস্তা:। অত ব্রদ্ধাওপুরাণং দ্রস্তীরং ॥ ২ ॥
আত: পভিপরিচরণবাত্যর এবাত ব্যভিচারো জ্ঞের: ॥ ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ ।

बिविधनाथ ठक्क वखीं।

। •। ইতি সারার্থদর্শিকাং হর্ষিণ্যাং ভক্তচেত্সাং। নবমেহয়ং পঞ্চলাং সঙ্গতং সভাং ॥ •॥

য়মদ্মিহ্তি বৈস্তান্ রামোহ্ছুন স্তানহন্। নিঃক্তক্ত বেখ্ডিশেহত বিখানিত্রকথা ডজা । ১॥

কিঞ্চিলিতি ন সন্মারেতাত বিশেষণং হোমবেশারাঃ কিঞ্মাতাং বিশ্বরণ মত্দিতার্থঃ। ততা হেড্ঃ চিতামরে গন্ধর্ম রাজতা রণে দর্শন কৌতৃকার্থ স্পৃহা বভাঃ সাধ্য

শাপবিশ হতা হস্ত হত্ত কিঞ্জিয়াত বিশ্বরণতএব বে হোমবেলাপীয়তী বাতীতেতি ভরবিহবলা ॥ ৩ ॥

॥ # ॥ ইতি নবমে পঞ্দশ ॥ # ॥

ষোড়শাধ্যায়ে কার্ত্তবীর্ষ্যাৰ্জ্জ্বের পুজ্রগণ কর্তৃক জমদ্মি নিহত হইলে পরশুরাম হইতে বারম্বার ক্ষত্রিয় বধ এবং বিশ্বামিত্র বংশের বিবরণ॥ • ॥

শুকদেব কহিলেন হে কুরুনন্দন! পিতার উপদেশে পরশুরাম "তাহাই করিতোছ" বলিয়া গমন করিলেন এবং দম্বংদর পর্যান্ত তীর্থ পর্যাটন করিয়া আশ্রমে প্রত্যান্ত হইলেন। কোন দময় মুনিপত্নী রেপুকা গঙ্গায় গমন কার্য়া তথায় পদ্মমালী নামা গন্ধবি রাজকে অপ্সরোগণ দহিত ক্রাড়া কারতে দেখিতে পাইলেন॥ ১ ॥

রেণুকা জল আনয়ন নিমিত ঐ নদীতে গিয়াছিলেন, ক্রীড়াকারী গদ্ধবিরাক্ত নয়নগোচর ইওয়াতে ভাঁহার প্রতি ঈষৎ স্পৃহাৰতী হইয়া দাঁড়াইয়া রহিলেন, হোমসময় যে অতিক্রান্ত হইতে লাগিল তাহা স্মর্ণ করিলেন না॥ ২॥

অনন্তর আপনিই কালাত্যয় অবলোকন করিয়া মুনি হইতে শাপ আশহা করত সাতিশ্য ভাতা হইলেন এবং সত্তর আগমন পূর্বকে কলসটী অত্যে রাখিয়া কৃতাঞ্জলি পুটে দণ্ডায়মান হইত্যেন এবং ব্যভিচারং মুনিজ্ঞ ছো পর্যাঃ প্রকৃপিতোহত্তবাং। মতৈনাং পুত্রকাঃ পাপামিত্যুক্তান্তে ন চক্রিরে॥৪ রামঃ সঞ্চোদিতঃ পিত্রা ভ্রাত্ত্বাত্তা সহাবধীং। প্রভাবজ্ঞা মূনেঃ সম্যক্ সমাধেত্তপদশ্চসঃ॥ বরণেচ্ছক্ষ্যামাস প্রীতঃ সত্যবতীহৃতঃ। বত্তে হতানাং রানোহপি জীবিতঞাক্ষ্তিং বধে॥৫॥ উত্তমুক্তে কুশলিনো নিদ্রাপার ইবাঞ্জসা। পিতুর্বিবাং ত্তপোবার্য্যং রামশ্চক্রে হুছ্বধং॥৬॥ যেহজুনিক্ত হতা রাজন্ পারতঃ অপিতৃর্বধং। রামবীর্যাপরাভূত। লেভিরে শর্মান কচিং॥ •.

खीरद्रवामी ।

वाखिकांद्रः मानगः काचा ॥ 8 ॥

আজ্ঞাভিলাজ্যনাং ভাতৃণাং মাতৃশচ বধে সংকাদিতঃ সন্মুনের্যঃ সমাবিভগশত ভংলাঃ প্রভাবজঃ বৃদি মহ্সাং ভৃছি মামণি শপ্তঃ সমর্থঃ । ধদিতু হ্যাং ভহি মিরি সভ্টঃ সন্ ভানপি জীব্রিতুং সমর্থ ইতি জান্রিত্যর্থঃ ॥ ৫ ॥

নতু অভি নি:লঙং কথং কৃতবান্ ভঞাহ পিভূৰ্বিদানিভি পূৰ্বোক্ত এবাভিতায়:।। ৬ ।।

त्रर्त्त का विद्यवर्ष का द्रगः व उनुमाह (य रुक्क् न छ उर्जा हेका। मिन। ।। १ ।।

बीवियनाथ5क वर्छो ।

হোম বেলায়াঃ প্রাগেব জনসানেয়ামীতি তক্তা বচনক ব্যক্তিচারং আছা খনিত্য কর্মাসিদ্ধাচ প্রকর্ষেণ কুলিতঃ হে পুত্রকা:। এনাং স্থতেত্যক্তান্তে পুত্রা ন চক্রিরে তক্তা হননমিতি পেব: ॥ ৪ ॥

আজ্ঞাল জ্বনাং ভ্রাতৃণাং মাতৃশ্চ বধে নিযুক্তোহ্বধীং। নবেবমাক্সাপালন যপি জুগুপ্লিচং ভত্রাহ। প্রভাব্লঃ অভ বধ-জ্যোদক এক্সবিষ্টীতি সক্ষেত্র জানরিভার্থঃ।

বৰেণেতি বরং বুণিৃত্যুক্তবানিভার্থঃ। বত্রে ইভি মৃতাইমে জীবস্ক মৎকর্ত্কং বধঞ নখরভিভাহং বুণে ইত্যুক্তবান্ ॥ ৫ । ৬ ॥ নিরপরীধায়াঃ পতিব্রতাশিরোমণে রেণুকালা বধমাদিটবতো যমদগ্রেরপি বধরপং ভদপরাধ ফলং দশ্যিরাহ । যোহজভূ-নভেতি ॥ ৭ ॥

এ দিকে পত্নীর ব্যাভিচার জ্ঞাত হওয়াতে মুনির অতিশয় ক্রোধ হইয়াছিল, তাহাতে তিনি কম্পিত কলেবর হইয়া পুত্রদিগকে আহ্বান পূর্বক কহিলেন, অরে পুত্রদকল ! এখনি এই পাপিম্গীকে বধ করিয়া ফেল। অন্তান্ত পুত্রেরা স্পান্ট রূপে আদিউ হইয়াও তাহা করিল না॥ ৪॥

কিন্তু পরশুরাম পিতার সমাধি ও তপস্থার প্রভাব অবগত ছিলেন, আজ্ঞালজ্ঞনকারি ভাতৃগণের ও মাতার বধার্থ আদেশিত হইয়া বিবেচনা করিলেন, যদি পিতার নিয়োগে ইহাদিগকে বিনষ্ট না করি পিতা ক্রুদ্ধ হইয়া আমাকেও অভিশাপ দিতে পারেন, আর আজ্ঞা পালন পূর্বক ইহাদিগকে বধ করিলে অমার প্রতি সন্তক্ষ হইয়া ইনি পুনরায় ইহাদের জীবন দান করিলেও করিতে পারিবেন। অত এব পিতা প্রেরণ করিবামাত্র পরশুরাম সাতৃসহ ভাতৃগণের প্রাণ সংহার করিলেন। এই ব্যাপারে সক্তর্বতী তনয় জমদ্যি মুনির সাতিশয় প্রীত জ্মাল। তিনি প্রীত হইয়া পরশুরামকে যথা ইছোবর প্রহণ করিতে বলিলেন। ভাহাতে জামদ্যা রাম এই বর চাহিলেন হত ব্যক্তিগণ পুন্জা বিত হয় এবং ইহাদের ঐ বধ যেন স্মরণ পথে উদিত না হয়॥ ৫॥

হে রাজন্! জমদায়ি মুনি তথাস্ত বলিয়া বর দিবাগাত্ত সেই দকল হত ব্যক্তি কুশল যুক্ত হইরা নিজাপেগমে বেমন গাত্তোখান করে তাহার স্থায় তংকণাৎ উথিত হইল। মহারাজ! পরশুরাম এরূপ নিশিত কর্ম কেন করিয়াছিলেন এমত আশক্ষা করিবেন না, তিনি পিতার তপোবীর্ঘ বিশেষ রূপে পরিষ্কাত ছিলেন, তাহাতেই স্থাধ্ধ করেন ॥ ৬॥

হে রাজন্। কার্ডবীর্যা অর্জনের যে দকল পুত্র ছিল ভাহারা পরশুরামের বীর্য্যে পরাভূত হইয়া

একদার্থানতে। রামে সভাতরি বনং গতে। বৈরং নিষাধারিবনো লক্কছিতা উপাগমন্ ॥ १॥

দুক্ত্বান্তাগার আসীনমানেশিতথিরং মুনিং। ভগবভাতনংশ্লোকে জন্ম জে পাপনিশ্চয়াঃ॥

যাচামানাঃ রপারা রামমাত্রাজিলারণাঃ। প্রাক্ত শিরু উৎকৃত্য নিমুত্তে ক্রেবছরঃ॥

রেপুকা তুঃধশোকার্তা নিমন্ত্রাজ্ঞানমাত্মনা । রাম রামেতি ভাতেতি বিচুক্তোশোক্তকৈং সভী॥
ভদ্পঞাত্য দুরন্থা হারামেত্যার্ভরং শ্বনং। স্বরমা আমমাসাদ্য দদৃশুঃ পিতরং হতং॥৮॥

তে তুঃধরোষামর্বার্তিশোকবেগবিষোহিতাঃ। হা তাত সাধাে ধর্মিত ত্যক্ত্বান্মান্ বর্গতাে ভবান্॥
বিলপ্যেবং পিতৃর্দেহং নিধায় আত্র্ স্বরং। প্রগৃহ্ব পরশুং রামঃ ক্ষত্রান্তর মনোদ্ধে॥৯॥

পক্ষা মাহিক্ষতীং রামাে অক্ষম্ববিহতপ্রিয়ং। তেষাং সশীর্ষণী রাজন্ মধ্যে চক্রে মহাগিরিং॥ ১০॥

टी धरुवामी।

ভগবভাঁবেশিটা বীর্থন তং ॥ ৮ ॥ হুঃপাদীনাং বেগেন বিমোহিতাঃ ॥ ২ ॥ ব্রহ্মহৈর্কিচ্ডা **ত্রিবিভাজাঃ । তে রাজন্** সরাম ভেবাং শীর্বৈর্দাহিত্যতাং মধ্যে সহাত্তং গিরিং চজে ॥ ১০ ॥

क्रमकर्षः

তে জ্ংখেতা ছকং। অত তদুংখেতি পাঠা স্বামাসস্থতা। তছক্ত সমস্ত স্পাদানাং। তে সরামা ক্ষদরি প্তা ইতি সম্বোক্তোচ। ১।

भटकुकार्ककः। द्वातार क्रमानकार चकः विरमयककुक्कमानार क्रमावहानिकार्थः ॥ ১० । ১১ । ১२ । ১७ । ১৪ । ১৫ ॥

बिविधनाथ ठक्क व ही

শতর্ধু; প্রাণান্ বাচামানাঃ । তত্ত্বা আর্ত্তবং । অন্তত্তা আর্ত্তরা ইব তত্তা মাতৃঃ শ্বং উপশ্রতা দদৃশে দদর্শ । । তে লাতরঃ বিষ্টিছ্তা বভূবুঃ । ৮। ১। ব্রহুট্মেছে কুভির্মিক্তা শুর্বিভাজাং সারামঃ মহাসিরিং নদীং চ চক্রে । ১০ ।

Charles and made and save savife and minute save

আপনাদের পিতার বধ বৃত্তান্ত স্মরণ ক্রত কুত্রাপি হুধ স্বাচ্ছন্ত লাভ করতে সমর্থ হর নাই। একদা পরভরাম আশ্রম হইতে ভাতৃগণের সহিত বন গমন করিলে ঐ সকল স্মর্জুন তনয়েরা ছিন্ত পাইরা বৈরসাধন মানদে তথার গমন করিল ॥ ৭॥

এবং দেখিল অগ্নিগৃহের মধ্যে রামজনক জনদগ্নি মুনি ভগবানে চিত্ত নিবেশ করিয়া বদিয়া আছেন, এই স্থােগ প্রাপ্ত হওয়াতে দেই পাপাত্মারা তৎক্ষণাৎ এই মুনিকে নিহত করিল। পরশুরানের সাতা তদবলাকনে অভিশন্ন দীনা হইয়া পতিপ্রাণ ভিক্ষা করিতে লাগিলেন, তাহাতে দেই নিঠুর ক্ষত্রিয়াধ্যাদের দয় হইল না, বলে তাঁহার শিরশেহদন করিয়া লইয়া পেল। রামনাতা রেণুকা ফুল্ম ও শোকে আর্তা হইয়া আপনিই আপনাকে আ্বাত করত হা রাম, হা রাম, হা তাত, হা ভাত। কলিয়া উলিঃ খবে চীৎকার করিতে থাকিলেন। দূর হইতে (হা রাম!) এই আর্ত্ত হারা লাভ্যান করিয়ে পরশুরাম প্রায় ভাতৃগণ সহিত আ্রামে প্রত্যাগমন করিলেন। দেখিলেন পিতা নিহত হইয়া পড়িয়া রহিয়াছেম য়৮

ইহাতে তাঁহাদের এতাদৃশ হংখ শোক জোধ অমর্থ এবং পীড়া জন্মিল হে ঐ সকলের: আবেগে সকলেই বিমোহিত হইলেন। অনন্তর পরশুরান হা তাত! হা সাধো। হা ধর্মিত। আমাদিককে পরিত্যাগ করিয়া আপনি অর্থে গমন করিলেন। এনছিব বিবিধ বিলাপ করিয়া শিকার মৃতদেহ জাতা দিগের নিকট রাখিলেন পরে ভয়কর পরশ্ব গ্রহণ করিয়া ক্ষত্রিয় কংশ খাংশ করিতে সনংশ্ব করিশেন মুক্ত ক্ষেত্র পরশ্ব গ্রহণ করিয়া ক্ষত্রিয় কংশ খাংশ করিতে সনংশ্ব করিশেন মুক্ত বিরোধ বাজন্। পরশুরাম প্রথমতঃ মাহিষ্মতী পুরী গমন করিয়া আহমে ক্ষত্রে অর্থান প্রশ্বেশিক বতক

তদ্রকেন নদীং ঘোরামপ্রক্ষণাভয়াবহাং। হেতুং কৃষা পিতৃবধং ক্ষত্রেছ্মক্ষলকারিণি॥ ১১॥ জি:দপ্তকৃষ: পৃথিবীং কৃষা নি:কজিয়াং প্রভুঃ। দমস্তপঞ্চকে চক্রে শোণিতোদান্ হ্রদানব। পিতৃং কায়েন দক্ষায় পির আধায় বর্হিষি। দর্বাদেবময়ং দেবমাদ্ধানময়ক্ষ্মধৈঃ। দদে প্রাচীং দিশং হোত্রে জ্রেলণে দক্ষিণাং দিশং। অধ্বর্যাবৈ প্রতীচীং বৈ উদ্পাত্রে উত্তরাং দিশং। অন্যভ্যোবান্তর দিশঃ কশ্যপায়চ মধ্যতঃ। আর্যাবর্ত্তমুপদ্রস্ত্রে দদ্যোভ্যন্ততঃ পরং। ততশ্চাবভ্রমান বিধৃতাশের কিল্পিয়ঃ। সরস্বত্যাং মহানদ্যাং রেজে ব্যব্জইবাংশুমান্॥ ১২॥. স্থাদেহং জ্মদ্যান্ত্র লক্ষ্যা সংজ্ঞানলক্ষণং। ঋষীশাং মণ্ডলে সোহভূৎ সপ্তমো রামপ্জিতঃ॥ ১০॥

व्यीधद्रवामी।

তেবাং রজেন অব্রহ্মণ্যানাং ভরাবহাং ঘোরাং নদীঞ্জে। তথাপি সর্ব ক্ষত্রিরবধে কিংকারণং তদাহ হেতুং কুছেভি সার্দ্ধেন। অনকলকারিণি অভারবর্তিনি সভি ॥ ১১ ॥

জিঃসপ্তক্কছো রেণুকরা ছঃখাবেশাৎ উপরতাড়নং ক্বতং। ততো রামন্তাৰৎকৃত্বঃ ক্ষত্রমূৎসাদিভবানিতি প্রসিদ্ধিঃ ॥ ১১ ॥ সংক্ষানং স্থৃতিং তদেব লক্ষণং চিহ্নং যন্ত স্থানহং লদ্ধা সপ্তবী গাং মণ্ডলে সপ্তম ঋবিরভূৎ ॥ ১০ ॥

शिविषनापडळवडी ।

ক্ষমগলকারিণি অন্তারণর্জিনি গতি পিতৃবধনেব নিমিত্তীকৃত্য জি:স্প্রকৃষ ইতি রেণ্কারা ভাবং কৃষ এবোরভাড়নাদিতি ভাব: ৪১১ ৪

অবভ্ত স্থানেন বিবৃত্তমশেৰং কিধিবং দ্বাং সং । ইতি সরস্বতাতিৰ নির্দ্ধং গ্লাষা ইব লাত্মিতি ভাবং ॥ ১২ ॥ সংফানং স্মৃতি তাদেব লক্ষণং যতা তাদৃশং দেহং লক্ষ্য ঋষীণাং মণ্ডলে কপ্তপোহতিৰ্বিশিষ্ঠণত বিষামিত্ৰোপ গোত্মং। ব্যদ্ধি ভারহাজ ইতি সপ্তৰ্যয়ং স্মৃতা ইতি ততা লম্মিয়েব স্থাস ঋষিয়ভূহ ॥ ১০ ॥

দ্বারা একটা হুমহৎ পর্বত নির্মাণ করিলেন। ঐ সকল ব্যক্তি ত্রহ্মহত্যা করাতে তাহাদের দ্বারাই পুরীর শোভা বিন্ট হইয়াছিল,মধ্যম্বানে মুগুময় পর্বত হওয়াতে দেই পুরী আরও বিশ্রী হইল ॥>•॥

দে যাহা হউক, পরশুরাম পরে তাহাদের শোণিতে একটা ভয়ানক নদী করিলেন, সেই সরিৎ ত্রক্ষাছেষিদিগের অত্যন্ত ভয়াবহ। তদনন্তর ক্ষত্রিয়জাতিকে অন্যায়বর্তি দেখিয়া পিতৃবধ হেতু করিয়া ॥১১

একবিংশতি বার এই পৃথিবীকে নিক্ষত্রিয়া করত সমস্তপঞ্চক স্থানে নয়টী শোণিতময় ব্রদ নির্মাণ করিলেন। হে মহারাজ! পরশুরাম একবিংশতিবার পৃথীকে ক্ষত্রিয় শ্ন্যা কেন করেন কারণ শুন, ভাঁহার জননী রেণুকা অর্জ্বনতনয় দিপের দৌরাজ্য জন্য তুংখাবেগে একবিংশতিবার আপনার উদরে আঘাত করিয়াছিলেন ভাহাতেই পরশুরাম ভাবৎ সংখ্যক বার ক্ষত্রিয় বধ করিলেন। সে যাহা হউক, তদনন্তর পরশুরাম নিহত পিতার মন্তক তদীয় দেহে সন্ধিত করিয়া কুশোপরি স্থাপন পূর্বক বিধি যজ্ঞ হারা সর্বাদেশময় আজার অর্জনা করিলেন। সেই যজ্ঞে হোভাকে পূর্বিদিক্, ত্রক্ষাকে দক্ষিণদিক্, অধ্বর্মুকে পশ্চিমদিক্ এবং উদ্যাভাকে উত্তরদিক্ দক্ষিণা দিলেন। আর অবান্তরদিক্ সকল অন্যান্য ঋত্কিদিগকে দান করিয়া মধ্যত্বল ক্তাপকে দান করিলেন। পশ্চাৎ উপন্তন্তীকে আর্যাবর্তি দেশ দক্ষিণা দিয়া ভাহার পর সদস্যদিগকেও যথাযোগ্য ভূমি দক্ষিণা দিলেন। তদনন্তর মহানদী সরস্বভীতে গিয়া অবভূথ স্নান ছারা জেশেষ কসুষ প্রকালন পূর্বক নিরক্ত দিবাকরের সমান বিরাজ করিতে লাগিলেন। ১২ ॥

এ দিকে জনদন্নি রাম পূজিত হওয়াতে স্মৃতিই যাহার চিহ্ন তাদৃশ স্বীয় শরীর লাভ করিয়া সপ্তর্বি-মগুলে গমন পূর্বক সপ্তম ঋষি হইলেন॥ ১৩॥ জামদর্য্যাহপি ভগবান্ রামঃ কমললোচনঃ। আগামিশুন্তরে রজিন্ বর্ত্তরিষ্যতি বৈ বৃহৎ।
আতি ইদ্যাপি মহেন্দ্রটো শুন্তদণ্ডঃ শ্রশান্ত্রীঃ। উপগীয়মানচরিতঃ সিদ্ধগন্ধবিচরিথঃ॥ ১৪॥
এবং ভ্রুষ্ বিখালা ভগবান্ হরিরীখরঃ। অবতীর্য্য পরং ভারং ভূলোহহন্ বহুশোন্পান্॥ ১৫॥
গাধেরভূত্বহাতেজাঃ সমিদ্ধ ইব পাবকঃ। তপসা কাজমুহত্তর্ব্যালেণ্ডে ভ্রমান্দ্রিয়া। ১৬॥
বিখামিত্রস্থ চিবাসন্ পুল্রা একশতং মুপ্। মধ্যমন্ত মধুচ্ছাকা মধুচ্ছকা এব তে॥ ১৭॥

विधवचामी।

বৃংছুক্ষ বেদং। বেদপ্রবর্তকেরু সপ্তর্ষিরু একতমো ভবিষাভীত্যর্থ: ॥ ১৪ ॥

ভূবে। ভারমহন্। ভারমেবাহ নুপানিতি ॥ ১৫ ॥

তদেবং প্রস্কৃত্য প্রস্কুং সমাপ্য প্রস্তুতমাহ গাধেরিতি। মহাতেলা বিখামিত্র: ॥ ১৬ ॥

তৈ সুৰ্ব্বে শিল্পন্যবাঘ্যারেন প্রাণভ্ত উপধাবতীতি বং মধুজ্জনস এবোচাতে। তথাচ প্রভি: তখ্য বিশ্বামিত্রত একং শত পুত্রা অভি:। পঞ্চাদদেব জ্যামাংসোমধুজ্জনস: পঞ্চাশং কনীয়াংস ইত্যাদি ॥ ১৭ ॥

ক্রমসকরে:

তদেবং মধ্যে মধ্যে সিংগালিজ নিজাভীষ্টাং তগ্ৰদৰভাৱ কথাং শীলা ঝটিতি নিজাজীষ্টত্ৰ তগ্ৰদাৰিজ্যিৰাম্পান যহ বংশবৰ্ণনার প্ৰায়ক্ত বংশ সমাপ্রিভুমাহ গাধেরিতি ॥ ১৬॥

একশতং একাধিক শতং টীকারাং প্রাণভূত ইতি তত্ত্ব প্রাণ ভূড্যালপ্রসিদ্ধ মন্ত্রেণ সংস্কৃতিতকৈ কৈবেষ্টাকা প্রাণভূত্চাতে। তৎ প্রাধান্তেনান্তা অপি তথোচান্ত ইতি গন্তব্য:॥ ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ । ২১ । ২২ । ২৩ । ২৪ । ২৫ । ২৬ ॥

श्रीविश्वमांशहकवर्ती।

बुर् जक्त (तम व्यवस्कृत मर्श्वरिक्कारमा कविवाजीकार्थः । ১৪। ১৫॥

প্রাদক্ষিকীং কথাং সমাপ্য প্রস্তুতমাহ গাদেরিতি ॥ ১৬ ॥

একশতং একাধিকং শতং তথাচ শ্রুভি:। তুল হ বিশামিএলৈক শতং পুত্র। আহং। পঞ্চাশদেব জ্যায়াংগো মধুছেলসং। পঞ্চাশংকনীয়াংশ ইভি । তে সর্বে লিকসমবার লাবেন প্রাণভ্ত উপদ্ধাতীতিবর্ধুছেলস এবোচ্যক্তে। ইইকাচরনে যাগে প্রাণভ্হ প্রসিদ্ধ মত্রেণ সংস্কৃতা একেবেইকা প্রাণভ্হচাতে তার পুনস্তং প্রধিলোনাল। বি ইইকা যথা প্রাণভ্ত উচ্যন্তে তথৈ বেভার্থ: ॥ ১৭॥

হে রাজন্। কমললোচন ভগবান জামদগ্য রামও আগামী মন্বন্তরে বেদ প্রবর্ত করিবেন অর্থাৎ তিনিও বেদ প্রবর্ত্তক সপ্তর্ধি মধ্যে একজন হইবেন। তিনি ন্যস্তদণ্ড এবং প্রশাস্ত চিত্ত হইয়া অদ্যাপি মহেন্দ্র পর্বতে বর্তুমান আছেন। সিদ্ধচারণ ও গৃদ্ধর্ব্বগগ্য সতত তাঁহার বিচিত্ত চরিত্ত গান করিতেছে ॥১৪

হে রাজন । এই প্রকারে ভগবান্ বিশাত্মা ঈশর হরি ভৃগুকুলে অবতীর্ণ হইয়া বস্থবার ক্ষত্রিয় বধ করিয়া ভূমির পরম ভার হরণ করেন॥ ১৫॥

একণে প্রস্তেত বিষয় বর্ণন করি প্রাবণ কর। গাধি হইতে জ্লন্ত অনলের তুল্য মহাতেজন্তি বিশা-মিত্রের উৎপত্তি হয়। রাজন্! তিনিই তপঃ প্রভাবে ক্লব্রিয়ত্ব পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মত্ব লাভ করিয়া-ছিলেন ॥ ১৬॥

' এই বিশামিত্রের একশত পুদ্র হয়, তমধ্যে ইদিও কেবল সংগ্ৰের নাস স্কৃত্য: তথাচ সকল পুত্রই সধ্চ্ছক্ষস্ বলিয়া উক্ত হইতেন॥ ১৭॥ পুত্রং কৃষা শুনংশেকং দেবরাতঞ্চ ভার্যবং। আজীগর্ত্তং শুতানাহ জ্যেষ্ঠ এব প্রকল্পতাং॥ ১৮॥ বোহি হরিশ্চক্রমথে বিক্রীতঃ পুরুষঃ পশুঃ। স্তত্বা দেবান্ প্রজেশাদীন্ মুমুচে পাশবদ্ধনাৎ॥১৯ যোরাতো দেবয়জনে দেবৈর্গাধিষু তাপসঃ। দেবরাত ইতি থ্যাতঃ শুনংশেকস্ত ভার্গবঃ॥ ২০॥ যে মধ্দদ্দেশো জ্যেষ্ঠাঃ কুশলং নেনিরে ন তৎ। অশপত্তামুনিঃ ক্রুদ্ধো মেন্দ্রা ভবত কুর্জনাঃ॥২১ সহোবাচ মধ্দ্দেশাঃ দার্দ্ধিঃ পঞ্চাশতা ততঃ। যালা ভবান্ সংজানীতে তিলাং স্তিষ্ঠামহে বয়ং॥২২

की धरणां भी ।

ভত্তিচ বিশ্বামিত্রপুত্র ভার্পবিশালীগর্জ দেবরাত্ত লোঠখনবগম্যতে। তথা আশ্লায়ন বৌধায়নাদিভি: কৌলিকানা: দেব-রাতপ্রবর্তম্প্রং। প্রবরণ তথিবরত্বমূক্তং। প্রবরণ তথিবরত্বমূক্তং। প্রবরণ বংশেহ্বাস্তরভেদ: নতু বংশাস্তরং। তথাচ শ্বতি: এক এব প্রবিশ্ব প্রেরের্ত্তিত । ভাবেৎ সমানগোত্রখং বিনা ভ্রপিরোগণাদিতি। ভংকুতো ভ্রবংশতবস্ত দেবরাত্ত কৌশিকপ্রবর্ত্তমিত্যাশন্ত ত্রপণাদ্রনাহ প্রাঃ ক্রত্তাদি বাবৎ সমাপ্তি পূর্ক্মজীগর্জ্তত্বে মধ্যমত্বেদ পিত্তাং মনতাং বিহার বিক্রীভত্তাং। তক্ত কুপরা স্বতানাহ বৈলাই এব প্রক্রাণ্ডামিতি ॥ ১৮ ॥

এতদেৰ স্পষ্টিয়তুং বিশন্তি ব ইতি ছাভাাং। মুমুচে অমুচ্যত ॥ ১৯ ॥

ভার্গবোহপি গাধিবু গাধের্কংশেবু দেবরাত ইতিথাতে: ॥ ২০ ॥ তত্তেত জোঠকং কুশলং ন মেনিরে মধামত্তানধাবিহকং দৃষ্ট্ া নাঙ্গীকৃতবন্তঃ মুনি র্কিধামিত্র: ॥ ২১ ॥

পঞাশতা কনিটোঃ সাকং মধ্যমোমধুজ্জলা উবাচ। নোহ্মাকং বং জোটহং কনিঠছং বা ভবান্পিতা সংলানীতে মন্ততে

শীবিশ্বনাপচক্রবন্তী

লচ বিশ্বামিত: ভার্গবং ভ্রুবংশোত্তবং অদীগর্জসূতং ভনংশেফং রূপবৈরব পূত্রং রুত্বা স্তামৌরসান্ প্রত্যাহ জ্যেষ্ঠ ইত্যালি ॥ ১৮॥

নতু শুন:শেক এব কন্ততাহ ব ইতি হরিশক্ত মথে পুত্রেদধে কর্ত্তবো পুত্রেণ রোহিতেনৈব বং পুক্ষঃ পশুরানীতঃ কনিষ্ঠ জ্যেষ্ঠায়ো: কেহব্ডাং শুন:শেক নামা মধ্যমং পুজোবিজীতঃ সচ প্রাক্তেশাদীন্ দেবান্ অস্থা পশুপাশবন্ধনাৎ মুমুচে মুক্তঃ ॥ ১৯॥

অতো ভার্গবোপি বিশ্বামিত কুপাপাতী ভবন্ গাধিবু গাধের্বংশেবু দেবরাত ইভিধ্যাত ভাপদোহভূৎ । ২০ ।

যে জোষ্ঠাঃ পঞ্চাপৎ তৎ গুনঃশেক্তা কোষ্ঠ ২ং কুশলং ড জং ন মেনিরে মুনির্বিখামিত্রঃ ॥ ২১ ॥

পঞ্চাশতা কনিটোঃ সাকং সুমধামো মধচ্চন্দাঃ হস্পষ্টমুৰাচ নোহ্যাকং পিতা ভবান্ যৎ জোটতং কনিটতং বা স'জানীডে

মহাতপাঃ বিশ্বামিত্র অজীগর্ত্ত তনয় শুনংশেফকে ভৃগুবংশীয় দেবরাত নামক পুত্র করিয়া আপ-মার অক্যান্য সন্তানদিপকে বলিয়াছিলেন তোমরা ইহাকে জ্যেষ্ঠ বলিয়া যান্য কর। ১৮।

হে রাজন্! ঐ শুন:শেফের পিতা, অজীগর্ত হরিশ্চন্দ্র রাজার যজ্ঞে পশর্থ ঐপুক্রকে মধ্যম বলিয়া মমতা ত্যাগ পূর্বক বিক্রেয় করিয়াছিল, কিন্তু, ঐ পুরুষ পশু (শুন:শেফ) প্রজেশাদি দেবগণের স্তব করিয়া পাশবন্ধন হইতে মুক্ত হয়। ১৯ ॥

সে দেববজনে রাত (প্রদত্ত) হওয়াতে গাধিবংশে দেবরাত বলিয়া খ্যাত হইল। পরস্ত ভ্ঞবংশে ভাহার নাম শুনঃশেফ ॥ ২০ ॥

সে যাহা হউক, বিখামিত্রের মধ্চহক্ষ নামা যে সকল জ্যেষ্ঠ সন্তান ছিল, তাহারা ভনঃশেফকে জ্যেষ্ঠ বলিয়া কল্পনা করণে আপনাদের অকুশল জ্ঞান করিল, অতএব মুনি জুল্ক হইয়া তাহাদিগকে এই সভিশাপ বিলেন, ভোরা অতি হুর্জন, অন্যাবধি মেচহ হইবি ॥ ২১॥

ত্লদন্তর মধ্যম পুত্র মধ্যুক্ত্ল পঞ্চাশৎ কনিঠের সহিত জনক সনিধানে গমন করিয়া বলিলেন

জ্যেষ্ঠং সন্ত্রদৃশং চক্রুত্বামম্বঞো বয়ং স্মৃহি ॥ ২৩ ॥

বিখাগিত্ত: হতানাহ বীরবস্তো ভবিষ্যথ। যে মানং মেহসুগৃহুদ্যো বীরবস্তমকর্ত্তমাং ॥ ২৪ ॥ এব ব: কুলিকা বীরো দেবরাতস্তমন্বিত:। অন্যে চাক্টক হারীত কর ক্রেতুমদাদয়: ॥ ২৫ ॥ এবং কৌশিকগোত্রস্ত বিখামিত্রৈ: পৃথ্যিধং। প্রবরাস্তরমাপন্নং ভদ্ধিচিবং প্রকল্পিকং ॥ ২৬ ॥

क्षेत्रवामी।

खिन वयः जिक्रायि । २२ ।

এব্যুক্। মন্ত্ৰণং কম্ম ন্নং কডম্ভান্তানামিত্যাদি শ্রাণাং স্তর্গারং অনংশেফং স্কেটং চক্রু:। কথং চক্রু: তদাহ্বয়ং সংক্রেয়ান্বক: আহি অনুগ্রারং কনিটা: আই ত্রথি: ॥২০॥

ওতঃ প্রসরো বিখামিত তান্ স্থানাছ বীরবস্তঃ প্রবস্থে। তবিষাধ। বে যুবং মে মানং প্রাছং অফ্গৃতুত্বঃ অফ্বর্ডমানাঃ সন্তঃ,মাং বীরবস্তঃ প্রবস্তমকর্ত কৃতবস্ত ইতার্থঃ ॥ ২৪ ॥

হে কুশিকাঃ প্রব দেবরাতঃ বো যুমণীরঃ কৌশিক এব বতো্বীরঃ মৎপুত্তঃ তমেনমন্বিত অসুগছতে। অত্যে চাইকাদর ওয় স্তা আসন্ ৪২৫॥

উপস হরতি এবমিতি। একে শপ্তা: একে হত্ত্ত্তী তা: অল্ল প্রথেন স্বীকৃত ইত্যেবং কৌশিকগোত্রং পৃণ্যিধং নানা

- প্ৰীবিখনাপচক্ৰবন্তী ।

মন্যারে। তবিরের বরং তির্রামেতি । ২২ ।

ততক তনংশেকং জোঠং চক্রু: মন্ত্রণা। কক্ত ন্নং কতমন্তাম্ভানামিত্যাদি মন্ত্রাণং দ্রতীরং। তদাহ বরং সর্কে তামবক্ষ: অন্তর্গতার: কনিষ্ঠা: আ ইত্চ্রিতার্থ:। ততঃ প্রারো বিখামির তান্ অভানাহ উবাচ। বীরবস্তঃ প্রার্গে তবিষ্ধ যে যুরং মে মানং প্রাত্তঃ অনুস্মদাজ্ঞানতারং গৃহত্তঃ অস্বীক্র্তঃ সন্তঃ মাং বীরবস্তঃ অকর্ত কৃতবস্তঃ অস্বাগ্যামতি ভাবঃ । ২১।

হে কুশিকা বো যুম্পীয়: কৌশিকএব ষ্ডঃ। বীরঃ সংপুত্র:। ডমেন ম্বিত অনুগক্ত। অভেচাইকাদ্য তত্ত স্তা কাসন্মং৪।২৫॥

উপসংহরতি এবমিতি। একে শপ্তা একেইমুগৃহীতাঃ অনাম্ব পুত্রখেন গৃহীতঃ। ইত্যেবং কৌশিক গোত্রং বিশ্বানিত্রৈঃ বিশ্বান

আপনি আমাদের পিতা, আমাদের জ্যেষ্ঠত্ব অথবা কনিষ্ঠত্ব বাহা অকুমতি করেন আমরা তাহাই

ইহা বলিয়া মন্ত্ৰ দৰ্শি শুনংশেফকে আপনাদের জ্যেষ্ঠ করিলেন এবং সকলে একবাক্য হইয়া বলিলেন আমরা সকলেই তোমার অনুগামী অর্ধাৎ কনিষ্ঠ হইলাম ॥ ২৩॥

এতংশ্রবণে বিশামিত্র প্রান্ধ হইয়া ঐ পুত্রদিগুকে কহিলেন হে বংদগণ! তোমরা আমার পূঞ্যান্বের অমুবর্তী হইয়া আমাকে পুত্রবস্ত করিলে, ইহাতে আমার যংপরোনান্তি প্রীতি জন্মিন, দস্তুই হইয়া এই বর দিতেছি ভোমরী পুত্রবস্ত হইবে ॥ ২৪॥

হে কুশিকগণ ! এই দেবরাত তোমাদের কৌশিক গোত্রই, যে হেতু ইনি আমার পুত্র হইয়াছেন, অতএব তোমরা ইহার অনুগত হও। হে রাজন্। বিশ্বামিত্রের তদ্তির অকক, হারীত, জয়, ক্রতুমান্ প্রভৃতি অনা অনেক সন্তান ছিল ॥ ২৫॥

এই প্রকারে অনুগৃহীত অপর এক ব্যক্তি পুত্রত্বরূপে স্বীকৃত হওয়াতে বিখামিত্রের পুত্র দারা কৌশিকগোত্র নানা প্রকার হয় অর্থাৎ কডকগুলি অভিশপ্ত এবং কডকগুলি প্রবরাস্তর প্রাপ্ত হয়। ॥ # ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং নবমক্ষে শ্রীপরশুরাম চরিতং যোড়শোহণ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১৬ ॥ # ॥

এীবাদরায়ণিরুবাচ ॥

যাঃ পুরার গদঃ পুত্র আয়ুস্ত সাভবন্ হতাঃ। নহুষঃ ক্ষত্র র্রণচ রজী রাভশ্চ বীর্যাবান্॥ ১॥ আনেনা ইতি রাজেন্দ্র শৃগু ক্ষত্র ধোষয়ং। ক্ষত্র র্রাজ্ত স্থাবন্ হু হোতে স্থাত্ম জান্তরঃ। কাশ্যঃ কুশোগুৎসমণ ইতি গৃৎসমণাদস্থ। শুনকঃ শৌনকো যাত্ম বহু চপ্রবরে যানুনিঃ॥ ২॥

श्रीश्रद्भामी ।

প্রকারং জাতং তচ্চ প্রবরাস্তরমাপরং প্রোপ্তং হি যন্ত্রাদেবং দেবরাতজ্যে ছিমেন তৎ ক্রিতং । ২৬ ॥
॥ * ॥ হিতি নবমে বেডিশঃ ॥ * ॥

আরো: সপ্তদশে হৈল লোঠপুত্রত পঞ্জু। স্থতের ক্রের্দ্ধাদি চতুর্ণাং বংশ বর্ণনং ॥ • ॥

ইহ শ্রীকৃষ্ণাবতারপ্রস্তাবার বংশাকুবর্ণনমরাদিক্রমেশ প্রক্রাস্থমিতি। যত বংশে শ্রীকৃষ্ণাবতার: তত বংশোতিবিস্তৃত্যাদতে নিরূপ্যতে। অত: প্ররবস প্রাণাং পঞ্চাদাং কমিষ্ঠানাং বংশম্ত বংশমীং প্রথমত বংশমাহ হ ইতি। এবং শহর য্যাতি যত্ প্রভৃতিহিপি দ্রষ্টবাং॥১॥

ক্তব্ৰ: ক্তব্দুড়া । ২ ॥

ক্ৰেনসূৰ্য্য:।

🛚 🛊 🖟 ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমস্বন্ধে শ্রীজীবগোস্থামিক্ত ক্রমসন্দর্ভে বোড়শোহগার: সমাপ্ত: 🔻 • 🖡

এীবিশ্বনাথচক্রবতী ।

বিজেণ হেতুনা পৃথবিধং নানা প্রকারং জাতং তচ্চ প্রবরাস্তরমাপরং হি বস্থাদেবং দেবরাতজোঠবেন তৎ দেবরাত প্রবরং প্রক্রিতং ৪২৬ ॥

। ಈ॥ ইতি সামার্থদিশিস্তাং ছবিণ্যাং ভজেচেতসাং। নবমে বোড়শোহ্ধায়ঃ সক্তঃ সক্তঃ সক্তাং । ৬ । আহমটিরলস্ত্তভাতে কোনোলাং স্থানে স্তাঃ। কতা বৃদ্ধাদরঃ খ্যাতা অসকাদ্যা বদৰ্দ্ধে । ০ । কতাবৃধং কতাবৃদ্ধ কানুদ্ধ । ১ । ২ ।

ফলত: দেবরাতের জ্যেষ্ঠ বলিয়া কল্লিত ছওয়াই ঐ ঘটনার বীজ ॥ ২৬ ॥

॥ * ॥ देखि नवदत्र (सांकृण ॥ * ॥

मक्षमण व्यक्तारम वाशूत शंकर्णुख मत्था कंखत्रुवाणि ठाति करनत वःभ विचत्रव ॥ • ॥

শুক্ষবে কহিলেন হে রাজন্। এ স্থানে শ্রীকৃষ্ণাবতার প্রস্তাবার্থ সংক্ষেপে বংশাসুবর্ণন হইতেছে, মাঁহার বংশে ভগবান অবজীর্ণ হইবেন তাঁহার বংশ শেষে বিস্তারিত রূপে বর্ণিত হইবে। অতএব পুরুরবার পঞ্চপুত্র মধ্যে কনিষ্ঠদিগের বংশ বর্ণন করিয়া সম্প্রতি জ্যেষ্ঠের বংশ বর্ণিত হইতেছে। হে রাজেনা। পুরুরবার আয়ু নামে যে পুত্র হইয়াছিল, তাহার পাঁচটী সন্তান হয় — নত্য, ক্ষত্রেছ, রিজ, রাভ ॥ ১ ॥

এবং অনেনা:। তাহাদের মধ্যে ক্রের্জের বংশ বৃত্তান্ত সম্প্রতি বলি প্রবণ কর। ক্রের্জের পুত্র হুটোরে তাহার ভিনটা সন্তান হইয়া ছিল, কাশ্য, কুল এবং গৃৎসমদ। তল্মধ্যে গৃৎসমদ ইইতে শুনক জন্ম গ্রহণ করেন, তাহার তনয় শৌনক, যিনি বহন্চ প্রবরীয় ঋষি হয়েন ॥ ২ ॥ কাশ্যস্ত কাশিন্তং পুজোরাষ্ট্রোদার্যতমঃ পিতা। ধন্তরি দীর্যতমস আয়ুর্বেদ প্রবর্তকঃ।

যজজুরাস্থাদেবাংশঃ স্মৃতমাত্রার্ত্তিনাশনঃ। তৎপুজঃ কেতুমানস্ত জজ্ঞে ভীমরণস্ততঃ।

দিবোদাসে চ্য়মাংস্তম্মাৎ প্রভর্দন ইতিস্মৃতঃ॥ ৩॥

স এব শক্রজিৎ বৎস ঋতধ্বজ ইতীরিতঃ। তথা কুবলয়াখেতি প্রোক্তোহলকাদয়ভতঃ।

যস্তিং বর্ষসহ্রাণি ষস্তিং বর্ষশতানিচ। নালকাদপরো রাজন্ বুভুজে মেদিনীং যুবা॥ ৪॥

অলকাৎ সন্তুতিস্তমাৎ স্থনীতোথ নিকেতনঃ। ধর্মকেতুঃ স্থতস্তমাৎ সত্যকেতুরজায়ত॥ ৫॥

র্ষটকেতু স্তত্তমাৎ স্কুমারঃ কিতীখরঃ। বীতিহোজোহস্ত ভর্গোহতো ভার্গভ্নিরভূন্প॥ ৬॥

ইতীমে কাশ্যোভূপাঃ ক্রের্জায্যায়িনঃ। রাভস্ত রভসঃ পুজো গন্তীরশ্চাক্রিয়স্ততঃ।

তদ্যোত্রং ব্রহ্মবিজ্জক্তে শৃণু বংশমনেনসঃ॥ ৭॥

खीधरखामी।

দীর্শতমস: পিতা শ্রতমাত্র এবার্ডিং রোগ হৃ:খং নাশয়তীতি তথা । ৩ । ততঃ প্রভর্দনাদি শক্ষাচাথে হৃ৷মতঃ স্কাশাং অলকাদেরঃ । ৪ । সন্ততিঃ সন্ততি সংজ্ঞঃ । ৫ । সত্যকেতো ধুঁ ইকেড্: তশাং সুকুমারঃ তশাহীতিহোতাঃ। তম্ম ভর্গঃ। অতো ভর্গং ভার্গভূমিঃ । ৬ । কাশয়ঃ কাশের্জংখাঃ। কাশেঃ প্রপিতামহস্ত করের্জ্ঞায়রং অর্জে বাস্তীতি তথা । ৭ ॥

ঐবিধনাধচক্রবর্তী।

প্রাক্তিনাদি শব্দবাচ্যাৎ ছামতঃ স্কাশাদলক।দয়ঃ॥ ০।৪॥ স্ফুতি সংজ্ঞঃ ॥ ৫॥ স্কুমারাণীতিহোতঃ ভল্গ ভর্গঃ অভো ভর্গাৎ ॥ ৬॥ কাশয়ঃ কাশের্কংশ্রাঃ ক্ষত্র বৃদ্ধভাবয়ং অয়ং ভে প্রাপ্রস্তীতি তে তথা॥ १॥

কাশ্যের পুক্র কাশি, তাহার পুক্র রাষ্ট্র, তাহার তনয় দার্ঘতমাঃ। দীর্ঘতমার দন্তান ধরস্তরি, যিনি আয়ুর্বেদ প্রবর্তক, যজ্জভাগভোগী, বাহুদেবের অংশ, স্মৃত হইবা মাত্র রোগ জন্ত ক্রেশ ভয় বিনাশ করেন। সে যাহা হউক, ঐ ধরস্তরির পুক্র কেতুমান, তাহার তনয় ভীমরপ, তাহা হইতে দিবোদাস জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার পুক্র চ্যুমান্, তাঁহাকে প্রতর্দন্ত বলা যাইত ॥ ৩॥

আর তিনিই শক্রেজিৎ, বংস, ঋতধ্বজ, তথা কুবলয়াশ্ব বলিয়া উক্ত হইতেন। ঐ হ্যুমানের অলক্ প্রভৃতি অনেক সন্তান জম্মে। তত্মধ্যে অলক্ ষ্টি সহত্র ও ষ্টি শত বংসর যাবং রাজ্য ভোগ করিয়া ছিলেন। হে রাজন্। অলক্ ব্যতীত কোন যুবা তত কাল অবনীভোগ করেন নাই। ৪॥

সে যাহা হউক, ঐ অলর্ক হইতে সম্ভতি সংজ্ঞক •নরপত্তির উৎপত্তি হয়। তাঁহার পুত্র হুনীথ, হুনীথের তন্য নিকেতন। নিকেতনের হুত ধর্মকেতু, তাহা হইতে সত্যকেতু উৎপন্ন হয়েন॥ ৫॥

সত্যকেতৃর পুত্র ধ্নটকেতৃ, তাঁহা হইতে কিতীখর হাক্মার জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার তনয় বীতি-হোত্র, তাঁহার পুত্র ভর্গ, স্তংহত ভার্সভূমি॥৬॥

হে পরীক্ষিং! এই সকল ভূপাল কাশিবংশীয়, ইইারা কাশির প্রপিতামহ, ক্ষত্রায়ের অহয়ের অমুগামী ছিলেন। রাজন্! অতঃপর রাভের বংশ বলি শ্রবণ করে। রাভের পুত্র রভস, তাহার তনয় গন্ধীর, তাহা হইতে অক্রিয়ের উৎপতি হয়। অক্রিয়ের সন্তান ব্রক্ষবিং। অভঃপর অনেনার বংশ বিবরণ প্রবণ করে। ৭॥

শুরত । শুচিন্ত সাচিত্র কুর্ধর্ম গরিং। ততঃ শান্তর জা জাজে কৃত্তকৃত্যঃ স আজ্বান্। রজেঃ পঞ্চশতান্তাসন্ পুত্রাণামমিতৌজসাং। দেবৈরভার্ধিভো দৈত্যান্ হক্তেরাগাদাদিবং। ইন্দ্রতির পুনর্দ্র গৃহী ছা চরণে রজেঃ। আজানমর্পরামাদ প্রক্রাদাদ্রিশঙ্কিতঃ। পিত্র গুরিরতে পুত্রা যাচমানার নোদতঃ। ত্রিপিন্টপং মহেন্দ্রে যজ্ঞভাগান্ সমাদতঃ ॥ ৮॥ গুরুণা হুয়মানেহ্মে বলভিত্তনয়ানুজেঃ। অবধীদুংশিতাত্রাগালক শিচদবশেষিতঃ ॥ ৯॥ কুশাং প্রতিঃ ক্লাত্রদ্ধাং সপ্তর্মান ক্রের্ডাহ সঞ্জান্ত হর্মবলোন্পঃ। সহদেবস্ত তেলি ক্লাত্র তেহিতঃ। সংক্রতিন্ত স্যাচ জয়ঃ ক্রের্ডাইনা জয়দেনস্ত তেহেতঃ। সংক্রতিন্ত স্যাচ জয়ঃ ক্রের্ডাইনা অহারেণঃ। ক্রের্ডাইয়া ভূপা ইমে শুণুথ নাত্রান্॥ ১০॥

धिशवयामी।

ততঃ অনেনসং ভাষো জজে। কৃতকৃত্যা সং যত আত্মবান্ জানী অতঃ পুত্রোৎপাদনং ন কৃত্যানিতার্থ: । ৮। তেবানতিল্রণায় গুরুণা বৃহস্পতিনাহভিচারবিধানেনাথ্যে হ্যমানে স্ভি । ১। সিংহাবদোকনেনহ কার্ম্বাংশ ক্রম্বাংশ কুশাং প্রতিঃ প্রতেঃ সঞ্জঃ । ১০ ।

- প্রীবিশ্বদাপচক্রবন্তী।

প্রাক্ষাদাদারীতাতলগুণসংবিজ্ঞানোহরং বছবীহি:॥
পিতরি রজৌ কালেন উপরতে মৃতে সৃতি পুত্রা রজিহতা অস্তংগৈতৃকং ত্রিপিটপমিতি ভায়েন ন দহু: ॥৮॥
অভিচার বিধানেনাথৌ হুয়মানে সতি বলভিদিক্র: রজেন্তন্যানবধীং ॥ ৯॥
ক্রবুদ্ধণৌত্রাং কুশাং প্রতি:॥ ১০॥

অনেনার পূত্র শুদ্ধ। শুদ্ধের পূত্র শুচি, তাহা হইতে ধর্ম সারথি চিত্রকুর উৎপত্তি হয়। চিত্রকুর সন্তান শাস্তরজা। তিনি জিতেজিয়ের ও জ্ঞানী ছিলেন, একারণ পুত্রোৎপাদন করেন নাই। হে রাজন্ ! রিজর অপরিমিত বলশালী শত সন্তান হয়। একদা তিনি দেবতাদিগের প্রার্থনায় দানব বধ করিয়া দেবরাজকে স্বর্গপুরী প্রদান করেন, তাহাতে মহেস্তা তদীয় চরণ গ্রহণ পূর্বক ঐ পুরী তাঁহার হস্তে দিয়া প্রস্রাদাদি রিপুভয়ে আজ্ম পর্যন্ত সমর্পণ করিয়াছিলেন। পরস্ত রজির মৃত্যু হইলে পর দেবরাজ্ঞ তদীয় তন্যদিগের নিকট যথন স্বীয় পুরী ত্রিপিষ্টপ যাচ্ঞা করিলেন তথন তাহারা প্রত্যপণ করিল না, আপনারা স্বর্গাধিশ ইইয়া যজ্ঞাগ পর্যান্ত গ্রহণ করিতে লাগিল॥ ৮॥

অতএব দেবগুরু রহস্পতি রিজপুতাদিগের বৃদ্ধি লংশার্থ অভিচার বিধান দারা হোম আরম্ভ করি-লেন, তাহাতে অচিরেই তাহারা নীতিবর্ত্ম হইতে অংশিত হইল এবং দেবরাজ অনায়াদে দে দকলকে বধ করিলেন, এক জনও অবশিষ্ট রহিল না॥ ১॥

হে রাজন্! পরীকিং! ক্ষত্রেরের পোঁজ যে কুশ, তাহার পুত্র প্রতি, প্রতির সন্তান সঞ্জয়, তাহাৰ তনয় জয়। জয়ের পুত্র হর্য়বল নরপতি। হর্মবলের পুত্র সহদেব, ভাহার তনয় হীন, হীনের সন্তান জয়দেন, জয়সেনের হৃত সংকৃতি,তাহার সন্তান ক্ষত্রেশ্বনিষ্ঠ মহারথজয়। এই সকল নরপতি ক্রের্দ্ধের বংশে উৎপদ হয়েন। আনন্তর নত্য বংশের বৃত্তান্ত বৃলি, প্রবণ কর॥ ১০ ৪

॥ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারসহংস্যাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্টাং নবসক্ষে আয়ুবংশঃ সপ্তদশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ॥ ১৭ ॥ ॥॥

শ্রীশুক উনাচ গ

যতি র্যাতি: শ্র্যান্তরায়তির্বিরতিঃ কৃতিঃ। ষড়িমে নত্বস্যাসমিজিয়াণীব দেইিনঃ॥ ১॥
রাজ্যং নৈজ্বদেশ্তিঃ পিতাে দতঃ তৎপরিণামবিৎ। ষত্র প্রবিক্তঃ পুরুষ আত্মানং নাবসুধ্যতে ॥ ২॥
পিতরি জংশিতে স্থানাদিন্তাণ্যা ধর্ষণাদ্ধিকঃ। প্রাপিতেইজগরত্বং বৈ য্যাতিরভবন্ধঃ॥ ৪॥
• কৃতস্থাদিশদিকু আত্ন তাতা য্বীয়সঃ। কৃতদারো জুগোপোর্বীং কাব্যস্য র্ষপর্বণঃ॥
শীরাজোবাচ॥

ব্রক্ষর্যি ভগবান্ কাব্যঃ ক্ষত্রবন্ধুশ্চ নাত্যঃ। রাজয়াবিপ্রয়োঃ ক্যান্থিবাহঃ প্রাতিলৌমিকঃ॥ ৪ ॥

वीभव्यामी ।

॥ देखि नवस्य त्रंश्चमणः ॥ + ॥

অষ্টাদশে ব্যাতেস্ত নাত্যক্ত কণোচাতে। যক্ত পঞ্চ পুত্রের্ কনীয়ানগ্রহীজ্জরাং ॥ ১ ॥ তম্ম রাজ্যক্ত পরিণামং অনর্থ:বহুত্বং বেত্তীতি তথা। তত্র হেতু: ব্রেতি ॥ ২ ॥ স্থানাৎ স্বর্গাৎ। বিজৈরগন্ত্যাদিভিঃ ॥ ০ ॥ যবীরসো ভাতুনাদিশং। কাবাস্য শুক্রস্য ব্রপর্কাশ্চ কন্যাদ্যাং কুডদার: সন্ ॥ ৪ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

॥ *॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তকে শীকীবগোত্বামিকৃত ক্রমসন্দর্ভে সপ্তদশোহধাার: সমাপ্ত: ॥ • ॥

श्री विश्वनाथ हत्क व ही

॥ * ॥ ইতি সারার্থদিশিতাং হর্ষিণাং ভজতে চিত্রাং। নবমেহসৌ সপ্তদশং সক্ষতঃ সক্ষাং ॥ * । অস্তাদশে দেবদানী শব্দিছাি কলহার্দ্ধি।। কথা যত্ত জ্বাং পূর্ক্য্যাভেরগ্রহীৎপিতুঃ ॥ ১ ॥ স্থানাৎ স্থাৎ দিলৈরগন্তাাদিভিঃ ॥ ২ ॥ কাবাতা শুক্তকা কন্তনা ব্রধণক্ষণশ্চ ক্রারা ক্রভদারঃ ॥ ৩ ॥ বাংসাণ ক্রাগ্রহণশ্রবণাৎ ঘ্যাভিঃ ক্রেবেনু পেদেন নির্দিষ্টো রাজ্ঞা অভ্যাত চরভথেইনবাভি ভ্রেরং ॥ ৪ ॥

॥ 🕸 ॥ दे जि नवस्य मश्रमण ॥ 🛊 ॥

অফীদেশ অধ্যায়ে নত্য পুত্র য্যাতির বিবরণ, যাঁহার পঞ্চ পুত্রের যথ্যে ফ্রিক্ডনয় পূক্ত জীয় জনা গ্রহণ করিয়াছিলেন॥ • ॥

শুক্ষের ছয় ইন্দ্রির তুল্য নত্ত্ব রাজার যতি, য্যাতি, শর্মাতি, আয়তি, বিয়তি এবং কৃতি নামে ছয়টী সন্তান হইয়াছিল ॥ ১॥

ইহাদের মধ্যে যতি রাজ্যের পরিণাস অর্থাৎ অনুর্থাবছত্ব বুঝিতে পারিয়াছিলেন, হুতরাং যদিও পিতা রাজ্য প্রদান করিলেন তথাচ গ্রহণ করিতে তাঁহার ইচ্ছা হইল না, কারণ ভাহাতে প্রেকিট পুরুষ আত্মবোধ বিহীন হয়॥ ২॥

অতএব ইন্দ্রাণীর প্রতি ধৃষ্টতা ব্যবহার হেতু পিতা (নহুষ) স্বর্গদ্রেষ্ট ও অগন্ত্যাদি বিপ্রগণ কর্তৃক অজগরত্ব প্রাপিত হইলে মধ্যম পুত্র য্যাতিই রাজা হইলেন ॥ ৩॥

তিনি কনিষ্ঠ ভাত্চতুকীয়কে চারিদিক্ শাদন করিতে আজ্ঞা দেন এবং আপনি শুক্রাচার্য্য ও ব্রষ্থ প্রবিষ্ঠ ক্যান পাণিপ্রহণ পূর্বকি কৃতদার হইয়া পৃথিবী পরিরক্ষণে প্রবৃত্ত হন্। রাজা পরীক্ষিৎ জিজ্ঞাসা করিলেন অক্ষন্। ভগবান্ শুক্রাচার্য্য অক্ষাবি,নহুষ পুক্র ব্যাতি ক্ষত্রিয়,আক্ষাণ ক্ষত্রিয়ের প্রতিলোম বিবাহ কি প্রকারে হইয়াছিল হ ॥ ৪ ॥

🖺 শুক উবাচ ॥

একদা দানবেক্সদ্য শর্মিষ্ঠা নাম কন্যকা। সধীসহস্র সংযুক্তা গুরুপুত্র্যাচ ভামিনী।

দেবযান্যা পুরোদ্যানে পুল্পিডজন্মসংকূলে। ব্যচরৎ কল্গীতানি নলিনীপুলিনেছবলা ॥ ৫॥
তা জলাশরমানাদ্য কন্যা: কমললোচনাঃ। তীরে ন্যুস্য তুকুলানি বিজ্ঞা গুলিভাই ব্রিয়:॥ ৬॥
বীক্য ব্রুপ্তঃ গিরিশং সহদেব্যা র্ষন্থিতং। সহসোতীর্য্য বানাংসি পর্যাধুরীড়িভাই ব্রিয়:॥ ৬॥
শর্মিষ্ঠাইজানতী বাসে। গুরুপুত্রাই সমব্যয়হ। শ্বীয়ং মন্তা প্রকৃপিতা দেব্যানীদমন্ত্রবীহ ॥ ৭ ॥
আহো নিরীক্ষ্যভানস্যা দাস্যাই কর্মজ্যাম্প্রতং। অমুদ্ধার্য্যং ধ্রুবতী শুনীব হবিরধ্বরে॥ ৮ ॥
বৈরিদং তপদা স্কীং মুধং পুংসং পরস্য যে। ধার্যতে বৈরিহ জ্যোভিই শিবং পন্থাই প্রদিশিতঃ।

व्यवत्रवामी।

ন প্রতিলোমতা লোব: ঈবরবটনাদিভি দর্শয়ন্ কথামাহ একদেতাদিনা প্রতিজ্ঞাহ ভবচ ইত্যক্তেন। স্বরো: ওক্ত পুত্রা বেববাঞাবাচরদিতি বয়েরবয়:। কলগীতা অলমো বেবু তানি নলিনীপুলিনানি যদিন পুরোধ্যানে। অবলাপির্ফি। ৫ ॥

निकडी: निकडा: ॥ ७ ॥

अकानकी चीबः मचा खक्तभूखा। वानः नमवाबद गर्याशार ॥ १ ॥

অসাম্রতং অন্যাব্যং ॥ ৮ ।

অন্যায়মেৰ আক্ষণোৎকৰ্বৰ্বনেন ৰানজি বৈৱিতি ত্ৰিভি:। ৰে আক্ষণাঃ প্রসা পুংসো মুধং মুধাত্ংপ্রছেন তৃতিবারেণ্ড শ্রেটা

शिविश्वनाथठळवर**ी** ।

দানবেকুত ব্ৰপর্কণ:। কলগীতালয়ো বেই তথা বিধানি নলিনী পুলিনানি যদিংভত ॥ সিক্তী: সিক্ষয়াঃ ॥ ৬ ॥ অজ্যনতী শীবং মথা শুকু পুত্রাঃ বাসং সমবাৰং পর্যাধাৎ ॥ ৭ ॥

অদাম্প্রতমন্ত্রিতং ত্রাক্সণৈদ্ধার্য্যং হবি: ওনীৰ । ৮ ।

ष्प्रत्नोिक ज्ञास्त्रवाह विकि: देशक व्यक्तिक क्षा के

শুকদেব কহিলেন রাজন্! ঈশ্বর ঘটনায় প্রতিলোম বিবাহ দোষাবহু নহে। একদা দানবেজ্র ব্যপর্কার কন্যা শর্মিষ্ঠা দশ শত সথী এবং শুকু পুলী দেবষানীর সহিত মিলিত হইয়া পুরের সমীপশ্ব উদানে বিহার করিতে যায়। সেই উপবন অতি মনোহর, সকল তরু পুজাভরে অবনত হইয়াছিল এবং সেখানে নিকটশ্ব নলিনীপুলিনে অলিকুল কলম্বরে গান করিতেছিল। ৫॥

সে যাহা হউক, শশ্বিষ্ঠা সধীসহ জমণ করিতে করিতে উদ্যানের এক স্থানে একটা জলাশর দেখিতে পাইল অতএব তাহার তটে স্থাপ পরিধেন তুকুল স্থাপন পূর্বক পরস্পান জল সেচন করত ক্রীড়া করিতে লাগিল। এই সময়ে দৈবাৎ দেবধেব গিরিশ দেবীর সহিত র্যোপরি আরোহণ করিয়া ঐ দিক্ দিয়া গমন করাতে ভাঁহাকে দেখিয়া ঐ সকল কন্সার অতিশয় লুজ্জা হইল, সহসা তারে উথিত হইরা স্থাবসন পরিধানার্থ ব্যাএ ইলা ॥ ৬॥

ব্যস্ততা প্রযুক্ত জানিতে না পারাতে শুরু পত্তীর বস্ত্র আপনার মনে করিয়া শর্মিষ্ঠা পরিধান করিল। ডদ্দর্শনে দেববানী কৃপিতা হইয়া কহিলেন॥ ৭॥

অহো! এ দাসীটার সন্যায় কর্ম নিরীক্ষণ কর। কুরুরী যেমন যজ্ঞে যজ্ঞীয় ছবি ধারণ করে ভাহার ন্যায় এ ফুন্টা আমার ধারণীয় বসন পরিধান করিল। ৮ ।

অহো! বাঁহারা তপ্র্যা হারা ইহা স্থলন করিয়াছেন, বাঁহারা পরম পুরুষের মুধ অর্থাৎ অক্ষাধ্ধ

যান্ বন্দস্ক্যপতিষ্ঠন্তে ক্লোকনাথাঃ হুরেখরাঃ। ভগবানপি বিখাত্মা পাবনঃ শ্রীনিকেতনঃ ॥ ৯॥ বয়ং ত্রোপি ভৃগবঃ শিষ্যোহস্যা নঃ পিতান্তরঃ। অন্মন্ধার্থণ ধৃতবতী শৃষ্টোবেদনিবাসতী এবং ক্ষিপত্তীং শর্মিষ্ঠা গুরুপুজীমভাষত। রুমা খসস্ক্যরুজীব ধর্ষিতা দউদ্দৃদ্ধ। আত্মরুত্তমবিজ্ঞায় কথসে বহু ভিক্ষুকি। কিং ন প্রতীক্ষমেহম্মাকং গৃহান্ বলিভুক্ষো যথা। এবং বিধৈঃ হুপরুষ্টাঃ ক্ষিপুচার্য্যন্ততাং স্তীং। শর্মিষ্ঠা প্রাক্ষিপ্থ কুপে বাসন্চাদায় মন্ত্যনা। তস্যাং গতামাং স্বসূহং য্যাতি মুগ্যাঞ্চরন্। প্রাপ্তো যদ্চ্ছয়া কৃপে জলার্থীং তাং দদর্শহ। দত্তা অমৃতরং বাসন্তব্যে রাজা বিবাসসে। গৃহীত্বা পাণিনা পাণিমুজ্জহার দয়াপরঃ। তং রীরমাহোশননী প্রেমনির্জয়া গিরা। রাজং স্বয়া গৃহীতো মে পাণিঃ পরপুরঞ্জয়ঃ। হস্তগ্রাহোহপরোমাভূদ্পুহীতায়া স্বয়া হি মে ॥ ১০॥

শ্রীধরন্তামী

ইক্যর্থ:। ক্যোতিত্র ক্ল পছা বেদমার্গ:॥ ৯ ॥ তদেবং ত্রাক্ষণমাত্রমেৰ তাবং পূজাং। ডত্রাপি বয়ং ভূগব:। অন্যাণ্চ পিতা নঃশিষ্য:। এবং স্তাপি অস্মাভিদ্ধার্যাং বাসঃ ইয়মস্ভী ধূতব্তী ॥ ১ • ॥

এীবিখনাপচক্রবর্তী।

তদেবং ব্রাহ্মণমাত্রমেব ভাবং পুজাং ত্রাপি বরং ভূগবং ত্রাপাজাঃ পিতা ন: শিষ্যঃ । ব্লিভ্লং কাকাঃ । কিং লাতিত্বস্ত্যাক্ । সা রাল্লেশিনসী ভ্রামীতি প্রোবাচেতি জেয়ং ॥ ১০ । ১১ ॥

হইতে উৎপত্তি হেতু সর্ব্ব শ্রেষ্ঠ, যাঁহারা ত্রহ্ম ধারণ করিতেছেন, যাঁহারা শুভ বেদবর্ত্ম প্রদর্শন করি-য়াছেন, আর সকল লোকের নাথ হুরেশ্বরণণ তথা ভগবান্ বিশাত্মা পাবন শ্রীনিবাস ঘাঁহাদিগকে বন্দনা ও যাঁহাদিগের উপাসনা করিয়া থাকেন॥ ৯॥

দেই আক্ষণজাতি মাত্রই তাবং পূজ্য, তম্মধ্যে আবার আমরা মহাপ্রভাব ভ্রুবংশে উৎপন্ন। এই দানীর পিতা যে অইন, সে আমাদের শিষ্য, এ অসতীর আম্পর্কা দেখ, শূক্ষাতির বেদ ধারণের ন্যায় আমাদের ধানণীয় বসন পরিধান করিল। হে রাজন্। গুরু পূজ্রী দেখ্যানী ঐ প্রকারে তিরন্ধার করিতে থাকিলে, শর্মিষ্ঠা রুইটা হইয়া ধর্ষিতা সর্পিন্ধির ন্যায় ঘন ঘন নিশ্মাদ পরিত্যাগ করিতে লাগিল এবং রোষভরে অধর দংশন করিয়া কহিল অরে ভিক্কুকি! আপনার আচরণ না জানিয়া বড়ই যে কটু কহিতে লাগিলি? কাকের ন্যায় তোরা কি আমাদের গৃহের প্রতীক্ষা করিয়া থাকিস্ না ?। হে মহানাজ। এবছির বিবিধ পরুষ বচন প্রেয়াণ লারা গুরু কন্যাকে ভর্মনা করিয়াও শর্মিষ্ঠার ক্রোধ শান্তি হইল না, রোঘে বসন হরণ পূর্বক নয় করিয়া কুপে ফেলিয়া দিল। দেব্যানীকে কূপ মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া শর্মিষ্ঠা অগৃহে গমন করিলে দৈবাং সেই সময়েই ব্যাতি রাজা মুগরা করিতে করিতে যদ্জ্যাক্ষে সেই স্থানে উপস্থিত হইলেন এবং জলার্থী হইয়া ঐ কৃপ সন্ধাপে গমন করিবামাত্র দেব্যানীকে দেখিতে পাইলেন। শুক্রাচার্যের কন্যাকে কৃপ মধ্যে বিবস্তাবস্থায় পতিত দেখিয়া রাজার দয়া হইল। তৎক্ষণাং আপনার উত্তরীয় বসন পরিতে দিনেন, পরে শ্বীয় হস্ত দ্বামা তদীয় কর-ধানণ করিয়া কৃপ হইতে উক্ত হইয়া প্রেম নির্ভর বচনে য্যাতিকে কহিতে লাণিলেন রাজন্। আপনি অস্থাহ করিয়া আমার পাণি গ্রহণ করিলেন, প্রার্থনা করি, যে কর প্রকার গ্রহণ করিলেন অন্তর্বার বিহন বির্যায় গ্রহণ না করে। ১০ টা

এব ঈশ কুতোবীর সম্বন্ধো নৌ ন পৌরুষ:। যদিদং কুপমগ্রায়া ভবতোদর্শনং মম ॥ ১১ ॥ ন আবাণোমে তবিভা হস্তগ্রাহো মহাভুজ। কচস্ত বার্হস্পত্যস্ত শাপাদ্যমশপং পুরা ॥ ১২ ॥ যথাতিরনভিপ্রেতং দৈবোপভ্তমান্তন:। মনস্ত তলাভং বৃদ্ধা প্রতিজ্ঞাহ তম্বচ: ॥ ১৩ ॥

विषत्रपामी।

নিবিদ্ধোহরং প্রতিলোম সম্ম ইতি চেওআহ এব ইতি ॥ ১১ ॥

ব্ৰাহ্মণমেৰ দং বৃণীতি কিমনেনাগ্ৰহেণ ইতি চেন্তব্ৰাহ ন ব্ৰহ্মণ ইতি। বৃহস্পতে: সূতঃ কচঃ শুক্ৰায়ুতসংজীবনী বিদ্যামধা-গাৎ ভদাচ দেববানী তং পতিং চকনে। সচ শুক্ৰপুত্ৰী মম পুজোতি ন তাং উদ্বহৎ। তকঃ কুপিতা সভী তবেয়ং বিদ্যা নিফ্লা ভবদিতি তং শশাপ। সচ তব ব্ৰাহ্মণপতিন্তবেদিতি তাং শশাপ। তদেতদাহ ব্যহমণপং ত্ৰ্যা শাপাৎ। ১২ ন

জশালীয়ভাদনভিপ্রেতমপি দৈবেনোপভ্তং প্রাপিতং বৃদ্ধা তলগতং ওদ্যাং স্কামং প্রমনশ্চ বৃদ্ধা। নহুধর্মে মদীয়ং মনঃ

ক্রমসকর্ড:

এষ ঈশক্বত ইভি ভদাক্য স্থার। শীশুকদেবেন সিদ্ধান্তিভং ॥ ১।২।০।৪।৫।৬।৭।৮।৯।১০।১১॥ 🕯 .

ভত্তাশকতে। নদীশ্ববটনাস্ক্তিব্ৰতি ভঙ্গাং সিদ্ধান্তিভান্নাং ন ক্সাণি গাণং স্থাৎ। কচশাণত নাধ্য নিবাবণে কাৰণং বিবোধাভাবাৎ। প্ৰভাতানৰ্থ বীক্ষ তথা তত্ত্ব সাহায্যাবগমাৎ। তত্যানাধ্যো বা কণং জাতঃ। কথং বা তখা তত্ত্ব প্ৰবৃত্তিবভ্ং ইত্যাশকা তাদৃশানামীশ্বাশ্ৰয় ধৰ্মাণামতএৰ তত্ত্ব বিশেষাব্ৰেয়েধক মিডাভিপ্ৰেডা তদেব দৰ্শ্যতি য্যাভি বিতি দৈবমীশ্বঃ। তথায়মভিপ্ৰায়ঃ। মম য্যাতে ভাবদৃষ্ট ফলে কৰ্মণ ক্সাব্ৰুদ্ধিন জাম্বেড। তদেকাশ্ৰয় মনচেশ্বোপি নতদ্বত্তিয়েং। মনত ন তত্ত্ব প্ৰবেশয়েদিভোগিশন্তিকাশ্ভবেন মূছঃ নিশীভিবানশি। তথাপি যদেবং ভত্তৰা পভিতং ভত্তু ন কৰ্ম্ব বন্ধনং জন্ম বৈক্ষবানাঞ্চ বিদ্যুত্ত ইতি পাল্ম কাৰ্ত্তিক মাহান্ম বচনবদীশ্বইত্তৰ শৈৱনীলাল্যাব্ৰিণী কাণীয়মিছাগুণাব্ৰৈৰ কল্পতে। ভদ্ভিক্ৰমভা গোলাম্বাধ্বিং নচ মে প্ৰবৃত্তিজানাম্যাশ্ৰ্যং নচ মে নিবৃত্তিঃ। কেনাপি দেবেন ভ্ৰদিছিতেন ষ্থা নিমৃকোশ্বিভণ ক্ষাক্ষীতি। পৌত্ৰীয় বচনবৎ মহিধত নিষ্ঠিতহাং। তত্তো নান্যোগানিব তত্ত্ব দোষ ইতি ভাবঃ ॥১২।১০।১৪।১৫॥

व्यविषमाशकक्ववती ।

যমশপং পুরেতি বৃহস্পতেঃ প্তঃ কচঃ শুক্রামৃত্সঞ্জীবনীং বিদ্যামধ্যগাৎ। তদাচ দেববানীং তং পতিঞ্কমে সচ শুকুপুত্রী মম পুজেতি ন তাম্দবহং। তত্তত কুণিতা সতী তবেয়ং বিদ্যা নিজ্লা ভবিছিতি তং শশাপা সচ তব আক্ষণঃ পতিন্তবে দিভি তাং শশাপেতি ॥ ১২ ॥

ব্রাহ্মণ কল্লা পরিণরভাধর্ম সাবধান ছাদনভিপ্রেতং দৈবেন পরমেখরেশৈর আত্মনে উপদ্বতমিতাক হেতুং তক্ষাতং অমনত

হে বীর! যদিও প্রতিলোম পরিণয় নিধিক, তথাচ আমি কৃপ্যমা হইয়া রহিয়াছিলাম, এ সময় যথন আপনকার দর্শন পাইলাম তথন আমাদিগের হুই জনের এই সম্বন্ধ অসংশয় পরমেশ্বর নির্বন্ধ করিয়া রাথিয়াছিলেন, ইহা অন্য পুরুষকৃত নহে॥ ১১॥

অধিকস্ত হে মহারাজ! আমি পূর্বে বৃহস্পতির পুল্র কচকে শাপ দিয়াছিলাম, তাহাতে আমার প্রতি তাঁহার অভিশাপ আছে অর্থাৎ বৃহস্পতির পুল্র কচ আমার পিতা শুলের নিকট যথন মৃত্যঞ্জীবনী বিদ্যা গ্রহণ করেন সেই সময় এক দিন আমি তাঁহাকে বিবাহ করিতে চাহিয়াছিলাম, তাহাতে কচ কলিয়াছিলেন তুমি আমার শুরুপুজী, পুজনীয়া, কি প্রকারর তোমাকে বিবাহ করিতে পারি, অভএব আমি কোপে তাঁহাকে এই অভিশাপ প্রদান করিলাম তোমার বিদ্যা নিফলা হউক, এতৎ প্রবণে কচও আমার প্রতি এই শাপ দিয়াছিলেন, তোমার বাহ্মাণতি হইবেক না, তজ্জনাই আহ্মাণে আমার পাণিবাাহ ঘটিবেক না ॥ ১২ ॥

অশাস্ত্রীয়ত্ব প্রবৃক্ত অনভিপ্রেত হইলেও দৈবকর্তৃক প্রাণিত বোধ করিয়া এবং আপনার অস্তঃকর-

গতে রাজনি সা বীরে তত্ত্র স্ম রুপতী পিজু:। ন্যবেদয়ততঃ সর্বমৃক্তং শর্মিষ্ঠয়া কুতং ॥ >৪॥ তুর্মনা ভগবান্ কাব্য: পৌরোহিত্যং বিগর্হয়ন্। স্তবন্ বৃত্তিক কাপোতীং তুহিত্রা স বর্ষো পুরাৎ॥১৫ বৃষপর্বা তমাজ্ঞায় প্রত্যনীকবিবক্ষিতং। শুক্তং প্রসাদয়সূদ্ধু গাদয়োঃ পতিতঃ পথি। ক্ষণাৰ্দ্ধমন্ত্রতগবান্ শিষ্যং ব্যাচ্ট ভাগবঃ। কামোহস্তাং ক্রিয়তাং রাজন্ নৈনাং ত্যক্ত মহোৎসহে॥১৬

ত্তথেত্যবন্থিতে প্রাহ্ দেব্যানী মনোগতং। পিতা দতা যতো যাতে সামুগা যাতু মামুম্ ॥ ১৭ ॥

व्ययप्रशामी।

প্রবিশেদিতি ভ্রমা বচ: প্রতিজ্ঞাহ অসীক্লতবান । ১৩ ।

শর্মিষ্ঠা সহক্ষোহিণি দৈববশাদেবাভবদিতি দর্শয়য়াত গতে রাজনীতি নবভিঃ। উক্তং ভিক্কীত্যাদি। কৃতং কৃপ প্রক্ষেপ্দি॥১৪॥ কাপোতীং উত্তর্জিং॥১৫॥

প্রস্তানীকা দেবা: তে বিবক্ষিতা জয়ং প্রাণণীয়া ইতাভিপ্রেতং যদ্য তথাভূতং জ্ঞাত্তা প্রত্যনীকানাং বিবক্ষিতমিতি বা ॥১৬॥ সামুগা স্থী,পহিতা শ্রমিষ্ঠা মাম্কু বাড়িতি॥ ১৭॥

क्रमनमर्खः।

প্রভানীকং প্রভিকৃল শাপমরং বিবন্ধিতং বস্ত ভাদৃশং ॥ ১৬ । ১৭ । ১৮ ॥

- প্ৰীৰিখনাপচক্ৰবন্তী ।

বৃদ্ধা বাল্যমারতা মদীয়ং মন: কচিদপি নাধর্মেহরমত নাপি মৎ প্রভু অচেরবৈক শরণত মম মনোত্ধর্মে রমরেদিতি ধর্মত হল। পতি বিভাতোনাল্মধর্মোভবিশ্বভীতি নিশিচভা ভতা বচঃ প্রতিক্ষগ্রাহ॥ ১৩। ১৪॥

কাপোতীমুখুবুজিং ॥ ১৫ ॥

প্রতানীকের বেবের বিব্ফিতং অহারান্ পরিতাকা যুমানের জরং প্রাপ্যামীত্যাদিকং বক্তুমিটং বস্ত তথাভূতং তং আক্রায় ১৬ ম

তংগতি দেববান্যাঃ পাদয়োঃ পভিতা বুৰপৰ্কণ্যবস্থিতে সতি। মনোগতমেৰ আহে আক্টম্বাচ। সামুগা স্থী সহিতা

ণকে তাহার প্রতি সকান দেখিয়া, অধর্মে আমার মনঃ প্রবিষ্ট হয় না, ইহা নিশ্চয় করত তাহার ঐ বাক্যে নরদেব ঘ্যাতি অঙ্গীকৃত হইলেন ॥ ১০ ॥

অনস্তর রাজা পমন করিলে দেবযানী সেই স্থানে থাকিয়া রোদন করিতে করিতে পিতার নিকট সমুদায় বিবরণ নিবেদন করিলেন অর্থাৎ ভিক্ষুকী বলিয়া শর্মিষ্ঠা যে কটুক্তি করিয়াছিল এবং কূপে ফেলিয়া দিয়া যে কুকর্ম করিয়াছিল, বিস্তার পূর্বক বলিলেন । ১৪ ।

তৎ প্রাবণে দৈত্য শুরু শুক্রের অন্তঃকরণ অতিশয় কুগ হইল, পৌরহিত্য র্ভির কুৎসা ও উঞ্জু-ত্তির প্রশংসা করিতে করিতে কস্থার সহিত পুর হইতে নির্গত হইলেন॥ ১৫॥

তদ্তান্ত বিদিত হইলে ব্ৰপৰ্কা বোধ করিলেন গুরু দেবগণ হইতে আপনার জর আকাজ্মা করিয়া বহির্গত ইইতেছেন, অতএব সম্মর গিয়া পথি মধ্যে পদতলে পতিত হইলেন এবং মন্তক দারা প্রসন্ম করিতে লাগিলেন। ক্ষণকাল মধ্যে শুক্রাচার্ব্যের মন্যু অর্দ্ধ পরিমাণে ন্যুন হইল, লিষ্যকে সম্মো ধিয়া বলিলেন রাজন্! আনার কন্যা যাহা বলেন, ইহাঁর অভিলাব সম্পাদন কর, আমি ইহাঁকে ত্যাগ করিতে পারি না ॥ ১৬ ॥

·এতং প্রবণে গুরুকন্যার প্রসমতা প্রভীক্ষা করত ব্যপর্কা অবস্থিত হইলে, দেবধানী আপনার মনোগত ভাব প্রকাশ করত বলিলেন, আমি পিতা কর্তৃক প্রদতা হইয়া যেখানে যাইব, ভোষার পিত্রা দত্তা দেবয়াকৈ শব্দিষ্ঠা দামুগা তদা। স্বানাং তৎ সক্ষটং বীক্ষ্য তদর্থস্তচ গোরবং। দেবয়ানীং পর্যাচরৎ স্ত্রীগহন্তেণ দাসবং ॥ ১৮॥

নাত্যায় হতাং দত্তা সহ শর্মিষ্ঠয়োশনা। তমাহ রাজন্ শর্মিষ্ঠামধান্তল্পেন কর্হিচিৎ।
বিলোক্যেশনসীং রাজন্ শর্মিষ্ঠা হুপ্রজাং কচিৎ। তমেব বত্রে রহসি স্থ্যাঃ পতিমুঠো সতী॥১৯
রাজপুক্র্যাধিতোহপত্যে ধর্মঞাবেক্য ধর্মবিৎ। আরন্ শুক্রবচঃ কালে দিফমেবাভ্যপদ্যত।

निमद्रश्रामी

ভত্তমাৎ নির্গতাৎ শুক্রাৎ সঙ্কটিং বীক্ষা। ভত্তমাদবস্থিতাদর্থসা প্রয়োজনসা গৌরবঞ্চ বীক্ষা। ১৮। ভল্লে নাধা নোপগজেরিভার্থ:॥ ১৯॥

অপভাধিমূত্কালে প্ৰাৰ্থনাতভাঃ কামপূরণং ধর্মেবেক্ষা গুক্রন্য বচঃ শ্বন্ দিটং দৈবপ্রাণিভ্রমেব তৎ স্ল্মভাপদ্যত নতু কামজ ইতার্থ: ॥ ২০ ॥

ক্ৰেদশৰ্ড:

দিষ্টমীখরেণাদিষ্টং প্রেরিজনেৰাভাপদ্যক বিচারিকবান্ । ২০। ২১। ২০।

विविधनाथहक्तवर्शी।

শর্মিটা মাস্থ্যাদিতি ৪,১৭ ৪

ভত্ততঃ শুক্রাৎ কুলিভাং খানামস্থরাণাং শক্ষতিং বীক্ষা ভবৈধৰ ভত্ততঃ প্রসন্ধাৎ অর্থন্য খার্থাজনস্য সৌর্থক বীক্ষা দাস্থৎ দাস ইব ব্যপর্কা প্রাচরং ॥ ১৮ ॥

কহি চিদ্পি তল্লে ন অধা: ন ধেহি ন ধাস্যসীত্যর্থ: ॥ ১৯ ॥

ধৰ্মবিদিতি অপত্যাৰ্থ মৃত্কালে আৰ্থিয়মানায়া অস্যাং কাম পূরণং ধৰ্ম এবেতি জানন্ শুক্রবচণ্চ শ্রিষ্ঠা সঙ্গ প্রতিবেধকং অরন্দোলায়মান চিতোপিদিটং দৈবপ্রাপিতং সঙ্গমেৰ প্রাপঃ

কন্যা শর্মিষ্ঠা দণী দহিত দেই স্থানে আমার অমুগামিনী হউক ॥ ১৭ ॥

র্যপর্কা বিবেচনা করিয়া দেখিলেন আচার্য্য নির্গত হইয়া গেলে আমাদের ঘোর সক্ষট, এখানে অবস্থিত হইলে গুরুতর প্রয়োজন সিদ্ধির সন্তাবনা, অতএব সেই সময়েই গুরু পুত্রী দেব্যানীর হস্তে স্থী সমতে শর্মিষ্ঠাকে সমর্পণ করিলেন। পিতৃ কর্ত্ত্ব প্রদত হওয়াতে শর্মিষ্ঠা সহস্র স্থী সহিত দাসীর নাায় হইয়া তদবধি দেব্যানীর পরিচর্য্যায় প্রবৃত হইলেন ॥ ১৮ ॥

স্থান স্থান করিলেন, কিন্তু বিশেষ করিয়া কহিয়া দিলেন যদিও সামার কন্ধার সহিত শর্মিষ্ঠাকেও তোমাকে সম্প্রদান করিতেছি তথাচ তুমি কদাপি ইহাকে আপনার শয়নে গ্রহণ করিতে পারিবে না। হে রাজন্। কোন সময়ে শর্মিষ্ঠা দেখিলেন দেব্যানী স্থামি সহ্বাদে পরম স্কর পুত্র প্রস্ব করিয়াছেন, অভএব ঋতুকাল উপস্থিত হইলে আপনার স্থীর পতি য্যাতি রাজাকে নিজ্জনে আহ্বান করিয়া পুরোৎপাদনার্থ প্রার্থনা করিবলা ১৯॥

রাজা যথাতি অতিশয় ধর্মজ, ঋতুকালে ,রাজপুত্রী শর্মিষ্ঠা কর্তৃক অপত্যার্থ প্রার্থিত হইয়া বিবে-চনা করিলেন ইহার কাম,পূরণে ধর্ম আছে, অতএব যদিও শুক্রাচার্য্যের বাক্য সারণ হইল তথাচ দৈবপ্রাপিত জ্ঞানে শর্মিষ্ঠার সহিত সঙ্গম স্বীকার করিলেন। ফলতঃ যথাতি রাজা ধর্মবোধেই শর্মি-ষ্ঠার প্রার্থনা পূর্ণ করিয়াছিলেন, কামতঃ জাহাতে প্রবৃত্ত হয়েন নাই। অনস্তর দেব্যানী যত্ন ও তুর্মস্ যত্ত্ব ত্ৰিন্ত কৈব দেবযানী ব্যঞ্জায়ত। ক্ৰছ কামুক্ত প্ৰুক্ত শশ্মিষ্ঠা ৰাৰ্ধপৰ্বনী ॥ ২০ ॥ গৰ্ত্ত দিয়ান কুৰ্বত তিত্ত্ব বিজ্ঞায় মানিনী। দেবযানী পিতৃর্বেইং যথোঁ ক্রোধবিমৃদ্ধিতা ॥ ২১ ॥ প্রিয়ামসুগতঃ কামী বচোভিক্রপমন্ত্রয়ন্। ন প্রসাদয়িতৃং শেকে পাদসন্থাহনাদিছিঃ॥ ২২ ॥ শুক্রন্তমাহ কুপিতঃ দ্রীকামান্তপ্রুষঃ। তাং জরা বিশতাং মশ্ব বিরূপকরণী দৃণাং॥ ২৩ ॥ শ্রীযাতিক্রনাচ ॥

অতৃপ্রোহম্মদ্য কামানাং ব্রহ্মন্ তুহিভরি স্ম তে । ব্যত্যস্ততাং যথাকামং বয়সা যোহভিধাস্থতি ॥২৪

अध्वयामी।

ष्यान्याः भन्तिकाता छर्तुः नकाभाद ॥ २>॥

,छे भम खबन छा ना गबन् ॥ २२ ॥

বিক্বতং রূপং করোতীতি তথা ॥ ২৩ ॥

তে ত্হিতরি কামৈরল্যাপাতৃপ্রোহন্মি কামানাং জোগৈরিতি বা। শুক্র আহ তহি বোহতিধাস্ত অভিতোধাররিবাতি তস্য বয়সা কামং বাত্যস্তাভাং যথেছেং অরাব্যতারং যাতু নীয়তামিতি বা। যথা ব্যস্তাভেতি ছেল:। তাং জরাং ব্যত্যাসং গ্মৱেত্যর্থ: ॥২৪

ক্রমসন্দর্ভ:

कामानामिक क्छाबीनार कतरण वशे ८० कि वार्तिकार ॥ २० ॥

জীবিশ্বনাপচক্রবর্তী।

ব্যজায়ত ব্যজনবং ॥ ২০ ॥

ভর্তু: সকাশালাত্র সন্তবমাজায়েতি পূর্ব্ব পূর্ব্ব মন্যন্মান্ত্রান্ধণাদিকাদেব জ্ঞানত্যাসীদিভি ভাব: ॥ ২১ ॥

উপমন্তরন্স। उप्यन् ॥ २२ । २० ॥

কামানামিতি নাধি অপাতি কাঠানামিতিবৎ যত্তী তে তুহিতরীতি ভঙ্গা অং শাপোহরং তব স্থিতবাপি ফলিত ইতি বাঞ্জিঙং।
তক্তোপি বিষ্ণা প্রসীদর্শাল । বথেইং জরা বরসা বৌষনেন ৰাতাস্তাং বিনিমীরতাং নত্ত জরাং গৃহীতা বিনিমরেন
যৌবনং কং থলু দাস্তি তত্তাহ। যোভিধাস্তি যং প্রাদিকং স্বি সেহেন অভিভে ধাস্তি জরাং স ধার্মিব্যতি। যবা
অমেবং বিনিময়ং স্বান্ আপের তেরু মধ্যে বোহভিধাশুতি বৌবনং দ্বা জরামেবোহহং গৃহামীতি বদিবাতীতার্থং ॥ ২৪ ।

নামে, তুই সন্তান প্রদেব করিলেন, আর শশ্মিষ্ঠার গর্ভে ফ্রন্থু, অনু এবং পূরু এই তিন তনয় হইল ॥২০ হে রাজন্। আপনার ভর্তা হইতে শশ্মিষ্ঠার গর্ভোৎপত্তি হইয়াছিল অবগত হইবা মাত্র দেব্যানী অভিমানে পরিপূর্ণ হইলেন এবং ক্রোধে মৃচ্ছিত প্রায় হইয়া ভৎক্ষণাৎ পিতৃগৃহে গমন করিলেন ॥ ২১॥ যথাতি অভিশয় কামুক ছিলেন, প্রেয়দীর রোষ দেখিয়া বিনয় বাক্যে প্রদান করিতে করিতে

পশ্চাৎগামী হইলেন, কিন্তু পাদসম্বাহনাদি দারাও প্রসন্ম করিতে তাঁহার সামর্থা হইল মা॥ ২২॥

হে মহারাজ। এ দিকে কথার প্রমুখাৎ সমস্ত বৃতান্ত অবগত হইয়া শুক্রাচার্য্য ক্রুদ্ধ হইলেন এবং সন্থা বচনে সম্বোধন পূর্ব্বক জামাতাকে কহিতে লাগিলেন। অরে মন্দ। তুই স্ত্রীকানী হইয়া জন্তা-চরণ করিস্। এই অপরাধে নরদিগের বিরূপকরণী জরা তোর শরীরে প্রবেশ করুক॥ ২৩॥

এতৎ শ্রেবণে যথাতির চিত্ত অত্যর্থ থির হইল, নিবেদন করিলেন ব্রহ্মন্! আপনকার ছুহিতার কাম ভোগ দারা এখনও আমি সর্বতোভাবে তৃপ্ত হই নাই। শুক্র বলিলেন তবে যদি কোন ব্যক্তি তোর লরা প্রহণ করে ভাহার বয়স্থারা যেমন ইচ্ছা হয় কামভোগ করিস্॥ ২৪॥ ইতি লবন্ধব্যবন্থানঃ পূত্রং জ্যেষ্ঠমবোচত। যদো তাত প্রতীচ্ছেমাং জরাং দেছি নিজং বৃদ্ধঃ। মাতামহ কৃতাং বৎদ নত্থো বিষয়েষ্ডং। ব্রুদা ভ্রদীদ্দেন রংস্থে ক্তিপ্রাঃ স্মাঃ ॥ শ্রীষ্ট্রুক্বাচ॥

নোৎসতে জনসা স্থাত্মন্তরা প্রাপ্তয়া তব। জ্বিদিস্থা ক্থং আম্যাং বৈত্ফাং নৈতি প্রান্ধ । ২৫ তুর্বক্ত শেচাদিতঃ পিত্রা ক্রহণানুশ্চ ভারত। প্রত্যাচপুরেধর্মজ্ঞা ছনিত্যে নিত্যবৃদ্ধঃ ॥ ২৬ ॥ অপ্চছতনয়ং প্রাং বয়সোনং গুণাধিকং। নম্ব্যাজ্বৎ বৎস মাং প্রত্যাধ্যাত্মর্হসি ॥ ২৭ ॥ প্রাপ্রাক্রবাচ ॥

श्रीवत्रवामी।

ইতি লক্কং বাবস্থানং জনমা বাবস্থিতি থেন সং॥ ২৫॥ বতো ন ধর্মজ্ঞাঃ অনিতোচ যৌবনে নিতঃবৃদ্ধঃ ॥ ২৬॥ বং জনাং কিং গ্রহীবাসীতি অপুত্রং। প্রত্যাথাানং মাকুথাঃ ইত্যাহ ন স্কমিতি॥ ২৭॥

क्रमम्बर्धः।

हे जै कि युगाकर ॥ २० । २७ । २१ ॥

এ বিশ্বনাপচক্র বন্তী ।

অন্তরা যৌবন সংধ্য এব। কুত অবিদিৰেত্যানি। অয়মন্তাশয়ং মম বিধিৎসিত ভগবত্ত কাম্কৃলং বিষয় বৈত্তামপেকিতং বর্ততে তচত ভোগ ৰাহলাং বিনা প্রায়েন ভবেৎ। তার যদাপি কাল বিলম্বে সতি স্বং সীয়াং অরাং গৃহীয়া মন্দৌবনং দাস্যনীতি জানামি তদপি নিরস্করায় হরিভজনস্যোৎকঠিয়া মন কাল বিলম্বনাস্ত্রাৎ পিতৃরপি তবেমামান্তাং ন পাল্যামাত্র যত্তবেত্তবিভিতি অত্তবে বদোত ধর্মশীলসোতি রাজ্ঞা দশমে বক্ষাতে পরম ধর্মাপেক্ষয়াপিতৃ রাজ্ঞাপালন লক্ষণ ধর্মস্য প্রাক্তস্য সনকাদিভিরিব তেন ত্যাগাৎ যত্তবে সং ত্রাং ভারংশে ভগবান স্বয়নবভভার। স্বদোঃ প্রিয়স্যাহবায় ইতি কুরী ভাতিত বাতৃত্ব প্রোক্ষেধর্মজ্ঞা ইতি গুকোজি: সাতৃ তুর্ব্বাদীন প্রত্যেবেতি ॥ ২৫। ২৬। ২৭ ।

হে রাজন ! যযাতি এই প্রকারে জরা সংক্রমণের ব্যবদা প্রাপ্ত হওয়াতে প্রথমতঃ জ্যেষ্ঠ তনয়
যত্তকে আহ্বান করিয়া বলিলেন হে তাত ! হে যদো ! আমার এই জরা গ্রহণ করিয়া আপনার বয়স্
আমাকে দাও । বংস ! তোমার মাতামহ শুক্রাচার্য্য আমাকে এই জরাগ্রস্ত করিয়া দিলেন, কিন্তু
আমি এখনও বিষয় স্ভোগে পরিভৃপ্ত হই নাই, অতএব ভূমিই জরা লও, তোমার যৌবনে আমি কিয়ৎ
বংসর বিহার করি । যত্ত কহিলেন পিতঃ ! আপনি মধ্য সনয়ে জরা প্রাপ্ত ইইয়াছেন । এজরার সহিত
অবস্থান করিতে আমার অন্তঃকরণ চাহিতেছে না, কারণ গ্রাম্য অ্থ না করিয়া কোন পুরুষ প্রায়্ম
ভাহাতে বিভৃষ্ণ হইতে পারে না ॥ ২৫ ॥

হে ভারত। তদনন্তর তুর্বহ ও ফ্রেছ্ এই ছুই জনও জরাগ্রহণার্থ অভ্যবিত হইয়া ঐ রূপে প্রত্যা-ধ্যান (অধীকার) করিল, তাহাদের ধর্মজ্ঞান ছিল না, অনিত্য পদার্থকেই অর্থাৎ যৌবনকেই নিত্য-জ্ঞান করিত, স্ত্রাং তাহাদের হইতে শিত্রাজ্ঞী পালনের সম্ভাবনা কি ? ॥ ২৬ ॥

পরস্ত বনাতির ক্রিষ্ঠ পুত্র পূরু যদিও বয়সে ক্রুত্র, তথাচ গুণে সর্বজ্ঞেষ্ঠ ছিল। শেষে তাহাকে সম্বোধন করিয়া জরাগ্রহণার্থ য্যাতি জিল্ঞাসা করিলেন এবং কহিলেন বংস! তুমি আপনার অগ্রজ-দের স্থায় আসাকে নিরাকৃত করিতে যোগ্য হইও না ॥ ২৭ ॥

কোলু লোকে মনুষোদ্র পিতৃরাল্মকৃতঃ পুমান্। প্রতিকর্ত্তুং ক্ষমো যন্ত প্রদাদাদ্বিক্তিত পরং ॥২৮ উত্তমশ্চিন্তিতং কুর্যাৎ প্রোক্তকারীতু মধ্যমঃ। অধ্যোহ্জদ্ধা কুর্যাদকর্ত্তাচ্চরিতং পিতৃঃ ॥২৯॥ ইতি প্রমৃদিতঃ পূরুং প্রত্যাস্থাক্ররাং পিতৃঃ। সোহপি তদ্বয়দা কামান্ যথাবজ্জুদে নৃপঃ ॥৩০॥ দপ্রদীপপতিঃ সম্যক্ পিতৃবৎ পাল্মন্ প্রজাঃ। যথোপজোষং বিষয়ান্ জুজুদে ব্যাহতে দ্রিয়ঃ। দেব্যাত্যপানুদ্দিনং মনোবাদ্যেহ্বস্তুভিঃ। প্রেয়দঃ পরমাং প্রতিম্বাহ প্রেয়দী রহঃ। অ্যজ্পবজ্ঞপুরুষং ক্রতৃভি ভূরিদক্ষিণঃ। স্ক্দেব্যয়ং দেবং স্ক্বেদ্যয়ং হরিং ॥ ৩১ ॥

शिवद्रवामी।

আত্মরত: দেহকর্তু: প্রাত্যুপকারং কর্তু: কোরু কম:॥ ২৮॥

তৃথা পিতৃর্শিচন্তিত: কুর্যাৎ স উত্তম: যন্ত প্রোক্তকারী স মধাম: যন্ত অশ্রদ্ধা কুর্যাৎ সোহধম:। স্থকর্তা পিতৃ: উচ্চরিত: পুরীৰপ্রায়:॥ ২৯ ⊭

জুজুবে সেবিভবান্॥ ৩ ।।

ৰথোপকোৰং যথাপ্ৰীতি জুজুবে । ৩১ ॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

যত্ত প্রসাদাৎ প্রসাদেন প্রাপ্তাৎ মনুষ্যদেহাৎ পরং পরমেশ্রমপি বিন্দতে লভতে পুগুরীকবদ্বত প্রাস্থিদের বা ১২৮।২৯।৩০। অবজনিতি। সর্ব্ধে বেদাঃ সর্ব্ধে দেবাশ্চ স্বশ্ব কারণে শক্তি রূপেণ প্রচুরতর। প্রস্তুতারা বত্ত ডিম্ভার্থ: ॥ ৩১ ॥

बिविवनायह क्वर्बी

व्याजाकुछः (मरहारभामविष्ठः भवः चर्तामिः ॥ २৮ ॥

ভদ্দি তবাজ্ঞাং পালয়রপাহমূরম পুত্রো ন কিন্তু মধ্যম এবেত্যাহ। উত্তম ইতি পাঠে। উচ্চরিতং মূত্রমণ সদৃশ ইতি ।২৯।৩০। সংধীপপতি: ভারতবর্ষবর্তিনো যে নবদীপা ভেষামাদিমান্তিমৌ দীপৌ বিনাবে সংধ্যা দীপা ভেষাং পতিরিভ্যেব ব্যাধ্যেরমন্ত্রিম গ্রন্থ ব্যাধ্যালুরোধাং। ৰথোণজোধং ব্যাপ্রীতি ॥ ৩১ ॥

এতৎ প্রবণে পূরু কহিলেন হে মনুষোন্ত ! ইহ লোকে কোন পুরুষই পিতার প্রভাগে করিতে পারে না। পিতা কি সামান্য ব্যক্তি ? তাঁহা হইতে দেহ সম্বন্ধ এবং তাঁহার প্রসাদে পরম পদ প্রাপ্ত হওয়া যায় ॥ ২৮॥

তথাপি যে পুত্র পিতার চিন্তিত বিষয় আপনা হইতে সম্পাদন করে তাহাকে উত্তম বলা যায়, আদেশিত হইরা কার্য্যকারী পুত্র মধ্যম, অঞ্জনায় পিতৃনিয়োগ পালনকারী পুত্র অধম। কিন্তু যে পুত্র আজ্ঞাপ্ত হইয়াও আদেশ সম্পাদন না করে, দে পুত্র নহে, পিতার বিষ্ঠা মাত্র ॥ ২৯॥

এই প্রকার কহিয়া আহল্।দ প্রকাশ পূর্বক পিতার জরা গ্রহণ করিলেন, হণাতিও পুত্রযৌবন দারা যথাবৎ বিষয় ভোগে প্রবৃত্ত হইলেন। ৩০॥

হে রাজন্! যথাতি রাজা সপ্তথীপের অধিপতি ছিলেন, সম্ক্রকারে পুক্রবং প্রজাপালন করত ইচ্ছামুলারে বিষয় ভোগ করিতে লাগিলেন। পুত্রের যৌবন গ্রহণ করাতে সকল ইন্দ্রিয়ই প্রবল ও অব্যাহত ইইল, আর দেববানীও সনঃ বাক্য দেহ এবং অন্যান্য বস্ত ঘারা নির্দ্ধনে অমুদিন প্রিয়তমের পর্য প্রতি জ্পাইতে সারস্ত করিলেন। হে রাজন্! যথাতি রাজা ভূরি ভূরি দক্ষিণা দিয়া বহু বহু যত্ত করত সর্বাদেবময় সর্বাবেদ স্বরূপ যত্ত্বপুরুষ ভগবান হরির স্ক্রনা করেন। এ১ ॥

যশ্মিদিং বিরচিতং ব্যোশ্নীব জলদাবলি:। নানেব ভাতি না ভাতি স্বর্থনায়ামনোরথ:।
তবেব হৃদি বিন্যায় বাহুদেবং গুহাশয়ং। নারায়ণমণীয়াংসং নিরাশীর্যক্ত প্রভু:॥ ৩২ ॥
এবং বর্ষসহস্রাণি মন: ষঠের্মন: হৃথং। বিদধানোহিপি নাতৃপ্যৎ সার্বভৌম: কদিক্তিয়ৈ:॥ ৩৩ ॥
॥ ॥ ইতি জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াঁং বৈয়াসিক্যাং নব্মক্ষকে যাযাতে
হক্তাদশোহধ্যায়:॥ ॥ ৪ ১৮ ॥ ॥ ॥

গ্রীশুক উবাচ ঃ

वीश्ववामी।

নানেৰ ভাতি বাৰণিক্রিয়বৃত্তিঃ তহুপরমে নাভাতিচ স্বপ্নমায়াভ্যাং সহিভো মনোরথ ইবেভার্থঃ ॥ ৩২ ॥ মনঃ স্বৰ্থং কামভোগং ফণিক্রিয়েঃ কুৎসিতৈঃ পরাল্মুথৈরিক্রিয়েঃ ॥ ৩৩ ॥

॥ * ॥ देखि नवस्मश्रीमणः ॥ * ॥

উনবিংশে यवाভिঃ সং চেটিভেন ক্লোপমং! দেববানীং স্নাপ্রাব্য বিরক্তো মৃক্তিমাপ্তবান্। ভুক্তভোগামলাং হাসাল্লবৎ

ক্রমনন্দর্ভ:

ইনং অগণ। যদিরের সর্বাশ্রেরে বিরচিতং যেনৈর স্টং স্থিতো নানের ভাতি নতু নানৈর কারণ রূপেণৈকাাৎ প্রণায়েত্ব ভবৈর কারণ রূপেণ প্রবিষ্টথাৎ। নাজাতি বহিন ব্যক্তং ভবতি। যথা জগৎ তথৈর অপ্রোমারা মনোরধন্তেতার্থ:। সর্বাহ্মর তদাশ্রম্বাৎ। তত্ত্ব সংবাহিপি বন্ধে বিভাবয়ৈকবন্তবন্তীভাক বচনং সমাহার্থেনাবিব্দিভ্র্যাৎ। ন ক্লীব্র্ক। উকারোক্সম্বাদ্যিপ ত ইতিবৎ ॥

বাস্থাবেং সর্বাবাসং এবমপি গুছাশরং সর্ব জ্ঞানাগোচরং। কিঞ্চ নারারণং সর্ব জীব প্রবর্তকং। তথাপ্যণীয়াংসং ছ্রের্জেরং। তথাভূতমপি জন্তা। হৃদি বিন্যান্ত মনতাবির্জাবায়জং। প্রভূ তাল্পোপাসনরা ক্রমাং সামর্থাং প্রাপ্তঃ। তাল্পত্বে হেতুমাহ নিরাশী নিকাম ইতি। এবমপি কটিতি বৈরাগ্যোৎপত্তী প্রতিবন্ধকমাহ এবমিতি॥ ৩২। ৩৩॥

॥ + । ইতি এমদ্ভাগৰত নৰমক্ষে একীৰগোখানিকত ক্ৰমসন্দৰ্ভনা অধানশোহগায়: সমাপ্ত: ॥ + ॥

विविधनायहक्तवर्शी।

যদির ধিঠানে ইদং জগরানের কারণ রূপেণ তেনৈবৈক্যাৎ ন তু বস্তুতো নানেভার্থ:। অতএব প্রলমে ভত্র প্রবিষ্ট্রনাভাত্তি ন বহিক্যাত্তী ভবতি স্বপ্রমায়া মনোরথ ইতাহৈর্যো দুইাস্কলয়ং সর্কোধন্দোবিভার্মের ক্রন্তবতীত্যেক্রচনং ॥

বাস্থান বিষয় বিশ্ব কাৰি। নচ জীব সমূহ তথ জানাজীতাহ। অনীয়াংসং ছজে রং। সচ বহি জিবিদ্ধ লম্পটো হৃশি যবাতি র্মস্থা কাৰ্য বিষয় বিষয় বিশ্ব বিষয় বিশ্ব ব

विषयनाम्मिरार कमिखिरेतः ॥ ७० ॥

॥ 🗝 ॥ ইতি সারার্থদর্শিক্তাং হর্বিণাং জ্বন্ধতে তসাং। নৰমেষ্টাদশোষ্ধ্যার: সল্ভঃ স্কাং ॥ 🛊 ॥ উনবিংশে চ্ছাপ্রাথ। বর্ণিডঃ স্বস্থাক্ষণ । বিরক্ষ্য প্রাথাক্ষণ স্বাদেশ ক্ষাণ্ডা । ০ ॥

অর্থাৎ আকাশে জলদাবলির ন্যায় যাহাতে এই প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান জগৎ বিরচিত হটুয়া যাবৎ ইন্দ্রিয় রুতির উপরমে বর্প ও মায়া সহিত মনোরথ প্রায় প্রকাশহীন হয়, য্যাতি নিরাশী হইয়া সেই অন্তর্যামী পর্ম সুক্ষ ভগবান্ নারায়ণের বহুতর যজ্ঞ করিয়াছিলেন ॥ ৩২ ॥ ,

হে রাজন্। এই প্রকারে দশ সহজ বৎসর পর্যান্ত পরাধাু ও পঞ্চ ইন্দ্রির তথা বর্চ মনঃ ধারা সতত বিষয় ভোগ করিয়াও সর্বভূমীখর য্যাতি সর্বতোভাবে পরিভৃত্তি প্রাপ্ত হইতে পারেন নাই ॥ ৩০ ॥

॥ #॥ देखि नवत्म अधीमण ॥ # ॥

উনবিংশতি অধ্যানে যমতির বৈরাগ্যাদয় হেতু ছাগের ভার স্বীয় আচরণ দেব্যানীকে শ্রেণ

দ ইশ্বমাচরন্ কামান্ জৈণোপত্নবমান্তন। বৃদ্ধা প্রিয়াহৈ নির্বিলো গাধামেভামগায়ত॥ ১॥
শৃণু ভার্পব্যম্থ গাধাং মদিধাচরিতাং ভূবি। ধীরা যদ্যাসুশোচন্তি বনে আমনিবাদিনঃ॥ ২॥
বস্ত একো বনে কশ্চিদিচিম্বন্ প্রিয়মান্তনঃ। দদর্শ কূপে পতিতাং স্বকর্মবশগামকাং॥ ৩॥
ভক্তা উদ্ধরণোপায়ং বস্তঃ কামী বিচিন্তরন্। ব্যধন্ত তীর্থমৃদ্ধৃত্য বিষাণাত্রেণ রোধনি।
গোত্তীর্য কূপাৎ হুপ্রোণী ভ্যেব চক্ষে কিল॥ ৪॥

তয়া বৃতং সমুখীক্ষ্য বহ্ব্যোহজাঃ কান্তকামিনীঃ। পীবানং শাশ্রুলং প্রেষ্ঠং মীঢ়াদং ঘাভকোবিদং ॥৫

व्यापत्रचामी।

वृद्धमाञ्चरः । विज्यसन् श्रिमामार निर्द्धमाञ्चरान् । • ।

কামানাচরন্ উপভূঞান:। গাথামিতিহাস: । ১॥

্মৰিধেন মাদৃশেনাচরিতাং অস্টিভাং। মৰিধস্যাচরিতং যস্যামিতি বা। ৰস্য গ্রামনিবাসিনঃ কামিনো মৰিধস্যাচরিতং বনে স্থিতা ধীরা শোচস্তি তস্য সাধাং শৃরু॥ ২॥

আত্মামমূহলক্যাৰ বত ইতি প্রিয়ামহ্লক্যাহ অঞ্জামিতি বনে সংসারে প্রিয়ং বিষয়ং ॥ ৩॥

রোধসি তটে বিবাণাগ্রেণ মৃদাদিকমুদ্ধ তা ভীর্থং নির্গমায় মার্গং বাধন্ত ॥ ৪ ॥

বহুবা ইতি শর্মিষ্ঠা প্রমুখা: কাময়ামাম্ম:। কাস্কং প্রতি কামিনী: কামবত্য: পীবানং পুরং। সাঞ্চলং স্মঞ্চব্লণং রতিসমর্থ

क्रमममर्जः।

স ইতি সাৰ্দ্ধং॥১।২।৩।৪॥

ষাভে মৈথুনে কোবিদং॥৫।৬।৭৮।৯॥

बीवियमाथठकवर्ती ।

কামান আচরন্উপভ্ঞান:। অপহুবং বঞ্নং ॥ ১॥

মৰিধজাচরিতং যক্তাং তাং যক্ত গ্রাম নিবাসিনো মৰিধজাচরিতাং বনে স্থিতা ধীর। অনুশোচন্তীতি সমাসে গুণীভূতাজ্যামপি পদাভ্যামব্য আর্থবাং ॥ ২ ॥

বস্তশ্ভাপ: অতিশ্রোজ্যা ষ্যাভি: বনে সংসারে প্রিয়: বিষয়স্থং অব্ধাং দেব্যানীং ॥ ৩ ॥

রোধসি তটে বিবাণাগ্রেণ মূলাদি মুদ্ধ তা তীর্থং নির্গম মার্গং বাধত ॥ ৪ ॥

অলা: শর্মিষ্ঠান্যা: কান্তং কাময়িতুং শীলং যাসাং তাঃ কান্তকামিন্তঃ তদেব কামরামান্তঃ। মীঢ়াংসং রেতঃ সেকারং বাতে

করাইয়া স্বয়ং মোক লাভ করেন। • ॥

শুকদেব কহিলেন যথাতি রাজা এই প্রকারে বিষয় ভোগ করিতে করিতে হঠাৎ এক দিন স্ত্রৈণদারা আপনার অপহুব ব্ঝিতে পারিলেন, অতএব নির্ফোদ যুক্ত হইয়া প্রেয়দীর নিকট নিম্ন লিখিত ইতিহাদ বর্ণন করিলেন ॥ ১ ॥

তিনি প্রিয়তমাকে সম্বোধন করিয়া বলিতে লাগিলেন হে ভার্গবি। আমার সদৃশ এক জন কামী এক প্রামে বাস করিত, বনস্থিত ধীরগণ তাহার আচরণের নিমিত্ত এথনও শোক করেন, সেই ক্যক্তির অমুষ্ঠিতা গাঁথাবলি প্রবণ কর॥ ২॥

একটী ছাগ (পুরুষ) বন মধ্যে (সংসারে) আপনার প্রিয় (বিষয়) আছেষণ করিতে করিতে হঠাৎ এক ছাগীকে স্বকর্ম বশতঃ কুপে পতিতা দেখিতে পাইল ॥ ৩॥

সেই ছাগ অভিশয় কামী, ঐ ছাগীয় উদ্ধারোপায় চিন্তা করিয়া, কুপতটে আপনার শৃলাগ্র বারা মৃতিকাদি উদ্ধরণ পূর্বক নির্গম বন্ধ প্রস্তুত করিয়া দিল, ঐ বন্ধ যোগে অলোগ দেই ছাগী কৃপ হইতে উত্তীৰ্ণ হইয়া তাহারই প্রতি অভিলাঘবতী হইল ॥ ৪ ॥

সেই ছাগী ঐ ছাগকে বরণ করিলে অন্যাক্ত বহুতর ছাগীও পুষ্ঠ, রতিষমর্থ, বেতংগেকা এবং

সএকা হজর্মন্তাসাং বছরীনাং রতিবর্জন:। রেমে কামগ্রহুগ্রন্ত আত্মানং নাববুধ্যত।
তমেব প্রেষ্ঠতময়া রমনাণমজান্যয়া। বিলোক্য কুপসংবিয়া নাম্যয়ন্তকর্মতং ॥ ৬ ॥
তং হছাদং অভ্যজ্ঞপং কামিনং কণসৌহসং। ইন্দ্রিয়ারামমুখ্যক্য আমিনঃ ছঃপিতা যযৌ ॥ ৭ ॥
সোহিশি চামুগতত্তিশং রূপণন্তাং প্রসাদয়ন্। কুর্বরিজিবিভাকারং নাশক্ষোৎ পথি সন্ধিছ্ং ॥ ৮ ॥
তস্য তত্ত্ব বিকঃ কশ্চিদজাস্বাম্যচ্ছিনজ্ঞ্বা। লম্বন্তঃ হ্রণং ভূয়ঃ সন্দ্রেষ্ঠ্গায় যোগবিৎ ॥ ৯ ॥

विषद्रश्रामी।

মিতার্থ:। মীচ্বাদং রেডঃদেক্তারং। বাতে মৈপুনে কোবিদং অভিজ্ঞং অভএব প্রেষ্ঠং ॥ ৫ ॥

নাৰবুখাত নাবাবুখ্যত ॥ ७॥

স্বামিনমিতি শুক্রাতিপ্রায়েণ । ৭।

ইড়িবিড়াকারং শব্দং সন্ধিতুং প্রসাদয়িতুং 🛙 ৮ ॥

স্থাপন জ্বিবং অবয়া সভোগাসমর্থনকরে। ে অর্থার অপুজ্রা: কামভোগায় । যোগবিৎ উপায় আ: অরা ব্যত্তাসেন রতিশক্তিং দদাবিতার্থ: ॥ > ॥

खीविधमाशहक्तवार्थी।

देमथूरन काविमः পण्डिलः॥ १॥

অক্সরা অলমেত্যাহিতাখ্যাদিত্বাৎ পরনিপাত:। কৃপসংবিগ্না দেবধানী ॥ ৬ ।

স্থামিনমিতি শুক্রাভিপ্রারেণােকৌ বিরুদ্ধ মতিকুদ্ধাব আর্থিং সোচ্বাঃ। স্থামিরৈশ্ব্য ইতি পাণিনি স্থরণাং স্থামি শক্ষোপি ন ৫কবলং পতিপর্যাায়ে। যথা স্থামিনং তং য্যাতিমুৎস্কা যুয়ে॥ १॥

ইড়িৰিড়াকারং বস্ত জাতি শব্দং সন্ধিতৃং প্রসাদয়িতৃং ॥ ৮ ॥

ৰিজ: শুক্রাচার্য্য:। অজা শুক্রন্থ স্ত্রী তত্মা: স্থানী সঞ্জব ব্রণমন্তিনং। জর্মা সম্ভোগাসমর্থমকরোং। ভ্রঃ প্রাসর সম্বায় কামভোগায় সন্দধে বুবণঃ ব্রণান্তিমকরোং জরাং ব্যভারেন বৌবনযুক্তং চকার। যোগবিং উপায়জঃ ॥ » ॥

মৈপুনপণ্ডিত দেখিয়া ঐ ছাগের প্রতি অভিলাধিণী হইল॥ ৫॥

অতএব সেই এক অজ ব্য উলিখিত বহুতর অজার রতিবর্দ্ধন পূর্বাক তাহাদের সহিত কোল করিতে লাগিল, সেই ছাগ কামরূপ গ্রহে এ রূপ গ্রন্থ হাইল যে আপনাকেও জানিতে পারিল না,। কিন্তু যে ছাগী ফুপে পড়িয়াছিল দে অস্ত ছাগীকে আপনা হইতে প্রিয়তমা ও তাহার সহিত স্থীয় প্রিয়তমকে স্ক্রা রম্মাণ নিরীক্ষণ করিয়া অতিশয় ক্রেদ্ধা হইল, ছাগের ঐ কর্ম তাহার সহু হইল না॥ ৬॥

অতএব ছত্ত্ব সূত্র ক্রিয়া তু:খিত হইয়া সে আপনার স্থামির নিকট গমন করিল ॥ ৭ ॥

ঐ ছাগ অভিশয় স্ত্রৈণ, এ প্রযুক্ত কাতর হইয়া শব্দ করত প্রদন্ন করাইবার নিমিত পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিল, কিন্তু পথি মধ্যে কোন প্রকারে প্রদন্ম করাইতে ভাহার সামর্থ্য হইল না॥ ৮॥

সেই স্থানে ঐ ছাগীর স্থামী কোন প্রাস্থাণ জোধে ঐ ছাগের লম্মান অভ্যন্ন ছিল্ল করিয়া দিলেন অর্থাৎ তাহাকে সম্ভোগাসমূর্থ করিলেন। পরস্ত ঐ বিপ্র উপায়ক্ত ছিলেন, অতএব আপনার পুন্তার কামভোগার্থ পুনরায় ঐ অত যোজন করিলেন। অর্থাৎ পুনশ্চ ঐ ছাগকে রতিশক্তি প্রদান করি-লেন। ১ ॥

সংবদ্ধর্ষণ: সোহপি হজয়া কৃপলকয়া। কালং বহুতিথং ভদ্রে কামৈর্নাদ্যাপি ভ্ষাতি।
তথাহং কৃপণ: হুক্র ভবত্যা: প্রেমযন্ত্রিতঃ। আত্মানং নাভিজ্ঞানামি মোহিতস্তব মায়য়া॥ > ॥
যৎ পৃথিব্যাং ত্রীহি যবং হিরণ্যং পশবঃ দ্রিয়ঃ। ন হুছ্ন্তি মনঃ প্রীতিং পুংসঃ কামহতস্ত তে॥ >>
নজাতু কামঃ কামানামুপভোগেন শাম্যতি। হবিষা কৃষ্ণবদ্ধে ভ্রু এবাভিবর্দ্ধতে॥ >২॥
যদান কুরুতে ভাবং সর্ব্ব ভূতেহুমঙ্গলং। শমদৃষ্টে স্তদা পুংসঃ সর্বাঃ হুধময়া দিশঃ॥ > ৩॥

ত্রীধরস্বামী।

কুপুলব্বা সহ কালম: সেবামানৈ ন তুবাতি ॥ ১০ ॥

নমু তঁহি পুনরপি বহবো বিষয়াঃ দেব্যস্তাং ততে। মনসি প্রীতে সভি কামোপশাস্থা মোহে। নিবর্তেতেতি চেত্ততাহ যদিতি ঘাড্যাং। ন মুম্বস্তি ন পুরম্বি ॥ ১১ ।

হৃতিবা স্বতেন ক্লফবর্মা অগ্নিরিব ॥ ১২ ॥

ভাহি কিলা কেনোপালেন মনদঃ সম্পূৰ্ণা প্ৰীতিঃ স্থাৎ বলা কামোপাশমঃ স্যাদিজ্যাহ বলেভি বড্জিঃ। , জামললং ভাবং রাগ বেহাদিবৈহ্নাং ॥ ১০ ॥

क्रममन्द्रः ।

मायवा (माह्नभक्ता ॥ ১०। ১১ । ১२ । ১৩ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১৯ ॥

গ্রীবিশ্বনাপচক্রবত্তী ।

ক্পলক্ষা কাম লক্ষেতি পাঠর্ছ। বহুতিথং কালং ব্যাপ্যাপি সেব্যমানৈরল্যাপি ন ত্বাতি ন তৃপ্যতি ॥ মোহিত তাৰ মায়য়েতি মম জীবভা তমেব মুর্ভিমত্যবিদ্যেতি ভাবঃ ॥ ১০ ॥

নমু স্বং সম্রাট্ পূর্ণকামোহসি বিষয়ানন্দেনাক্মানং রময়ত তাব কথমেতাবদৈন্যং সন্তবেজ্ঞাহ যদিতি ন গৃহজ্ঞান পূর্ক্ষিতি কামহতত্তেতি কামহতদ্মেবাপূর্ণ কামতে কারণমিতি ভাবঃ ॥ >> ॥

নমু যাবাংত্তে কাম তাবানেব ততোণাধিক প্রমাণো বা বিষয় উপভূজ্যতাং মহা সম্পন্নত তব প্রক্চন্দন বনিতাদি বিষয়াণাং কিমরত্বমিতাত আহ। নশাছিতি। কৃষ্ণবর্ষা অগ্নি:। তত্মাদশাস্তকামসা সদা হংথমেবেতাতঃ শাস্তকাম এব স্থীতি ভাব:॥১২॥ শাস্তকামতাসাধারণং লক্ষণমাহ যদেতি সর্ক্ষ ভূতেরু স্ববেষ্ট্র্ছপি অমঙ্গলং বেষং ন কুক্ত ইতি। স্থসংমানাদি কাম সত্তে এবাবমানাদিকর্তারি বেষ: সংভবেদিতি ভাব:। সমদ্ষ্টে: ব্যাবহারিক নিন্দা স্বত্যাদিরু তুলা বুজে: স্থমারা: স্থমবা:॥ ১০॥

ভদে ! ঐ ছাগ ঐ প্রকারে সংবদ্ধর্ষণ অর্থাৎ রতিশক্তিযুক্ত হইয়া কুপলকা সেই ছাগীর সহিত বিষয় ভোগে বহুকাল যাপন করিল, কিন্তু কামসেবা ছারা জ্বাপি তাহার পরিতোষ জন্ম নাই। হে হুক্র ! ঐ ছাগের ভায় জামিও তোমার প্রণয়ে বন্ধ হুইয়া অতিশয় দীন হুইয়াছি। ভোমার মায়ায় মোহিত হওয়াতে আমি আপনাকে জানিতে পারিতেছি না ॥ ১০ ॥

ভদ্রে! পৃথিবীতে ধান্ত, যব, হুবর্ণ, পশু, স্ত্রী, যাহা যাহা আছে, তৎ সমুদারেও কামহত পুরুষের মনস্ত প্রি পূর্ণ করিতে পারে না ॥ ১১ ॥

ফলত: বিষয় সকলের উপভোগ দারা কাম কদাপি উপশম প্রাপ্ত হয় না, য়ত দারা অগ্নির ন্যায় বিষয় ভোগে বরং পুনরায় রৃদ্ধি শীল হইয়া উঠে। ১২।

কিন্তু যখন পুরুষ সকল প্রাণিতে জমঙ্গল ভাব অর্থাৎ রাগ বেষাদি বৈষম্য পরিত্যাগ করে এবং সর্বত্তি সমদৃষ্ঠি হয়, তথন তাহার সকলদিকই স্থপ্রদ হইয়া উঠে॥ ১৩॥ যা হত্যকা হ্রণতি জিলীর্যাতো যা নজীর্যাতি। তাং তৃঞ্চাং হু:ধনিবছাং শশ্বকামোক্ততং ত্যকে ২॥১৪ নাত্রা বহনা হুছিত্রা বা নাবিবিক্তাসনো ভবে । বলবানিজ্ঞিয়প্রামো বিষাংসনপি কর্বতি। পূর্ণং বর্ষসহত্রং মে বিষয়ান সেবতোহসক্ত । তথাপি চাতুগ্বনং তৃথা তেষ্প্রায়তে। তত্মাদেতানহং ত্যক্ত্বা ত্রক্ষণ্যাধায় মানসং। নির্দ্ধান নির্ক্ষারশ্চরিষ্যামি মুগৈঃ সহ ॥ ১৫ ॥ দৃষ্টং শ্রুতন্সন্থ নামুধ্যায়েরসংবিশে । সংস্তিঞ্জালাশঞ্চ তত্রে বিষান্স আজ্মন্ত্ ॥ ইত্যুক্ত্বা নাজ্যো জারাং তদীয়ং প্রবে বয়:। দৃষ্ধা শ্বক্ষাসং তত্মাদাদদে বিগতস্পৃত্য ॥

धीरद्रवामी।

ছ:খানি নিভরাং বহতীতি ভণা ডাং । ১৪ ।

ত্রী সরিধানত সর্বাণা ত্যাজামিত্যাহ মাত্রেতি। অবিবিক্তং সংকীর্ণমাসনং হস্য সং। কর্বতি আকর্বতি । ১৫।
নমু ভৃষ্ণা ত্যাপস্যাতিহৃত্বত্বাৎ কথং ব্রস্থা মনদ আধানং স্যাভ্রন্ত । ধ্রীভি। বোনাম্ধ্যাহেৎ নসংবিশেৎ নচোপঁহুস্কীভ।
তব্য দৃষ্ট শ্রুতব্যারম্ধ্যানাদৌ স আত্মদৃগ্রুবতি ॥ ১৬॥

धीवित्रनाथम्क् वर्छो ।

সর্ব্ধ সংহত্তা কালোপি কামনারা: সংহারে ন হেড়ু রিভাাহ বেভি। বহা ত্রুপশমারা অপি কামনারা উপশ্যে সাধন্যাছ বেভি জীর্যাত: জরাং প্রাপ্নুবভোপি লোকত শর্মকাম: অশত্রুণামপি বোমলবং কামরতে সঃ । ১৪ ।

কিঞ্চ স্ত্ৰী বিৰয়ঃ কামন্ত সদাচারেণৈৰ শামাতীতি সদাচারং দর্শয়তি মাত্রেতি অবিবিক্তং অপূথস্ভূত মাসনং যক্ত সঃ। বিৰাং সমপাক্ষিত ।

রিষরাভিনিবেশক কাল চ্জুর্রেছেহমেব দৃষ্টাক্ত ইত্যাহ পূর্ণমিতি ।

নত্ত তি কিবাৎ ততা উপশমত্ত্র ভগৰজপত্তণাদে মনো নিধানাদিতাহে মানসং আধারেতি নিরাকারত ধ্যানং ন সংজ্ব-ভীতি সাকারে ব্রহ্মণীতার্থ:। ভাগৰজীং গভিং লেভে ইতাগ্রেতমোজেশ্চ। মৃগৈং সহেতি এতাৰতং কালং ভ্ৰভ্যাং জীড়া-মৃগং সন্ গৃহাক্ষনে নৃত্যমক্রবং অতংপরত্বনে মৃগৈং ক্ফসালয়ং সহৈবং কৃষ্ণলীলামধোনর্থিব্যামীতি ভাবং ॥ ১৫॥

ভন্তবিচারেণাগি বিষয়ব্যানং তাজুং ভগবভাান পরিণাকে সভোব শকুরাদিত্যাহ দৃইমিতি য আত্মদৃক্ ধাানেনাত্মানং ভগবন্ধং পদান্তি সঞ্জং দৃষ্টং শুভঞ্চ বিষয় স্থং অসৎ অসাধুডাদরোচকং বৃদ্ধা ন পুনঃ পুনর্ভারেৎ নচোপভূজীত কিঞ্চ তল দৃষ্টশুড

অতএব চুর্মতি জনের যাহা চুন্তাজা এবং জীর্ণ ব্যক্তির নিকটেও যাহা জীর্ণা হয় না, আর যাহা চুংধরাশি বহন করে, হুথাবাঁ পুরুষ সেই তৃষ্ণা আশু পরিত্যাগ করিবেন ॥ ১৪ ॥

আর স্ত্রীলোকের সির্মান সর্ব্ধ প্রকারেই ত্যাগ করা আবশ্যক। ফলতঃ বাতা অথবা ভগিনী কিম্বা কন্যার সঙ্গেও নির্জ্জনে একাসনে থাকা বিধেয় নতে, যে হেতু ইক্তিয়েচয় অভিশন্ন বলবান্, বিদ্বান্ পুরুযকেও আকর্ষণ করে। ভজে! বিবেচনা করিয়া দেখ, বার্ঘাব বিষয় সেবায় আমার পূর্ণ সহত্র বংসর
গত হইল, তথাচ অনুদিন সেই সকলে ভ্যাই ক্ষাত্রেছে, অতএব আমি এখন ভ্যাকে বিসর্জন দিয়া
পরত্রেলা বনঃ সমাহিত করিব, পরে হেখ ছঃখাদি দল্ব রহিত ও নিরহ্জার হইয়া মৃগগণের সহিত ভ্যাপ
করিব ॥ ১৫ ॥

প্রিরে। যে বাজি দৃষ্ট প্রুত সংসার ও আন্ধনাশকে অসং জানিয়া তাহার অমুধ্যান বা উপজ্যোগ বিস্কৃত্যন করেন, তিনিই দৃষ্ট ও প্রুত বিষয়ের অমুধ্যানাধিতে পণ্ডিছ, তিনিই আন্ধানী। তেরাজন্। ব্যাভি রাজা জায়াকে এই প্রকার কহিয়া কনিষ্ঠ পুত্র পুত্রর প্রতি ভাষার বয়স প্রভাগেশ পূর্বক তাহা হইতে আপনার জরা (বার্ক্যাব্ছা) গ্রহণ করিলেন। তদনম্ভর কোন বিষয়েই তাহার স্পৃহা থাকিল

দিশি দক্ষিণপূর্ববিখাং জ্রুছং দক্ষিণতো যতং। প্রতীচ্যাং ভূববিহ্নক্তে উদীচ্যামপুমীশবং॥ ১৬॥
ভূমগুলভা দর্বত পূরুমই তমং বিশাং। অভিষিচ্যাগ্রজাংগুভ বশে স্থাপ্য বনং যথোঁ॥ ১৭॥
আদেবিতং বর্ষপূগান্ ষড়্বর্গং বিষয়েষু সং। ক্ষণেন মুমুচে নীড়ং জাতপক ইব. ছিজ:॥ ১৮॥
স তত্র নিশু ক্রেদমন্তসঙ্গ আত্মানুভূত্যা বিধৃতজ্ঞিলিঙ্ক:।

পরেংমলে ব্রহ্মণি বাহ্নদেবে লেভে গতিং ভাগবতীং প্রতীতঃ ॥ ১৯ ॥
শুজা গাধাং দেবযানী মেনে প্রস্তোভমান্সনঃ। স্ত্রী পুংসোঃ স্নেছবৈক্লব্যাৎ পরিহাদমিবেরিতং ॥
সো সংনিবাসং স্কুদাং প্রপায়ামিব গচ্ছতাং । বিজ্ঞায়েশ্বরতন্ত্রাণাং মায়াবিরচিতং প্রভোঃ ॥

अपत्रवामी।

फ्र शृद्यार्खः स्थ द्याशिषा । ১१ ।

বিৰচাৰু শক্ষাদিৰু আনেৰিজং ৰড়বৰ্গং ৰড়িজিরস্থং। সুমূচে ভত্যাজ। ৰখা বিৰয়েৰু আনেৰিজং সেবাং কারিজং বরাং ইজিয়াণাং বৰ্গং মুমুচে উপৈক্ষতেত্যৰ্থ: ৪ ১৮ ॥

বিধুতং নিরতং ত্রিগুণায়কং লিলং যেন প্রতীতঃ প্রখ্যাতঃ ॥ ১৯ ॥ প্রভোজনেবাই পরিহাস মিবেতি। যথা প্রভোজং নির্ভিমার্গপ্রোহনং মেনে॥ ২০॥

ক্রমসন্দর্ভ:।

স্রাছেতি তৈ:। তর প্রথম পক্ষে পরিহাসমিবেরিভমণ্যান্থন: প্রভোভমুণালস্কমেব মেনে। তত্ত্ব হেডু:। জীপুংলরোর্যৎ স্নেহ

अविधनाषठक वर्जी।

ধ্যানে এব সংস্তিং আত্মনাশ মাত্মহাতঞ্ বিহান জানন্ । ১৬ ॥

বিশাং দর্ক ভূমণ্ডল দছদ্ধি ধনানাং অহ তিমং অভিশয়েনাহ তীতি ভং ॥ ১৭ ॥

বৰ্ষপুগালপি ব্যাপ্য বিৰয়ের আসম।ক্ সেবিভ মাসজির্যন্ত তথা ভ্তমপি ৰড়িজিছবর্গং কণেটনৰ মুমুচে উপৈক্ষত ইজিছাধী-নো ন বভূবেভার্থ:। নীড়ং মুমুচে নীড়াধীনো যথা নভবতীতার্থ: ॥ ১৮॥

বিধুতং ত্রিশুণাত্মকং লিঙ্গং যেন স:। ভাগবভীং ভগবদ্ধান্নি প্রেমবং পার্বদত্তং প্রভীত: খ্যাত: ॥ ১৯॥

গাধাং ছাগেতিহাসং আত্মনঃ স্বস্ত প্রস্তোভসুপালস্কনমেব বস্ততো মেনে। সেহে বৈক্লব্যাদেব হেতোঃ স্ত্রীপুংস্যোঃ পরিহাস তুলা মুক্তং। তেন হে দেবধানি মরা বস্তং ক্লপরা পানীয়ক্পাত্মূভাভূঃ তৎ পরিশোধনং ত্বা সমাক্ ক্লতং ঘদহমেতাবস্তং

না। দক্ষিণ পূর্যবিদিকে যতুকে, পশ্চিমদিকে তুর্বস্থিকে এবং উত্তরদিকে অনুকে অধীখন করিলেন ॥ ১৬ পরে অধিল ভূমগুলের আধিপত্যে ক্ষত্রিয়োভ্য প্রিয়তম পুত্র পূরুকে অভিযিক্ত করিয়া অগ্রন্ধ তনর-দিগকে তাহার বশে স্থাপন করত আপনি বন প্রস্থান করিলেন॥ ১৭ ॥

হে রাজন্। য্যাতি রাজা বছতর বংসর পর্যান্ত শব্দাদি বিষয় সমূহে ছয় ইন্দ্রিয়ের দারা হাথ সজোগ করিয়াছিলেন সত্য, কিন্তু ঐ প্রকারে উপরত স্পৃহ হইবামাত্র, পক্ষদ্র উৎপন্ন হইলে যেমন পক্ষিশাবক নীড় পরিত্যাগ করে তাহার স্থায় ক্ষণমধ্যে ইন্দ্রিয়েহ্রথ বিস্ক্রেন করিলেন ॥ ১৮ ॥

তিনি সমস্ত সঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া রহিলেন, তাঁহার আত্মাসুভব হারা ত্রিগুণাত্মক লিঙ্গ নিরস্ত ছইল। অতএব প্রকৃষ্ট রূপে খ্যাত হইয়া নির্দাল পর্ক্রন্ম বাহ্দেরে অচিরেই ভাগবতী গতি লাভ করিলেন। ১৯॥

হে মহারাজ! দেবধানী উল্লিখিত গাথা প্রবণ করিয়া তাহা আপনার প্রস্তোভ অর্থাৎ নির্ত্তিমার্গ প্রেৎসাহন জ্ঞান করিলেন,তথাচ ত্রী পুরুষের পরস্পার সেহ হেতু পরিহাদের ভায় ঐ ইভিহাস কথিত হইয়াছিল। অভএব ঐ অৱলা পানীয়শাসায় গ্রমকারিদের স্থায় ঈখরপর্তন্ত প্রভাগণের সহবাস দর্বতি বঙ্গবৃৎস্ক্র স্বপ্নোপদ্যেন ভার্গবী। ক্তঞ্জে মনঃ সমাবেশ্য ব্যধুনোলিঙ্গমাস্থনঃ ॥ ২ • ॥ নমস্তভ্যং ভগবতে বাহুদেবার বেধসে। দর্বভূতাধিবাসার শান্তার রহতে নমঃ ॥ ২ • ॥

॥ # ॥ ইতি-জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং সংহিতায়াং বৈয়াদিক্যাং নবসক্ষমে যাযাতং নামৈকোনবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ১৯ ॥ # ॥

बीवामबाग्रामक्यां ॥

পূরোর্বংশং প্রবক্ষ্যানি যত্ত জাতোহনি ভারত। যত্ত রাজর্বরো বংখ্যা ব্রহ্মবংখ্যান্চ জজিরে॥ জনমেজয়োহভূৎ পূরোঃ প্রচিষাংস্তৎস্ততন্তঃ। প্রবীরোহধমনস্থার্বৈ তম্মাচ্চারুপদোহভর্বং ॥১॥

अविवयामी।

कथः नमारवना जनाह नम हेजि। नमनानिष्ठिः नमारवना हेकार्थः। खिकदना वा नमक्रवाजि । २० ।

। *। ইতি নবমে একোনবিংশঃ । *।

বিংশে পিতৃ প্রসাদাপ্ত রাজাসনমহোরতে:। পুরোর্বংশেতু দৌশ্বত্তে উর্ভসোর্যাতে বশ: ॥ ১ ॥

ক্রমসক্ষর্ড:।

স্তত্ৰ যহৈত্ৰবাং গ্লানি স্তত্তাবনয়েত্যৰ্থ:। বিভীয়ে পক্ষেৎপাৰ্যমৰ ইভি ॥ ২০। ২১ ॥

॥ 🛊 । ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তক্ষে শ্রীদীবগোমামিকত ক্রমসন্দর্ভে একোনবিংশোহধ্যার: সমাপ্ত: ॥ 🔸 ।

बैवियनाथठकवर्छी।

কালং বিষয় মহাক্ষ্কুপে নিপাভিত ইতি মংপতির্থাতির্মানবোচ্নিতি হেববানী জানাতিল্পতি #

প্রভোহ রে: ॥ २ • ॥

কেন সাধনেন ক্ষকে মন আবেশিতমিতি চেল্লমন্তারধ্যান কীর্জনাধিকি রিভাছে নম ইতি। অত বলা অছরীয়া সপ্ত নীপাধিপতিশক্তরভী বভূব তদৈব ব্যাতি অন্যশুলাধাকা প্রায়ো ভারতবর্ব ভূপতি রিভাবসীরতে। ত্রন্থ মরীতি কশাপ বিবস্থ প্রাদ্ধ দেবে নভগ নাভাগান্তরীয়া অথা ত্রন্ধাতি চক্ষ বৃধ প্ররব আয়ু নহব ব্যাত্ম ইতি ত্রন্ধাত অবোরইমপ্রব্ধাৎ। অভএবান্তরীয়া ক্ষ প্রভাবাদেব ভাল্শ বিবল লক্ষত লাগি ব্যাতে ভাল্শী ভক্তিব্যাতেশ্চ সলাক্ষেব্যান্যাশ। কিকৈব্যেব প্র্যাবংশ্যা সপ্তবীপাধিপতিশক্তবন্তী ভালেচক্রবংশ্য অন্যশুলাধ্যক্ষেরালা বলা চক্রবংশ্যশক্ষেব্তী ভলা প্র্যাবংশ্যা রাজেভ্যভন্ন বংশ্যানাং ব্যবহুলা চক্রবর্তির রাজ্যে জেবে । ২১ ৪

॥ # ॥ ইতি সারার্থদর্শিস্তাং ছর্বিণ্যাং ভক্তচেতসাং। একোনবিংশোনবমে সঙ্গতঃ সঙ্গতঃ সভাং ॥ # ॥
পুক্রবংশেছত দৌরস্তে উরতক্ত কথাবিতং। শাকুজনমুশাধ্যানং বিংশোছধ্যাবেছত বর্ণাতে। এক বংশাশ্চ আদাণ বংশোভূতাশ্চ ॥ ১ । ২ ॥

মায়া রচিত বোধ করিলেন এবং স্বপ্নের সহিত উপমা দিয়া সকলই অদীক বিবেচনা করত সর্বত্যে সঙ্গ পরিত্যাগ পূর্ব্বক ভগবানে আপনার মন: সমাবেশানস্তর কলেবর পরিহার করিলেন ॥ ২০ ॥

রাজন্! দেবযানী কিরুপে ভগবানে আপনার মন: সমাবেশিত করেন বলি শুন। "ভগবন্! আপনি বিধাতা, বাস্থদেব, দর্বাস্থতের নিবাস ভূমি, পরম শাস্ত, অতি বৃহৎ আপনাকে নমস্কার করি"। এই প্রকারে স্লা মন্ন করিতেন ॥ ২১ ॥

🛮 🗰 🛮 ইতি নবমে একোনবিংশ 🗓 🕸 🖠

বিংশতি অধ্যায়ে পুরুর বংশবিবরণ এবং উবংশীয় চুম্মন্ততনয় ভরতের যশ: ॥ • ॥

শুক্র কহিলেন হে ভারত। সম্প্রতি প্রার বংশ বিষরণ বলি শুন। ঐ বংশে ভূমি জন্ম প্রায়ণ করিমাছ। অনেক রাজর্বি ভাষা ব্রহ্মার্থি প্রার্থি শুক্রবংশে উৎপদ হয়েন। প্রায় ইতে জনমেলরের জন্ম হয়। ভাহার পুত্র প্রচিয়ান্। তাহা হইতে প্রবীর জন্ম গ্রহণ করেন। প্রবীরের পুত্র মনস্বা, তাহা হইতে চারাপ্রার উত্তব হয়॥ ১॥

তক্ত ন্ত্রেক্ প্তরুষাদ্ধগবন্তে:। সংযাতিককারংযাতী রৌদ্ধান্তংহত: শ্বুক:॥ ২॥
খতেয়ু তক্ত কক্ষেয়া দণিলেয়: ক্তেয়্ক:। জলেয়: সমতেয়্দ্র ধর্মসভ্যব্তেয়ব:॥
দলৈতেইকারম: পূজা বনেয়্দাবিম: শ্বুক:। স্তাচামিলিয়ায়ব স্থাক্ত জগদাল্পন:॥
খাতয়োরতিনাবোইছং অয়তকাল্লা নৃপণ ভ্রমতির্গরিকার কণ্যপ্রতিরথাক্ষক:॥
তক্ত মেধাতিথিতকাং প্রকাদ্যা বিজাতয়:। পুজোইছং ভ্রমতেরেভিত্রান্তরং ভ্রেমত:॥০॥
ত্বান্তো স্বামাং যাতঃ কণাজ্যপদং গতঃ। তত্তাদীনাং স্বপ্রভাগ মধ্যকীং রমামিব ॥
বিলোক্য সদ্যো মৃষুত্র দেবমায়ামিবপ্রিয়ং ॥ ৪॥
বভাবে তাং বরারোলাং ভটো: কতিপরৈর্ভঃ। তদ্বনপ্রমৃদিতঃ সংনির্ভপরিশ্রমঃ॥

विभव्यामा ।

তৎস্থত: অহংবাতে: স্তঃ । ২ ।

ধৰ্মেষ্ণ সভেঃষ্ণ বতেষ্ণ ধৰ্মসভাৰতে বং৷ বনেষ্ণাৰমঃ স্বভঃ। এবং দলৈতে অভেছ্প্ৰস্থাঃ ভক্ত রৌজাখক ছতা-চামিকারনি পুত্র। জাতাঃ। অকারন ইতি ষটা সপ্তমার্থে। বশবর্তিকে দৃষ্টাতঃ জগদাত্মনঃ অগত আত্মভুভক্ত মুধাক প্রাণতে-ক্রিয়াণীব ॥ ৩ ॥

ছমন্ত্ৰ শক্ৰলাবাং ভৱতঃ পুত্ৰোহভৰদিতি কথা ছাবেণাই ছ্মন্তো মৃগরামিতি পঞ্চলভিঃ। তমাশ্রমং মণ্ডরন্তীং ল্লিয়ং বিলোক। মুম্বে অমুহত ৪ ৪ ৪

ख्यानर्गतन अभूतिकः। अष्ठः সংনিবৃদ্धः गति अस्या य**ण** ॥ ६ ॥

विषमाथठकवर्ती।

জন্ম রৌদ্রাখন্ত থতের প্রত্তরো দশ পূলা: ধর্ম সভাবতেরব: ধর্মের্: সভ্যের্: অব্য: ক্রিটোদশম ইত্যর্থ: ॥ অব্যাস ইতি সপ্তম্যুথে বিটা। জীবক্ত দশেন্দ্রিয়াণীব ॥ ৩ । ৪ । ৫ ॥

চারুপদের পুত্র হৃত্যু, তাহা হইতে বহুগব উৎপন্ন হয়েন। তাহার তনয় সংযাতি, সংযাতির পুত্র অহংযাতি, তাহার সন্তান রৌদ্রাখ ॥ ২ ॥

ঐ রোদ্রাখ স্থাচী অপারায় দশটা পুত্র উৎপর করেন,ভাছাদের নাম যথা—ঋতেয়ু,কক্ষেয়ু,য়ভিলেয়ু,
কতেয়,জলেয়ৢ,সমতেয়ৣ,ধর্মেয়ৣ,সতোয়ৢ,অতেয়ু এবং কনিষ্ঠ বনেয়ু। হে রাজন্। বেমন ইন্দ্রিয়গণ অপতের
আক্ষত মুখ্য প্রাণের বশবতী তাহার ন্যায়,ঐ দশ পুত্র রোদ্রাখন অভিশার বশবাদ ছিল। সে যাহা
হউক উল্লিখিত দশ রোদ্রাখতনয় মধ্যে ঋতেয়ুর রন্ধিনাব নামা এক কনয়। উছায় তিন আক্ষম বধা
হমতি, ধ্বব এবং অপ্রতিরথ। তম্বধ্য অপ্রতিরথের পুত্র কণু, উছায় তনয় মেধাভিধি, উছা হইতে
প্রক্ষ প্রভৃতি বিজগণ উৎপন্ন হয়েন। রাজন্। রন্ধিনাবের জ্যেষ্ঠ পুত্র বে হ্মতি,উছায় পুত্র রেভি।
ভাহার তনয় কুয়ন্ত। ৩ ॥

ছুমান্ত রাজা এক দিবস মুগ্রার্থ অরণ্যে প্রবেশ করিয়া মুহর্ষি কণ্ডের আগ্রামে উপস্থিত হইয়াছিলেন। তথায় একটা রমণা অধ্যাসীনা হইয়া রমার ন্যায় খীয় শরীরের প্রভায় আগ্রাম পদ মণ্ডিত করিতেছিলেন। দেবমায়ার সদৃশী দেই তরুণীকে দেখিবা মাত্র রাজা মুগ্ধ হয়েন ॥ ৪ ॥

অনম্বর কতিপয় দেনায় পরিষ্ঠ হইয়া নিকটে গমন পূর্বক দেই বরারোহার সহিত সম্ভাষণ আরম্ভ করেন। হে কুক্রপ্রবীর। সেই হন্দরীকে দর্শন করিবা মাত্র ছন্নতের অনিব্রচনীয় আনন্দ ক্রিয়া- পপ্রচ্ছ কামসন্তপ্ত: প্রহসন্ শ্লক্ষরা গিরা। কা ত্বং কমল প্রাক্তি ক্সাসি হাণরগমে। কিং স্থিচিকীর্ষিতং ত্ত্ত ভবত্যা নির্দ্ধনে বনে ॥ ৫ ॥

ব্যক্তং রাজস্যতনয়াং বেল্যাহং স্বাং ক্ষধ্যমে। নহি চেত: পৌরবাণামধর্মে রমতে কচিৎ । ৬ ॥

বিশানিত্রাত্মজৈবাহং ত্যক্তা মেনক্যা বনে। বেলৈভন্তগ্রান্ কণো বীর কিং কর্বান তে ॥ আফাতাং শ্বেবিলাক গৃহতামহণক না। ভুজাতাং দন্তি নীবারা উন্যতাং যদি রোচতে ॥ ৭ ॥ এ এ এ বিদ্যান্ত উন্থান বিদ্যান্ত বিশ্বনিক্ষান্ত বিদ্যান্ত বিশ্বনিক্ষান্ত বিশ্বনিক বিশ্বনিক্ষান্ত বিশ্বনিক বি

উপপন্নমিদং হুক্র জাতায়াঃ কৃশিকাষ্বয়ে। স্বয়ং হি বুণুতে রাজ্ঞাং কন্সকা সদৃশং বরং । ৮ ॥ ওমিত্যুক্তে যথা ধর্মমুপ্রেমে শকুন্তলাং। গান্ধবিধিনা রাজা দেশকালবিধানবিৎ ॥

विषत्रवामी।

পৌরবাণাং চেভো নহুধর্মে রমতে অতোষ**চেডসম্বা**র রমণাদেবাহং **মাং রাজনাত্মরাং** বেলা ॥ ৬ ॥ বিশামিত্রসাত্মমাহং মেনকারাং কাতা তরাচ মার্গং গ**ছেতা। অতা ত্যকা অতো রাজন্তককৈ**বাহমিতার্থঃ ॥ ९ ॥ কিং করবাম ইত্যাদি বাক্যাং তদভিপ্রারং **আমাহ উপ**পর্মিতি ॥ ৮ ॥ গৃহ্ববিধিনা মিধঃ স্মান্ত পূর্ববিকেশ ॥ ১ ॥

ক্রমসনার্ড:

मीविचनायक्कप्रकीं।

বেশ্বীতি দ্বরি মজেনেশ: সংশাভদাত্রধামুণ পত্তোতি ভাবঃ । ৬ ।
বেদেতি কণ্ড মুধান্মরেদং শ্রুণ । অহন্ত মাতাশিভরৌ ন পরিচিল্নামীতি ভাবঃ ॥ ৭ ।
কিং করবামেত্যানিবাকৈয় ন্ত্র্ভাশি মন: স্থান্মভিরতং ভাষাই উপপন্নমিতি । ৮ ।
ওমিতি শকুন্তবায়া মৌনে নৈবোজে স্তীতার্ধঃ । ১ ।

ছিল, তাহাতে পর্যাটন জন্ম পরিপ্রম যেন নির্ভি হইয়াছিল। কামণীড়িত হইয়া হাসিতে হাসিতে হাসিতে লক্ষ্ম বচনে জিল্পাগা করিয়াছিলেন, হে কমলপ্রাক্ষি। তুমি কে,কাহার কন্মাণ্ড নির্কান বনে কি করিতে বাদনা করিয়াছ ? ॥ ৫ ॥

হে অ্যধ্যমে ! প্রবংশীয়দিগের চিত্ত কদাপি অধর্মে রত হয় না, আমার অন্তঃকরণ ভোমাতে অমু-র ক্ত হইতেছে, অতএব আমার অস্পাক্ত বোধ হইতেছে তুমি ক্ষত্রিয় তন্যা ॥ ৬ ॥

শক্তলা উত্তর দেন রাজন্! আমি বিশামিত্রৈর আত্মজা মেনকার গর্প্তে উৎপন্ন হইয়াছি। সংগ্ যাইবার সময় জননী আমাকে এই বনে পরিত্যাগ করিয়া যান। অতএব আমি ক্ত্রিয় ক্যাই স্তা। ভগবান্ কগু এ বিষয় অবগত আছেন। হে বীর। আপনার কি করিব আ্লো করুন, হে প্রনেত্র। আসন পরিগ্রহ করুন, আমাদের পূজা গ্রহণ করিতে আজা হউক। এবানে নীধার তণুল আছে, ভোজন করুন, যদি অভিকাচি হয় অবস্থিতি করিতে অকুমতি হউক। ৭॥

পুষাত্ত কহিলেন হে অভ্নঃ তুমি কৃশিক বংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ, তোমার এরপ আছুরণ উপযুক্ত বটে, যে হেতু রাজকভারে। সৃষ্ণ বরকে স্বয়ং বরণ করিয়া থাকেন॥ ৮॥

শকুন্তলা এ কথায় হাঁ বলিয়া স্বীকার করিলে দেশ কালের বিধানজ্ঞ ঐ রাজা গান্ধর্বে বিধিয়ারা অর্থাৎ পরস্পার সময় পূর্বক তাঁহার পাণিএহণ করেন। হে রাজন্। রাজর্ধি চুক্ষন্ত অমোঘ বীর্য্য, সেই ভার্য্যায় অমোঘনীর্য্যো রাজর্ধি মহিব্যাং নীর্যাদধে। খোভূতে অপুরং যাতঃ কালেনাসূত সা সূতং ॥
কণ্ব: কুমারস্য বনে চক্রে সম্চিতাঃ ক্রিয়াঃ। বদ্ধা ম্পেন্তং তরসা ক্রীড়তিস্ম স বালকঃ॥ ৯॥
তং চুরত্যরনিক্রান্তমাদায় প্রমদোত্তমা। হরেরংশাংশসন্ত্তং ভর্তুরন্তিকমাসমৎ ॥
যদা ন জগৃহে রাজা ভার্য্যপুত্রাবনিন্দতে)। শৃণুতাং সর্বভ্তানাং থে বাগাহাশিরীরিশী ॥ ১০॥
নাতা ভন্তা পিতৃঃ পুত্রো বেন জাতঃ স এব সঃ। ভরম্ব পুত্রং ছন্তুত্রমান্যংস্থাঃ শক্তবাং॥ ১১॥
রেতোধাঃ পুত্রোনয়তি নরদেব যমক্রাং। ত্রুভাস্ত ধাতা গর্ভ্তা সত্যনাহ শক্তবাং॥ ১২॥

প্রীধরত্বামী।

হুরভায়ং বিজ্ঞাস্তং বিক্রমণং ষষ্ঠ ॥ ১০ ॥

ফুলা চৰ্মপাজং ত্ৰমাতা আধারমাজং। শিতৃরেব পুজঃ ভ্র হেড়ু: হেলেভি। আআ বৈ পুজ নামাসীভি ≛েডঃ ভরস পুষাণা• অনেন,ভরত নাম নিরুকেং॥ ১১॥

কিঞ্চ বেতোধা: বেত: দেকারং শক্তং পুত্রো বমকরাৎ পিতরং নরতি তাররতি তথাচ স্থৃতি: পুরামো নরকাৎ যমাৎ পিতরং তারতে স্বতঃ। তন্থাৎ পূত্র ইতি প্রোক্ত: স্বরমের স্বর্গপ্রেতি। পুত্রমিতি পাঠান্তরে মাতাপিত্রো: পূত্রং প্রতি বিবাদে যমক্ষরা-দ্বর্শনির্বেত্র র্যমন্ত সভারা: স্কাশাৎ বেতোধা: বেত: দেকা পিতৈর ধর্মের বিজিত্য পূত্রং নয়তি নতু মাতেতার্থ:। ততশ্চ ভার্যা পুত্রী ক্বীকৃতবানিতি জ্বেরং॥ ১২ ॥

জীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

ন জগৃহে লোক প্রবাদভয়ারজগ্রাহ ॥ ১• ॥

ভন্তা চর্ম্মপাত্রং তহদের মাতা আধার পাত্রং পিতৃরের পূরে: আআ বৈ পূত্র নামাসীতি শ্রুতে:। ভরম অসীক্র অনেনৈর ভরত নাম নিরুক্তি:॥১১॥

রেতোধা রেত: সেক্তার: শক্বদিত্যর্থ:। বরা পিত্রেত: স্থলেহোপাদানত্বন ধত ইত্যোরিস: পুত্র ইতার্থ:। বনকরাৎ বনাল-রাৎ পিজর: নর্তি তার্যতি। তথাচ স্থতি: পুরায়ো নরকাল্যস্থাৎ পিতরং আরতে স্ক:। 'তস্মাৎ পুত্র ইতি প্রোক্ত: স্বয়নেব স্বয়স্ত্রেতি পুত্রমিতি বিতীয়াস্ত পাঠে পুত্র প্রাপ্তার্থ: মাতাপিত্রোর্বিবাদে বনকরাৎ ধর্মনির্গেচ্ বনস্ত স্থানাৎ রেতোধা রেত: সেক্তা পি তৈব ধর্মোণ নিজিতা পুত্র: ময়তি নতুমাভেতার্থ:। তত্ত ভাগ্যাপুত্রো সীক্বতবানিতি ক্রেয়:॥১২॥

বীর্য্যাধান করিয়া পর দিবস স্বীয় পুরে প্রস্থান করেন। অনস্তর যথাযোগ্য সময়ে শক্তলার এক কুমার উৎপন্ন হয়, মহর্ষি কণু বন মধ্যেই তাহার যথাযোগ্য সংস্কারাদি ক্রিয়া সকল যথাবিধি সম্পন্ন করিয়া দিলেন। হে রাজন্। ঐ বালক বাল্যাবস্থাতেই নিজ বলে সিংহ ধরিয়া তাহার সহিত ক্রীড়া করিতে আরম্ভ করিয়াছিল। ১॥

অতএব তুরত্যে বিক্রম দেখিয়া প্রমদোত্তমা শক্ষিলা ভগবান্ হরির অংশে উৎপন্ন দেই দন্তান লইয়া ভত্সিমিধানে গমন কয়েন, কিন্তু রাজা তুমান্ত অনিন্দিত ঐ পুত্র কলত্র পরিপ্রহ করেন নাই। পরস্তু যথন তিনি সেই শক্ষুলাকে নিরাকৃত করেন, তথন প্রবণকারি সর্ব্ব প্রাণির সমক্ষে আকাশ হইতে অশরীরি বাণী আবিস্তৃতি। হইয়া তাঁহাকে সম্বোধিয়া বলিয়াছিল ॥ ১০ ॥

আহে চুমান্ত! মাতা ভস্তা অর্থাৎ চর্ম্মপাত্রবৎ আধার মাত্র, পিতারই পুক্র, যে হেতু আক্সাই পুক্র-রূপে উৎপদ হয়,অতএব আপন পুক্রকে গ্রহণ করিয়া পালন কর, শকুন্তলার অবমাননা করিও না ॥>>

হে নরদেব। যে ব্যক্তি রেভ:দেক করে, পুজু তাহাকেই য্মভবন হইতে নিস্তার করিয়া থাকে। তুমিই এই গর্ভ্তধান করিয়াছিলে, শকুস্তলা সত্য ক্লহিতেছে॥ ১২॥

পিত্র্পেরতে সোহপি চক্রবত্তী মহাযশাঃ। মহিষা গীয়তে তত্ত হরেরংশভুবোভুবি॥
চক্রং দক্ষিণহত্তেহত্ত পদ্মকোষোহত্ত পাদ্যোঃ॥ ১৩॥

কজে মহাভিষেকেণ সোহভিষিকোহধিরাড়িবভূ:। পঞ্চপঞাশতামেধ্যৈ গ্রিকায়ামসুবাজিভি: ॥১৪॥ মামতেয়ং পুরোধায় যম্নামসুচ প্রভু:। অফসগুতি মেধ্যাখান্ ববন্ধ প্রাদদশ্বস্থ ॥ ১৫ ॥ ভরতস্থাহি দেখিতেরমিঃ সাচীগুণে চিতঃ। সহজাং বন্ধশো যান্মিন ত্রাহ্মণা গা বিভেজিরে ॥ ১৬॥

শ্ৰীগরকামী।

চক্রবরী বিভূবেতি শেবং। তভ মহিমাগীয়তে তদপোতে শোকা অভিগী**তা ইত্যাদি বহ**ব্চ জ্ঞা হরেরংশভূবং অংশাজ্জা**তত।** ভক্ত লিক্ষাহ চক্রমিতি ॥ ১০ ॥

গঙ্গায়ামমূলোনং পঞ্চপঞ্চাশতা বাজিভিরীজে । ১৪।

পুরোধার পুরোহিতং করা। যম্না মহচ বম্নারাঞ্চাহলোমং অটাধিক সপ্ততিং মেধ্যানখান্ ববন্ধ। কিং কুর্বন্ বহু ধনং প্রকর্ষেণ দলং॥ ১৫॥

সাচী গুণে প্রকৃষ্ট গুণবভি দেশেং গিলিচতোহতুং যমিরগিচয়লে দেশে বা সহলং আহলণা ভরতেন ভূরি দানেন দতা গা বদশঃ প্রত্যেকং বদ্ধং বিভেজিরে বিভজা জগৃহঃ চতুরশীভাধিকৈ জ্বোদশ সহলৈরেকং বদ্ধং ভবভি। তথাহি হিরণ্যেন পরিবৃত্তান্ কৃষ্ণান্ গুলোপতো মৃগান্। মফারে ভরতোহদদাং শতং বদ্ধানি সপ্তচেতি শুত্যকানি সপ্তাধিক শতং বদ্ধানি। শীশুকেনোত্তর শ্লোকে চতুর্দশ লক্ষ্যেন সংগৃহীতানি। অদাং কর্মণি মফারে নিযুতানি চতুর্দশ ইভি। এবং চতুর্দশ লক্ষ্যাং সপ্তাধিক শতভাগো বদ্ধ মিত্যক্তং ভবতি ইয়ঞ্চ বদ্ধসংখ্যা শ্লোকেন সংগৃহতে। চতুর্দশানাং লক্ষাণাং সপ্তাধিক শতাংশকঃ। বদ্ধং চতুর্দীত্য গ্রহ্মাণি অযোদশ ইভি॥ ১৬॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

অখান বৰদ্ধ যজাৰ্থমিতি শেষ: ॥ ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭॥

खीविषनाथठक वसी ।

ठळवळी वङ्व ॥ ১० ॥

वाकि छित्र चर्मरेशः ॥ ১৪।

মনভাষা: পুলুং পুরোধায় পুরোহিতং ক্বরা অখান্ববন্ধ যক্ষার্থমিতার্থ: ॥ ১৫ ॥

সাচী গুণে প্রাকৃত্তি গুণবৃত্তি দেশেহগ্রিশ্চিতোহ্ডবং। য**িষ্মগ্নিচরনে** কর্মণি সহস্র সংখ্যা আহ্মণাঃ প্রত্যেকং বৃদ্ধং চতুর-শীতাধিকঅয়োদশ সহস্রাণি গা বিভেজিরে প্রাপুঃ। বৃদ্ধং চতুরশীতাগ্র সংস্রাণি অয়োদশ ॥ ১৬ ॥

হে ভারত ! আকাশবাণী প্রবণ করিবামাত্র রাজা হুমন্ত দেই পুত্র কলত স্থীকার করেন। কিয়ৎ কালানন্তর পিতা উপরত হইলে মহাযশস্থী দেই পুত্র ভরত দিংহাসনাক্ষ্ণ হইয়া চক্রবন্তী হইলেন। মহারাজ ভরত ভগবান্ হরির অংশে উৎপন্ন হইয়াছিলেন, অতএব তাঁহার মহিমা মহামগুলের সর্বত্তি সদাই পরিগীত হয়। তাঁহার দক্ষিণ হস্তে চক্র-এবং পদহয়ে প্রতাধের চিহু বিরাজমান ছিল ॥ ১৩॥

ভিনি মহা অভিষেক দ্বারা অধিরাজাসনে অভিষিত হইয়া গঙ্গাকুলে জনে পঞাশৎ পবিত্র অখ কর প্রু যক্ত করেন ॥ ১৪ ॥

অপের সেই রাজা মমতা তনয় ভৃগুকে পুরোহিত করিয়া যমুনা তীরে অখ্যেধ্যজ্ঞের অই সপ্ততি পবিত্র অম্ব ফ্থাক্রমে বন্ধন করেন, তিনি সেন্সময় ত্রাহ্মণদিগকে যথেষ্ট ধন দান করিয়াছিলেন ॥ ১৫॥

হে রাজন্। প্রকৃষ্ট গুণবৎ দেশেমহারাজ ভরতের অগ্নি প্রণীত ছিল। সেই অগ্নিপ্রণয়ন কালে সহস্র সহস্র আহাণ তৎকর্ত্বক ভূরিদানে প্রদত্ত গাভী সকল এক এক বন্ধ (চতুর্দশলক্ষের সপ্তাধিক শত ভাগে বিভক্ত ১৩০৮৪ সংখ্যক্) বিভাগ করিয়া লইতেন ॥ ১৬॥ ত্রয়ন্তিংশচ্ছতং হখান্ বদ্ধা বিশ্বাপরস্পান্। দৌশান্তিরত্যগান্দারাং দেবানাং গুরুমায্যৌ ॥১৭॥
মুগান্ শুরুদতঃ রফান্ হিরণ্যেন পরীরতান্। শদাৎ কর্মণি মফারে নিযুতানি চতুর্দশ ॥
ভরতস্থ মহৎ কর্ম ন পূর্বের নাপরে নূপাঃ। নৈবাপু নৈব প্রাপ্তান্তি বাহুভ্যাং ত্রিশিবং যথা॥
কিরাত সুগান্ যবনান্ পোঁপ্রান্ কন্ধান্ খশাঞ্কান্। অন্তন্ধান্পাংশ্চাহন্ স্লেছান্ দিয়িজয়েহথিলান্॥১৮
জিত্বা পুরাত্ররা দেবান্ যে রসোকাংসি ভেজিরে। দেবস্তিয়োরদাং নীতাঃ প্রাণিভিঃ পুনরাহরৎ॥১৯॥

वीयद्रश्रमी।

দৈবানামপি মায়াং বৈভবং অত্যগাৎ অভাশেত যতো গুরুং পূজাং হরিং আব্যে প্রাপ্তঃ তদংশভবত্বাৎ মন্বত্তর ইতি পাঠে ত্বং শ্রুত্বস্থাবেশ। মায়াবতা শ্রেষ্ঠঃ হরিবেবাসাবিভাশঃ ॥ ১৭ ॥

মুগান্ শেঠগজান্ জন্মত মৃগাদরে। গজলাতি জেলা: মঞারে ইতাজ শুতিপদত বাাধানেং ক্র্মীতি ক্রিং-চিৎ ক্র্ বিশেষে। ≼ক্চিতুমফারে তীর্থে ইতি বাচজ্যে #১৮॥

পূরা দেবান্ জিবা বেহমুরা রসৌকাংসি রসাভ্রাদি স্থানানি ভেজিরে তৈঃ প্রাণিতির্বলিভির্দেবস্ত্রিয়া রসাভলং নীতাঃ সভী প্রবাহরৎ আনিজে। প্রাণিতিরতি পাঠে পণরোহস্বা তৈনী ভাঃ সভীঃ। বধা পণরো দৃতা তৈন্ প্রস্থানাত্র্বিভির্দিতার্থঃ। ১৯॥

े शैविषना भहका बढ़ी ।

পেবানামপি মারাং বৈক্তৰং আত্যগাৎ আতাশেত যতঃ গুরুং জগলগুরুং হরিং ধবৌ প্রাপ্তঃ। সাম্বত্তর ইতি পাঠে মারাবৈত্তবং তবতাং শ্রেষ্ঠঃ হরেরংশকাৎ ॥ ১৭ ॥

ম্গান্ শ্রেষ্ঠগঞ্জান্ ভন্তমন্ত্রম্গাদরোগঞ্জাতি ভেদা উচাতে। মঞ্চারে কবিং কিৎকর্ম বিশেষে তীর্থবিশেষে ইতি 'কেচিদাহ:। চতুর্দশ লক্ষাণি আদাৎ তথাচ শ্রুতিঃ হিরণ্যেন পরিবৃত্যান্ কঞান্ শুক্রণতো মৃগান্। মঞ্চারে ভরতোহদদাছে তং ব্রুনি সপ্তচেতি ভেন সপ্তাধিক শত ব্রুনিশ লক্ষাণি ভবস্তীতি শ্রীশুক্রদেব বিবরণাং। চতুর্দশ লক্ষাণাং সপ্তাধিক শত ভাগোয়ণচত্র-শীতাধিক ব্রেরাদশ সহস্ত্র প্রমাণঃ বৃদ্ধং ভবতীতাবসীয়তে অভএব বৃদ্ধ সংখ্যাপ্লোকেনোক্সা চতুর্দশীতাপ্র সহস্তাণি ব্রেরাদশেতি ॥ ১৮ ৪

বেছসুরা পুরা দেবান্ বিত্বা রসৌকাংসি রসাতলাদি স্থানানি ভেজিরে প্রাপ্তা: অভএব দেবস্তিয়: রসাং নীতা নীতবস্ত: তেভ্য এবাস্থ্রেভা: সকাশাৎ ডা: স্তির: প্রাণিভি: অপ্রেষ্ঠন্দনৈ: পুন আছেরৎ রানিনার স্পানীরচ দিবি দেবান্ প্রাপরামাসেতি ভাব:। পণিভিরিতি পাঠে পণিভিররস্থরৈশ্রিষ্ঠত: জিরোনীভা: ॥ ১৯ ॥

অপর মহারাজ ভরত একেরারে তায়প্রিংশং শত যাজীর অধ বন্ধন করিয়া নৃপর্গতে বিশ্বয়াদ্বিত করত দেবতাদিগের বিভব অভিজেশ্ব করেন। তাঁহার এপ্রকার কর্ম আশ্চর্য্য নহে,যেহেতু ভগবান্ হ্রিকে প্রাপ্ত ইয়াছিলেন॥ ১৭॥

আর তিনি কর্ম বিশেষে খেডদন্ত কৃষ্ণবর্গ চতুর্দ্ধণ নিষ্ত গ্রেষ্ঠ হন্তি হিরণ্য পরিষ্ঠ করিয়া দান করিতেন। ফলতঃ মহান্ধা ভরত যে সকল কর্ম করেন, যেমন বাহু দারা স্বর্গ প্রাপ্ত হয় না তাহার আয় পূর্ব্তন মৃপগ্র দে সকল প্রাপ্ত হয়েন নাই,পরে যে সকল রাজা হইবেন ভাঁহারাও প্রাপ্ত হইবেন না। তিনি দিখিলয় করিতে গিয়া কিরাত হুণ যবন পেঠুপু কর্ম খণ শক এবং অক্সান্ত অভ্রহ্মণ্য নৃপতি তথা সমন্ত ক্রেছ আতিকে বিন্তি করিয়াছিলেন ॥ ১৮॥

পূর্বেবে যে সকল দানব দেবগণকে জয় করিয়া রসাভলাদি স্থানে বাস করিয়াছিল সেই সমন্ত বলী ব্যক্তি দেবজীদিগকৈ রসাভলে সইয়া যায়, মহান্ধা ভরত সেই সকল দেবাঙ্গনাকে পুনরার আনয়ন করেন॥ ১৯॥

দর্বান্ কামান্ ছছ্হতু: প্রজানাং তক্ত রোদসী। সমান্তি নব সাহ্সীদি কু চক্রমবর্ত্তরং ॥ ২০ ॥ স স্থাড় লোকপালাথ্য মেশ্র্যমধিরাট্ শ্রিমং। চক্রকাশ্বলিতং প্রাণাশ্বেত্পেররামহ ॥ ২১ ॥ তক্তাসদৃপ বৈদর্ভঃ পদ্ধত্তিব্রঃ হুসন্মতা:। জন্মুন্ত্যাগভয়াৎ পুক্রামানুরপা ইতীরিতে ॥ ২২ ॥ তক্তিবং বিতথে বংশে তদর্বং যজতঃ হৃতং। মরুৎসোমেন মরুতো ভর্বাক্রম্পাদছ:॥ ২০ ॥ অন্তর্বাস্থাং ভাতৃপত্তাং মৈপুনায় বৃহস্পতি:। প্রত্তো বারিতো গর্ত্তং শস্তা বীর্যম্পাস্ক্রৎ ॥২৪॥

श्रीश्रद्भाषी ।

জি নব সাহস্রীঃ সমাঃ সপ্তবিংশতি সহস্র সংবৎসর্ন্ চক্রং সেনামাজ্ঞাং বা ॥ ২০ ॥ ডক্স বৈরাগ্যেশ মোক্ষপ্রকারমাহ স ইতি মুবেডি বিচার্যোতি শেষঃ॥ ২১ ॥

নামুরপা: সদৃশা নভবন্তীতি ভল্লা ঈরিতে সতি ব্যতিচার শক্ষা অন্যাংস্কাতীতি ভয়াৎ প্তান্ লয়ু: পুনঃ পুনঃ পুরাণাং দর্শনে বৈদাদৃশ্যামুসকানেন তালেৎ নানাথা ইত্যাশবেন হতবতঃ: ॥ ২২ ॥

বিভবে ব্যব্ধে সভি। ভদর্থং পুত্রার্থং । মরুৎদোষেন ধার্গেন ধনত ভাজ প্রস্কাঃ স্বোমরুভো ভর্থারুং দাম পুত্রমুপাদছ: স্মপ্রামাস্থাঃ ৪২৩॥

মকতাং ভরণাকারণ প্রকারং দর্শয়রাহ অভ্তর্জয়ামিতি চত্তি:। অভ্তর্জয়াং আতৃক্তথাক পদ্ধাং মমভারাং চৌর্যোগ কণাচিৎ মৈধুনার প্রবৃত্তো বৃহম্পতি ভলা বিভীয় গরভাবকাশাভাবাদাকোশ পূর্বকং গর্জেন বারিত:। ততঃ কুকো বৃহম্পতিরকো

ঞীবিশ্বনাথচক্রবর্তী।

बिनव সाहली: मर्थविःमिछ महत्रः वरमदान् वााभा ठळः ८मनाः । २० ।

লোকপালেভ্যোপ্যা সমাক্ থাতি গত্ত তথা ভূতনৈশ্বাং প্রাণাৎ বলহেতৃকাৎ শৌর্যাৎ অত্থলিতং চক্রমাজ্ঞাক মুবা মিধ্যাভূতং বিচার্যোতি শেবং। উপর্বামেতি সর্কং তাজা বনং গ্রাভজ্যা ভগ্যস্তমবাপেতার্থঃ ॥ ২১ ॥

নামূরপান্ মংসদৃশা ইমে ইতি ভতা বিদ্যালিত সতি বাতিচার শব্দ। আশাংস্তাক্ষাতীতি ভরাৎ পূতান্ লয়ু: । ২২ । তদর্থং বংশার্থঃ মরুং সোমেন যজেন যজতঃ যজতে তলৈ মরুতো ভর্মান্ত নাম পূত্রং উপাদ্ধ নি কিটমানীয় দত্ঃ ॥ ২৩ ॥ ভর্মাক এব ক ইতাপেকারামাহ অন্তর্ময়া মিতাদি ভ্রাতু ক্তথাত পদ্মাং মমতারাং তদা দিতীর গর্জাবকাশাভাবাদাকোশ

হে রাজন্! মহাত্মা ভরতের রাজত সময়ে স্বর্গ ও পৃথিবী প্রজাজনের সর্ববদা সকল অভিলাষ দোহন করিত। ঐ রাজা সপ্তবিংশতি সহত্য সন্থংসর রাজ্য শাসন করিয়া সকলদিকেই সেনা প্রবর্ত করাইয়াছিলেন॥২০॥

কিয়ৎ কাল রাজ্য ভোগের পর মহারাজ ভরত লোকপালাখ্য ঐত্বর্য এবং অধিরাজের সম্পতি তথা অস্থ্রলিত সৈক্য ও আত্ম প্রাণ, সকলই অলীক এই রূপ বিচার করিয়া বিষয় হইতে উপরত হয়েন ॥২১॥

তাঁহার বিদর্জদেশীয় অসমত তিনটা পত্নী ছিল। তাঁহারা ভর্তা একবার "এ পুত্র অমুরূপ নংহ" এ প্রকার কহাতে পুন: পুত্র দেখিয়া সদৃশাকুসদ্ধান করত পাছে ব্যভিচার আশক্ষা করিয়া রাজা আমাদিগকে পরিত্যাগ করেন এই ভরে স্ব স্ব সন্তান বিনস্ট করিয়া ফেলিতেন ॥ ২২ ॥

এই রূপে বংশ ব্যর্থ হওরাতে মহারাজ ভরত পুত্রার্থ বায়ুগণের ও সোমের যাগ করিয়াছিলেন,তাহাতে মকুলগণ প্রসন্ন হইয়া তাঁহার হতে ভরছাজ নামক পুত্র সমর্পণ করেন ॥ ২০ ॥

রাজন্! ভরত্বাজের জন্ম বিষরণ এবং সমর্পণ প্রকার বলি অবধান কর। উতথ্য বনিতা মমতার সস-ব্যবস্থায় এক দিন বৃহস্পতি গোপনে ঐ আভ্ভার্যায় মৈধুনার্থ প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, কিন্তু তৎকালে গর্ত্ত মধ্যে এক সন্তান ছিল, সে সময় তন্মধ্যে দ্বিতীয় গর্ত্তের স্থান হইবে কেন ? ইহাতে গর্ত্তত্ব বালক তং ত্যক্তকামাং মন্তাং ভর্তু ক্যাগ বিশক্ষিতাং। নাম নির্মাচনং ত্ক লোকমেকং পুরা কণ্ড:॥২৫
মুদ্ধে ভর বাজমিন্নং ভরবাজং রহক্ষতে। যাতো মৃহক্ত্বা পিতরো ভরবাজকতক্তরং॥ ২৬॥

अध्वयामी ।

ভবেতি ভং গৰ্জং শধ্। বলাৰীৰ্যাং ক্লবিকং। ততো বৃহম্পতেঃ শাপাৎ গৰ্জছোদীৰ্যতম। বৃভূৰ। তেন চ ভঁৰীৰ্ব্যং পাকি প্ৰহারেণ বোনেৰ্ব্যহিনিঃ সারিতং ভূমৌ পতিজং সদ্যএৰ কুমারোহভবং ॥ ২৪ ॥

়ে তং পরবাধ্যকং ভর্ত্তাগ বিশক্তি গৈ সভীং ভাজকুলামাং মমভাং প্রতি স্থাঃ এবং বৃহস্পতেশ্বনভারাক বিবাদরপং সোকং লগু কিমর্থং জপ্তঃ অত আহ ভক্ত নাম নিক্চাতে বেন তং। ভরাম নির্কাচনেনৰ ভর্ত্তাগ শহামপাকর্জমিতার্থঃ ৪ ২৫ ৪ তাঁত পূরং তাজা বাজীং মমভাং বৃহস্পতিরাহ হে মৃচে ইমং পূরুং ভর পূরাণ ভজুর্কিভেমীতি চেত্ততাহ দালং একল কেতে অক্ত বীজাদিতোবং দাভাং লাভং অভতভাগারং পূত্র ইতি ন তমাৎ ভরশহেতার্থ:। এবম্কা সভী তং প্রভাব হে বৃহস্পতে বং ইমং ভর বতঃ দালং দাভামবাভাগং অন্যারতো লাভং অভোনাহ্দেকাকিনী ভরামীতার্থ:। বদ্যবাদেবমৃক্ষা পিভরৌ মমভা বৃহস্পতী বিবদমানো পূত্রং পরিভালা যাতে ভতো হেতোররং ভর্মাক সংক্ষাইতি। বদ্যধানিতি পাঠাত্তরে বল্প প্রস্তা ভাগ

श्चीवित्रनाथहळावछी ।

পূর্বকং গর্জ হেন বারিত:। ততঃ ক্রানো বৃহম্পতিরদ্ধো ভবেতি তং গর্জ হং দাপু । বলাদীর্যানাদধৌ ॥ ২৪ ॥

ততো বৃহস্পতে: শাপালগর্ড ছো দীর্ঘত মা অক্ষোবভূব। তেনচ তথীর্যাং পাক্ষি প্রহারেণ বোনের্কাহিনি : সারিভং ভূমৌ পভিজং সদ্য: কুমারোহভূথ। তত্ত পরবীর্যালং তাজনুকামাং ভর্ত্ত্যাগাদিশকিতাং মমতাং প্রভি সুরা এতং বৃহস্পতে শুমতাদ্বাদ সংবাদ কুপং শ্লোকং অপ্তঃ কীদুশং। ওঞ্চ স্বত্ত নাম নিক্ষাতে বেন ডং । ২৫॥

পুত্রং ত্যক্রা বাস্তীং মন্তাং বৃহস্পতি রাধ হে মুচ্চ ইমং পুত্রং ভর পালর। ভর্তুর্মিতেমীতি চেত্তরাই ছাজং একজ কেতে
আজ্ঞ বীজানিত্যেবং ঘাডাং লাভং আছে জ্ঞাপারং প্ত ইতি ন ভ্যান্তর শক্তেরার্থ। মনতা প্রাহ ৫ে বৃহস্পতে স্থনিসং ভর
যতো হাজং ছাড্যামাবাড্যামল্লারতো ভাতং ভ্রোপি ম্যাকামারাং ওব বলাৎকারাৎ তবৈবারং পুত্রো ন মন বস্তুত ইত্যক্র্যা পিতরো মনতা বৃহস্পতী যতো যাতৌ গতৌ ততো হেত্রগত্ত ভরবাল ইতি। বদুংবাদিতি পাঠে যক্ত পুত্রক ভাগিং ছংথাং

আজোশ পূর্বক রহস্পতিকে বীর্যদেক ক্রিতে বারণ ক্রিলেন। রহস্পতি কামান্ধ হইয়াছিলেন, গর্জুৰ বালকের বারণে জুল হইয়া অন্ধ হও বলিয়া তাহাকে অভিশাপ দিলেন এবং বলে বীর্যদেক করিয়া গেলেন ॥ ২৪॥

র্হস্পতির শাপে উত্থা তন্ম দীর্ঘত্যা হইয়াছিলেন। পরস্কৃতিনি পাফি প্রহার হারা র্হস্পতির বীর্ঘ যোনির বাছিরে নিঃসারিত করিয়া দেন, তাহাতে ভূমিপতিত সেই শুলে তৎক্ষণাৎ এক কুমার উৎপদ হইয়াছিল। স্বামী পাছে বাভিচারিগ্নী জানিয়া পরিত্যাগ করেন এই ভয়ে-ভীতা হইয়া উত্থাবন্তা মমতা যথন সেই কুমারটী ত্যাগ করিতে ইচ্ছা করিয়াছিলেন তৎকালে দেবগণ বহস্পতি ও মমতার বিবাদ রূপ ঐ কুমারের নাম নির্বাচন্থি এই শোক উল্লেখ করেন । ২৫॥

যথা পুত্র ত্যাগ করিয়া যাইতে দেখিয়া বৃহস্পতি সমতাকে কহিয়াছিলেন শ্বিঃ শৃঢ়ে ! এ বালক একের ক্ষেত্রে অফের বীর্যো এই রূপে এই অনু হইতে অফিল, অত্পব তোমার বাসির ওপুত্র, ভর্তা হইতে ভয় আশকা নাই, ইহাকে ভরগ কর, ইহাতে মমতা উত্তর করেন, তুমিও ইহার পোবণ কর, আমাদের তুই জন হইতে, অফায়ে এ বালক উৎপদ্ধ হইল, আমি একাকিনী কেন পোবণ করিব ? পিতা মাতা অর্থাৎ বৃহস্পতি ও সম্তা এই প্রকার কহিয়া বিবাদ-করিতে করিতে এ বালকতক পরি-

চোদ্যমানা হুবৈরেবং মন্ধা বিতথমান্ধাঞ্চং। ব্যক্তর্জনার্কতো বিভাশতোহরং বিতথেহর য়ে । ২৭ ॥
॥ ৪ ॥ ইতি জ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংকাং সংহিতারাং বৈল্লীসিক্যাং নব্মক্ষতে প্রশ্বংশ
কীর্তনে বিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২০ ॥ # ॥

প্রীশুক উরাচ॥

বিতথতা হতান্ মত্যোর হৎক্ষতোজয়স্ততঃ। মহাবীর্ব্যে নরোগর্গঃ সংকৃতিস্ত নরাত্মজঃ॥ শুরুষ্ট রন্তিদেবশ্ট সংকৃতেঃ পাশুনক্ষন॥ ১॥

बिधवयां यो

ছঃখাৎ পিডরৌ যাভাবিভার্থ: । ২৬ ।

বিভবং বাতিচার সন্তবং তমান্মলং নির্থকং মথা মমতা বাস্থাহ তত্যাক। আদিতবমিতি পাঠান্তরে আদিতবং অধমলং তর্বু বার্থানাতমের মুধ্যমান্মলং মথা বৃহস্পতের্জাতং তত্যাকেতার্থা। তার তরা তাকেং মরুভোহবিত্রন্ অবিভরণ দেবেবং মরুভিঃ আথেছিরং ভরতভাষ্টে বিত্রে বিতরে সভি দত্তঃ ৪৭॥

। • । देखि नवस्य विश्नः । • ।

একংবিংশেজু দৌমবেঃ প্রজামর উচাতে। রস্তিদেবালমীচাদের্যত্র কীর্ষ্টিং প্রজনাতে। • ॥
ভর্তসাহিরে বিভবে সভি বস্তম্বাৎ বিভবসংক্ষো ভর্মালঃ সচ ত্রাহ্মণোপি ভর্তজ্ঞ দত্তপুত্রোলাত ইতি ভর্গশোহসুক্রমাতে।
বিভবজ্ঞ স্তোময়া স্তমান হংকত লয় মহাবাব্য নর পর্যাঃ পঞ্চ পুত্র। বভুব্ঃ ১ ॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

। •। ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্ষে শ্রীজীবগোশামিকত ক্রমসমর্ভে বিংশোহধাাম: সমাপ্ত: । •।

এ বিশ্বনাপচক্র বস্তী।

भिछत्ती बाक्ति ॥ २७ ॥

স্টেররেবং চোদামানা হে মমতে সং বৃহস্পতে ক্পণতে রাজাং পাদরেতি সোপহাসমুকা তমায়স্কং বিভবং বার্ধং মথা মমতা দক্ষর। বাস্কং তভাগে। আদিজুমিতি পাঠে অধেমকং বৃহস্পতিজাতমিতার্থঃ। এবং তয়া তাকাং মকডোহবিজন্ অবিভক্ষঃ। ভূখাত ভয়ভভাগেরে বিতপে সভি দতঃ দংগ ॥

। 🔸 ॥ ইজি সারার্থন্সিয়াং হর্বিণাং জকচেডসাং। নবমে বিংশতিতমং সদ্ভঃ স্কৃতঃ স্তাং ॥ 🗣 ॥
এক্বিংশে পুরুবংশুরব্রিদেব কণোচ্যতে। যন্ত হৌদাব্য ধৈহ্যাল্যাং আধীশা জোবমাববুং। বিতথো জর্বাজং স্চ আহ্মণোশি
ভর্তল পুরুজ্বায়হাঃ ॥ ১ ॥ :

छा। कतिया याम अहे कातरण हेरात नाम अत्रवाल हरेग्नार्छ ॥ २७॥

হে রাজন্। কেন্দ্রারা এই প্রকার কহিতে থাকিলেও ব্যক্তিচারোৎপন্ন সেই বালককৈ ব্যর্থ বোধ করিয়া উত্তথ্য ভার্ষাণ পরিত্যাগ করেন। মরুদ্রাণ তাহাকে লইয়া প্রতিপালন করিয়াছিলেন। যথন ভরতবংশ বিতথ হইবার উপক্রম হইল দেই সময় তাহারা ঐ রাজাকে ঐ পুদ্রটো সমর্থণ করিলেন ॥২৭ ॥ * ॥ ইতি নবমে বিংশ ॥ * ॥

এক বিংশতি অধ্যায়ে ত্মন্ত পূত্ৰ ভরতের বংশ বিষরণ এবং প্রসঙ্গতঃ রন্তিদেব ও পজমীঢ়া দির কীর্তি বর্ণনায় • এ

শুক্ষের কহিলেন হে রাজন্। বংশ বিতথ হইলে ভরতের প্রতি মরুদাণ কর্ত্ব ভরষীজ প্রদত্ত হইয়াছিলেন, আক্ষণ হইলেও দত্তপুত্র হেছু ভরষাজের নাম বিতথ হইয়াছিল। বিতথের পুত্র মন্ত্র, ভাহা হইতে বৃহৎক্ষাল, জয়, মহাবীহা, নর এবং গর্গ এই পাঁচি পুত্র, জন্মে। তামধ্যে নরের তনম সংকৃতি, ভাহার পুত্র গুরু এরং এবং রন্তিদেব ॥ ১ ॥ রন্তিদেৰতা মহিমা ইহাযুত্রচ গীয়তে। বিয়বিত্ততা দদতো লবং লবং বৃভুক্তঃ ॥ ২ ॥
নিকিঞ্নতা ধীরতা সক্ট্রতা সীদতঃ। ব্যতীয়ুর্ফিচ্ছারিংশদহাতাপিবতঃ কিলে ॥ ৩ ॥
হাতপায়দসংঘাবং তোয়ং প্রাতরুপন্থিতং। কুছু প্রাপ্তক্টুস্বদ্য কুতৃভ্তাং জাত্তবেপথাঃ ॥
তাতিথিব্রাহ্মণঃ কালে ভোক্তু কামতা চাগমৎ। তেতা সংব্যভক্ত দোহনমাদৃত্য আছ্যাস্থিতঃ ॥
হরিং সর্বত্রে সংপশ্যন্ স ভুক্ত্বা প্রথমো ছিজঃ ॥ ৪ ॥

অথাতো ভোক্ষামাণস্থ বিভক্তক মহীপতে:। বিভক্তং ব্যক্তজন্ত বৈ ব্যলায় হরিং সারন্। ৫।

वीधवयामी।

বিষ্টিবস্ত বিষ্ঠো গগণাদিব উদানং বিনৈব দৈবাছপস্থিতং বিস্তং ভোগাং যক্ত যথা বিষ্টায়ং প্রাপ্নুব্টিতং যক্ত তদেবাছ বুভুক্তোছপি সতো লব্ধং লবং লবতঃ । ২ ।

তুৎ প্রপঞ্চয়তি ন কিঞ্চনস্যেত্যাদি সাহৈছিঃ পঞ্চদশভিঃ অপিবতো অলপানমকুর্বতঃ ॥ ৩ ॥
সূতাদিত্ররাণাণ ঘদৈকাং তোমঞ্চ ॥ ৪ ॥
অধান্তোব্যবােহতিথিরাগমং । বিভক্তস্য কুটুমার্থ মরাদিকং বিভক্তবৃতঃ ॥ ৫ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ।

স্বতেতি সাহ্দিকং। তদনতারং স্বতাদিকমুপস্থিতং ভোক্তৃকামস্য ॥ ১।২।৩।৪॥ অরং পুর্বোক্তং স্ভাদিকমেব॥

পূর্বং হরিং সর্কাত্র সম্পশ্চরিত্যক্তং অধুনাচ ওস্য তাং করণা বাচমিত্যচাতে। তত্র সর্কাত্রিব হরিমন্ত হামিতয়া সংপশারিতি চেৎ জীবদ্টাভাবেন করণেরং তের বিক্ষাতে তথাতং সর্কাত্র পরম কারণিক তহৈর সংপশাং শুভাবেন স্পৃত্যানাঃ করণা বত ইতি লভাতে। অতএব একা শিবাভাাং তাল্শ খণ ভকাভাাং সহ তথাবির্ভাবানতরং ভত্তক্তিরের ফলিভা বক্ষাতে। বাহ্ণণেৰে ভগবতি ভক্তা চক্তে মনঃ পরমিতি। কেবল জীব কারণাং থলুবিয়ায় ভবতি ভরভবং। তথারকাম্য ইত্যাদিনা যো মোকানাদরঃ সোপি তৎ কারণা বিভাবন্য ভক্তিকা। এবেতি নাযুক্তঃ স্যাদিতি ক্তেয়ঃ ॥ ৫॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮

अविश्वनाथहळ्वछी ।

বিয়তো গগণাদিব উদামং বিনা দৈবাত্পস্থিতমেব বিত্ত ভোগাং যক্ত ভ্ৰাপি লব্ধং দদতঃ বৃভ্কমাণভাপি ॥ ২ । ৩ । ৪ । বিভক্ত বিভক্তবতো মহীপতেরজোহতিথিরাগতঃ। ডভক কুটুখাণার্থং বিভক্তমেবারং ভলৈ বাজজাৎ বিভক্তা দ্বৌ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥

হে রাজন্! রক্তিদেবের মহিমা ইহলোকে ও পরলোকে সর্বাদা গীত হইয়া থাকে। তাঁহার বিত্ত নিরস্তর ব্যয়ে নিযুক্ত ছিল,তিনি স্বয়ং বুভূক্ষিত থাকিয়াও যেমন লব্ধ হইত তৎক্ষণাৎ দান করিতেন ॥২ ঐ নরপত্তি সমুদায় দান করিয়া নিকিঞ্চন হইয়া সপরিবারে ক্ষুধায় অবসম হইতেন। জলমাত্রও পান না করিয়া তাঁহার আটচন্ত্রিশ দিবস অভীত হইত ॥ ৩ ॥

পরিবার সকল আহার বিরহে কুচ্ছু প্রাপ্ত হইয়া গ্রহিয়াছে, আপনি কুধা ও পিপাদার কম্পাবিত হইতেছেন, এমত সময়ে স্থত পায়দ সংযাব এবং কল উপন্থিত হওয়াতে প্রাতঃকালে ভোজন করিতে যান্, ইত্যবসরে এক জন আক্ষণ অতিথি আদিয়া উপন্থিত হইলেন, প্রদ্ধাবিত হইয়া সর্বত্ত হরিকে নিরীক্ষণ করত আদর পূর্ববিতাহেকে দেই সকল দ্রুব্য বিভাগ করিয়া দিলেন। সেই আক্ষণ ভোজনাত্তে চলিয়া গেলেন। ৪ ॥

তদনন্তর দেই বিভাগাবশিষ্ঠ অমাদি স্থীয় পরিবারদিগকে ভাগ করিয়া দিয়া স্বয়ং ভক্ষণ করিছে যাইবেন, সে সময়েও একজন শৃদ্ধ অতিথি বলিয়া আসিল, রন্তিদেব ভগবান্ হরিকে স্মরণ করিয়া সেই বিভক্ত অবশিষ্ট দ্রব্য তাহাকেও ভাগ করিয়া দিলেম ॥ ৫ ॥

যাতে শৃদ্রে তমভ্যাগাদতিথি: শভিরার্তঃ। রাজন্ম দীয়তামনং সগণায় বুভুক্তে ॥

দ আদৃত্যাথশিক্টং যৰত্মানপুরস্কৃতং। তচ্চ দর্৷ নমশ্চক্রে শভ্যঃ পপতয়ে বিভূঃ ॥ ৬ ॥
পানীয়মাত্র্যুচ্ছেষং তচৈচ কপরিতর্পাং। পাস্ততঃ পুকশোষ্ট্যাগাদপো দেহস্ভায় মে ॥
তক্ত তাং করুণাং বাচং নিশম্য বিপুল্জামং। রুপয়া ভ্শমন্তপ্ত ইদমাহাম্তং বচঃ ॥ ৭ ॥
ন কাময়েহহং গতিমীখরাং পরামইজি যুক্তামপুনর্ভবং বা।
আর্ত্তিং প্রপদ্যেহথিলদেহভাজামস্তঃস্থিতো যেন ভবস্তাত্রংপাঃ ॥ ৮ ॥
কুত্তি শ্রমোগাত্র পরিভ্রমশ্চ দৈন্তং রুমঃ শোকবিষাদমোহাঃ।

ঐাধরসামী

সগণার অষ্থ সহিভার ॥ ৬॥ উচ্ছেষং উর্করিতং। একমের পরিতর্পরতীতি তথা ॥ ৭ ॥

পরহংশাসহিষ্ণুভয়। সর্বেষাং হংখং অয়ং ভোকে ুমাশাতে নেতি। অণিমান্তি সমৃদ্ধি যুকাং গতিমণি ম্যোক্ষাণি-বাহং ন কাসয়ে। তহি কিং কাসয়সে তদাহ অধিল দেহভাজামার্তিং হংখং তত্তেকে, দ্বংপণাতঃ হিচঃ সন্ অহং আপেদ্যে আপু্যামি-ভোবং কাময়ে। যেন তদ্বংখভোক্য ময়া হেতৃভূতেন তে সংক্ষ্ত্রণা ভবতি ৪৮॥

নত্তঃ গং কিমিতি প্রার্থয়সে পরতঃ ধ নির্ভৈত্তাব মম সর্পাতঃ ধ নির্তিরিত্যাহ কুতৃড়িতি। কুপণত অতো জিলীবিলো কীবন

ক্রমগন্দর্জঃ

নিস্গ্ৰিককণ ইতি চ নিস্গেণি ঞীভগবং করণ ক্রিময় অভাবেন করণ: ॥ ৯ ॥

श्रीविधनागठकवर्ती ।

উচ্ছেবমুর্মবিতং একমেব ভৃথী করে।তি নতু বাবিতি স্বার্থং বিভাগানর্মতি ভাব: #

অমৃতং ৰচ ইতি তম্ম বচোহপি যেন স্থান্ধং কণ্ডিয়াং পীয়তে পোপি ন খ্রিয়তে তেন দেহেনৈর সিদ্ধাতি কিং পুনস্তংকর । তিঠাস্থিতি ভাবং ॥ १ ॥

অন্তঃ স্থিতঃ সন্ আর্তিং প্রপক্ষে তৈর্ভোক্তবাং হংগমহমেৰ ভূঞের সর্কা জীবানামপি সমুদিতং হুংগমহমেক এব ভোকু মল বিন্ তং অহংগং সহং পরহংগ দর্শন স্থসক্মিতি ভাবং ॥৮॥

নিষ্ঠিতি পিপাসার্কোছিদি কিঞ্চিদৰশিষ্টঃ অবং অয়ঞ্চ পিৰেভাত আছে কুতৃড়িভি। ক্লপণতাত অঞ্চে ভীবন হেতোর্ফলভার্পনাং

ভোজনান্তে শ্দ্র অতিথি বিদায় ইইয়া গেলে বহুতর কুরুরে পরিরত আর এক ব্যক্তি অতিথি বলিয়া আদিল এবং কহিল রাজন্! আমি এই কুরুর যুথ সহিত অতিশয় বুভূক্ষিত ইইয়াছি, এই মূল সহিত আমাকে আহার প্রদান করন। রাজা ঐ ব্যক্তিরও বহু সম্মান করিলেন এবং স্মাদর পূর্বক সেই অবশিষ্ট অন্ন সেই সকল কুরুর ও সেই কুরুরপতিকে প্রদান করিয়া নসস্কার করিলেন ॥ ৬॥

ভাহার পর দকল দিয়া এক জনের তৃত্তি হয় এমত একটুকু জল মাত্র উর্বেরিত হওয়াতে তাহাই পান করিবার উদ্যোগ করেন ইভাবদরে এক জন পুক্ণ (চণ্ডাল বিশেষ) আদিল এবং দকরুণ বচনে কহিল নহারাজ। আমি অতিপ্রান্ত হইয়াছি,এই অশুভ ব্যক্তিকে কিঞিৎ জল দিতে আজ্ঞা হউক,দেই ব্যক্তির ঐ রূপ করুণ বচন এবং বিপুল শুনের বিবরণ শ্রেবণ করিয়া রিশ্বদেব নরপতির অভিশয় দরা হইল, ছুঃখিত হইয়া অমৃতময় বাক্য প্রয়োগ করত বলিলেন ॥ ৭ য়

আমি পরমেশরের সমিধানে অণিমাদি অফীদিদ্ধি সমস্বিত গতি অথবা মৃত্তি কামনা করি না, আমার প্রার্থনা এই আমি যেন ভোক্তৃত্ব রূপে অন্তঃস্থিত হইয়া সমস্ত দেহির হুঃথ প্রাপ্ত হই, যাহাতে আমা হুইতে সকল দেহির হুঃখ দুরীভূত হয়। ৮।

बहै मीन क्षीवन धार्तनार्थ वामना कबिएउएह, हेहाँदे कीवनार्थ कलार्थन क्रिटलहे स्थामात्र ग्रूधा, एका,

সর্বে নির্ত্তা: কুপণস্থ কন্তে। জিজীবিবোজীবিজ্ঞাপণামে ॥

এবং প্রভাষ্য পানীয়ং গ্রিয়মাণঃ পিপাদয়া। পুরুশায়াদদাজীরো নিদর্গকরুণোনৃপঃ ॥ ৯ ॥

তস্ত গ্রিভুবনাধীশাঃ ফলদাঃ ফলমিছতাং। আত্মানং দর্শয়াঞ্চকুর্রায়া বিষ্ণুবিনির্মিতাঃ ॥ ১০ ॥

দ বৈ তেভ্যো নমস্কৃত্য নিঃসঙ্গোবিগভস্পৃছঃ। বাহ্নদেবে ভগবতি ভক্ত্যা চক্রে মনঃ পরং ॥১১॥

ঈশ্রালম্বনং চিতং ক্বিভোহনন্তরাধদঃ। মায়া শুণয়য়ী রাজন্ স্থাবং প্রভালীয়ত ॥

তৎ প্রস্লামুভাবেন রন্তিদেবামুষ্টিনঃ। অভবন্ যোগিনঃ সর্বে নারায়ণপ্রায়ণাঃ ॥ ১২ ॥

अध्वयामी।

হেতো র্জনভার্পনামে সর্কে কুত্ডানয়ে। নিবৃত্তা এবেভাবং প্রভাব্য । ৯ ।

বিভূবনাধীশা ব্যালয়ো মারাজনীয় ধৈবঁঃ পরীক্ষার্থ: প্রথমং মায়বা ব্যবাদি রংগণ প্রতীতাঃ সম্ভ ইত্যর্থ: ॥ ১০ ॥ পর্চ কেবলঃ বাস্থদেৰে মনশ্চক্রে। নিভূ ভান্ কিমপি যাচিতবান্ ॥ ১১ ॥ অন্প্রাধ্যঃ ঈশ্বাভিবিক্ত ফলাস্ভবানণেক্ত প্রভানীয়ত আত্মদোব লীনা বভূব ॥ ১২ ॥

ক্ৰমসন্দৰ্ভ:

যত এব তাসোভি ৰতঃ সামান্যতঃ ফলমিজ্তাং ফলদাঃ যত এবাত্ম প্রভ্তরো বিফ্নাম ভগবতা ত্বামের মায়া মান্নিক ব্ব-লাদি রূপেন নির্মিতা প্রতায়িতা ইতার্থঃ। অত তে পুনরাত্মানং যথার্থ রূপং দর্শরাঞ্জকুঃ। স বৈ স তুনিঃসকঃ। তদ্পনিং বিনা ফলাত্তর ভোগ রহিতঃ তত্ম বিগত স্পৃহক্ত ভবতি তভ্তকেবুচ সম পুজাত্ম দৃষ্ট্যা নমস্কারমবিশেষেবৈর চক্রে। তথাপি পরং শ্রেষ্ঠং ব্রাস্থান্তথা বাস্থান্যে ভগবতি মনক্রে তত্ম হেতুঃ। ভজাগ তামোরপি তত্ম সংগ্রহাতিক দৃষ্ট্রেতার্থঃ। ১০।১১॥

অন্সরাধন ইতি। আর্ত্তিং প্রপদ্যেহবিল দেহ ভাজানিতিচ মিপঃ পূর্ববৃত্তিগ্র সংগছতে। প্রত্যণীয়ত ভতেঁহস্তহিত্বতী অতের্থং যুহ প্রতীয়েতেতি ন্যায়েন ঃ

তাদৃশীং ভগৰম্ভক্তিং কৈমৃত্যেন প্রশংসতি তৎ প্রসঙ্গেতি । ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬॥

জীবিশ্বনাপচক্রবভী ।

কুতৃড়াদয়ো নিবৃত্তাএব। ১॥

বিভ্বনাধীশা বিফু এক কলাঃ ভক্ত ধৈৰ্য্য পরীক্ষাৰ্থং প্রথমং মায়াঃ একিন বুৰল খণভীন্ ভত আঁখানং স্বস্থাপ । ১০ । মনঃ পরং শ্রেষ্ঠং ভগৰজনে গুণাদিধ্যায়িবাৎ ॥ ১১ ।

তদেবাহ ঈশবেতি। অনস্তরাধন: অস্তদেবাদ্যারাধন শ্রাত অপ্রবং অপ্রোধণা অভএব লীরতে ভবৈবেত্যর্থ:॥ ১২ ॥

প্রান্তি, গাত্রঘূর্ণি, কাতর্য্য, ক্লান্তি,খেদ,বিষাদ ও মোহ সমুদায় নির্ত্ত হইবে। এই প্রকার কহিয়া স্বভাবতঃ দয়ালু মহারাজ রন্তিদেব স্বয়ং পিপাসায় ত্রিয়মাণ হইয়াও সেই পুরুশকে আপনার পানীয় প্রদান করিয়াছিলেন। ১॥

হে রাজন । ত্রিভুবনাধীশ যে সকল ত্রক্ষাদি দেব ফলাকাজ্যি পুরুষদিগকে ফল দান করিয়া থাকেন, ভাঁহারা মহারাজ রন্তিদেবের ধৈষ্য পরীক্ষার্থ বিষ্ণু নির্মিত মায়া হইরা স্ব স্থ আত্ম দর্শন করান্॥ ১০॥

কিন্তু মহারাজ রন্তিদেব দেই দকলের প্রতি নমস্কার পূর্বক নিঃদঙ্গ ও নিঃস্পৃহ হইয়া কেবল ভগ-বান্ বাহ্নদেবে চিত্ত অর্পণ করিয়াছিলেন, ঐ দকল ব্যক্তির নিকট কিছুই চাহেন নাই ॥ >> ॥

. রাজন্। রস্তিদেব নরপতি ঈশ্বরাতিরিক্ত ফলাস্তরানপেক্ষ হইয়া আপনার চিত্তকে ঈশ্বরাবলন্ধি করাতে তাঁহার নিক্ট গুণময়ী মায়া স্থপবৎ হইয়া আত্মাতেই বিলীন হইয়াছিল তাঁহার অনুগানী জন-গণ তদীয় সংসর্গ প্রভাবে স্কলেই নারায়ণ পর ঘোগী হইয়াছিলেন। ১২॥ গর্মা ভিনন্ত তোগার্গ্য: ক্ষত্রাৰু ক্ষা হ্যবর্ত । ১০॥
ছবিতক্ষয়ে শিন্দাবীর্যান্তক্র ত্রেয়ারুশি: কবিঃ। পুদ্ধাক্ষণিরিভাত্রে যে ব্রক্ষণেগতিং গতাং ॥ ১৪॥
ইংংক্ষত্রেগা পুল্লোংভূদ্ধন্তী যদ্ধন্তিনাপুরং। অজমীঢ়ে। বিমীকৃশ্চ পুরুমীতৃশ্চ হন্তিনং ॥ ১৫॥
অজমীতৃদ্য বংক্যাঃ স্থাঃ প্রিয়োমেধাদয়ো বিজাঃ। অজমীতৃাবৃহদির্ ন্তক্র পুল্রোরহন্ধনুঃ॥
ইহংকায় স্তন্তক্রত পুল্র ক্ষাদীক্ষয়দ্রধাং। তংক্তো বিষদন্তক্র ক্ষেনজিহ দমকায়ত॥
রুহিকায়ে ন্তন্ত্রুঃ কাক্ষোবংদশ্চতং স্কৃত্যাঃ। ক্ষচিরাখন্তঃ পারঃ পৃথুদেন ন্তদান্ধান্তঃ ॥ ১৬॥
পারক্র তনয়োনীপন্তক্র পুল্রশতং বৃদ্ধ। স ক্রয়াঃ শুক্কক্যায়াঃ ব্রক্ষদন্তমজীক্ষনং ॥ ১৭ ॥

बिधदशामी

মহা স্তত্ত নরত বংশম্কু। তৎস্ততৈত্ব গর্মত বংশমাহ গর্গাদিতি ॥ ১৩ ॥

মহাবীৰ্যাত বংশনাহ মহাবীৰ্যাৎ জ্বিতক্ষঃ ভক্ত অয়াকণি: কবি: পুষ্করাকণিশেতি অয়: পূজা: কথং ভূতা বেছত ক্ষত্রংশে ব্যাক্ষণ গতিং ব্যাক্ষণক্ষণতাং গভাকে ৪ ১৪ ৪

মস্যপ্তাণাং পঞ্চানাং লোঠত বংশমাহ বৃহৎক্ষতদ্যেতি। যৎ যেন হতিনাপুরং ক্তমিভার্থ:। অলমীঢ়াদ্যত্তয়েহস্তিন: পূতা:॥১৫॥

जनभी हारन वानाः शृखात्र नित् नीमा खबर ॥ ১७ ॥

পারসা তনবোনীপ স্তম্পুত্রশতং সএব কৃষী সংজ্ঞায়াং শুক্কস্তায়াং ব্রহ্মদতং জনয়ামাস। তত্তং হরিবংশাদিরু। প্রাশ্র

manus:

নীপস্যৈৰ বহুকাল ৰাবধানেন বৃঢ়োয়াং শুক্কন্যায়াং বংশাশ্বরমাহ। সঞ্জামিতি। শুক্কন্যায়া মিতাত নতুম্ম ক্ষাায়া যিত্যুক্তমিতি স্মাণনোসে শুক্ইতি ৰোধ্যতি। তচ্চ্যুক্তং। ব্ৰহ্মবৈৰ্ভ্যণিত স্থয়ং প্ৰভিগ্ৰন্মহাল্পত্য পাত্ৰভাৱ

विविधनायहळ्यकी।

নরঞ বংশমুজ্বা ওজুাতৃণাং গর্গাদীনাং বংশমাহ গর্গাদিতি । ১০। ১৪। ১৫। ১৬ ঃ

স এব নীপঃ প্নরপি কথা সংজ্ঞারাং শুককভারাং শুকোহরং ব্যাসাদরণাং সংভ্ভোহন্য এব তত্ত্তং হরিবংশাদির পরাশর কুলোৎপরঃ শুকোনাম মহাযশাঃ। ব্যাসাদরণাং সংভূতো বিধ্মোহরিরিব জ্ঞান্। স তভাং পিতৃকনাারাং বীরিণাং জনরি-যাতি। কৃষ্ণং গৌবং প্রভুং শস্তুং তথা ভূরিশ্রতং জরং। কভাং কীর্ত্তিমতীং বটাং বোগিনীং যোগমাতরং। একাদরভ জননীং

হে কুরুবর্যা। মহ্যুতনয় নরের বংশ কথিত হইল, অতঃপর গর্গবংশ আবেণ কর। গর্গ হইতে শিনি উৎপন্ন হয়েন। তাঁহার পুত্র গার্গা। ক্ষত্রিয় হইতে আক্ষণের উৎপত্তি হয়॥ ১০॥

সে যাহা হউক, অনন্তর মহাবীর্য্যের বংশ বিবরণ শুন। মহাবীর্য্য হইতে ছুরিভক্ষয় উৎপন্ন হয়। ভাঁছারা তিন জনে ক্ষত্রিয় বংশে জ্মায়াও আক্ষণত্ব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন ॥ ১৪ ॥

অতঃপর পঞ্চ মন্যুপুত্রের মধ্যে জ্যেষ্ঠের বংশ তাবণ কর। রহৎক্ষত্ত্বের পুত্র হন্তী, যিনি হন্তিনাপুর নির্মাণ করেন। ঐ হন্তির তিন পুত্র অজমীত, দ্বিমীত, এবং পুরুমীত ॥ ১৫ ॥

তশ্বধ্যে অজনীতের বংশে প্রিয়মেধাদি বিজগণ উৎপদ হয়েন। আর ঐ অজনীত হইতে রহদিয়্নামে আহা এক পুত্রও জাদ্মে,তাহার পুত্র রহজমু। রহজমুর সন্তান রহৎকায়,তাহার তনয় জয়য়েও। জয়য়েথের পুত্র বিষদ, তাহার সন্তান তেনজিৎ, সোনজিতের পুত্র ক্লচিরাখ, দৃত্হমু, কাশ্য এবং বংদ। তশ্বধ্যে রুচিরাখের সন্তান পার, ভাহার পুত্র পৃথ্যেন ॥ ১৬॥

হে রাজন্। পারের তনয় নীপ, তাহার শত পুত্র হয়, আর তিনিই শুককভা কৃষীর পর্ত্তে জ্ঞান দতকে উৎপন্ন করিয়াছিলেন ॥ ১৭॥

अधवनामी।

কুলোৎপন্ন: শুকোনাম মহাযপা:। বাাধাণরণাাং সংভৃতো বিধ্মোহগিরিব জ্বন্। স ভ্রন্থাং পিতৃক্রায়াশ্রীরিশাং জনরিষাতি। কৃষ্ণং গৌরং প্রভৃং শস্তু তথা ভ্রিপ্রাহ জ্বাং। কৃষ্ণং জীতিমতীং ষ্ঠীং ঘোগিনীং (্যাগ্যাতরং। একাণভ্রন্থ জননীং মহিষী মন্হস্তচেতি। যাবাপি শুক উৎপট্রোব বিম্কু সঙ্গো নির্গত অ্থাপি বিরহাজুরং বাাসমন্যাত্তং দৃষ্ট্য ছায়াওকং নির্দায় গতবান্। তদভিপ্রায়েবিবায়ং গাহ বিধান ব্যবহার ইতাবিরোধঃ ॥ ১৭ ॥

ক্রেস্কর্ড:।

ত এব পুঞ্রাত্বরবাক্তি পর অধাণা দ্রেখেন তব্সরাত্ব সম্ভণার্টার শীলাগ্রত বক্তা বং সম্ভন্তি নানাস্য। করভেদ বাবস্থয়া ভারতাদি বর্ণিত্সাার্ণিসন্তব্সা কিমৃত ছামাওক করিত্সোতি। অঅ এক্ষবৈবর্তেতিহাসোরং কিকিৎ কিঞিৎ প্রোদ্মিতে। প্রাপ্তে কলিযুগে ব্যাস-চক্রে যো জগতঃ কতে। মহাভারতমাধ্যানং স্প্রবেদার্থদংগ্রহণিত্যাদি। ত্থা এক্ষচ্যাপরিভ্রতশ লাত বাকা। দ্রপতিতে । স্বরং পিতৃথবালানং বিগবৎ বোঢ় নক্ষম: । বিচিন্তা মনসা চত্তে ভার্যাং জাবালিকনাকাং। বীটিকাথাাং দদে তলৈ সোহপি বৈধানসাত্রমী। চক্রে তমা সহ তপ ঋতুগামী তদেজ্বলা। অধ গর্ডো ভবত্তপাত্রসাং স বসুধে শুটনঃ। কুলাভিঃ শুকুণকে বৈ হিম্মাভিবিব দ্বিজ। দ্বাদাবানি আভানি ন্পাস্তেম সাত্রা। কুঞ্বৈপারন্পোতেং বেদ বেলার্থ সংগ্রহং । পুরাণং ভারতং ধর্মশাল্রং যদশুণোহিজ। তৎসর্কং পাজ্ঞরা গর্ত্তকে জ্লি পণাঠচ। গর্তুগংস্থোশি কুক্তে ন তু নিজ্ঞানে মতিং। সাচ গর্ভভরাক্রান্তেতাাদি। অথ বাদশ্যে বর্ষে ক্লফুরৈপারনো মুনিঃ । উপবিশ্র কৃত মানো গর্জনামন্তা সামভিঃ। সংখাধয়ামাস তদা বচোভি মু জিক ভাবিতৈঃ। বাাস্ট্রবাচ। যভং মদীর গৃহিণী মধুনাতি কাল-মাবিশা, পীড়েষ্সি গ্রন্থ বিপার্থং। তথু হি নিজ্ঞ নিস নাম কৃথং নুমুড় কিং মার্থিয়াসি বিজ্ঞাকর স্থমে ছাং। গ্রন্থ উবাচ। রকোহমত্মি হারণকেত্যাদি। ভাত্তোহং তেরু মর্কেরু কোহং ত্বাঞ্চ এবীমি কিং। সাম্প্রতং মার্ঘো ভূছা ফঠরেংস্যা অবস্থিত:। खबान न कतिवामि गर्डाधिकमा: विद:। नायान: (वहेमियामि नीनिटिखास्यमामरप्रडामि। वान खेवाट। यरहार मखालिमक: তব তহি নিলা। রিক্রমা তুলা নরকাদিহ গর্ভবাসাং। স্মাক্র্যাশ্রম মহোদর হেত্মেকং শ্রীপ্রাণনাথ মুভরোঃ কুরু বা বিবেকং। প্রভিত্রাচ। অরানং বিবেক ভব্যন্তিত তাব্দেৰ বৈর্গোম্ফুভব সংখ্রণ্ড তাব্ৎ। যাব্য নিজুম্বি জন্ধরিতো নিব্দো দেব্দা চিত্ত নিশ্যস্য ন মায়থা স্থাদিত্যাদি। ব্যাস্ উব্চে। মায়। ভবিষ্যতি ন তে পুরুষোক্ষস্য বক্তুং প্রদর্শর নিজং মম বংগ শীজ মিভাগলি। পর্ভ উবাচ। যদে।তামে সভবিতা প্রতিভ জুর্মিরারির্মালা প্রছাণ বিষয়ে যতুবংশনাথা। গর্ভা বিহাম তদহং বহিরল। ভাৱী নৈৰানাথা কথমণীতি বিনিশ্চবোৰে ইত্যাদি। তৃত উবাচ। ইখা তদীয় বচনা বিজ গুঞ্চবান্ ৰ বাবে। ইভি ছাপিত্যনা প্রথমে ভদানীং। নারায়ণং ব্যবসিতো ভূদি তস্য হেতো রানেত মীবদনিবৃত্তমতি ভ্রাক্ষে:। ভত্ত ত্রিলোকস্থিতেন ক্তত প্রণাস: ক্রেম বিশ্ব হুজ্লা বিল দৈবতেন। প্রাপ্তাহণো নিধিল মাল্ল জ্লিক মইল ব্যাসো নাবেদরদ্সাবণি তৎ প্রাপেদে। কর্মবামেতদিহ নাম কিমুল্লীয়ং গেহং প্রিম্নিতু মদা ত্রাগত্ত । তীর্থত জলম গৃতিং দ্বতোত্তরপ্রকং

क्षीविचना वह का व ही ।

মহিৰী মহৃহত্যচ ইতি শ্রীভাগৰত ৰক্ষা শুকল্প বাাসন্ত প্রথমঃ পুল্রোহরণিসংভ্তাদনাঃ বত্তাং ব্রন্ধনৈৰক্ষে। প্রাথে কলিব্রে বাাস দচক্রে যো লগভঃ ক্ষতে। মহাভাগৰতমিত্যাদানন্তর ব্রন্ধা পরিলংশে মাতৃৰাক্যাদ্পন্থিতে। শ্বং পিতৃশ্বণালানং দিপবং গোঢ়ু-মক্ষমঃ। বিচিন্তা মনসা চক্রে ভার্যাং লাবালিকন্যকাং। বীটিকাধাাং দদৌ তলৈ বেগি বৈধানসাশ্রমী। তভদ্দ বাাস স্থয়াসহ বহুকালং তপল্পেপে ভদন্তে তসাং বীর্যানধন্ত। সাচ গর্ত্তবিত্তী একাদশস্থ বর্ষের্ বাতীতেশ্বনি ন প্রস্তুত্তম। অথ দাদশে বর্ষে ব্যাসং ক্ষাচিলার্ত্তমং পুল্রমাহ ভোঃ পুল্র কিং শ্বমাভরং পীড়বদি গর্ত্তা বিঃস্বেতি। সচাহ গর্ত্তাবিঃস্কৃতং মায়ু স্বামাভিতবিবাতি তথাপত্তিব ভগৰতাং ধ্যাপায়ানিত। ব্যাস আহ। মায়া ন ভামভিতবিবাতীতি মহচনমের প্রামাণীকতা গর্ত্তাবিঃসুস্কৃত্ত পর্যাসং প্রামাভিতবিবাতি বিং ক্ষা পীড়ারেতি। স আহ পদ্মী পুলালাসক্তবেন ভামিনি মায়াভিত্ত জ্বানায়ত ভ্রেচনং ন প্রমাণীক্রেমানী ব্যাসং প্রায়াস আহ। তহি তিমতৈবানায়ানীত্তাত্ত্বা ভারকাং গর্মা নিবেদিত সর্ব্ধ বৃত্তাত্তং ভগরতাং প্রপ্রালাভিত্ত কর্মানীর ব্যাসং পুনরাহ ভোঃ পুল্ল আরাতেচ্ছবং ভগরানিতি ভতঃ স আহ। সং ক্রহি মাধ্ব অগৎ নিপ্রত্তাবান বির্যাসন্থ স্বনীয়া। বিশ্বাতি স্থাংন ব্যাস্থা বিহায় বিহায় বিহায় সিংগ্রেতি বহিঃ প্রতিভ্রম্ব মানেতি

ষোগী দ গৰি ভার্যারাং বিষক্দেননধাৎ হস্তং। কৈগীবব্যোগিদেশেন যোগতন্ত্রং চকারহ। ১৮॥ উদক্দেনস্তভন্তস্থান্তল্লাটো বার্হদীষ্বা: ॥ ১৯॥ যবীনরো দ্বিনীঢ়ক্ত কৃতিমাংস্তংহতঃ স্থৃতঃ। মালা সভ্যমৃতি শুক্ত দৃঢ়নেমিঃ শ্রপার্শক্রং॥ ২০॥

विषद्रश्रामी ।

দচ ব্ৰহ্মদতো যোগী গৰি ৰাচি সরস্থতাং । সঞ্ব গোগতভং চকার । ১৮ চ বাহদীৰবাং বৃহদিৰোৰ্কংশ্যা ইমে দীৰ্ঘন্তবাৰ্কং । ১৯ ॥ অপাৰ্শন্ত স্থাৰ্শন্ত পিতা । ২০ ॥

ক্রম্পলার্ড:

বাল শোধন পটোরিতি চাহ বাচং। নারায়ণাপতিতি ভাজনমেব মেব ভ্যা বাবী বিজ্ञবঃ সহ কৃষ্যুক্তঃ। প্রাহ প্রশা প্নরেব স কালিশীকঃ কিঞ্চিৎ পরাস্ভববিষ্ঠিত গর্ভলয়ী। বাসে উবাচ। অরমন্তাগেরো গর্ভারবত্যা গদাবরঃ। গৃহীকৈবং প্রতিভ্রং নিজ্ঞার ক্র প্রক। গর্ভ উবাচ। তং ক্রহি মাধব জ্বারিগড়োপমেয়ঃ মারাখিলসা ন বিলক্তাতমা অদীবা। বয়াতি মাং ন বদি গর্জ মিমং বিহার বাজামি সংপ্রতি বহিং প্রতিভ্রমান । আরক্ষ বিশ্বমধিলা তব মারবৈর বহুং আইব ভব তংগ হুরজ্মের। ইত্যাদি। স্ত উবাচ। ইথং ভলীম শুরুসা ভগবান্ প্রত্তীতঃ প্রাহ প্রহুল শনকরিতি বাচমীলঃ। মন্মাররা ল ভবিতা তব সংপ্রহোগো বোগারুতাল ক্র নিজ্মণং বিলকঃ। গর্ভারি মোক্ষ মধুনৈর মম প্রশালজীবর্রাপ্যানি মহোলয় গৌধানল। বং তং বদন্তি মুনরো বহু তুংব বোগ বুদ্ধের্কিরোগমবিরোগ করং ময়া ঘৎ। বাক্যাবসান মন্থবিশা ভতন্ত গর্ভান্তস্যা ঝটিভাগ বিনির্গত প্রব বোগী। স বাদ্যান্তমিত বেব বয়াং প্রশ্য বাসেং হরিং অজননাম্প সংপ্রতত্ত্ব। ততন্ত পিতাপ্রস্বাদানত্তরং প্রভ্রমান্তমান বাস দ্বীম তনমঃ তর হুমনোজ্যং ক্রতে বচো ভবতু তচ্ছুক এব নামা। হর্মোব বংভাতি তথাপি ন মার্মায়ং প্রতীয়েতো মন কৃপা ক্রদি মান্ত পোকং। বামোগৃহং বর্মপি প্রকৃষ্ণ বাক্যং বং আময়ং পরম ভাগবভোত্যাতা ইতি। ইথং জগত্রর গুরুং পুরুষোভ্রমান্তম গুরু স্বান্তম তাং বং বামান্ত তারত কবিং বিলব্রামুক্ত ভাং যারকাং অ্রপ্রীং ক্রতমাজগামেতি ১১৭ ১২। ১৯। ২০ ৪

श्रीविधनावहक्कवर्ती।

ভগৰালাহ মন্মারয়া ন ভৰিতা তব সংপ্রবোগো গড়াসি মোক মধুনৈব সম প্রসাদাদিতি। ততে। গর্ডারিংক্তা প্রাণমা বহু ভবানত দে তং দৃহ্বী ভগৰালাহ। বাাস ঘদীর তনরং তক্বনানাজং ত্রতে বচোতবতু তচ্চুক এব নামেতি। বাাস মামদ্রা রথমাকৃত্ব দারকাং প্রতিত্ব তকোশি প্রক্রাল বাাসভ্যম্ভলগানেতি। প্রীধামিচরপাল্প অরণীসংভূতঃ তকএব বিরহাত্বং শিতর মহ্বল্ল মালকা ছারাতক সৈতি গাহজি ব্যবহার ইত্যাহঃ। স্বক্ষণতোগবি সর্বতাং ৮১৭ এ

ज्ञायत (वाश्वतः क्रकात हैत्य बाह मियवा बृहिम्दवार्खः ना। मोर्थव यार्बः ॥ ১৮ ॥

खुनार्वहर सुनार्ववनकः । ३३ । २० । २১ ॥

সেই অক্ষণত যোগী, তিনি আপনার সরস্বতী নাম্নী ভার্যার গর্ত্তে বিষক্ষেন নামে এক সন্তান উৎপাদন করেন। যিনি কৈগীবব্যের উপদেশে যোগশাস্ত্র প্রণয়ন করিয়াছিলেন ॥ ১৮॥

ঐ বিশ্বকৃষ্ণেন হইতে উদক্দেনের জন্ম হয়। তাহা হইতে ভলাট উৎপদ হইয়াছিলেন, হে কুর-প্রবীন্ন পরীক্ষিৎ। এই সকল রাজা'বৃহদিয়ুর বংশোদ্ভব । ১৯ ॥

ষিমীঢ়ের পুদ্ধ ঘরীনর, তাহার তনয় কৃতিমান, কৃতিমানের সন্তান, সন্তাধৃতি, সত্যধৃতির পুদ্ মুচুনেমি, তাহার সন্তান হুপার্য ॥ ২০ ॥ ত্পার্থাৎ ত্মতিক্তত পুত্র: সমতিমাং শুত:। কৃতী হিরণ্যনাভালের যোগং প্রাপ্য কর্মে সংহিতা প্রাচ্যদালাং বৈ নাপোছ্ গ্রায়্ধকত:। তত্ত ক্ষেদ্য: ত্বীরোহণ ত্বীরদ্য রিপুঞ্জ:॥
তত্তো বহুরথোনাম পুরুষীঢ়োহপ্রজোহভবৎ ॥ ২১॥

নলিন্যামন্ত্ৰমীতৃত্ব নীলঃ শান্তিপ্ত তৎহৃতঃ। শান্তেঃ হৃশান্তিত্তৎপুত্ৰঃ পুক্তকোহৃত্বত ॥২২ ভর্ম্যাশ্বনয়ন্ত্ৰত পঞ্চাদন্ মূল্যালাদয়ঃ। যবীনরো রহবিশ্বঃ কাম্পিলঃ সঞ্জয়ঃ হৃতাঃ ॥
ভর্ম্যাশঃ প্রাহ পুত্রা মে পঞ্চানাং রক্ষণায় হি। বিষয়াণামলমিমে ইতি পঞ্চালসংজ্ঞিতাঃ ॥
মূল্যালাৰ ক্ষ নির্বতঃ গোত্রং মৌদ্যল্যসংজ্ঞিতং ॥ ২০ ॥

িমিপুনং মুদ্যালান্তার্দ্যা দিবোদাদঃ পুমানভূৎ। অহল্যা কন্সকা যক্ষাং শতানন্দস্ত গোতমাৎ॥

श्रीपत्रवामी ।

প্লাচ্য সালাং ষট্ সংহিতা লগে। বিভল্গধ্যাপিতবান্। ২১ ।

অঞ্মীচত বংখা: প্রিয়মেধাদর: কেচিব ক্ষণা বছুর্:। বৃহদিব্ প্রভ্তর: ক্লিরাপেড়িত বংশবয়ম্কাং। তত্তিব বংশাভারমাধ্ নিল্যামিতি যাবং সমাপ্তি ॥ ২২ ॥

भूकाल अकः वरीनतानत्रकात है छावः शक्ष । २०।

ভার্মাৎ ভর্মাধপুত্রাৎ মিধুনঞাভূৎ। তদেবাছ দিবোদাসঃ প্রান্ অহলাচ কনাকেতি ॥ ২৪ ।

ক্রমসন্দর্ভ:

বোপং প্রাপ্যেতি তৎ প্রস্থাবাদের জগৌ । ২১ । ২২ । ২০ । ২৪ ।

अविधनाषठक वर्छी ।

অজ্ঞান বংশানন্তরমাহ। নলিব্যামিতি ॥ ২২ ॥ ভার্যাৎ ভর্মান্থ পুজাবুদালাৎ ॥ ২৩ । ২৪ ॥

স্পার্শ হইতে স্নতির জন্ম হয়, তাহার তনয় সম্ভিমান্, তাহার সন্তান কৃতী। যিনি হিরণ্যনা-ভের নিকট যোগ প্রাপ্ত হইয়া প্রাচ্যদামের ছয়খানি সংহিতা বিভাগ পূর্বেক অধ্যাপন করেন। সে যাহা হউক, ঐ কৃতী হইতে উগ্রায়ুখের উৎপত্তি হয়। তাহার পুত্র ক্ষেম্য, ডৎস্ত স্বীর। স্থবীরের পুত্র রিপুঞ্জা, তাহার পুত্র বহুরথ। হে রাজন্। পুরুমীত নিঃসন্তান ছিলেন॥ ২১॥

ৈ অজনীটের বংশে প্রিয়নেধাদি কতিপয় প্রাহ্মণ এবং বৃহদিষ্ প্রভৃতি ক্ষত্রিয় উৎপন্ন হইয়াছিল, তাঁহার দেই ছুই বংশ বণিত হইয়াছে, এক্ষণে তাঁহার বংশান্তর প্রেরণ কর। অজনীটের নলিনী নামে যে ভার্যাছিল তাহাতে নীল নামক এক সন্তান উৎপন্ন হয়, তাহার পুত্র শান্তি, শান্তির সন্তান স্থান্তি, তাহার পুত্র প্রকল, তাহা হইতে অক উৎপন্ন হয়েন ॥ ২২ ॥

অর্কের পুত্র ভর্মান্ত, তাঁহার মূলাল প্রভৃতি বহু বহু সন্তান হয়, অর্থাং মূলাল, যবীনর, রহদশ্ব, কাল্পিল এবং সপ্রয় এই পাঁচ সন্তান জন্মে। ভর্মান্ত ঐ তনয়দিগকে অবলোকন করিয়া একদা কহিন্যাছিলেন আমার পাঁচটা পুত্র পঞ্চ বিষয় রক্ষণে সমর্থ, এই কারণে পরে তাহাদের পঞ্চাল সংজ্ঞা হয়। মূলাল হইতে মৌলালা নামক ত্রক্ষণোত্র নির্ভি হয়। ২০॥

ভর্ম্যাশ পুত্র মূল্যল হইতে শুভ নরমিথুন উৎপন্ন হয়, তত্মধ্যে দিবোদাস নর এবং অহল্যা নারী। সেই অহল্যায় গোতম হইতে শতানন্দ জন্ম গ্রহণ করেন। সভানন্দের হত সভাধৃতি, তিনি ধনুর্বেদে হপৃত্তিত ছিলেন। তাঁহার তনয় সেই শর্জান্। উর্বাশী দর্শনে বাঁহার শুক্ত শর্জহে পতিত হইয়া শুভ নরমিথুন হইরাছিল। শান্তমু রাজা মুগ্যা করিতে গিয়া দৈবাঁৎ তাহাদিগকে দেখিতে পান এবং

ডক্ত সভাধৃতি: পুত্রোধসুর্বেদবিশারদ:। শর্মাণ্ডৎছভো ম্পাছ্র্বশী দর্শনাৎ কিল । শরস্তাম পভাদ্রভো নিপুনং তদভূৎ শুভং। তদ্ধৃণ কুপরা গৃহ্লাৎ শাস্তসুষ্ গ্রাঞ্রন্ । কুপ: কুমার: ক্যাচ দ্রোণপড়াভবৎ কৃপী । ২৪ ॥

॥ # ॥ ইডি- শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবসক্ষে ভরতবংশাসুবর্ণনে একবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২১ ॥ # ॥

প্ৰীশুক উণাচ।

নিত্রায়ুশ্চ দিবোদাসাচ্চাবনস্তৎ হুতোন্প। হুদাস: সহদেবোহণ সোমকো জস্তুজনাত্বৰ ॥ ১॥ তক্ষ পুজশতং তেষাং যবীয়ান্ পৃষতঃ হুতঃ। স তক্ষাদ্ পদো জজ্ঞে সর্বাসন্পৎ সমন্বিতঃ। ক্রুপদাদ্ পদী তক্ষ ধৃষ্টহালাদম: হুতাঃ। ধৃষ্টহালাদ্ উক্তেতুর্ভার্ম্মাঃ পাঞ্চালকা ইমে॥ ২॥ যোহজনীচ্হতোহ্বন্য ঋকঃ সংবরণস্ততঃ। তপভাাং স্বাক্ষায়াং ক্রুক্তেজতপতিঃ ক্রুঃ॥ পরীক্ষিং হুধকু র্কু নিষ্ধশ্চ কুরোঃ হুতাঃ। হুহোত্রোহভূৎ হুধকুষশ্চাবনোহ্ব ভণ্ডঃ কুতী॥ ৩॥

शिवकारी

॥ * । ইতি নবমে একবিংশ: ॥ * । বাবিংশেতু দিবোদাসবংশমুক্তা তুবৰিতা:। অফবংশে অরাসদ্ধ পার্থ ত্বোধনাদর: ॥ > ॥ ভক্ত সোমকক্ত পূজাণাং শতং বজুৰ ডেবাং জন্ধ জ্যেষ্ঠ:। ববীয়ান্ পৃষ্ত:॥ ২ ॥ অজমীতৃত্ত বংশাস্তরমাহ য ইতি। ততঃ সম্বরণাং কুঞ্জ:॥ ৩ ॥

ক্রমসম্বর্ডঃ।

॥, 📲 रेकि श्रीमसार्थन नवमस्य श्रीकीवाशाचामिक्क क्रमनम्बद्धना धकविः । मार्थः । 🕶 ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবত্তী ।

কুপা পরবশ হইয়া লইয়া আইদেন। সেই নরমিধুন মধ্যে বালকের নাম কুপ, বালিকার নাম কুপী। তিনি জোণাচার্য্যের পদ্মী হইয়াছিলেন ॥ ২৪ ॥

॥ #॥ ইতি নবমে একবিংশ ॥ #॥

ছাবিংশতি অধ্যায়ে দিবোদাসের বংশ এবং ঋক বংশীয় জ্বাস্ত যুধিন্তির ও ছুর্য্যোধনাদির বিষরণ ॥ • ॥ শুক্তবেব কহিলেন দিবোদাসের পুত্র মিত্রায়ু, তাহার তনয় চ্যুবদ, চ্যুবনের সন্তান হুদাস, তাহার পুত্র সহদেব, সহদেবের পুত্র গোষক। সোমকের একশত সন্তান জ্বাসে, ত্মধ্যে জ্বস্ত জ্যের্ড ॥ ১ ॥

এবং পৃষৎ কনিষ্ঠ। ঐ পৃষৎ হইতে সর্ববি সম্পাদ যুক্ত ক্রুপেদ্ জন্ম, গ্রহণ করেন। দেই ক্রুপেদ হইতে দ্রোপদীর জন্ম হয়। তাহার পুজ ধৃউল্লুল প্রভৃতি। তন্মধ্যে ধৃউল্লুল হইতে ধৃউক্তেকু উৎপন্ন হয়েন। এই সকল ব্যক্তি পঞ্চাল বংশীয়। ২॥

হে রাজন্। অতঃপর অজমীঢ়ের বংশান্তরূপ বলি প্রবণ কর। অজমীঢ়ের অস্ম তনর যে গাক্ষ, তাহার পুত্র সম্মান বি প্রবিধা তপতীর গর্মে ক্রেন্ডির ক্র জন্ম প্রতিহণ করেন। সেই ক্রের চারি সন্তান যথা—পরীক্ষি, তথ্ম, অহু নিষ্ণা তন্মধ্যে হণসূর পুত্র হাহাত্র, তাহার পুত্র চারন, চারনের সন্তান ক্তী ॥ ৩॥

বহুত্ত সোপরিচরো রহত্রথমুথান্ততঃ। কুশাস্থ মৎস্য প্রত্যগ্রাদেচ দিপাদ্যাশ্চ চেদিপাঃ॥ ৪॥ বহুত্রপাৎ কুশাগ্রেহিভূদ্যভন্তস্য তৎস্তঃ। জ্ञ জে সভ্যহিতোহপত্যং পুশ্পবাং স্তৎস্তভাজতঃ॥ ৫ অক্সভামিপ ভার্যায়াং সকলে দে রহত্রপাৎ। তে মাত্রা বহুক্রৎস্থ জনমানেভিদদ্ধিতে॥ জীব জীবেতি ক্রীড়স্ত্রা জনাসন্ধাহভবৎ স্ততঃ॥ ৬॥ ততশ্চ সহদেবোহভূৎ সোমাপির্যৎ প্রভ্রেশাঃ॥ ৭॥ পরীক্রিনপত্যোহভূৎ স্থনথোনাম জাহুবঃ। ততোবিদ্নপন্তস্থাৎ সার্কভৌমন্ততোহভবৎ॥ ৮॥ জয়দেন স্তত্তনয়ো নাধিকোহতো হযুতাযুভূৎ। ততশ্চাক্রোধনস্তস্মাদেবাভিপিনম্ব্য । ঋক্সন্তস্য দিলীপোহভূৎ প্রতীপন্তস্য চাত্মজঃ॥ ৯॥

শ্ৰীধরস্বামী

তিত ফুতিন উপরিচরো বস্থ ততো বদোর হিদ্রথো মুখনাদি র্যোণ তানেবাছ কুশাখেতি ॥ ॥ । তৎস্ত: পূর্পাবান্ করে তভাপত্যং সভাহিত ইতি যোক্যং ॥ ৫ ॥ অবনা রাক্ষা ॥ ৬ ॥ বমাৎ সোমাপে: শ্রুত্রবা: ॥ ৭ ॥ কুরো: পূত্র: পরীক্ষিরনপত্য: আছুব: অছো: পূত্র: ॥ ৮ ॥ অতো রাধিকাদযুতাযুর ভূদিতার্থ: ॥ ৯ ॥

श्चीविषनाथठकवर्शी।

বৃহত্তথ মুখানেবাহ। কুশাৰেভাগি । ৪০৫। জর্মারাকভা। ৬। যং যভ সোমাপে: । ৭॥ পরীকি:কুরপুত্ত:। ভাক্ব:। কুরুপুত্তভ জিকো:পুত্ত:মূরধ:॥৮। অভোরাধিকাদ্যুভাযুরভূং।১।১০॥

কৃতির পুত্র উপরিচর বহা, তাহা হইতে র্হত্তথ প্রস্তৃতির উৎপত্তি হয়। অত্য পুত্রদের নাম যথা--কুশাম্ব, নংস্থা, প্রত্যাগ্র এবং চেদিপ ইত্যাদি। তাঁহারা দকলেই চেদিপ অর্থাৎ চেদিদিগের রাজা ছিলেন ॥ ৪॥

সে যাহা হউক, রহজেথ হইতে কুশাগ্রের ক্ষম হয়, ভাহার তনয় ঋষভ, তৎপুত্র সভাহিত। সভ্য-হিতের সন্তান পুজ্পবান্, তাহার অপতা জন্ত ॥ ৫॥

হে রাজন্। ব্রহদ্রথের অন্য ভার্যায় ছুই খণ্ড সন্তান জন্মিয়াছিল। তাহাদের জন্মী তাহাদিগকে তজ্ঞাপ দেখিয়া বাহিরে ফেলিয়া দেয়, পরে জরা রাক্ষনী দেখিতে পাইয়া (জীবিত হও জীবিত হও) এই বাক্য উচ্চারণ পূর্বক ক্রীড়া করিতে করিতে সেই ছুই খণ্ড মিলাইয়া দিয়াছিল, তাহাতেই দেই বালক সর্ববিয়ব সম্পন্ন হইয়া জনাসন্ধ নাম প্রাপ্ত হইয়াছিল ॥ ৬ ।

ঐ জরাদক্ষের পুত্র সহদেব, তাহার পুত্র সোমাপি তাহা হইতে আচত আবার উত্তব হয় ॥ १ ॥ রাজন্ ! কুরুপুত্র পরিকি নি:সন্তান । জহুর ত্নয় হরধ। ঐ স্কুথ হইতে বিদ্রুথের জন্ম হয়, ভাহার পুত্র সার্বভৌম ॥ ৮ ॥

তাহার তনর জয়দেন, লয়দেনের সন্তান রাধিক, তাহা হুইতে অযুভারুর উৎপত্তি হয়। অযুতার্র পুত্র অফোষন, তাহার পুত্র দৈবাতিথি। তৎস্ত অক, অক হুইতে দিলীপ জন্ম এহণ করেন, তাহার আত্মক প্রতীপ ॥ ৯ ॥

দেবাপি: শান্তসুস্তস্য বাহলীক ইতি চাজ্জা:। পিতৃরাজা: পরিত্যক্ষ্য দেবাপিস্থ বনং গত: ॥>•॥
অভবচ্ছান্তন্ রাজা প্রাত্তানিষদংজ্ঞিত:। যং ষং করাভ্যাং স্পৃশক্তি জীর্ণং যৌবনমেধ্যতি ॥
শান্তিমাধ্যোতি হৈচবাত্রাং কর্মণা তেন শান্তমু: ॥ >> ॥

সমা দাদশ তদ্রাজ্যে ন ববর্ষ যদা বিজু:। শাস্তব্ম ত্রা দ্বারিকক্তঃ পরিবেতাৎয়মগ্রাভুক্॥ ১২॥ রাজ্যং দেহুগ্রজায়াশু পুররাষ্ট্র বিস্বদ্ধরে। এবমুক্তো দিকৈর্জ্যেষ্ঠং ছন্দরামান সোহত্রবীৎ। ভদ্মজ্রিপ্রহিতি বিশ্রৈর্বাদিকংশিতো গিরা। বেদবাদাতিবাদান্ বৈ তদা দেবোববর্ষই।

श्चिषद्रवाभी।

তক্ত প্রতীপক্ত দেবাপি শাস্তরু বাহনীকাঃ ॥ ১০ ॥

প্রাক্ পূর্বজন্মনি মহাভিষ ইতি শংক্ষা জাতা যদা সং ॥ ১১ ॥

যান। দেবে। ন ববর্ষ ওদা শাস্তত্ম তার কারণং এ:ক্ষণান্ পথ্যক্ষ ব্যক্ষণৈ কুকা। দারাগ্রিছোত সংযোগং কুকাতে যোহ-প্রতে। পরিবেতা স বিজেরঃ পরিবিতিশ্ব পূর্কল ইতি শ্বতে:। ঘোহগ্রত্ক ত্বমগ্রতে। তৃণজি অয়ং স্বাদুশোহিশি পরিবে-তৈব ভব্তি ॥ ১২ ॥

অভন্তদ্যোৰ পরিহারার রাজামগ্রজায় দেহি ভতোবৃষ্টি উবিষাতি ইতোব মুক্তং শাস্তম্বনং গছা জোটং ছলারামাস রাজাং আলা-পলনাদি প্রোধর্ম্মং অভদ্য রাজাং শীকৃর্মিতি আাথিতবান্ ততঃ পূর্মদেব তসা মরিশা অখবার সংজ্ঞেন দেবাপিং পারতীক্ষতা

क्रमन्त्र ।

দারাগিছোতা স্বোগ মিত্যক্ত প্রথমনিধিকারিত তাৎপর্য মিভাভিপ্রেডাছে অগ্রভূগিভি ॥১/২।৩।৪।৫।৬।৭ ৮।৯/১০।১২/॥ এব্যিতি সার্গ্ধকং। ভ্রমন্ত্রিভার ভঙো নিজ্ভোতি জেলং ॥ ১০ । ১৪ । ১৫ । ১৮ ॥

श्चीवयमाषठकवर्छी ।

প্রাক্ পূর্ব জন্মনি। यः জীর্ণ: বৃদ্ধং সঞ্জীর্ণ: যৌগনং এছাতি প্রাপ্রোতি ॥ ১১ ॥ ।

বিভূরিক:। দাবাগিংহাত সংযোগং কুকতে যোহএকে স্থিত। পরিবেতা স বিজের: পরিবিভিত্ত পূর্বক:। ইতি স্থত:।
ত্মপ্রকে দেবাপৌ বর্তমানেপি অগ্রভুক্ কৃতদারো রাজাভোকা পরিবেতৈবেতি দোবাদিকো ন বর্বতি তথাজালাগিত্যাদি ॥ ১২ ।
ত্নায়াশাস বং রাজাং কুর্কিভি পাথিতবান্ তভ: স বেদবাদাতিবাদান্ বেদনিন্দাবাক্যানি অপ্রবীৎ তর হেতু: তভ শারনো
মৃথিশা অথবারসংক্রেন শাস্ত্রপ্রার্থনাৎ পূর্বমেব দেবাপিং পাবতীকৃত্য রাজানেইং কর্তু: শাস্ত্রম্ প্রভৃতালক্ষিতং গে প্রতিভা

ঐ প্রতীতের তিন পুজ, দেবাপি, শান্তমু এবং বাহ্লিক। তমুধ্যে জ্যেষ্ঠ দেবাপি পিত্রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া অরণ্য গমন করিয়াছিলেন॥ > ॥

অতএব মধ্যম ভনয় শান্তমু রাজা হয়েন। পূর্বে জন্মে ইহার নাম মহাভিষক্ ছিল, ইনি কর দারা যে কোন জীর্ণ পুরুষকে স্পর্শ করিতেন, সেই ব্যক্তিই যৌবন প্রাপ্ত হইত এবং উৎকৃষ্ট শান্তি লাভ করিত। এই কর্ম দারা ইহার নাম শান্তমু হয় ॥ ১১॥

কিন্তু শান্ত বু রাজা ইইলে ছাদশ বৎসর দেবতা বারি বর্ষণ করিলেন না, অতএব রাজা উদিয়া চিত্তে আক্ষণদিগকে তৎ কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন। আক্ষণেরা ঐ বিষয়ে এই গাত্ত কহিয়াছিলেন মহারাজ! অগ্রক্ত সন্তে যে ব্যক্তি রাজ্য ভোগ করে, সে আপনকার সদৃশ পুরুষ হইলেও পরিবেতাই হয়। ১২॥

আপনি পরিবেদন দোষে দোষী হইয়াছেন, ঐ দোষ পরিহারার্থ আশু অগ্রন্ধকে আনাইয়া রাজ্য দান করুন, তাহা হইলে দেবতা বর্ষণ করিবেন ও পুর এবং রাষ্ট্র রিছিশীল হইবেক। বিপ্রদিণের এই বাক্য শ্রেণ করিয়া শাস্তস্থ তৎক্ষণাৎ বনে প্রস্থান করিলেন এবং "রাজার প্রজা পালনাদি পরম ধর্ম, আপনি রাজ্য স্থীকার করুন" বলিয়া 'রাজ্য গ্রহণার্থ অগ্রন্ধকে বিনয় করিতে লাগিলেন। পরস্ত ইতি दिवानि द्वांगमाद्याः कनानेवाममाध्येकः । तामवः एन करनी नत्के कुछानी द्यांनियाकि ॥>>॥ वाक्नीकार तामवर्त्तारेक्ष्मका कृति प्रतिक्षवाख्यः। मनन्त मास्रत्नातामोक्तावाः क्षेत्र काज्यवान् ॥>४. मर्व्यवर्त्तावाः व्यक्ति महाछानवङः कविः । वीत्रवृथाव्यविद्यंत त्वार्त्यार्थनि वृथि द्वांविष्ठः ॥ >৫॥ मास्रत्नानीमक्ष्मायाः कृत्य विद्धांक्षवः प्रकः । विद्धिववीर्याकावत्वः मास्रा विद्धांकरवाद्यः ॥>७॥ वश्चाः नतामत्रार्थः मास्रावकोर्त्याद्यः कृत्यः व्यक्षः विद्यविद्याः विद्यक्षः विद

श्रिश्तवामी।

রাজ্যান্হং কর্তু যে প্রছিঙা বিপ্রাইন্তঃ পাষ্ড্রমতাশ্রহা গিরা বেণাছিল্ল:শিতঃ সন্বেদবাদস্যাতিবাদান্ নিন্দাবচনানি সোধ-অবীৎ। অত্যস্য পাতিতোন রাল্যামর্ছকে জাতে শাক্তনো দেখিবাভাবাৎ দেবোব্ধেবেক্সির্ছঃ ১০ ॥

ততঃ সোমদত্তাৎ ভূরি ভূ রিপ্রবাঃ শলকেতি অর: ॥ ১৪ ॥

वारमाव्यामन्थाः ॥ ५० ॥

দাস্কন্যায়ামিতি উপরিচরসা বসোবী যোঁণ মংসাগর্জাত্ৎপল্লা কন্যা দাসৈঃ কৈবটকঃ পালিতা অতো দাসকন্যেতি প্রসিক্ষায়াং সভাবতাং নামা ৩ৎ সমান নামা চিত্রালদেন গ্রুক্ষেণ যুদ্ধে হতঃ ॥ ১৬ ॥

মুদাধি সন্তাবত্যাং শান্তমুপরিগ্রহাৎ পূর্ব্যমেব বেদা গুপ্তা বেন যজে। ছবং জাত ইদং ভাগবতং চাধাগাং ॥ ১৭ ॥

बिविचनाथठक वर्षी ।

বিপ্রাইন্ত: পাষ্ঠ্যমন্তাপ্রয়য়। গিরা বেদাছিল্রংশিক্ত:। তত্ত্বত তথ্য পাতিতোটনৰ তথ্য রাজ্যানইন্দে লাতে শল্পোনোর্দোহাভাবাৎ দেৰো ব্যবেতার্থ: ৪ ১০ । ১৪ । ১৫ ॥

দাসকন্যান্ত্ৰ উপরিচরবংসাবীর্ব্যেণ মৎস্যগর্ভাত্ৎপদ্ম কন্যা দাসৈং কৈবর্টেঃ পালিত। অভোদাসকনে।তি প্রাসিদ্ধার্থং সূত্যবস্থাং নামা তৎ সমাননাল্লা চিত্রাঙ্গদেন পদ্ধর্কেশ যুদ্ধে হতঃ॥ ১৬ ॥

যসাং সভাবত্যাং শান্তরূপরিগ্রহাং পূর্বনেব হরে: কলা ব্যাস:। বেদা গুপ্তা যেন স:। ইনং শ্রীভাগবতং ॥ ১৭ ॥

পূর্বেশান্তসুর মন্ত্রী অখবার দেবাপিকে পাষও করিয়া রাজ্যানর্হ করিবার নিমিত তাঁহার নিকট কত-কগুলি আহ্মণকে পাঠাইয়া দিয়াছিল, বিপ্রগণ পাষও মতামুষায়ি কথা হারা বেদবর্ম হইতে পরিভ্রেষ্ট করাতে দেবাপি শান্তসুর প্রার্থনায় সম্মত না হইয়া বরং বেদ শাস্তের নিন্দা করিতে লাগিলেন।
অতএব বেদনিন্দা দারা পাতিত্য জন্মিবাতে দেবাপি রাজ্যানর্হ হইলেন, হতরাং তদনন্তর শান্তসুর
রাজ্যভোগে আর কোন দোষ মহিল না। পরে যথাকালে বর্ষণ হইতে থাকিল। ভদবিধি দেবাপি
যোগ অবলম্বন পূর্বেক কলাপ গ্রামে অবন্ধিতি করিতেছেন। কলিযুগে দোমবংশ বিন্ধ হইলে সত্যের
প্রথমে তিনি ঐ বংশ স্থাপন করিবেন। ১০ ম

দে যাহা হউক, শান্তসু পুত্র বাহলীক হইতে সোমদত্তের উদ্ভব হয়। তাহার তিন তনয় ভূরি, ভূরি-শ্রবা এবং শল। হে রাজনু ! ঐ শান্তসু হইতে গলায় আত্মত্ত দেই ভীম অদিয়াছিলেন॥ ১৪॥

যিনি সমস্ত ধর্মজ্ঞ জনের শ্রেষ্ঠ, সহাভাগবত, বিদ্ধান্ এবং বীর সমূহের অগ্রন্থ ছিলেন, স্মার সং-গ্রামে পরশুরামেরও সন্তোষ উৎপাদন করিতেন ॥ ১৫ ॥

হে রাজন্। ঐ শান্তমু হইতে দাসক্ষায় অর্থাৎ উপরিচর বহুর বীর্য্যে সংস্থাপর্টে এক কক্ষা জ্ঞাছিল, দাসেরা (কৈবর্ত্তেরা) তাহাকে প্রতিপালন করে, সেই কারণে দাসক্ষা বলিরা প্রাসিদ্ধা হয়, বস্তুতঃ তাহার নাম সভ্যবতী ছিল, তাহাতে চিত্রাঙ্গদ ও বিচিত্রবীর্য্য নামে ভূত প্র জ্বামা তামধ্যে ক্রেয়ে চিত্রাঙ্গদ, চিত্রাঙ্গদ নামক জনৈক গদ্ধবি কর্ত্তক যুদ্ধে নিহত হন ॥ ১০ - ব

শান্তসু রাজ্য পরিএহ করিবার পূর্বের ঐ দাদকভায় (সভ্যবতীতে) মার্ক নার্বার হইতে সাক্ষাৎ

हिशा चिनिद्यान् रेशनानीन् छगनान् नामनाय्यः। मद्यः शृद्धाय मास्यात शतः श्रव्यक्तिः स्वत्यौ ॥>१॥ विविद्यनीर्द्यावर्थानार् कानितासक्त जनारः। चयचताव्यनानेत्व अस्ति। स्वत्रचात्रमानेत्व अस्ति। स्वत्यात्राम्बन्द्यनत्या गृरोत्वाचन्यमा युद्धः ॥ >৮॥

ক্ষেত্ৰহথাক্সা বৈজ্ঞাভূ মাত্ৰোকো বাদবারণ:। ধৃতরাষ্ট্রক পাণ্ড বিজুরকাপাজীজনং ॥ ১৯॥ গাদার্থ্যাং ধৃতরাষ্ট্রক যজে প্রশতং নৃপ। তত্র ত্র্যোধনো জ্যেটো ত্রংশনাচাপি কক্ষকা ॥২০॥ শাপাং বৈধুনক্ষনা পাণ্ডোং ক্স্তাং মহারথা:। জাতা ধর্মানিলেক্তেভাো যুধিন্তিরমুধান্ত্রমঃ ॥২১ নক্লঃ সহদেবক্ষ মান্তাং নাসভাদক্রয়ো:। ক্রেপিদ্যাং পঞ্চ পঞ্ভাঃ পুজাত্তে পিভরোহ্ভবন্।

1 वत्रामी

चम्रकाखीट्यन वनाष्ट्रनामीटक । ১৮ ।

মাত্রা সভাবতা। উক্ত ইতি নিবেধা ভাবমাহ অপতিরপত্য নিপাঃ দেবরাং গুরু প্রযুক্তাং গুডুমজীতা। নি ব্চনাং । ১৯ । ছঃশলা নাম কনাকাচ জজে ॥ ২০ ॥ স্বরণো মৃগশাপাং মৈগুনে ক্রম্বা আহিতিবিদ্ধসা ॥ ২১ ॥ • , , নাসতাদআভামে বিভাগে পঞ্জো যুণিষ্ঠিরাদিতাঃ পঞ্চাত্রন ॥ ২২ ॥

ক্রমসকরে:।

मिखि। बक्तिकीय । ১१। ১৮। ১৯। २०। २১। २२। २०। २८। २४। २४। २५। २१॥

शिविधनायहत्वत्वी ।

সম্বরান্তীয়েণ বলাত্পানীতে ॥ ১৮ ॥

অগলস্য বিচিত্র বীর্যাসামাতা সভাবতা। উক্ত ইতি অপতিরপতালিকা ক্ষেবরালা ক প্রযুক্তাৎ ঋতুমন্তীরাদিতি বচনবলাৎ ১১৯২০।২১ অরণো মুগশাপালৈথ্নে রুদ্ধনা নাসভাগলভাগে অধিভাগে ১২০। ২০॥

ভগবান্ হরির অংশে কৃষ্ণদৈপায়ন মুনি অবতীর্ণ হরেন, যাঁহা হইতে বেদ সকল পূর্বে গুপ্ত হয় এবং বাঁহার নিকট আমি ভাগবত শাস্ত্র অধায়ন করি। সেই ভগবান্ বাদরায়ণের পৈলাদি অনেক শিষ্য ছিল, কিন্তু তিনি সেই দকল শিষ্যকে পরিত্যাগ করিয়া আমি তাঁহার স্থশান্ত তনম বলিয়া আমারই নিকট পরম গুহু ভাগবত শাস্ত্র ব্যাখ্যা করিয়া ছিলেন ॥ ১৭॥

দে যাহা হউক, উল্লিখিত বিচিত্র বীর্যা কাশিরাজের ছই কন্সা অখিকা ও অমালিকার পাণি গ্রহণ করেন। মহাবল ভীম স্বয়ম্বর হইতে বল দারা তাহাদিগকে আনিয়া দেন। ঐ ছই বনিতায় বিচিত্র বীর্যা অত্যন্ত আশক্ত হওয়াতে অল্ল কাল মধ্যে যক্ষা গ্রন্ত হইয়া নিধন প্রাপ্ত হয়েন॥ ১৮ র

তাঁহার দন্তান সন্ততি হয় নাই, তাঁহার সহোদর ভগরান্ বেদব্যাস মাতৃনিয়োগে তলীয় ক্ষেত্রে ধৃতরাষ্ট্র, পাণ্ডু এবং বিহুর এই জিনটী পুত্র উৎপন্ন করিয়া দেন॥ ১৯॥

তন্মধ্যে ধৃতরাষ্ট্রের পত্নী পান্ধারী, তাহাতে ধৃতরাষ্ট্রের শত পুত্র জন্মে, তাহাদের মধ্যে চুর্যোধন জ্যেষ্ঠ। অপর ছঃশলা নামে এক কন্সা হয়। ২০॥

রাজন্! পাণ্ডুরাজা অরণ্যে মৃগয়া করিতে গিয়া মৈপুন রত একটা মৃগ বধ করাতে মৃগখালে নৈশুন ব্যাপারে নিষিদ্ধ হইয়া ছিলেন তাঁহার বনিতা কুগ্রীর গর্ত্তে ধর্ম, ইন্দ্র এবং বায়ু হইতে বুধিন্তি-রালি তিম ভনমু উৎপদ্ধর ॥ ২১॥

আর উহার মান্ত্রী নামে যে ভার্য্যা ছিল ভাহাতে অখিনা কুমারদ্বয় হইতে নকুল ও সহদেব নামে ছুই পুজ ক্ষমে। এ পঞ্চ পাণ্ডবের পত্নী ক্লোপদী। তাঁহার গর্মে মুধিন্তিরাদি পঞ্চ পাণ্ডব হুইতে পাঁচটা যুধিষ্ঠিনাৎ প্রতিষদ্ধ্য: শ্রুতদেনে। রুকোদরাৎ। অর্জুনাচ্চুতকীর্তিস্ত শতানীকস্ত নাকুলি:॥ ২২॥ সহদেব: হড়ো রাজন্ শ্রুতকর্মা তথা পরে॥ ২৩॥ ব

যুধিন্তিরান্ত পোরব্যাং দেশকোহথ ঘটোৎকচঃ। ভীনদেনাৎ হিড়িয়ায়াং কাল্যাং সর্কাণতস্ততঃ॥২৪
সহদেবাৎ হুংহাত্রস্ত বিজয়াসূত পার্বাতী। করেণুমত্যাং নকুলো নরমিত্রং ভথার্জ্বনঃ।
ইরাবস্তমলূপ্যাং বৈ হুতায়াং বক্রবাহনং। মণিপুরপতেঃ সোহণি তৎপুত্রঃ পুত্রিকাহতঃ।
তব তাতঃ হুভন্রায়মভিনন্যুরজায়ত। সর্বাতিরপজিন্বীর উত্তরায়াং ততো ভবান্।
পরিক্ষীণেষু কুরুষু দ্রোণের ক্ষান্তভেজসা। তথা কৃষ্ণামুভাবেন সজীবে৷ মোচিতোহস্তকাং।
তবেমে তনয়া স্তাত জনসেজয় প্র্বাকাঃ। প্রাতসেনো ভীনদেন উত্তসেনান্দ বীর্যাবান্।
জনমেজয়স্বাং বিদিশ্বা তক্ষবাহিদনং গতং। স্পান্ বৈ স্প্রাগায়ে সহোষ্তি ক্ষান্তিঃ॥ ২৫॥

बीमत्रवामी।

ত্থাপরেচ ভাষাাস্তরেরু । ২০।

কালী চাল্লা ভীমস্ত ভাষা। সঙ্গাং ততো ভীমাৎ সর্ব্বগজো নাম পুস্তেভিতৰদিত্যর্থ: ॥ ২৪ ॥ উনুপাাং নাগকলায়াং মধিপুরপতেঃ স্কামাং পুজিকা ধর্মেণ দক্তামাং বক্রবাহনমস্ত অভত্তৎ পুলঃ সর্বি স্ পুজিকাহতঃ মাতঃ-

है।विचनाथहळाव ही ।

কালীচান্যা ভীমদ্য ভার্য্যা তল্যাং দ্র্ব্রগত: ॥ ২৪ ॥

পার্বাড়ী পর্বাতকলা। উল্পাং নাগকন্যাবাং মণিপূরপতে: স্তারাং পুত্রিকাধর্মেণ দন্তারাং বক্রবাহনমস্ত। অভত্তংপুত্র:

সন্তান হইয়াছিল, তাঁহারা তোমার পিতৃগণ। অর্থাৎ যুধিন্তির হইতে প্রতিবন্ধ্যা, ভীম হইতে চাতেগেন, অর্জন হইতে প্রতেকীর্তি, নকুল হইতে শতানীক ॥ ২২ ॥

এবং সহদেব হইতে শুতকর্মা উৎপন্ন হন। হে রাজন্। ঐ পঞ্চ পাণ্ডবের অক্যান্য ভার্যায় তদ্তির অন্যান্য পুত্রও জন্মিয়াছিল॥ ২০॥

যুধিষ্ঠিরের পৌরবী নামে অশু যে ভার্ষ্যা ছিল ভাহাতে দেবক নামে এক পুত্র হয়। ভীনদেনের হিড়িম্বা নাম্মী বনিতায় ঘটোৎকচ জ্বদো। ভাঁহার কালী নামে অপরা এক ভার্য্যা ছিল ভাহাতে দর্বন্যত নামা এক দন্তান উৎপন্ন হয়॥ ২৪॥

সহদেবের বিজয়া নামে অন্য যে পর্বত ছুহিতা ভার্যা ছিল তাহার গর্ম্ভে হারে নামক এক পুজ জন্ম গ্রহণ করে। আর নকুলের করেণুমতি নালা বনিতায় নরমিত্র নামক অপর এক সন্তান উত্তব হয়। আর মণিপুরপতিকে যে নাগ কন্যা পুল্রিকা ধর্মে প্রদত্তা হয় তাহাতে ঐ অর্জ্জুনের বল্রবাহন নামে এক সন্তান হইয়া ছিল, কিন্তু সেই পুল্র তাঁহার পুল্র হয় নাই, তাঁহার জননী পুল্রিকা হওয়াতে সেমাতামহের পুল্র হইয়া ছিল। পে যাহা হউক, ঐ অর্জ্জুনের হভুদ্রা নামে আরও এক ভার্যা ছিল তাহাতে তোমার পিতা অভিমন্য উৎপন্ন হয়েন, তিনি সমস্ত অভিরথ বীরের লয়েকারা এবং মহাবীর ছিলেন। তাঁহার ঔরসে উত্তরার গত্তে তোমার জন্ম হয়। রাজন্। অর্থথামার ল্লেলান্ত্র তেলে কুরুবংশ পরিক্ষীণ হইতে ছিল, তুমিও তাহাতে বিনক্ত হইতে, ভগবান্ শ্রেক্তরের প্রভাবে কৃতান্তের কর হইতে জীবন সহিত গোচিত হইয়াছ। হে তাত! ভোমার একণে জনমেক্তর প্রভৃতি এই সকল তনয় অর্থাৎ জনমেক্তর, প্রেত্তনেন, ভামসেন এবং উপ্রসেন এই চারি সন্তান। ইহালের মধ্যে জনমেক্তর তক্ষক হইতে

কালবেরং পুরোধার তুরং তুরগদেধবাট়। সমন্তাৎ পৃথিবীং দর্নাং ক্রিয়া যক্ষাতি চাধেরৈ: ॥২৬॥ তদ্য পূল্র: শতানীকো যাজ্ঞবন্ধাৎত্রেয়ং পঠন্। অন্তর্জ্ঞানং ক্রিয়াজ্ঞানং শৌনকাৎ পরমেয়তি। সহস্রোনীক্সংপ্রুস্ততশৈচবাখনেধজঃ। অসীমকৃষ্ণস্তদাধি নেমিচক্রস্ত তৎস্তঃ। গজাহ্বরে হতে নদ্যা কোশায়াং দাধু বৎদাতি। উপ্ততশিচত্ররথস্ত্র্যাচ্ছ্চিরথং হতঃ। তত্মাচ্চ বৃদ্ধিবাংস্থ্য হ্রেণোহথমহীপতিঃ ॥২৭॥ হনীধস্তদ্য ভবিতা নৃচক্ষু র্যথ হথীনলঃ। পরিপ্লবঃ হৃতন্ত্র্যাদ্মেধাবী হ্নরাজ্ঞাঃ। নৃপঞ্জয়ততো দুর্বন্তিমিন্তস্মাজ্জনিয়তি॥ ২৮॥

श्रीयत्रवागी ।

মহস্ত ইত্যর্থ: ॥ ২৫॥

ভুরশংজ্ঞং পুরোহিতং ক্রন্থা ॥ ২৬ ॥

ভবিষ্যানাই তত্ত পূত্ৰ ইতি যাবং সমাপ্তি। যাজ্ঞবন্ধাং ক্ৰিয়াজ্ঞানং প্রমান্ধ জ্ঞানং শৌনকাং প্রাপ্তাতি অন্তজ্ঞানক ক্লা-চার্ঘাদিতি স্তইবাং। যাজ্ঞবন্ধাং ত্রমীমধীতা কুপাদ্ত্রাণ্যবাপ্যেতি বৈফবোকে:। কচিত্র অন্তজ্ঞানং কুপাচার্ঘাদিত্যের পাঠঃ এ২৭ যাল্যাং সুধীনলঃ পুত্রস্কাৎ পরিপ্লবং তত্মাৎ ক্লিয় অসান্তলা দেধাবীভার্যঃ ॥২৮॥

ক্রমসন্দর্ভ:

নুচক র্যং সুধীবল ইতি। নৃচজু স্তল্যাপি সুধীবলঃ ভঙ্গং পরিপ্লবং। তত্মাত সুনত্ত ভাগি মেধাৰীতি বিষ্পুরাণ গ্লাং ১২৮

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবতী ।

সরণি পুত্রিকান্ত্র: মাতামহন্তুত ইত্যর্থ: ॥ ২৫ ॥

जूदः जूदमः खाः ॥ २७। २**१**॥

यत्यकः ऋषीनगनामा ॥

তবাৎ পরিপ্লব: ভদ্য কুনয়: ভদ্যাত্মজো মেধাবীভার্প: 🛭 ১৮ 🛭

তোমার মৃত্যু বিবরণ অবগত হইয়া রোষ বশত: দর্পদত্তের অনুষ্ঠান পূর্বক যজ্ঞানিতে দর্প দকল হোম ক্রিবেন ॥ ২৫ ॥

অপর তোমার ঐ পুত্র সমস্ত পৃথিবী জয় করিয়া অশ্বমেধ যত্ত করিতে প্রস্তুত হইবেন এবং তুর নামক ঋষিকে পুরোহিত করিয়া অন্যান্য ব**হুতের যত্তেও ক**রিবেন ॥ ২৬ ॥

হে রাজন্। এই জনমেজয়ের শতানীক নামে এক পুদ্র হইবে। তিনি যাজ্ঞবল্ধা মুনির নিকট বেদপাঠ করিয়া তাঁহা হইতে ক্রিয়াজ্ঞান ও শাল্পজ্ঞান এবং কপাচার্যা হইতে অন্তল্ঞান প্রাপ্ত হইবেন। শতানীকের পুত্র সহ্রানীক, তাহা হইতে অখ্যমেধক ক্ষন্ম গ্রহণ করিবেন। তাঁহার তন্য অসীম কৃষ্ণ, তাঁহার সন্তান নেমিচক্রে। তাঁহার রাজহ সময়ে হস্তিনাপুর নদা ভগ্ন হইবেক, তাহাতে তিনি কৌশালী নগরে বাদ করিবেন। সে যাহা হউক,ঐ নেমিচক্রের উক্ত নামে সন্তান হইবে, তাঁহার পুত্র চিত্রেরপ, তাঁহা হইতে শুচিরও ক্রিবেন। শুচিরথের পুর্বা বৃষ্টিমান, তাঁহার পুত্র শ্বেণ নামা মহীপতি হইবেন॥২৭॥

স্বেশের স্থনীধ নামা তন্য হইবে, ভাঁহার পুত্র নৃচকু। তাঁহা হইতে স্থীনল জন্ম গ্রহণ করি-বেন। স্থীনলের পুত্র পরিপ্লব, তাঁহা হইতে স্নয় জন্মিবেন, ভাঁহার আজাল মেধাবী। মেধাবীর পুত্র নৃপঞ্জর, ভাঁহা হুইতে দুর্বর জন্ম গ্রহণ করিবেন। তাঁহার পুত্রু তিমি হুইবেন । ২৮॥ তিমে র্ক্রথন্ত আচ্ছতানীক: হুদাসজ:। শতানীকাদ দ্বিনন্ত স্থাপতাং মহীনর:।
দশুপানি নিমিন্ত ক্ষেকো ভবিভা যতঃ। ত্রহ্মকত্রস্থ বৈষোনি বংশোদেবর্ষিস্থক্ত:।
ক্ষেকং প্রাপ্য রাজানং দংশ্বাধ প্রাপ্যাতি বৈ কলো। ২৯ ।
তথা মাগধরাজানো ভাবিনো যে বদামি তে। ভবিভা সহদেবত মার্জারির্যথ প্রত্ত প্রায়ার তায়ে যুতায়ুন্ত সাপি নিরমিত্রোহণ তৎক্তঃ। হুনকত্র: হুনকত্রা হুৎসেনোহণ কর্মজিং।
ততঃ স্তপ্ত রাধিপ্র: শুচিন্ত ভবিষ্যতি। ক্ষেমোহণ হুত্রতন্ত সাক্ষ্যস্ত্র: দমন্ত ।
দ্ দ্ নেনাহণ হুনলা জনিতা ততঃ। হুনীণ: সত্য জিদ্ধ বিশ্ব জিদ্ব ক্রিপ্রায়:॥ ০০ ॥
বার্ত্রাধাশ্চ ভূপালা ভাব্যাঃ সাহ প্রবংসরং॥ ৩১॥

वीभववामी ।

তক্ষীৎ স্থলাসপ্ততঃ শতানীক ইত্যর্থ: ॥ ২৯ ॥ বৃহজ্ঞপ্সা জ্বাসদ্ধ: তস্য সহদেবস্তস্য মার্জারিঃ যদ্যক্ষাৎ মার্জারেঃ প্রতপ্রবা: ৫ ৩০ ॥ সহস্র সম্বৎসর্মেতে ভাব্যা: ভূপালা: ততঃ পরং ভাব্যান্ যাদশঙ্করে বক্ষাতি ॥ ৩১ ॥

ক্রমদন্দর্ভ:

দেবর্ষিপংক্লন্ত ইতি দেবৈ: ঋবিভিশ্চ সৎ ক্লন্ত: ॥ ২৯। ৩•। ৩১ ॥

अविषनाथठक वर्षी ।

তত্মাৎ স্থাস: ভত: শতানীক ইতার্থ:॥
দেবৈশ্বিভিচ্চ সংকৃত:॥ ২৯ ॥
সহদেবস্য জরাসকপুত্রসা ॥ ৩০ ॥
জরাসকাৎ সহস্রবংসর পর্যান্ত: ভবিবান্ত: তত: পরস্ত ভাবান্ স্থাদশস্ক কেন্তি॥ ৩১ ॥ ০

তিমি হইতে বৃহদ্ৰথের জন্ম হইবে। তাঁহার সস্তান স্থান, তাঁহা হইতে শতানীক জন্মিবেন।
শতানীকের পুত্র তুর্দমন, তাঁহার অপত্য মহীনর। মহীনরের তনয় দগুপানি, তাঁহার সস্তান নিমি,
সেই নিমি হইতে ক্ষেমক উৎপন্ন হইবেন। হে রাজন্! দেবিধিনৎকৃত ত্রন্দ ক্ষতিয় বংশ ঐ ক্ষেমককে
রাজা পাইয়া কলিমুগে অবসান প্রাপ্ত হইবে॥২৯॥

তদনন্তর মাগধবংশীয় যে সকল নরপতি হইবেন তাঁহাদের বিবরণ বলি। বৃহত্রথ তনর জরাসদ্ধের সহদেব নানে যে পুত্র হইবে, তাঁহার পুত্র মার্জারি। দেই মার্জারি হইতে প্রক্রজনা জন্ম গ্রহণ করিবন। তাঁহার পুত্র যুতায়ু, তাঁহার সন্তান নরমিত্র, তথ্যত হুনক্ষত্র, দেই হুনক্ষত্র হইতে বৃহৎসেন উৎপন্ন হইবেন। তাঁহার তনয় কর্মজিৎ, তথ্যত হুত্তে হুত্তে ক্রজন্ম, তাঁহা হইতে বিপ্র নামা নরপতি হইবেন। তাঁহার পুত্র ভাচির সন্তান ক্ষেম, তাঁহা হইতে হুত্ত জান্ধিবেন। হুত্ততের পুত্র ধর্মসূত্র। তাঁহার তনয় সম। প্র সম হইবে দৃচ্দেন উৎপন্ন হইবেন। তাঁহার হুত হুমতি, তাঁহা হইতে হুবল জানিবেন। হুবলের হুত হুনীধ তাঁহার দন্তান সত্যানিং, তথ পুত্র বিশ্বলিৎ তাঁহা হুইতে রিপুঞ্জর জানিবেন। তাঁহার হুত হুনীধ তাঁহার দন্তান সভ্যানিং, তথ পুত্র বিশ্বলিৎ তাঁহা হুইতে রিপুঞ্জর জানিবেন। তে ।

হৈ রাজন্। সহত্র সমৎসর পর্যন্ত এই সকল বাহ্দ্রেথ ভূপাল হইবেন। তদনন্তর যে সমস্ত নরপতি হইবেন পরে (ছাদশস্কলে) বলা যাইবে ॥ ৩১ a ·

. ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংস্তাং সংহিতায়াং ক্যোসিক্যাং নবমক্ষকে শান্তমুবংশ কীর্ত্তনং বাবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ # ॥ ২২ ॥ # ॥

শ্রী শুক উরাচ।

অনোঃ সভানরশ্চকুঃ পরেকুশ্চ ত্রয়ঃ হৃতাঃ ॥ ১॥

সভানরাৎ কালনর: স্প্রয়ন্তৎস্তন্তত:। জনমেজয়ন্তত্ত পুজো মহাশালো মহামনা: ॥ ২॥
উশীনর ন্তিতিকুশ্চ মহামনস আজকো। শিবিকার: কুমির্দকশ্চমারোশীনরাম্মলা:।
ব্যাদর্ভ: স্বীরশ্চ মদ্র: কেকর আজ্বান্। শিবেশ্চমার এবাসংন্তিতিকোশ্চ ক্লম্মেথ:।
ততো হোমোহথ স্তপা বলি: স্তপ্সোহভবং। অঙ্গ বঙ্গ কলিঙ্গাদ্যা: শুক্স পুড়ে তু সংজ্ঞিতা:।
ক্রিজ্ঞারে দীর্ঘত্যসোগ বলে: ক্লেত্রে স্থাকিত:। চকু: স্বনামা বিষয়ান্ হাড়্মান্ প্রাচ্যকাংশ্চ তৈ।

शिभवत्रामी।

+ # ইতি নবমে বাবিংশঃ # +

অয়েবিংশে ঘনোজ হো অর্ধনোশ্চাধর: ক্রমাৎ। ধণোশ্চ বংশোস্কান্তো যাৰজ্যামখসন্তব: । • । ভদেবং ব্যাভে: প্রাণাং প্রুমস্য পুরোর্ধংশোহ্যুকান্ত ইলানীং চতুর্থস্য বংশমসুক্রামতি অনোরিতি কর্ণস্য জগভীপতে উত্তরেন । ১ ।

ভস্য অনমেজয়স্য মহাশাল: ভস্য মহামনা: ॥ ২ ॥

চন্দার উপীনরস্যাত্মজাঃ॥ ৩॥

क्रममन्दः।

॥ 🛊 ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমক্তরে শ্রীজীবগোত্থামিকত ক্রমসন্দর্গে হাবিংশোহধারে: সমাধঃ ॥ 🖝 ॥

গ্রীবিখনাপচক্রবর্তী।

॥ * ॥ ইতি সারার্থদর্শিফাং হর্ষিণ্যাং ভক্তেতেসাং। ছাবিংশোনবমসারং সক্তঃ সক্তঃ সভাং ॥ * ॥
জনোক্ত ছোত্তর্কালে যদোক্ষংশালি কীঠাতে। জ্ঞান্যান্ত ক্রেষেবিংশে কার্ত্বীর্যোহ্ কীর্টিশান্ । • ॥
ফ্রাতেঃ পঞ্মক্ত পুত্রক পুরোর্কংশমুক্ষ চতুর্গাদীনাং পুত্রাণাং বংশমাহ জনোরিতি । ১ । ২ ॥
চদ্বার উশীনরাম্বলাঃ ॥

ৰলে: ক্ষেত্রে ভার্য।ারাং দীর্ঘতমস উত্থাপুত্রাৎ সকাশাৎ অঙ্গাদরো জঞ্জিরে ॥

॥ 🕸 ॥ ইতি নবমে ছাবিংশ ॥ 🗰 ॥

জ্মোবিংশে অমু, জ্রুত্থা তুর্বহর বংশ এবং জ্যামোবের উৎপত্তি পর্যান্ত ষত্ত্বংশের বিবরণ॥•॥
তেকদেব কহিলেন অমুর তিন সন্তান সভানর, চকু এবং পরেকু ॥ > ॥

তশাধ্যে সভানরের পুত্র কালনর, তাহার তনয় স্থায় হইতে জনমেজয় জন্মেন। জনমেজয়ের পুত্র মহাশাল, তাহার সন্থান মহামনাঃ ॥ ২ ॥

মহামনার ছই পুত্র উশীনর এবং তি জিকু। তন্মধ্যে উশিনরের চারি তনয়, যথা—শিবি, বর, কৃষি এবং দক্ষ। ইহাদের মধ্যে শিবি হইতে র্যাদর্ভ, ক্বীর, মত্র, কেকয়, এই চারি দন্তান উৎপন্ন হর। তিতিকুর পুত্র ক্রয়ত্ত্ব। তাহার তনয় হোম, তৎক্ত ত্তপাঃ। ত্তপা হইতে বলি উৎপন্ন হন। ঐ বিলয় কেতে দীর্ঘতমা হইতে অঙ্গ অঙ্গ কলিঙ্গ প্রত্তি এবং শুন্ত পুত্ত তা নামে বহু নরপতি উৎপন্ন হয়েন। তাহারা ব ব নামে ঐ ছয় জনপদ এবং প্রাচ্যদেশ ককল ঘ ব বিলয় করিয়াছিলেন। পরস্ত

খলপানোহঙ্গতো যজে তথাদিবিরপ শুড়। হাতো ধর্মরথো যক্ত যজে চিত্ররপোহপ্রক্ষঃ।
বোমপাদ ইতি থ্যাত স্তব্যৈ দশরপঃ দথা। শান্তাং স্বক্তয়ং প্রাযক্তদ্যা শৃঙ্গ উবাহ যাং।
দেবে বর্ষতি যং রামা আনিমুার্চরিশীস্থতং। নাট্যসঙ্গীত বাদিত্রৈব্রিজ্ঞমালিঙ্গনার্হ গৈঃ।
সভু রাজ্ঞোহনপত্যক্ত নিরূপ্যেষ্টিং মরুত্বতে। প্রজামদাদশরপো যেন লেভেহপ্রক্ষঃ প্রকাঃ।
চতুরস্যো রোমপাদাহ পৃথুলাক্ষন্ত ভহস্তঃ। বৃহদ্রথো বৃহহ্কর্মা বৃহদ্ধানুশ্চ তহম্বতাঃ।
আদ্যাব হ্লানাস্থ্যাত্জয়দ্রথ উদাহ্যতঃ। বিজয়ন্তক্ত সংস্কৃত্যাং তত্যে প্রতিরক্ষায়ত।
তেভাপ্তত্রতন্তক্ত সহকর্মাদিরপিস্ততঃ। যোহসো গঙ্গাতটে ক্রীড়ন্ মঞ্ঘান্তর্গতং শিশুং।
কুন্ত্যাপনিদ্ধং কানীন্মনপত্যোহকরোহ স্তব্য। ব্যদেনঃ স্থতন্তক্ত ধর্মন্তবিপ্রে।
ক্রেছাশ্চ তন্যো বক্তঃ গেতুন্তক্তাভালস্ততঃ। আরক্তক্ত গান্ধারন্তক্ত ধর্মন্তবিপ্রে।
প্রক্তি কুর্মান্তব্যাহ প্রচেতাঃ প্রাচেতদংশতং। মেক্ডাধিপতায়াহস্ক্রদুদীচীং দিশমাঞ্জিতাঃ।

श्वीविधनाथठळावकी ।

বিষয়ান্ গেশান্। প্রাচ্যকান্ ভারতবর্ষত পূর্কদিয়বিনঃ ॥ আদ্যাৎ বৃহত্তবাৎ ॥ অপবিদ্ধং লক্ষ্যা ভারতং ॥ ফ্রংছো র্যাভিপুত্রত ॥

বলির অঙ্গ হইতে থলপান নামে যে পুত্র জন্মিয়াছিল তাহার তনয় দিবিরথ, তাহা হইতে চিত্ররথ উৎপন্ন হয়েন। তিনি নি:দস্তান, বোমপাদ নামে খ্যাত ছিলেন। তাঁহার দ্যা দশরণ, তাঁহাকে পুত্রার্থ শাস্তা নাল্লী নিজ কন্যা দান করিয়াছিলেন। ঋষাশৃঙ্গ মুনি দেই কন্যার পাণি গ্রহণ করেন। হে ताकन्! (तामशान ताकात तारका त्कान कातरा किय़ काल रावका वाति वर्षन करत्रन नारे, छारा छ রাজার অমুমতিক্রমে বরাঙ্গনাগণ তপোবনে গিয়া গীত বাদ্য নাট্য এবং বিজম বিলাস তথা আলিজন, कर्रण (यार्ग श्रायिक कानमन करता। श्रायान्य का जानमन मार्क वाति वर्षण एम। कनस्त के म्नि রাজাকে অনপত্য দেখিয়া যজাতুর্জান পূর্বক তনয় প্রদান করেন। দে যাহা হউক,রোমপাদ হইতে চতু-রঙ্গ উৎপন্ন হয়েন। তাহার সন্তান পৃথুলাক,পৃথুলাক হইতে ব্রহ্রেথ,ব্রহৎকর্মা এবং বৃহন্তানু এই তিন পুত্র উৎপদ্ম হয়। তাহাদের মধ্যে অদ্য হইতে বৃহম্মনা জন্মেন। তাঁহার তনন্ন জয়দ্রথে,জয়দ্রথের পুত্র বিজয়। তাহার সম্ভৃতি নালী ভার্যায় ধৃতি লম গ্রহণ করেন। ধৃতির পুত্র ধৃতত্তত, তাহার পুত্র দৎকর্মা, তাহা হইতে অধির্থির উদ্ভব হয়। এই ব্যক্তিই গঙ্গাতটে ক্রীড়া করিতে করিতে কুত্তি কর্তৃক পরি-ত্যক্ত মঞ্যার মধ্যে কানীন শিশু প্রাপ্ত হইয়া আপনি অনপত্য এ প্রযুক্ত ভাহাকে নিজ ভনর করিয়া-ছিলেন। হে রাজন্। ঐ তনয়ের নাম কর্ণ, তাহার সন্তান র্ষসেন। যথাতির পুত্র ফ্রন্থার তনয় বজ্ঞ। তাহার তনঃ সেতু। সেতুর সন্তান আরক। তাহার হত গান্ধার, তৎপুত্র ধর্ম, তাহা হইতে ধৃত উৎপন্ন হয়েন। প্রতের হত ভুর্মান, তাহা হইতে প্রচেতার উপ্তব হয়। ঐ প্রচেতার শভ সন্তান, তাহার। উত্তর্গিকে অবস্থিত হইয়া স্লেচ্ছাধিপতি হইয়াছে। তুর্বহুর সন্তান বহ্নি, ভাহার হুত বর্গ,

তুর্মদোশ্চ হতো বহ্নিবহৈ উর্গোহ্য ভালুমান্। ত্রিভালুন্তই হডেছিক্সালি করমমন্তদারধীঃ ॥৩॥
মক্রন্তই হতেছিপুত্রঃ পুত্রং পোরবমন্তই । ছল্পমান পুনলে তি করংশং রাজ্যকামূকঃ ।
যযাতে র্জ্যেন্ত্রক্ত ষলোর্কংশং নরর্বভ । বর্ণরামি মহাপুন্তং সর্বাপাপহরং মৃণাং ।
যদোর্কংশং নরঃ শুদ্রা সর্বাপাপেঃ প্রমৃচ্যতে । যত্রাবতীর্ণো ভগবান্ পরসাল্ধা মরাক্তিঃ ॥ ৪ ॥
যদোং সহস্ত্রিভ ফেলা রিপুরিভি শুভাং । চন্ধারঃ সূনবন্তর শতক্তিৎ প্রথমাল্পন্তঃ ।
মহাহয়ো রেপুহয়ো হৈহয়শেচতি ভৎক্তাঃ । ধর্মন্ত হৈহয়্মহতো নেতঃ কৃত্তিপিতা ভতঃ ॥ ৫ ॥
সেহাহয়িরিভবৎ কৃত্তে মহিল্মান্ ভদ্রসেমকঃ । জ্র্মাদো ভদ্রসেমকঃ ধমকঃ কৃত্তবির্যাস্থ ।
কৃত্যামিঃ কৃত্বর্মান্ন ক্রেলারাজ্যাঃ । মর্জ্বরঃ কৃত্ববির্যাক্ত গতিং যাস্তি পার্থিরঃ ।
দতাত্রেয়ান্নরংশাৎ প্রাপ্তযোগমহান্ত্রিং । ন নুনং কার্ত্বীর্যাক্ত গতিং যাস্তি পার্থিরঃ ।

विवद्यामी।

স হ্মতঃ অং ৰংশং পৌরবৰংশং ৪ ৪ ॥ প্রথমস্য সহস্রজিতঃ আত্মজঃ ৪ ৫ ॥ সোহজে ম হিমান্ মহিমতো জন্তঃনকঃ জন্য হুর্মনোগনকংশুভি বৌ পুত্রৌ কুত্রীয়াগ্য জনকঃ । কুত্রীয়াগ্যশুভিয়ারে।

ক্রমগলর্জঃ।

প্রাচেত ইত্যত্র প্রচেত্র ইতি বাচাং ॥ ১। ২। ০। ৪। ৫। ৬। १। ৮।

क्षीविश्वनाशिकवारी

তুৰ্বদো ধৰাভি পুত্ৰত ॥ ৩ ।

অপ্ত: অত্থৰ পেট্ৰৰং প্কৰংশাং ছয়স্তমেৰ প্ত: অৰভূহ। সচ ছয়স্ত: অৰংশং পেট্ৰৰ বংশমেৰ ভেজে নতু তুৰ্সন্তৰংশং। যতো রাজ্যকামুক: পুক্ বংশাানামেৰ নৃপাসনাধিকারাং ।

নরাকৃতি নরিবর্জণো নরজাতি কেতি চাকৃতি শক্ত অরপ্যাচিতে জাতি যাচিতে বা প্রমাত্মনো নর্ভত ন ডাট্ডাং কিছু অরুপ্ স্বেব জাপিতং। গুঢ়ং পরং এর্জ মহুষা বিক্ষিভানেন জাপিত ম্থোপি আপ্রিষ্ঠতে ৪৪॥

তন্ত্রপেশত চুর্জনোধনকণেতি হৌ পুত্রৌ তর ধনকঃ ক্বতনীর্য্যদ্বিতি ধনকত ক্বতনীর্য্যা পুত্র:। তথা ক্রডার্যান্যস্তমণেতি চ্যার: পুত্রা:। 🛊 ।

নতু হ্যাতি শাপাৎ স ব্যুবংশঃ কগং সপ্তৰীপেশ্বর অতাই দভেতি ॥ ७ ॥

তাহা হইতে ভাতুমানের জন্ম হয়। ভাতুমানের হতে তিভাতু, তাহার তনয় উদারমতি করন্ধন ॥ ০ ॥

করম্বের পুত্র মরুত্ত তিনি অপুত্রতা প্রযুক্ত কুরুবংশীয় হুসন্তকে তন্ম করেন, সেই হুসন্ত রাজ্যা-ভিলাষী হইয়া পুনরায় আপনার পৌরব বংশ লাভ করিয়াছিলের। হে কুরুপ্রেষ্ঠ। অতংপর য্যাতির জোঠতন্ম যতুর বংশ বর্ণনা করি অবধান কর, ঐ বংশ অতিশয় পবিজ্ঞ মান্য মন্তলীর অশেষ কলুষ নাশক, ফলতঃ যতুবংশ প্রবণ করিলে মান্য মাত্রে সর্ব্ব পাপ হইতে মুক্ত হয় ঐ বংশে ভগণান্ প্রমাস্মা নরাকারে অবতীর্ণ ইইয়াছিলেন ॥ ৪ ॥

যত্ত্ব চারি সন্তান হয়, সহস্রজিৎ, ক্রোন্ট্রু, নল এবং রিপু, তথাধ্যে সহস্রজিতের সন্তান শতজিৎ। তাঁহার তিন পুক্র সহাহয়, রেণ্হয়, এবং হৈহ্ম। তাহাদের মধ্যে হৈহ্যের হত ধর্ম, তাহার পুক্র নেত্র, তৎহত কুন্তি। ৫॥

কৃতি হইতে গোহঞ্জি উৎপন্ন হয়েন। তাঁহার পুত্র মহিলান্, ততন্য ভদ্রদেন। ভদ্রদেনের ফুই সন্তান ফুর্মাণ ও ধনক। তথাধ্যে ধনকৈর সন্তান কৃত্বীর্যা, কৃত্বর্মা এবং কৃত্তোজা এই চারি। ভাহাদের সধ্যে কৃত্বীর্যাের পুত্র অর্জন। তিনি স্প্রীপের অধীশ্বর হইরাছিলেন এবং ভগ্রণংশ দতা- যজ দান তপোযোগৈ: প্রুত্তবিশ্বাদি ভি: ॥ ৬॥
পঞ্চাশীতি সহস্রাণি হ্বরাহতবল: সমা:। অনকীবিত্তমারণো বৃভুজেহক্ষয়রড বৃহ ।
তক্ষ পূক্রসহস্রের পকৈবোক্ষিতামধে। জয়ধ্বজ: শ্রসেনো র্ষণোমধ্রিজিত: ॥ ৭॥
তয়ধ্বজাতালজ্জবস্তম্য পুক্রশতং তৃত্থ। ক্ষরেং যতালজ্জাখ্যমৌর্কতেজোহপদংহতং॥ ৮॥
তেষাং জ্যেটোবীতিহোত্রো রুফিঃ পুর্লোমধোঃ স্মৃত:॥ ৯॥
তদা পুক্রশতং ত্বাদীদ্ফিজ্যেষ্ঠং যতঃ কুলং। মাধবার্ফমো রাজন্ যাদবাশেচতি সংজ্ঞিতং।
য়হপুক্রস।চ ক্রোফো: পুর্লো বুজিনবাংস্ততঃ॥ ১০॥
স্বাহিতোহতো বিশদ্ভ বৈ তদ্য চিত্রবণস্ততঃ। শশবিক্ষুর্যহাযোগী মহাভাগো মহানভূথ।

श्चिभव्यामी।

ধনক্ষ্যাত্মকা ইভার্থ: ॥ ৬ ॥

অন্ত্রমণি নাশং বিতঃ যেন তথা বিখং শ্বরণং বঞ্সঃ অক্ষাং বড়্বসু বড়িক্সির বিষয়ং বুভুজে ॥ ৭ ৪

ঔর্মান্ত তেজনা সগরেশোপসংস্তুমিভার্থ: ॥৮ ॥

(७वाः ভावबन्य পুরাণাः (कार्वः । ৯ ॥

ভক্ত মধো: পুত্রশতং বৃঞ্চিজে।টো যশ্বিন্ যতোমধোর ফের্গদোশ্চ হেভো: । ১০ ॥

চতুর্দণ মহারতানি ভত্তজ্জাতি শ্রেষ্ঠানি যক্ত সং। তানিচ মার্কণ্ডেরপুরাণে বর্ণিতানি। গল বালি রপ স্তারু নিধি মালাহর

ক্রমসন্দর্ভ:

ভেৰামিতি দাৰ্দ্ধকং। তে চ মাধৰা ইত্যাদি সংক্তিতা ইতাৰ্থ: । ৯। ১০। ১১। ১২।

वीविधनाभहक्त्वती ।

ন নটং ভৰতি বিভঃ শ্বরণাদবছ স:। অক্ষয়ং বড়ুসু বড়িজিয়ে বিষয়ং বুভুজে । মুধে পশুরিম যুক্তে ঔর্কছ তেজস। সগরেণোপসংজ্তমিতার্থ: ॥ ৭ । ৮ ॥

মংখারজ্জুন পুত্রত মাধবা ইতি যহ মধু বৃষ্ণয় এতে অন্ধঃ কুলপ্রবর্তকাং যহবংশো মধুবংশো বৃষ্ণিবংশ ইতি প্রসিদ্ধে: ॥ ৯ । ১ ০ ॥ চতুর্দশ মহারত্বানি ভত্তজ্ঞাতি প্রেঠানি বতা সং। তানিচ গল বালি রপত্তীবু নিধিমালা। হর ক্রমাঃ । শক্তি পাশমণি ছত্ত

ত্রেয় সকাশাৎ যোগগুণ প্রাপ্ত হন। বোধ হয় অভ্য কোন নরপতি যজ্ঞ দান তপভা যোগ বেদাধ্যয়ন এবং শৌর্ষা বীর্যা দয়াদি ছারা ঐ মহাত্মার গতি প্রাপ্ত ইতিত পারেন না॥ ৬॥

ঐ রাজা অব্যাহত পরাক্রম হইয়া পঞ্চাশীতি সহস্র বংসর পর্যান্ত অক্ষয় ছয় ইন্দ্রিয়ের বিষয় ভোগ করেন। তাহাতে কদাপি বিভ নাশ হইত না। ঐ অর্জ্নের সহস্র তনর হয়, তন্মধ্যে পাঁচ জন সংগ্রামে উর্বরিত হইয়াছিল, তাহাদের নাম জয়ধ্বজ, শুরসেন, রুষণ, মধু এবং উর্জিত ॥ ৭ ॥

তমাধ্যে জয়ধ্বজের পুত্র তালগুজা তাহার শত সন্থান হয়। তালজজাথ্য ঐ সকল ক্ষত্রিয়ই সগর কর্ত্বক উপসংহত হইয়াছিল॥ ৮॥

সে যাহা হউক, তালকাজের শত সন্তান মধ্যে বীতিহোতে জ্যেষ্ঠ। হে রাজন্! মহাত্মা র্কি যে মধ্র তনয় ॥ ৯ ॥

সেই মধ্র শত সন্তান হইয়াছিল। যদিও বৃষ্ণি ও যতুর কারণে মধ্র কুল মাধব, বৃষ্ণি এবং যাদব এই তিন নাম প্রাপ্ত হইয়াছিল তথাপি বৃষ্ণিই ঐ কুলে শ্রেষ্ঠ ছিলেন। সে যাহা হউক, যতুর পুত্র জোষ্ট্র, তাহার পুত্র বৃজ্জনবান্॥ ১ • ॥

ব্লিনবানের পুত্র স্বাহিত, তাহার তন্ধ বিশক্ষা ত্রহত চিত্ররণ, তাঁহা হইতে মহাযোগী মহাভাগ

চতুর্দিশ মহারত্বশত্তরে বর্ত্তাপরাজিত: ॥ ১১॥

ত্ন্য পদ্ধীদহস্রাণাং দশানাং হ্মহাযশা:। দশ লক্ষ দহস্রাণি পূজাণাং তামজীজনং ॥ ১২ ॥
তেখাস্ত ষট্ প্রধানানাং পৃথ্ঞবদ আত্মজঃ। ধর্মে। নামোশনা তক্ত হয়মেধশতক্ত যাট্ ॥ ১০ ॥
তংহতোক্রচক স্তক্ত পঞ্চামনাত্মজাঃ শৃণু। পুক্ষজ্ঞিক ক্লের্ পৃথু জ্যামঘ সংক্ষিতাঃ ॥ ১৪ ॥
ভ্যামঘন্ত্রপ্রভাহপ্যন্যাং ভার্যাং শৈব্যাপতির্ছয়াং । নাবিন্দহক্ত ভবনান্তোজ্যাং ক্লামহার্ষীং ।
রথস্থাং তাং নিরীক্ষাহ শৈব্যাপতিমসর্বিতা। কেয়ং কৃছক মংস্থানং রথমারোপিতেতি বৈ ॥১৫॥
সুষা তবেত্যভিহিতে প্রয়ন্তী পতিমত্রবীং । ভাহং বন্ধ্যাসপত্নীচ সুষা মে যুক্তাতে কথং ॥ ১৬ ॥

बीरद्रयामी

क्षमाः। भक्ति भाग मणिक्व विमानानि हर्ज्यत्मिक । ১১ ।

দশানাং পত্নী সহস্রাণাং ভার্যাব্তক্ত প্রতোকং লক্ষ্যিভোবং ভাস্থ প্রাণাং দশ লক সহস্রাণি জনস্বামাস । ১২ । পৃথ্যবাং পৃথ্কীর্ষি: পুণাষশা ইত্যাদমং ষট্ প্রধানাং শ্রেষ্ঠা বেবাং তেবাং মধ্যে । ১০ । পঞ্জাম্বালা আসন্ তান্ শৃণ্ তানেবাহ প্রকলিবিভি । ১৪ ।

ভার্য্যাভয়াদেটবক ভার্যাস্য বন্ধ্যাপতে জনাম্বভাপুত্রভ ভত্তরমেব পুত্রপ্রদম্ভবদিতি দর্শহরাহ জ্যাম্বন্ধিতি। ১৫ । বদি মে সপদ্ধীভাত্তহি সুবেরং যুজাতাপি নজেড্রন্ডীত্যাহ অসপদ্ধীচেতি। ১৬ ॥

ক্রমসন্দর্ভঃ

विष्ठे अधानानि (ययाः। क्रीर्व अधानियकामतः॥ २०। २८। १८। १५। २१। १४।

প্রীবিশ্বনাথচক্র বর্তী।

ৰিমানানি চতুর্দশেতি মার্কণ্ডেয়েক্তানি জেয়ানি । ১১॥

দশলক সহস্রাণীতি ভাস্প প্রচ্ছোক মেকৈক লকপুরোভবাৎ । ১২ ॥

ভক্ত ধর্মক উপনা: । ১৩। ১৪। ১৫।

অসপত্নী মম কাচিৎ সপত্নাপি নাতি ৷ ১৬ ৷

শশবিন্দুর উদ্ভব হয়। তিনি তত্তৎ জাতির শ্রেষ্ঠ চতুর্দশ মহারত্বের (হন্তি, অম্বরণ, স্ত্রী, বাণ, নিধি, মালা, বস্ত্র, স্বন্ধ্য, শক্তি, পাশ, মণি, ছত্ত, ও বিমান ইত্যাদির) স্বামী এবং অপরাজিত রাজচক্রবর্তী ছিলেন ॥ ১১॥

তাঁহার দশ সহস্র পত্নী প্রত্যেক পত্নীতে এক এক লক্ষ্ণ সন্থান হওয়াতে তাঁহা ছইতে দশ সহস্র লক্ষ্ সন্থান উৎপন্ন হয়॥ ১২॥

সেই সমস্ত পুত্র মধ্যে পৃথুপ্রবা, পৃথুকীর্তি, পুণ্যযশা ইত্যাদি ছয় জন প্রধান ছিল। তাহাদের মধ্যে পৃথুপ্রবার সন্তান ধর্ম, তাহার পুক্র উশনা, তিনি শত অখ্যেধ যত্ত করেন ॥ ১৩॥

উশনার আত্মত রুচক। তাঁহার পঞ্চ তন্ম যথা—পুরুজিৎ রুল্ধ, রুজেষু, পূথু এবং জ্যামঘ॥ ১৪॥
ইহাদের মধ্যে জ্যামঘের ভার্যা শৈব্যা। জ্যামঘ নিঃসন্তান ছিলেন। ভার্যার ভয়ে অস্ত দার পরিগ্রহ করেন নাই। তিনি একদা ইস্তভ্যন ইইতে ভোজ্ঞা নাল্লী একটা ক্লা হরণ করিয়া আনিতে
ছিলেন, সেই ক্সাকে রুপ্তা ঘেথিয়া শৈব্যার জোধ জ্পাল, অমর্থিতা হইয়া পতিকে জিজ্ঞানিলেন
একে ? কাহাকে রুপে আরোহণ ক্রিয়া আনিতেছ ?॥ ১৫ য়

क्यामच ভয়ে गाकूल इहेमा উত্তর দিলেন ইনি তোমার সুষা, শৈব্যা বিশামাখিতা হইমা কহিল

জনিয়িষ্যসি যং রাজ্ঞি তদ্যেয়মূপযুজ্যতে। অষমোদন্ত তিহিখেদেবা: পিতার এবচ ॥ ১৭ ॥
শৈব্যা গর্জ্মধাৎ কালে কুমারং শুশুভে শুশুং। স বিদর্ভ ইতি প্রোক্ত উপযেমে সুষাং সভীং ॥ ১৮
ইতি শ্রীভাগবতে মহাপুরাণে পারমহংক্সাং সংহিতায়াং বৈয়ালিক্যাং নবসক্ষরে যতুবংশ কথনে
ক্রোবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ॥ ২৩ ॥ ॥ ॥

গ্ৰী শুক উবাচ॥

তম্মাং বিদর্ভোহন্তনমং পুরো নামা কুশক্রথো। তৃতীয়ং রোমপাদঞ্ বিদর্ভকুলনক্ষনং। রোমপাদম্বতো বজ্রবজাঃ কৃতির লায়ত । ১॥

शिवत्रश्मी।

অতিজয় বাকুল হদয়েৰিঙবাস্থা সগলাদমাহ জন্মিবাসীতি ভার্ডাভয় প্রকল্পমানস্থিয় সর্কাশত মোম্ছ্মানত প্রায়ন মতিলবতো রাজ্য প্রাণ স্ক্টিমালেক্যায়কল্পমা তেন বহকালং পূর্বমারাধিতা বিখেদেবাঃ শিত্রশত তথাছিওঃমনোদত ॥ ১৭ ॥ ততো দেবতা প্রসাদেন জন্মিবাণীতি প্রতিষ্চনেন মুহূর্ত ভাগেনত মিরুত রজহাপি শৈবা। গর্ভমধাৎ। ততা চাসাধারণো মহিমা প্রাশরাদিভিক্ক:। যথোকাং ভার্যা ব্যাশত যে কেডিছবিবাস্থ্যেশ্বা মৃতাঃ। তেরাক্ জ্যাম্যঃ শেক্ষি শৈবাণতিরভ্স্পাঃ ইতি ॥ ১৮ ॥

॥ * ॥ देखि मदाम खरवादिः भः ॥ * ॥

চতুর্বিংশে বিদর্ভগ্য পুত্রত্ত্ব সমৃত্তবাঃ। বংশা নানামুধাঃ প্রোক্তা রামক্তকোত্তবাবধি ॥ ১ ॥

TRESPOS!

॥ । । ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তদ্ধে শ্রীজীবগোশ্বামিক্ষত ক্রমসন্দর্ভসা অন্নোবিংশোছ্গ্যার: সমাপ্ত: ॥ । ॥

बिवियमाप हक्त वर्षी।

অভিভর ব্যাকুলমার। জনরিবাসীতি ভাগাাভয় প্রকম্পিতবির সর্কাক্ত তত্ত রাজঃ প্রাণিকটমালক্ষ্য তদেব বচনং রূপর। অধ্যোদক্ত সভাং চক্রঃ বিখেদেবাঃ। পূর্কং ভেন বহুশ আরোধিতা ইতি ভাবঃ ॥ ১৭ ॥

নিবৃত্ত রজজাপি শৈবাা ভেষাং কুপরা গ্রমধাং। ভাষাবেশ্যান্ত যে কেচিত্তবিধাত্তাথবা মৃতাঃ। তেৰাং ভূজ্যামৰং শেষ্ঠঃ শৈব্যাপতিরভূর্প ইতি প্রাশ্রাদ্য আহে: ৫ ১৮ ৪

আমি বন্ধা আমার সপত্নীও নাই, আমার সুষা এ কথা কি প্রকারে যুক্ত হইল ? ॥ ১৬ ॥

জ্যামঘ কহিলেন হে রাজ্ঞি! তুমি যে তনয় উৎপদ্ধ করিবা ইনি তাহার পত্নী হইবেন। হে রাজন্! বিশ্বদেব এবং পিতৃগণ জ্যামবের ঐ বাক্যে আনন্দ প্রকাশ করিয়া ছিলেন ॥ ১৭ ॥

সে যাহা হউক, ভদনন্তর শৈব্যার গন্তাধান হয় এবং ঘথাঘোগ্য কালে ভিনি একটা কুমার প্রসব করেন, দেই কুমার বিদর্ফ এই আখ্যায় বিখ্যাত হইয়া পরে ঐ সাধ্বী স্কুষার পাণি এহণ করিয়া ছিলেন ॥ ১৮ ॥

॥ # ॥ देखि नवत्म ख्रांविः ण ॥ # ॥

্চতৃকিংশতি অধ্যায়ে রানকৃষ্ণের উদ্ভব পর্যন্ত বিদর্ভ পুত্রব্রেছে। পদ বিবিধ বংশ ॥ • ॥ শুকদেব কহিলেন বিদর্ভ দেই সুষার গর্প্তে কুশ ও ক্রাথ নামে সুই সন্থান উৎপন্ন করেন। উহিদি ভূতীয় তনয় রোমপাদ ঐ রোমপাদের হস্তেবজ । বিদ্ধা হইতে কৃতি জন্ম গ্রহণ করেন ॥ ১ ॥ উশিকসংস্তস্তাচেদি চিদ্যাদয়ে। নৃপাং। ক্রথক কৃষ্টি পুজোহস্ত্ ফিন্তস্থাধ নির্বিতঃ।
ততো দশার্হোনামাস্ত্রক ব্যোনং স্তত্তঃ। জাম্তো বিক্বতিত্বক যক্ত ভামরখং স্তঃ॥ ২॥
ততো নশ্রথং পুজোজাতো দশরধন্তঃ। কর্ষিঃ শক্নেঃ পুজোদেবরাতন্তদাত্মকঃ॥ ০॥
দেবক্ষত্রতিত্বক মধ্য ক্রুবশন্তঃ। পুরুহোত্রতনাং পুজন্তকায়ুং সাত্তন্তঃ॥ ৪॥
ভক্ষমানো ভজিদিবো র্ফি দেশার্ধোহককঃ। সাত্তক্ত হুতাঃ সপ্ত মহাভোকশ্চ মারিষ।
ভক্ষমানক নিমোচিঃ কিন্তাগে ধৃষ্ঠিরেবচ। এককামাজ্বাঃ পত্রামক্তকাঞ্চ ক্রোঃ হুতাঃ।
শতক্ষিচ সহআজিদ্যুতাজিদিতি প্রভো। বক্রুদেবার্ধস্তন্তরোঃ ক্লোকে পঠন্তামু।
যথৈব শৃণুমোদ্রাৎ সংপ্রামন্তথান্তিকাৎ। বক্রু প্রেচি মনুষ্যাণাং দেবৈদ্বির্ধঃ সমঃ॥ ৫॥

व्यवस्थामी ।

र्टे 5 महा न द्यां प्रमाण विश्व । । २ ॥

ততো দশরপাৎ শকুনিঃ পুরাণাস্তরাদেরমাদির্বিশেখো জইবাঃ ॥ ৩ ॥

ভত: কুকবংশাদর: অনো: পুত্র: পুরুহোর: ॥ । ॥

মহাভোজশেচভোবং সপ্ত মারিষ হে আর্বা॥ ৫ ॥

ক্ৰেমসন্দৰ্ভ:

বলোরিভার্কং শ্লোকং পঠস্তামুখিতি কচিং,। এতক্ষতেতৃত্তর শ্লোকং শ্রীভকবাক্যমেব ॥ ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । ৯ ॥ ॥ ১ • । ১১ । ১২ । ১৩ । ১৫ । ১৬ ॥

শ্ৰীবিখনাথচক্ৰবতী ।

তিল্যান্ম: দম্বোষাদ্ম: ॥ ২ ॥
ক্রেপস্থ বিদ্পুত্রক ॥ ৩ ॥
তক্ত মধু: ক্রনংশশ্চ। ততঃ ক্রেন্শাদ্ম: ॥ ৪ ॥
সাত্তপুত্রস্ত দেবাবৃধ্স স্তোবক্ত: তরো: শিতা প্রয়ো: ॥ ৫ ॥

ক্বতির তনম উশিক, তাহা হইতে চেদি ও চৈদ্যাদি নরপতির উৎপতি হয়। হে রাজন্! বিদর্ভ তন্য ক্রেথের পুত্র কৃত্তি। তাহার আত্মজ রুফি। তৎহতে নির্তি। তাহা হইতে দশার্হ নামা তন্য হয়। দশার্হের আত্মজ ব্যোম, তাহার হত জীমৃত, তৎহত ভীমর্থ ॥ ২ ॥

ভীনরথ হইতে নবরথ জন্ম গ্রহণ করেন, তাহার হত দশরথ। দশরথের তনয় শক্নি, তাহার তনয় করন্তি। করস্তির পুত্র দেবরাত ॥ ৩ ॥

দেবরাতের তনয় দেবক্ষত্র। তাহার পুত্র মধু। তাহা হইতে কুক্ষবশ উৎপন্ন হয়, কুরুবশের হত অসু, তাহার পুত্র পুত্রহোত্র, তৎ হত আয়ু, তাহা হইতে দাছতের উদ্ভব হয়॥ ৪ ॥

হে আর্যা! সাত্তের সাত সন্তান, তাহাদের নাম যথা—ভজমান, ভজি, দিব্য, র্ফি, দেবার্ধ, আরক এবং মহাভোজ। তন্মধ্যে ভজমানের ছইপত্নী, এক স্ত্রীতে নিয়ে।চি, কিঙ্কন এবং ধৃষ্টি এই তিন সন্তান, অন্য বনিতাতেও শতজিৎ সহস্রাজিৎ এবং অযুতাজিৎ এই তিন সন্তান হয়। রাজন্! দেবর্ধর সন্তান বক্ত,ভাহাদের পিতা পুত্রের প্রসঙ্গে কবিগণ ছই শ্লোক গান করিয়া থাকেন, যথা "আমরা দুর হইতে যজ্ঞপ শুনিতে পাই নিকটে তজ্ঞপ দর্শনিও করিয়া থাকি, মহান্থা বক্ত মানবর্গণ মধ্যে প্রেষ্ঠ আর দেবার্ধ রাজা দেবতার সমান ॥ ৫ ॥

পুরুষা: পঞ্চ ষষ্টিশ্চ ষট্ সহস্রাণি চাইচ। যেহমুত্রসমুপ্রাণ্ডো বজার্দ্ধবার্ধাদপি।
মহান্ডোকোহতি ধর্মান্ত্রা ভোজা আসংস্তদময়ে। মৃষ্ণের শ্বমিত্রঃ পুরোহস্প্রমুধাজিক পরস্তপ ॥৬
শিমিন্তস্থানমিত্রশ্চ নিম্নোহস্দ্রমিত্রতঃ। স্ত্রাজিতঃ প্রসেনশ্চ নিম্নতাথাসতঃ হতে।।
অন্সিত্রহুতো যোহস্থঃ শিনিন্তন্ত্রচ সন্তর্জঃ। ৭ ॥
মুমুধানঃ সাত্যকিবৈর্ব জয়ন্তন্ত কুণিন্ততঃ। বুগল্লবোহন্সিত্রন্ত র্ফিঃ পুর্বোহপরস্ততঃ।
সফল্পশ্চিত্রর্থশৈচ্ব পাদ্ধিন্তান্ত সফল্লতঃ। ৮ ॥
আন্তর্প্রমুধা আসন পুত্রা ভাগশ বিশ্রুতাঃ। আসন্তঃ সার্মেয়শ্চ মুমুরো মৃচ্রির্সিরিঃ।

অক্রপ্রমুখা আসন্ পুক্রা দাদশ বিশুজা:। আসঙ্গঃ সারমেয়শ্চ মৃত্রো মৃত্রিপিরি:। ধর্মবৃদ্ধঃ স্বৰুদ্ধাচ কর্ত্তোপেকোহরিসর্দনঃ। শক্রুছো গন্ধমাদশ্চ প্রতিবাত্শ্চ দাদশ। তেষাং স্বসা স্ক্রারাণ্যা দ্বাবক্রুরস্তাবপি ॥ ৯ ॥

শ্রীগরস্বামী

তত্ত্পদেশেন যে পঞ্ ষ্ঠাাদি সংখ্যাং পুক্ষাতেহ্যুতবং মোক্ং প্রাপ্তাঃ ॥ ৬ । তত্ত্ব সুধাজিতঃ শিনিরনমিত্র চ ॥ ৭ ॥ সাত্যকিং সত্যকত্ত পুত্রো সুযুধানত্তত্ত অয়ং তত্ত কুণিং ততঃ কুণে যুগকরঃ। অনমিত্রতৈষাপরং বৃষ্ণিন শি পুত্রঃ ॥ ৮ ॥ অক্রের প্রমুখো যেষাং ইতাতদা শুস্বিজ্ঞানো বহুত্রীহিং অতেছিকের ব্যতিরিক্তান্ হাদশ দশ্যতি আসক ইতি ॥ ১ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাপচক্ৰবন্তী ।

ৰজোৱিতি ৰক্তদেবার্ধয়ো: সঙ্গপ্রভাবাবিতার্থ:॥ বুফো: সাহতপুত্রভা ৬ । ৭ ॥ সাত্যকি: স্তাক্ত পুত্রো যুষ্ধান:। অন্মিত্তইভবাপরোর্ফি নামপুত্র:। অকুর: প্রতিধা থেবামাসভাদীনাবিতাতদপুশ সংবিজ্ঞান বহুবীহি: ॥ ৮ । ৯ ॥

ঐ বংশে পঞ্চ ষষ্টি এবং ষট্ সহত্র তথা অই সংখাক্ যে সকল পুরুষ হইয়াছিলেন, ভাঁহারা বত্র ও দেবার্ধ হইতে অর্থাৎ তাহাদের উপদেশে মোক্ষ প্রাপ্ত হন্"। সাহতের সন্তান মহাভোজ অতিশয় ধর্মাত্রা ছিলেন। তাঁহার বংশে ভোজগণের উদ্ভব হয়। হে পরন্তপ! সাত্তপুত্র র্ফির ছই তন্য হ্মিত এবং যুধাজিৎ॥ ৬॥

তমধ্যে যুধাজিতের সন্তান শিনি এবং অনমিত্র। তাহাদের মধ্যে অনমিত্রের তনয় নিছ। তাহার ছুই সন্তান স্তাজিৎ এবং প্রসেন। হে রাজন্। অনমিত্রের শিনি নামে অন্য এক পুত্র ছিল তাহার তনয় স্বত্যক ॥ ৭ ॥

সেই সত্যকের পুত্র যুযুধান, তাহার সন্তান জয়। জয়ের আত্মজ কৃণি। ঐ কুণি হইতে যুগন্ধরের জয় হয়। হে কুরুবর্যা। অনমিত্রের বৃঞ্জিনামে অপর এক তনয় ছিল। তাহার হত সকল, তাহা হইতে গান্ধিনীর গর্ভে॥৮॥

অক্র ভিন্ন আর দাদশটা বিখ্যাত সন্তান জন্মে, যথা,—আসঙ্গ, সারমেয়,মূত্র,মূত্রি, গিরি, ধর্মরুদ্ধ, স্থকর্মা, ক্ষত্রোপেক্ষ, অরমর্দন, শক্রত্ম, গন্ধমাদন এবং প্রতিবাহ, অপর ইহাদের স্থচারা নামী এক ভগিনী হইয়াছিল। সে যাহা হউক, অকুরের স্ট্রুপুত্র হয়। ১॥ দেববামুপদেবশ্চ তথা চিত্ররথাজ্ঞা:। পৃথুর্বিদ্রথাদ্যাশ্চ বহুবো র্ফিনন্দনা:॥ ১ ॥
কুকুরো ভজমানশ্চ শুচি: কমলবহি ধ:। কুকুরতা হুতো র্ফিবিলোমা ভনয়ন্তঃ।
কপোতরোমা ততামু: সধা যত্ত তুমুক্র:॥ ১১॥

भक्तकाम भू जिल्लामितिताजः शूनर्वसः। उण्याङ्क महाङ्कोह कणादिनाङ्कालाद्धाः। तमनकाम् । तमनकाम् । तमनकाम् । तमनकाम । तमनकाम

কংসঃ হ্নামা শ্রপ্রাধঃ কঙ্কঃ শঙ্কু: হৃত্তথা। রাষ্ট্রপালোহথ ধৃষ্টিশ্চ তুষ্টিমানোগ্রদেনয়ঃ ॥ ১৪ ॥ কংসা কংসবতী কঙ্কা শুরভূ রাষ্ট্রপালিকা। উগ্রসেনচূহিতরো বহুদেবাকুঞ্জন্তিয়ঃ ॥ ১৫ ॥

श्रीधत्रवामी।

পৃথুৰেক: বিদ্রধান্যা: আন্যেচ বহব:। পৃথুর্বিপৃথুদ্ধান্তান্যা ইতি পাঠে আন্য শক্ষেন বিদ্রধোহপুক্ত: তত চ শ্রোবিদ্রধা দাসীদিতি বক্ষামাণাতি নির্দেশোপণতি: ॥১০॥

কুক্রাদয় চড়ারোহজকত হতা ইতি জেয়ং। ধণাত প্রাশ্র: কুকুর জলমান গুচি কছলবৃহি রাখ্যা তথাজকতা পুতা ইতি ।১১ আনোরজক জজকালু স্ভিরিতঃপি ভয়চনাদেব জেয়ং। ১২ ।

धुक्राप्तवा व्यानिर्विदाः भाखित्ववानीनाः वद्याः छाः मश्च ॥ >० ॥

উগ্রেদেনমঃ উগ্রেদনম্য স্থতাঃ ॥ ১৪ ॥

বস্থদেৰদা বেহসুজা দেবভাগাদয় জেবাং প্রিরোভার্যাঃ । ১৫ ॥

এবিখনাপচক্রবন্তী।

চিত্ররথস্থ সফক ভ্রাত্রাত্মকা। ১০ ।

ব্যঞ্জনমিত পুত্রজ নদ্দনাঃ কুকুরাদ্যাঃ। বিষ্ণুপুরাণেওদ্ধক পুত্রাঃ কুকুরাদয়োদৃষ্টাঃ ৫ ১১ ॥

অন্ধাৎ সাঘ্যপত্রাৎ ॥ ১২ । ১৩ ।

र्खेश्वरमनम: উश्रदमनक शृक्षाः क मानमः ॥ ১৪। ১৫ ॥

দেববান্ ও উপদেব। চিত্ররথের পুজ্র পৃথু, তদ্তিম বিদূর্থ প্রস্থৃতি বহুতর সন্তান হইয়াছিল। তাহারা সকলেই র্ফিকুলনন্দন॥ ১০॥

অপর কুকুর, ভজমান, শুচি এবং কম্বলবর্হিষ এই চারিজন অন্ধক তনয়। তথাধ্যে কুকুরের হৃত রুফি,তাহার তনয় বিলোমা,তৎপুত্র কপোতরোমা, তাহার সন্তান অনু,তুমুরু ঐ অনুর স্থা ছিলেন॥১১

সে যাহা হউক, ঐ অমুর হতে অন্ধক,তাহা হৈ তৈ তুন্ত উৎপন্ন হয়। তাহার তনয় অবিদ্য। তৎ পুত্র পুনর্বাহা। পুনর্বাহার পুত্র আছক এবং কলা আহকী। তন্মধ্যে আছকের ছই তনয় দেবক ও উপ্রদেন। তাহাদের মধ্যে দেবকের চারি সন্তান দেববান, উপদেব, হুদেব এবং দেববর্দ্ধন ॥ ১২ ॥

ঐ চারিতনয়ের ধৃতদেবাদি সাত ভগিনী ছিল, যথা—ধৃতদেবা, শাস্তিদেবা, উপদেবা, শ্রীদেবা, দেবরক্ষিতা, সহদেবা এবং দেবকা। ঐ সাত কন্তাকেই বহুদেব বিবাহ করেন ॥ ১০ ॥

হে রাজন্। উঅসেনের সন্তান কংস, অনাম, অত্যোধ, কক্ষ, শকু, অন্ত, রাষ্ট্রপাল, ধৃষ্টি এবং তুর্ন্তিমান্ ১১৪ অপর, কংসা, কংসবতী, কক্ষা, শ্রস্থ, রাষ্ট্রপালিকা, এই পাঁচ কন্তা ইহারা বঅবেদবের অসুজ যে দেবভাগালি তাহাদিলোর ভার্যা হইরাছিল ॥ ১৫ ॥.

24

শূরো নিদূরপাদানাস্থনানপ্ত তৎস্তঃ। শিনিস্তথাৎ স্বয়ং স্ভেট্ডো হা'দকসংস্তোমতঃ॥ দেবমীচ্চ শতন্তঃ ক্তবর্গেতি তৎস্তাঃ॥ ১৬॥

দেবসীচুল পূর্ণ মালিল নান পুজ্তুং। জন্মাং স জন্মামাস দশগুলানকল্যাক্ ।
বস্তুলে দেবভাগে বেবভাগনাকে । স্তুমং শ্রামকং কল্পং স্মাকং বংশকং বৃক্ধ । ১৭ ॥
দেবভুক্তুলো নেত্রান্ত । বহু দেবং হলেং হলেঃ স্থানং ব্দন্তামকলুক্তিং ॥
পূথাচ শ্রুত্বিত শ্রুত্বিত শ্রুত্ব শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুতি । রাজাধিদেন তৈতেবাং ভগিনাঃ পাই ব্যুক্ত । ১৮॥
কুন্তেঃ স্থাঃ পিতাশুরে হগুলুত পৃথামদাং। সাপ হুক্লিব্যোবিদ্যাণ বেবহুতিং প্রতোষিতাং ॥

टे.धन्नथानी ।

আনুক্যা স্তানাং চত্রাং প্রথাদা ক্কুব্বা বংশ উকা বিজীয়্যা ভল্লান্য বংশবাহ শ্রো বিদ্রথাদিকি ভল্লানাচচ বিদ্রথা প্রাঞ্জিল বিদ্রথাদিক শ্র ইতি পরাশ্যাদিবচনাং। যবা পূল্লিদ্ববাৰণালেচাত প্রেলিকশিচ হরথায় আং বিদ্রথাং ॥ ১৬ ॥

দেবনীচ্দ্য যং শ্বেংনাম পুত্র ভদ্য দেবনীচ়ো জদিকদৈয়েব স্তঃ যপতে পরাশরং ভদ্যাপি কৃতবর্ষ শত্ধকু দেবনীচ়ু যাদ্যাঃ পুতা বভূবুং বেদমীচুষ্দ্য শ্বং শ্বদ্যাপি মারিব। নাম প্রাভূং ত্দ্যাঞ্গামৌ দশপুত্র।নত্নরং বস্থাবে পূর্বানিভি ॥ ১৭ ॥

আনকাশ্চ নেহ: হবে পাত্ডিবিসা স্থানং ॥ ১৮ ॥

পুপায়া: কন্যাবস্থায়াং কর্ণোৎপরিং প্রকাব্যাহ কুন্তেরিতি পঞ্জি: কদাচিলগৃহমাগতং ত্র্পাসসংপুণা পরিচর্গাদিনা ভোষ-

বস্থানবং হরে: স্থান মিতি স্বং বিশুদ্ধং বস্থানবশ্বিতং যদীয়তে তল পুমানপারত ইতি জীশিবোক্তদিশা বিশুদ্ধ সন্তমেব

ৰস্থাৰেবাধ্যং। তত তাদৰভাৰনেবৈভমানকহ্নুভিং বদস্তীভাৰ্থ:। আতা বিশেষ জিজ্ঞাসায়াং ভগবৎ সন্দৰ্ভোদৃশ্য: ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ঋষিসপ্ত ইতাতা ইতি শৰ্ম: ইতি পাঠ: স্বন্ধোতেলী স পূৰ্ব জন্মনি দিছে: সূত আসীৎ ইতি শৰ্ম: কিং বদস্ভীতি ব্যাধ্যানাৎ ॥১৯

क्षीवित्रमां पठक वर्गे ।

বিদ্রথাজিতারণপুত্রাং ॥ ১৬ ॥ স্থাদিকতা স্থাতা দেবনী চৃত্ততে শূর তাত মারিষা ॥ ১৭ ॥ হরে: স্থানং হরিষ্ এ প্রাছর্ভব ভীতার্থ: ॥ ১৮ ॥ তাম্ব মধ্যে পুলাং শূর তাৎ পিঠিতব ভবৈষা কন্যা তবস্থিতি কুব্তেঃ কুষ্ণমে স্থাণং ॥

হে রাজন্ ! পূর্বে চিত্রেরপাত্মজ যে বিদূরপের উল্লেখ করিয়।ছি তাহা হইতে শ্র জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার সন্তান ভজমান, তাঁহা হইতে শিনির জন্ম হয় । শিনির তনয় ভোজ, তাহার তনয় হাদিক, তাহা হইতে দেবসীঢ়, শতধনু এবং কৃত্বর্মা এই তিন ক্লন উৎপন্ন হয় ॥ ১৬॥

তমধ্যে দেবসীঢ়ের তনয় শুর। তাঁহার মারিষা নামে এক পত্নী ছিল। মারিষার গর্ত্তে শূর দশটী নিজ্পাপ তনয় উৎপন্ন করেন। তাহাদের নাম যথা বহুদেব,দেবভাগ,দেবতাবস্, আনক, স্প্রের,শ্যামক, কঙ্ক, সমীক, বৎসক এবং রক ॥ ১৭॥

হে রাজন্। বস্তদেবের জন্ম কালীন অর্গে দেবতাদ্বিরে ছুন্দুভি এবং ঢকা বাদ্য হইয়াছিল এই নিমিত তাঁহাকে আনক্ছুন্দুভি বলিত। তিনি ভগবান্ হরির প্রাছ্রভাব স্থান ছিলেন। দে যাহা হউক, শ্রের ঐ সকল তনয় ভিন্ন পৃথা, শ্রুড্দেবা, শ্রুডকীর্তি, শ্রুড্ভাবা, রাজাধিদেবী নামে পাঁচ কতা হয়, ইহারা ঐ দশ তনয়ের ভগিনী। ১৮॥

শুর আপনার স্থা কৃত্তিরাজকে অপুত্রক দেখিয়া আপনার তনয়া পৃথাকে দীন করিয়াছিলেন। ঐ

তদ্যে বীর্ষ্যপরীক্ষার্থমাজুহাব রবিং শুচিঃ ॥ ১৯॥
তদৈবোপাগতং দেবং বীক্ষ্য বিক্সিতমানদা। প্রত্যন্নার্থং প্রযুক্তা মে যাহি দেব ক্ষমন্ত মে॥
আমোঘং দেবদন্দর্শমাদধে দ্বন্নি চাজুজং। যোনির্যথা ন দুষ্যেত কর্ত্তাহং তে স্থমধ্যমে॥
ইতি তস্তাধ দ অধায় গর্ত্তং দূর্য্যোদিবং গতঃ। দদ্যঃ কুমারঃ দংজজে দ্বিতীয় ইব ভাকরঃ॥
তং দা তাজন্ নদীতোয়ে কুছ্যাল্লোকদ্য বিভাতী। প্রপিতামহস্তামুবাহ পাণ্টুর্বে দত্যবিক্রমঃ॥
ক্ষেতদেবাস্ত কার্র্যো র্জশর্মা দমগ্রহীৎ। যদ্যামভূদ্দন্তবক্রশ্ববিশ্বোদিতেঃ স্বতঃ॥
কৈকেয়ো ধৃষ্টকেতুশ্চ প্রভাতকীর্ত্তিমবিন্দত। দস্তর্দনাদয়স্তদ্যাঃ পঞ্চাদন্ কৈক্রাঃ স্বতাঃ॥ ২০,॥
রাজাধিদেব্যামাবস্থে জন্মসেনোহজনিউই। দম্বোষ্যশ্বেদ্বির্যালঃ প্রভ্রেব্যমগ্রহীৎ॥

खिषद्वामी ।

রামাস ততত্ত সা তত্মান্দেবাহ্বানহেতুং বিদ্যামবাপ তদাহ শাপেতি ॥ ১৯ ॥

দেবমুপাগতং বীকা সা প্রাহ প্রতায়ার্থং পরীকার্থং মরা বিদ্যা প্রযুক্তা নতু দরা কিঞ্ছিৎ কার্যামিতাভিসন্ধিনা ততোঘাহি ইত্যেবমুক্তে ববিফবাচ অমোঘং দেবদর্শনমিতি কন্যাহমিতিচেৎ ভ্রাহ যথা যোনি ন'দ্ব্যেত তথাহং কর্তা করিয়ামি । ২০॥ আবস্তো বিন্দাহ্বিন্দো । ২১॥

विषनाथठकावर्ती।

সাচ পৃথা কদাচিদগৃহমাগতাৎ পরিচর্যায়া প্রতোষিতাৎ তুর্জাসস: সকাশাৎ দেবছুতিং দেবাহ্বানছেতুং বিদ্যাং আপ ॥ ১৯ ॥
দেবং সূর্য্যং প্রতার্থার্থ পরীক্ষার্থং মরা বিদ্যা প্রযুক্তাতঃ ক্ষমত্ব সংপ্রতাহং কন্যাত্মি ত্বান কিমপি কার্য্যং বাহি ॥
সূর্য্য উর্বাচ অমোঘমিত্যাদি । নমু তহি ঘোনিছ্টাং কন্যাং মাং কঃ পরিণয়েদিতিচেত্তত্তাহ ঘোনিরিতি ক্রত্তা করিব্যামি ॥ ২০ ॥ আবত্তেম্বী বিকাহবিকৌ ॥ ২১ ॥

পৃথা কলাচিৎ তুর্বাদা মুনি গৃহে আদিয়া অভ্যাগত হইলে পরিচর্ব্যাদি দ্বারা তাঁহার সন্তোষ জন্মান এবং তাঁহার নিকট দেবাহ্বান বিদ্যা প্রাপ্ত হন। অনন্তর দেই বিদ্যার বীর্য্য পরীক্ষার্থ শুচি হইয়া সূর্য্যদেবকে আহ্বান করিয়াছিলেন ॥ ১৯ ॥

পরস্ত ঐ দেবকে তৎক্ষণাৎ আদিয়া উপস্থিত হইতে দেখিয়া তাঁহার অতিশয় বিসায় হয়। দবিনয়বচনে নিবেদন করেন, হে দেব। আমি কেবল পরীক্ষার্থ বিদ্যা প্রয়োগ করিয়াছিলাম, এক্ষণে আপনাতে কোন কার্যা নাই ক্ষমা করেন। ইহাতে সূর্য্য কহিয়াছিলেন দেবদর্শন ব্যর্থ হয় না, আমি ভোমার গর্ত্তাধান করিব। যদি কন্থা বলিয়া দক্ষোচ কর ভোমার বোনি যে প্রকারে ছুই্ট না হয়, সেই প্রকার করিয়া দিব এই রূপ কহিয়া তাহাতে গর্ত্তাধান পূর্বেক সূর্য্যদেব গমন করেন। তৎক্ষণাৎ দ্বিতীয় দিবাকরের ভূল্য পূথার একটা কুমার উৎপন্ন হইয়াছিল। তদনন্তর তিনি লোক ভয়ে ভীতা হইয়া দেই তনয়কে নদীজলে পরিত্যাগ করিলেন। অনন্তর মহারাজ সত্যবিক্রম পাণ্ডু ঐ পৃথার পাণি গ্রহণ করেন। দে যাহা হউক, রাজন্। শ্রকন্তা প্রতদেবা কর্মবংশীয় রন্ধশর্মার পরিগ্রহ হয়েন, যাহাতে দিতিহতে দন্ত-বক্ষ ঋষি সভিশপ্ত হইয়া জন্ম গ্রহণ করেন। অপর কৈকেয় বংশীয় ধৃষ্টকেতু প্রতকীর্ত্তির পাণি গ্রহণ করিয়াছিলেন, তাহাতে সন্তর্দন প্রভৃতি প্রিটী তনয় জন্মায়াছিল। ২০॥

আর জয়দেন রাজাধিদেবীর পাণি গ্রহণ করিয়া তাহাতে বিন্দ অসুবিন্দ নামে চুই তনয় উৎপন্ন করেন। হে রাজন্। চেদিরাজ দদ্যবোব শ্রুত শ্রুবার পাণি গ্রহণ করেন, তাহার তনয় শিশুপাল তাহার উৎপত্তি বিবরণ বলিয়াছি॥২১॥

শিশুপালঃ স্বতন্তব্যাঃ কথিতন্তব্য সম্ভবঃ ॥ ২১ ॥

দেবভাগদ্য কংদায়াং চিত্রকৈতু রহদলো। কংদবত্যাং দেবজাবদঃ হবীর ইয়ুষাংস্তথা॥
বক: কলাতু কলায়াং দত্যজিৎ প্রজভিথা। সঞ্জায়া রাষ্ট্রপাল্যাঞ্চ র্য তুর্ম্রণাদিকান্ ॥
হরিকেশ হিরণ্যাকে প্রভ্যাকি শামক:। মিশ্রকেশ্যামপারদি রকাদীন্ বংদকত্তথা॥
তক্ষ পুক্রমালাদীন্ দুর্বাক্ষ্যাং রক আদেধে। স্থমিত্রার্জ্ন পালাদীন্ দ্মীকাতু স্থামনী॥
আনকঃ কণিকায়াং বৈ ঋতধামা জয়াবপি॥ ২২॥

পৌরবী রোহিণী ভদ্রামদিরা রোচনা ইলা। দেবকী প্রস্থাশ্চাদন্ পড়্যাব্দানকত্বনুভে:॥

पলং গদং দারণক তুর্মদং বিপুলং ধ্রুবং। বহুদেবস্ত রোহিণ্যাং কুভাদীকুদপাদয়ৎ॥

হুভদ্রো ভদ্রবাহুশ্চ তুর্মদো ভদ্র এবচ। পৌরব্যাস্তনয়াহেতে ভূতাদ্যা দ্বাদশাভবন্॥

श्रीधद्रश्रामी।

তদেৰং বস্তদেবস্য ভগিনীনাং পতীন্ প্ৰাংশ্চ উজ্ব তত্ত্বাত্বাং নবানাং পত্নীঃ প্্ৰাংশ্চাহ দেবভাগসোতি নবভিঃ শ্লোকাটিছিঃ ॥ ২২ ॥

ৰস্থাদবদ্য পত্নী: পুত্ৰাংশ্চাৰ পৌরবীতোকাদশভি: ॥২৩ ॥ কৌশল্যা ভদ্ৰা ॥২৪ ॥

শ্ৰীবিশ্বনাথচক্ৰবৰ্ত্তী

বল্পেবেল ভগিনীনাং পতীন্ পু্লাংশেচাক্ত্ৰ তছু ত্ণাং নবানাং পদ্ধীঃ প্ৰাংশ্চাহ দেবভাগলে জি নবভিঃ শ্লোকাটিদ্ধঃ ১২১/২০॥ কৌশলা। ডল্লা ॥ ২৪॥

অতঃপর বহুদেবের ভাতাদিগের পত্নী ও তনয়দের বিবরণ বলি প্রবণ কর। দেবভাগের ভার্যা কংসা, তাহাতে চিত্রকৈতু ও রহদল চুই তনয় হয়। দেবপ্রবদের পত্নী কংসবতী, তাহার গর্ত্তে হ্ববীর ও ইয়ুমান্ জন্ম গ্রহণ করেন। কঙ্কের বনিতা কঙ্কা, তাহাতে বক তথা সত্যক্তিং ও প্রুক্তিং উৎপর হয়। সঞ্জয়ের জায়া রাষ্ট্রপালী তাহার গর্ত্তে রুম তুর্মার্ষণ প্রভৃতির উদ্ভব হয়। শামকের বনিতা শ্রভূমি তাহাতে হরিকেশ ও হিরণ্যাক্ষ জন্ম গ্রহণ করেন। বৎসক মিপ্রকেশী নাম্মী অপ্ররায় রকাদি
সন্তান জন্মান। রকের পত্নী দূর্ববাক্ষী, তাহাতে তক্ষ পুকর মালা প্রভৃতি সন্তান উৎপন্ম হয়। শমীক
বনিতা হাদামনী শমীক হইতে হুমিত্র অর্জ্জ্নপাল প্রভৃতি তনয় প্রেসব করে। আনক স্বীয় বনিতা কর্ণির গর্ত্তে শ্রতধামা ও জয় নামক চুই তনয় উৎপন্ম করেন॥ ২২॥

হে রাজন্! বহুদেবের পৌরবী, রোহিণী, ভদ্রা, মদিরা, 6রাচনা,ইলা এবং দেবকী প্রভৃতি অনেক পত্নী। তন্মধ্যে রোহিণীর গর্ম্ভে বলদেব, গদ, দারণ, চুর্মদ,বিপুল, প্রুব এবং কুতাদি পুক্র উৎপন্ন হয়। পৌরবীতে হভদ্র, ভদ্রবাস্থ প্রভৃতি ঘাদশটী সন্তান জন্মে। মদিরার গর্ম্ভে নন্দ, উপনন্দ, কুতক এবং শূর প্রভৃতি উৎপন্ন হ্য়েন॥ ২৩॥

ভদ্রা কেশি নামে কুলনন্দন একমাত্ত নন্দন প্রদব করেন। রোচনার গর্ভ্তে হস্ত, হেমাঙ্গদ প্রভৃতি জম্মে। ইলাতে উরুবক্ষল প্রভৃতি শ্রেষ্ঠ প্রেষ্ঠ যতুর ধাম হয়। ধৃতদেবার গর্ভে বহুদেব হইতে বিপৃষ্ঠ

শান্তিদেবাক্সনা রাজন্ প্রশম প্রথিতাদর: । রাজন্য কর্মবর্ষাদ্যা উপদেবাহতা দশ । বহু হংদ হ্মবংশাদ্যা: প্রীদেবায়ান্ত ষট্ হুতা: । দেবরক্ষিত্যা লকা নবচাত্র গদাদ্য: ॥ বহুদেব হুতানন্টাবাদধে সহদেবয়া । প্রবর শ্রুতস্থ্যাংশ্চ সাক্ষাদ্রশো বসুনিব ॥ বহুদেবপ্ত দেবক্যামন্টপুত্রানজীজনং । কীর্ত্তিমন্তং হুষেণঞ্চ ভদ্রদেনমূদ্যরধী: ॥ ঋজুং সম্মদিনং ভদ্রং সন্ধর্ষণমহীশ্বরং ॥ ২৪ ॥ অন্তমন্ত ত্যোরাসীৎ স্বয়মের হরি: কিল । হুভদ্রাচ মহাভাগা তব রাজন্ পিতামহী ॥ ২৫ ॥

অন্তমন্ত তয়োরাসীৎ স্বয়মের হরিঃ কিল। স্কভদ্রাচ মহাভাগা তব রাজন্ পিতামহী ॥ ২৫॥
যদা যদাহি ধর্মাস্য ক্ষয়ো বৃদ্ধিশ্চ পাপানঃ। তদাতু ভগবানীশ আআনং স্কতে হরিঃ॥ ২৬॥
নহাস্ত জন্মনো হেডুঃ কর্মণোবা মহীপতে। আআমায়াং বিনেশস্য প্রস্য দ্রুষ্টুরাত্মনঃ॥ ২৭॥

ভাগরখামী।

অষ্টমস্ত স্বয়মেবাসীৎ নতু কর্মাদিনা হেতুনা। তাজাং জনিতোবা যতোহসৌ হরি: ॥ ২৫ ॥ তদেবোপণাদয়তি মত্তেতি জিভি: ॥ ২৬ ॥

ঈশস্য মায়ানিয়ন্ত: পরস্য অসম্পন্য দ্রষ্টু: সাক্ষিণ: আত্মন: সর্ব্ধগতস্য নছেবং ভূতস্য মায়াবিলোদং বিনা জন্মন: কর্মণো বা হেত্: সম্ভবতীত্যর্থ: ॥২৭॥

ক্মসন্ত:।

অষ্টমন্থিতি। হরতি আকর্ষতি বশীকবোতি সর্কমিতি ছরিঃ পূর্ণভগবান্। সএব স্বয়মাণীৎ। নতাবিভাবাত্তরেণ। কিলেতি। এতেচাংশ কলাঃ পুংসঃ কৃষ্ণস্ত ভগবান্ স্বয়মিতি প্রসিদ্ধিং নিশ্চিনোতি॥২৫॥

তত্ত ভগবদতারমাত্ত সামান্যত: কারণমাহ যদেতি। শ্রীগাঁতাস্থ হৈবং। যদা যদাহি ধর্মত মানির্ভাত ভারতেত্যাদি ॥২৬ নয়ন্যত জন্ম কর্মণো হে তু: প্রাচীনকদ্মৈর ভাং। তত্ত চ হেতৃমায়া। শ্রীভগবতত্ব কিং ভাদিত্যাশস্যাহ নহয়েতি। সাধবোদ্দমং মহং সাধ্নাং হৃদ্মং ছহমিতি ন্যায়েনাআ ভিরত্বেন সমতেবু সাধ্যু যা মারা রূপা তাং বিনা তত্ত্ব হেড্বং। ঈশতেত্ত্যাদম:॥ ২৭ ॥

बै।विधनाभहत्कवादी ।

স্বয়েবে নস্বংশেন । ২৫ । তেতা ভগৰদবভার মাত্রস্থামান্তঃ কারণমাহ যদেতি । ২৬ ॥

নমু জীবতা জনা কর্মণো হেঁতু: প্রাচীনং কর্মোর তাৎ ওস্য চ হেতুমায়া শীভগবতস্ত কিং তাদিতাত আহ নহতেতি। আত্মন:
স্বত্ত আত্মস্থ জীবেষু মায়াং কণাং বিনা উত্তরশ্লোকে অহুগ্রহ ইতি মায়াথ বিবরণাৎ। মায়া দত্তে কণায়াং চেতি বিশ্বপ্রকাশাৎ
মায়া শক্ষেনাত্র ক্রপৈবোচ্যতে। কুণায়াঃ ফলমভিব্যঞ্জয়তি। ঈশত্ত জন্ম কর্মাভাগে দর্শিতাভাগে সর্ক জীবোদ্ধার সমর্থতেভার্থ:। সামর্থো হেতু: পরভা সর্কোৎক্রইস্য। কুপায়াং হেতু: আত্মনো জীবান্ দ্রষ্টু: সংসার হৃঃথাকৌগভিতান্ বিলোক্ষিত্ত ॥ ২৭

জন্ম গ্রহণ করেন। শান্তিদেবায় প্রশম, প্রথিত প্রভৃতি আত্মজ উৎপদ হয়। এই রূপ উপদেবায় রাজন্য কল বর্ব প্রভৃতি দশ্টী সন্তান। শ্রীদেবায় বস্তু, হণ্দ, স্থাংশ প্রভৃতি ছয়টী তনম। দেবরক্ষিতা গদ প্রভৃতি নয় সন্তান লাভ করেন। যেমন সাক্ষাৎ ধর্ম বহু উৎপাদন করেন তাহার স্থায় বস্তুদেব সহদেবায় প্রবর প্রভৃত্যুখ্য প্রভৃতি অফ তনম জন্মান। ঐ রূপ তাঁহার দেবকীতেও অফ তনয় হয়। যথা—কীর্তিমান্, স্থাংগ, ভদ্রদেন, ঋজু, সংম্দিন, ভদ্র, অহাখর সক্ষর্ণ। ২৪ ৪

রাজন্! বস্থদেব ও দেবকীর অঊম পুত্ত•হিরি স্বয়ং হইয়াছিলেন আর তোমার পিতামহী মহাভাগা স্ভদ্রাও তাঁহা হইতে উৎপদ হয়েন॥ ২৫॥

ফলতঃ যে যে সময়ে ধর্মের ক্ষয় অধর্মের রৃদ্ধি হয়, দেই দেই সময়ে ভগবান্ ঈশ্বর আপনাকে স্ক্রন করিয়া থাকেন ॥ ২৬॥ •

नटि यिनि भाग्नाभित्रछा, मन्न विशेन, मर्ख मान्ने अवः इत्र्वंगछ, छाँहात्र भाग्नाविदनां वाजिदत्रक

যশায়া চেষ্টিতং পুংদঃ শ্বিতৃং পত্তপেয়ায়হি। অনুগ্রহস্তমির্তেরাত্মলাভায় চেষ্যতে । ২৮ ॥ অক্টোহিণীনাং পতিভিরস্থরৈন্ পলাঞ্চনঃ। ভূব আক্রম্যাণায়া অভারায় কুতোদ্যমঃ॥ ২৯॥ কর্মাণ্যপরিমেয়ানি মনদাপি স্থরেশ্বরৈঃ। দহ দংকর্ষণশ্চক্রে ভগবান্ মধুদূদনঃ॥ ৩০ ॥

श्रीपत्रश्रामी ।

্কিঞ্যস্য মায়া চেষ্টিতং পুংসো জীবসাাল্পত্য তথা সর্কাজীবান্ত্রাহক্স্য কুতঃ কর্মাদি পারতল্পো জন্মাদি সম্বন্ধ:। আনু প্রহমেবাহ হি যত্মাৎ তদেব হিত্যাদেয়ে ইয়াতে। প্রদারে লীবোপাধে জীবিদ্য ধর্মাদ্যমন্ত গাত্মাধি স্ট্যাদিনা ধর্মাদি সম্পাদনে-নাম্প্রহুষ্ট তথা আত্ম লাভায় মোকার চেষ্টে। তর হে হুং তেনৈব জানমাণেন তদ্য হিত্যাদে নির্ত্তঃ । ২৮ ॥

তসা চেঁটিতং ভূমেরপার্থহ: ইত্যাহ অক্টেংগীনামিত্যাদি বাভ্যাং। অভারায় ভার পরিহারায় ॥ ২৯॥ ক্সুরেখবৈর পি মনসাপি অপরিমেয়ানি অবিতর্ক্যাণি সঙ্কর্ষণ সহিত শচক্রে ॥ ৩০ ॥

क्रमम्बद्धः ।

কুপানেব কৈম্তোন দর্শগতি। স্থিতাাদার্থং যামামারাং প্রাক্তাও চেষ্টিতং বীক্ষণ রূপং তদপি জীবেম্প্রাইএব পর্যাবসীয়তে। বুদ্ধি ক্রিয়াদি সংপাদনাং। অত এবাস্থাই অস্য স্থিতাদে নির্ত্ত হে তো জীবানামাত্মনা ভগবতো লাভার চেষ্টতে কিমৃত ধর্মাদে:। তগাচ বক্ষাতে। বৃদ্ধী ক্রিয় মনঃ প্রাণানিত্যাদি ॥ ২৮ ॥

সংপ্রতিষ্পংখ্যের ভক্তজনাশ্রর রূপারাং পর ভক্তারাং পৃথিবাাং পরিবাক্তরৈব কুপ্রৈর স্বর্মবততারেত্যাহ। আকৌহিণীনা মিতি যুগ্মকেন ॥ ২৯ । ৩০ । ৩১ । ৩২ । ৩৩ । ৩৪ । ৩৫ ॥

शिविधना भठक वाही ।

কুপায়া এব হেতৃহং কৈম্ভোন দর্শরতি যদিতি পুণ্য: প্রকৃতীক্ষণকর্ত্তু: মায়ায়াং যচেষ্টিত মীক্ষণদিকং কর্ম জীবানাং ছিডাাদার্থং হি নিশ্চিতং তচাপি অনুগ্রহাদেব হেতোঃ কিমৃত মায়া গকেনাপি রহিতং গোবর্জন ধারণাদি চিষ্টিতমিতি ভাব:। বৃদ্ধীন্ত্রিকাদিকং প্রাপ্য জীবা বিষয় ভোগাদিকং প্রাপ্র বৃদ্ধিতি যা কুপা তত এব মায়ায়াং চেষ্টিতমিতার্থ:। নমু বিষয়ভোগাদি হেতৃভাঃ স্থিতাদিভাঃ পুন: সংসার ভ্রেথমেৰ ভাদিতি কোংব্যম্প্রহ ভ্রোহ। তরিবৃত্তে ভ্রেখাং স্থিতাদীনাং ভক্তি জান বৈরাগ্যৈ নি বৃত্তে রাজানো ভাগবভোবো লাভ ভাদর্থকোত। বৃদ্ধীন্ত্রিয়াদিকং বিনা ভক্তিজ্ঞানাদ্যপি ন সিজোদিতি জীব মাত্রের্ কুপেব হেত্ রিত্যেগং। বৃদ্ধীন্ত্র মন: প্রাণান্ জনানামস্কং প্রভু:। সারোগঞ্চ ভ্রাপ্ত আছেনে কলনায়চেতি ॥২৮॥

শ্রীক্ষাস্ত জন্ম কর্মণো হেত্: স্পষ্টমেব পৃথিবাং পৃথিবীয় জনের সাধক সিদ্ধ ভক্তেমণি ক্রণৈব দৃশ্যত ইত্যাহ অক্ষেহিণীনা-মিতি সপ্ততি:। ভূবো ভারহরণাৎ অম্বরাণামপি বধেন সংসার হরণাৎ ক্রপোজা ॥২৯। ৩ ।॥

জন্ম অথবা কর্ম্মের হেতু অন্ত কি **হইতে পারে ? ॥ ২৭** ॥

অপর যাঁহার মানা চেন্টা জীবের পক্ষে অমুগ্রহ স্বরূপ, যে হেছু তাহাই স্পৃষ্টি স্থিতি প্রলয়ের নিদান অতএব যিনি দর্বজাবের অমুগ্রাহক তাঁহার কর্মাদি পারতন্ত্রা হেছু জন্মাদি সম্বন্ধের সম্ভাবনা কি ? সে যাহা হউক, ঐ মানা চেষ্টিত জ্রেমাণ হইলে তন্দারা সৃষ্টি প্রভৃতি নির্ত্তি হওয়াতে তাহা জীবের পক্ষে মোক্ষের কারণ হইয়া থাকে ॥ ২৮॥

রাজন্! বস্তু বস্তু অকোহিণীর পতি নৃপচিহ্নধারী অস্তর্ধণ পৃথিবী আক্রমণ করাতে ধরা মহা ভারা-ক্রান্তা হইয়াছিলেন, তাঁহার ভার পরিহারার্ধও ভগবানের ঐ উদ্যম জানিবেন ॥ ২৯ ॥

কারণ যে সকল কর্ম দেবেশ্বরগণ মনের ছারাও তর্ক করিয়া উঠিতে পারেন না, ভগবান্ মধুসুদন সম্ক্রণের সহিত তৎ সমুদায় অবলীলাক্রমে সম্পদ্ধ করেন ॥ ৩০ ॥

श्रीश्रद्धामी।

সংক্রমাত্রেণ ভূডার্হরণ সমর্থস্যাদি কর্ম করণং যশে।বিস্তার ছারা ভক্তান্ত্রহার্থমিড্যাহ কলাবিতি ছাচ্যাং। ডুংখ শোক তমাংসি হৃদতীতি তথা যদ্যশো ব্যতমোৎ ॥ ৩১ ॥

ৰিমন্ সভাং কৰ্ণীযুৱে বশোজণে ভীৰ্থব্যে শ্ৰোজ্যেৰ অঞ্চলিঃ পানসাধনং ৰদ্য সং পুক্ৰং সক্তৃপণি উপস্থা আঠ্যনং কুছা তং দৌন্দ্ৰ্যাক্ত চিত্তঃ সন্ কৰ্মবাসনাং ধুমুতে ॥ ৩২ ॥

उत्तवार बाळार। टालानिकिः श्राचनीत्रमीरिकः यता ॥ ०० ॥

नदेक्तदेक्त्रभाषा मुर्काठ ॥ ७८ ॥

তৎ প্রদর্শনার্থং মুধ্পোভামাত্ বভাননং দুশিভিঃ নেজৈঃ পিবস্তোনার্গো নরাশ্চ ম তত্পু: ন ত্থা:। নিষেবোল্মবমাজ

बैविश्वनाथठळवरे ।

ভূবি স্বিভেষ্ ক্বণা মুক্ৰা ভূবি হাসাংখিপ ক্বণামাহ কলাৰিতি তমোহবিদ্যা । ৩১ ।

নমু স্পুণামিত্যক্ষা যশং শর্ম জনক মৰগমাতে তত্র মৈৰমিত্যাহ যদিবিভি। সভি: কর্ণপের পীব্ৰময়ে বশোরণে তীর্থবের শোত্রমেবাঞ্চলি: পান সাধীর বস্ত্র স্বাভিমনমাত্রং ক্লয়া কিং প্নরাপীর সক্তদেকবারমণি কিং প্নর্বহশ:। কর্ম বাসনামবিদ্যাং যস্য পরোক্ষবর্জিনোণি যৎকিঞ্চিদ্যশং প্রবণ মাত্রেশৈর সংসারং তর্জীত্যর্গঃ ॥ ৩২ ॥

তৎ সমকাল ভববেনাপরোক্ষবর্ত্তিন গুল্লীলা পরিকরাত্বপণ্য মহিমানঃ পরমমজ্যে এবেডাছে ভোলেডাালি ॥ ৩০ ॥

বেতু তসাতি প্রেম বিষয়ীভূতা: নেআঞ্চলিভাং ভদীয় রূপ মাধুর্যাপানাসন্ধা: । শ্রোআদীনপি ফলয়তি তে ছতিখনা। ইত্যাহ রিঞ্চ মিতং যত্র তথাভূতং বদীক্ষিত্মবলোকনং তেনোদারৈশ্বনোবাঞ্চা পুরবৈতঃ ক্লাচিছিক্রমস্য স্বমধ্রচরণ বিন্যাসস্য বীর্রস্বাঞ্জস্য স্ব শৌটার্যস্য বা লীলয়া নূলোকং সম্বা জাতিং স্প্রিঞ্জন সমূবং ॥ ৩৪ ॥

তেখিপ অপবাসিন ভেখপি গোণা তং প্রিয় দর্শ্ব স্থায়শ্চ তয়াধুর্বাপানপ্রবরা: পরম ধনাতমা ইতাহ বড়েতি স্প্রিছেবপি মধ্যে পরম মধুরমাননং তদাননমপুর্কাবে। ভাগাভাং বিধা বিভক্তং মহামাধুর্বাং ভবভি। ত্রাপি স্প্র মহামাধুর্বাণাং চক্রবন্তী

রাজন্! ভগবান্ দর্বা শক্তিমান্, যদিও সংকল্পমাত্রেই ভূভার হরণে দমর্থ ছিলেন তথাপি কলিমুগে যে দকল ভক্ত জামিবে তাহাদের প্রতি অমুগ্রহ প্রকাশ নিমিত ছুঃথ শোক ও তমোগুণের নাশক পুণ্য যশঃ বিস্তার ক্রিয়াছেন ॥ ৩১ ॥

ঐ যশঃ সাধু পুরুষদিগের কর্ণামৃত এবং শ্রেষ্ঠতীর্থ স্বরূপ, একবার মাত্রে জোত্র রূপ অঞ্চলি ঘারা পান করিলে পুরুষ কর্ম বাসনা পরিত্যাগ করিতে অত্যর্থ সমর্থ হয়॥ ৩২॥

অতএব ভোজ, র্ফি, অন্ধক, মধু, শ্রসেন, দশার্হ, তথা ক্রু, স্ঞয় ও পাতৃবংশীর মানববর্গ সক-লেই ভগবানের চরিত্রের শ্লাঘা করিয়া থাকেন। ৩৩।

দেই ভগবান্ স্থিয় দেশিন, উদার বচন, বিক্রমলীলা এবং সমস্ত অবয়ব তথা রম্য মূর্তি দারা সমস্ত মসুষ্য লোককে আমোদিত করিয়াছিলেন ॥ ৩৪॥

मकत क्थन अवः मत्नाहत कर्न जथा खेलगां व करणांन अहे मकतन छारात वनन भावित हिन ।

নিক্যোৎসবং নতত্পু দৃশিভিঃ পিবস্তো নার্যোনরাশ্চ মুদিতাঃ কুপিতা নিযেশ্চ ॥ ৩৫ ॥ জাতোগতঃ পিতৃগৃহারু ক্লমেধিতার্থোহতারিপুন্ হতখতানি কুজোরুদারঃ।

अभवसामी ।

ব্যবধানমপ্যসহসানা তাৎ কর্ত্নি দেঃ কুপিভাত বভ্রু। কথা ভ্তমাননং মকর কুণ্ডলাল্যাং চারুকর্ণ আলেছো কথোলোঁচ ভৈঃ হুভগং। স্বিশ্যেসা হাসো যদিন্নভামুৎসবো যদিন্ধ ৩৫ ।

['] আরিক্ষ চরিতং সমাসতো বর্ণয়তি জাত ইতি **যাভাাং জাতো নিজেন জ**পেণ পশ্চাৎ পুক্ষো মহ্যাকার: সন্ এজং গতঃ এজ-

ক্রমসন্দর্ভ:।

অথ সর্বাদেব যুগণৎক্ষু বিভং তচ্চবিত মাপাততো নিজোৎকঠা কুঠনে ছেয়া চ সমাসেন বর্ণ য়তি। জাত ইতি। পিতৃ গৃহাছ্ট্রী বস্থানে ব্রুল আহ্ন তালাদেব ব্রুল গতঃ। তালে তালাদিব লালা লালাদিব লালালাদিব ভাবঃ। তালাদিব লালালাদিব ভাবঃ। ব্যুল্ বিষাতে তালাদিব লালালাদিব ভাবঃ। ক্ষা বিষাত্ল বিষাত্ল ক্ষা বিষ্টা ক্ষা বিষাত্ল ক্ষা বিষাত্ল ক্ষা বিষাত্ল ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষ্টা ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষাত্ল ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষ্টাত্ৰ ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষ্টাত্ৰ ক্ষা বিষ্টা বিষ্টা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষ্টাত্ৰ ক্ষা বিষ্টা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষাত্ৰ ক্ষা বিষ্টাত্ৰ ক্ষা বিষ্ট

ত্ৰীবিশ্বনাণচক্ৰবত্তী ।

হাসামূত মহামধুরিমা তদধর তাগ মধ্যে নিবসতীতাধর তাগং বর্ণরতি। মকর কুগুলাভ্যাং চার দেলীপ্যমানে বৌ কলি তাভ্যাং লাল্বের বৌ কলো তাভ্যাং অন্তর্গ ত্রুলন মনোহরং। বিলাসৈহ ধাঁৎস্কর চাপলাদিভি পোঁতামানৈ: সহিতোহাসো বত্র তথ । যহা মকর কুগুলাভ্যাং সকাশাদিপি চারুকগোঁ ত্বণ ত্বণালমিতাতে অমোরপি শোভাবর্দ্ধকথা অর্থনি মকর কুগুলাভ্যাং তাভ্যাং সকাশাদিপি লালত্রের কণোনো। অন্তর্বান্তি চর্ক্যমাণ তাম্ব লক্ত পার্যব্রোহা্ স কুগুলালাচ ছবি ম্বাৎ তাল্ব হতুকলরোত্র লিম বনেক্তর্বান্তি অন্তর্বান্তি অন্তর্বান্তি অন্তর্বান্তি অন্তর্বান্তি অন্তর্বান্ত অর্থনি মকর কুগুলাভ্যাং তাভ্যাং সকাশাদিপ সবিলাসোহাসঃ বিষাধর দশন ক্ষণী শোভাহরঞ্জিতবাৎ সর্ব্বান্তি অনুক্রান্তর চক্রবিদ্ধি অন্তর্বান্তা কুললাতি ধর্মবিধ্যা ধ্বংসক মহোরাদ প্রবর্ত্ত কর্মাণ ধর্মবিব্যাং ব্যক্ত তাল কর্মবালা কুললাতি ধর্মবিধ্যা ধ্বংসক মহোরাদ প্রবর্ত্ত কর্মবাণ ধর্মবিব্যাং ব্যক্ত তাল ক্ষণা প্রবিত্তা বিশ্ববান্তর কর্মবানা ক্রান্তর ক্ষণা ক্ষণা ক্ষণতা বতুর্বিতি নিমেবাসহবেন ক্রচ্ মহাভাব কলপেনাত্র জিরো গোপ্যএব নান্যাং নরাঃ ক্ষণপ্রিয়মশ্বস্থাং অ্বলাদ্যঃ নান্যে জেয়াং ৷ গোপীঃ প্রিয়নর্ব্যব্যাং ক্ষান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রানা ক্রান্ত্রাণ ক্রান্ত্রাং সমঞ্জনা রভি ভাবান্ত্রাং সীমাং সমর্বের প্রপদ্যতে ৷ রতি ন শ্বিষ্ণসানামনুদ্ধাণাত্তিমাং হিছিং ৷ বেবেৰ স্বেনাদীনাং ভাবান্ত্রানের গজ্ঞীতি ॥ ৩৫ ॥

অথ কে তে জন্ম কর্মনী ইভাগেলায়াং স্ক্ষেন যুগপৎ ক্রিডং ভুচ্চরিত সাপাততে। নিজোৎকণ্ঠাকুঠনেজ্যা রাজোৎকণ্ঠাবর্ধননেজ্যাত সমাসেন বর্গরিত জাত ইতি ছাজাং শিকুক্সদেশত গৃহাৎ একং গতঃ কিমর্থং একিটাকুডা বৃদ্ধিতঃ বৃদ্ধিত বৃদ্ধিতঃ বৃদ

বিলাস সম্মাণিত হাস্তা যেন তাহাতে লগ্ন হইয়া থাকিত। তজ্জ্জা যেন নিত্যই উৎসব হইত। সেই বদন দৃষ্টি দ্বারা পান করিয়া নর ও নারীদিগের পরিভৃত্তি হয় নাই, তল্বারা আহ্লাদিত হইয়াছিল সত্য কিন্তু নয়নের নিমেষ অসহিষ্ণু হইয়া নিমেষ কর্ত্ত। নিষিদ্ধ প্রতি বারম্বার কোপ করিত। তথা

রাজন ! ভগবান্ জ্রীকৃষ্ণ নিজরপে জন্ম গ্রহণ করেন তাহার পর মতুব্যাকার হইরা পিতৃ গৃহ হইতে ত্রজে গমন করেন। তথার রিপু বিনাশ করিয়া ত্রজানিদিগের অর্থ বর্ষিত করিয়াছেন, তৎপর বছ- উৎপাদ্য তেরু পুরুষ: ক্রত্ভি: সমীজে আত্মানমাত্মনিগমং প্রথয়ন্ করেরু॥ ৩৬॥ পৃথ্যা: দ বৈ গুরুভরং কপয়ন্ কুরুণামন্তঃ সমুত্থ কলিনা যুধি ভূপচন্দঃ। দৃষ্ট্যা বিধুয় বিজয়ে জয় মুদ্বিঘোষ্য প্রোচ্যোদ্ধবায়চ পরং সমগাৎ স্বধাম॥ ৩৭॥

॥ # ॥ ইতি জ্ঞীভাগবতে নহাপুরাণে পারমহংস্থাং সংহিতায়াং বৈয়াসিক্যাং নবমক্ষমে যতুবংশকীর্ত্তনং নাম চতুর্ব্বিংশোহধ্যায়: ॥ # ॥ ২৪ ॥ # ॥ সমাপ্তশ্চায়ং নবমক্ষমঃ ॥ # ॥ •

औरवचामी।

বাসিনামেধিতা অর্থা বেন তেযু দারেরু সুতানাং শতানি উৎপাদ্য আত্মনিগমং অকীয়ং বেদমার্গং ॥ ৩৬ ॥

অন্তঃ সমুখেন কলিনা নিমিত্তেন গুরুভরং ক্ষপরন্ দৃট্টাব ভূপচমুর্বিধ্য় বিশ্বরে জরং অর্জুনেন জিতং ইত্যেবমুদ্বোৰং কৃত্য পরং ভর্মুদ্ধবারোপদিশা অধান সমাক তেনৈব রূপেণ জগামেতি । ৩৭ ।

॥ * ॥ ইতি নবমে চতুর্বিংশ: ॥ * ॥
 ॥ * ॥ সমাপ্রাচেরং নবমন্বর ভাবার্থদী পিকেতি ॥ * ॥

ক্রম সন্মর্ড:

সংখ্। তত্থেৰি সংখ্যাদি বিক্লমে অপি ন স্যাতামিতি। তত্মাৎ প্ৰেষ শক্ষোতি ব্যৰ্ছিতো গত ইত্যম ন খোলাঃ উক্লং হি নরা-কৃতেঃ প্রসন্থং। নচাস্তন বৃহির্য্পা ন পূর্বং নাশিচাপ্রমিত্যাদিভিঃ ॥ ৩৬ ॥

অভিক্রমাগ্রী স্তিস্থোমানেষাসি ভতঃ প্রমিত্যেতং প্রাব্দান পরং প্রোচ্য। স্বধাম স্বস্তর্পং নি**ল নিভালো**কং স্মাক্ তত্তং প্রিকরাদিভিঃ সাক্ষেবাগাদিভি ॥ ৩৭ ॥

॥ * ॥ ইতি শ্রীমন্তাগবত নবমন্তক্ষে শ্রীজীবগোস্বামিকত ক্রমসন্দর্ভগা চতুর্বিংশোহণারঃ সমাধঃ ॥ * ॥
সংখ্যা ৩১২। শ্রীকৃষ্ণে নম:। শ্রীকৃষ্ণতৈতনাচক্রায় মম:। শ্রীব্রজরাজকু গারায় নম:। শ্রীরাধারমণার নম:।

बिवनाणहळ्कवर्छी।

বৰ্ণাশ্ৰম ধৰ্ম স্থাপনক দৰ্শিতং। নৱাক্কতিপ্ৰব্ৰহ্মৰাৎ পূক্ষঃ। আহানং স্মীলে ইক্সালালভালাভাৰাৎ কিমৰ্থং স্মীলে ভুৱাছ। আজুনিগ্মং আজামুগতং স্কীয়ং বেদমাৰ্গং ॥ ৩৬ ॥

ভূভার হরণং প্রয়োজনমাহ পৃথা। ইতি। ভূপচম: ভূপচম: দূটোর বিধ্য তৎ প্রয়োজনমাহ। বিজয়েহজুনে লম: উৎকর্ষেণ বিষোধা অর্জুনেন জিতমিতি জনের থাাপরিছেতার্থ:। ভক্তি জান বৈরাগ্য প্রশাপনমণ্যেকং প্রয়োজনং তদাহ প্রোচ্যেতি। মধাম দারকাং সমগাৎ সক্তঃ প্রাপ্তোবভূব প্রপঞ্চ গোচরভাং পরিত্যলোতি ভাষঃ। মারায়ণ স্বরণেণ স্থাম বৈকুঠঞাগাৎ ॥৩৭

। ♦ ॥ ইতি সারার্থদর্শিতাং হর্ষিণ্যাং ভকেচেডসাং। নব্যস্য চত্ত্বিংশং স্কৃতঃ স্কৃতঃ স্তাং ॥ ♦ ॥

মন্ত্ৰিম্ভ্ৰেম্ভঃ স্তাপ স্কিতং। ক্ৰণাণ্টি ইটোৰ স্ভঃক্ৰিড মাং ততঃ ॥ • ॥

বৈশার শুক্রপঞ্ম্যাং রাধাকৃষ্ণসরস্তটে। নবমক্ষ্ণীতেয়মবাপ পরিপূর্ণতাং। নবমক্ষ্ণীয় টীকা প্লোকাছাঃ ১৫০।

॥ 🕶 ঃ ওঁ নমো ভগৰতে ৰাস্তুদেৰার। 🕰 গোণালো বিজয়তে 🗈 🕫

তর দার পরিগ্রহ করিয়া সেই সকলে শত শত সন্তান উৎপাদনানন্তর দোক সমাজে স্বকীয় বেদবন্ধ বিস্তার করত ভূরি ভূরি যজ্ঞ দ্বারা আপনারই অর্চনা করেন। ৩৬॥

অপর তিনি অন্ত:সমূখ কলিপ্রভব পৃথিবীর গুরুভার মোনে করত দৃষ্টিমাত্রে যুদ্ধশৃষ্টিত নৃপদেনা সমূহকে কম্পিত করেন। পরে অর্চ্ছনের ক্লয় হইলে এই রূপ ঘোষণা দিয়া উদ্ধবের প্রতি পরম তত্ত্ব উপদেশানস্তর সেই নিজ রূপেই স্থামে গমন করিয়াছেন ॥ ৩৭ ॥

॥ # ॥ ইতি নবমে চতুর্বিংশতি অধ্যায় ॥ # ॥

॥ 🛊 🕽 ইতি প্রীরামনারায়ণ বিদ্যারত্ন কর্ত্ব প্রীভাগবৃতামুবাদে নবমক্ষ সমাপ্ত ॥ 🗱 🛚